ये नये हुक्मरान !

जनार्दन ठाकुर

अनुवाद
आनदस्वरूप वर्मा

Originally published by
VIKAS PUBLISHING HOUSE PVT LTD
5 Ansari Road New Delhi 110002
in the English language under the title
ALL THE JANATA MEN

प्रथम हिंदी संस्करण जून 1978

मूल्य
पेपरबैक संस्करण 18 रुपये
सजिल्द संस्करण 24 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन,
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली 110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

आमुख

मैंने अपनी पहली पुस्तक **सब दरबारी** पूरी भी नही की थी कि जनता पार्टी के नेताओ की बेवकूफिया व कमजोरिया उभरकर सामने आने लगी और मुझे इन नये हुक्मरानो के बारे म लिखने के लिए मजबूर करने लगी। वायदो की वही अवहेलना, रहन-सहन का वही अदाज़ सत्ता के लिए वही छल कपट, वही तिकडमे और दाव-पेंच सविधान की मर्यादा के प्रति वही उतावलापन, तथाकथित "क्राति के पुत्रो व पुत्रियो" की वही बेशर्मी, और सत्ता के इद-गिद मँडराने वाले वही सदिग्ध चेहरे ! लगता है कि कुछ भी नही बदला है। एक तानाशाह को हटाकर उसके स्थान पर तानाशाह बनने की प्रक्रिया मे लगे दूसरे आदमी को बैठा दिया गया, पहले के स्थान पर नये दरबारी मसखरे को जगह मिल गयी, फक यह है कि नया मसखरा भाण्ड कुछ ज्यादा गुणी है, एक सजय हटा और उसके स्थान पर एक काति देसाई आ गया, बसीलाल की जगह देवीलाल ने हासिल कर ली। और सारे चन्द्रास्वामियो, पी० एन० कपूरो और जय गुरुदेवा का धधा बदस्तूर चलने लगा।

माच 1977 के अतिम दिनो मे मैंने रायबरेली का वह भीषण बवडर देखा था, जिसने देश की सबसे ताकतवर शख्सियत को उठाकर इतिहास के कूडाघर मे डाल दिया। जून 1977 मे मैंने देखा कि रायबरेली मे उठी वह जबदस्त लहर अब जनता पार्टी का सफाया करने के लिए बढ रही है। कुछ ही महीनो के अदर लोगो का दिमाग इतना बदल जायेगा—यह सोचना भी मुश्किल था। यह सब हमारे युग के उस विचित्र हनुमान' की मूखताओ और भाण्डपन का नतीजा है, जिसे हम सबने रायबरेली का 'जायट किलर' कहकर हाथो-हाथ ले लिया था। इससे भी निराशाजनक स्थिति विभिन्न राज्यो के प्रशासन की है—केवल माक्सवादियो द्वारा शासित पश्चिम बगाल मे लगता है कि कोई सरकार काम कर रही है। हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश बिहार—इन सारे राज्यो मे जहा काग्रेस के खिलाफ विद्रोह हुआ था ऐसी सरकारें हैं जिनका कोई चेहरा ही नही है, जिन्हे सरकार नाम भी नही दिया जा सकता। लगता है, राजनीतिक आदमखोरी का जमाना वापस आ गया है। "सम्पूर्ण क्राति" का कुछ बचा है तो केवल सपनो का एक मलबा।

सब एक ही सवाल पूछते है—"क्या वह फिर वापस आयेगी ?" जैसे-जैसे नये हुक्मरान एक के बाद एक भयकर गलतियां करते जा रहे हैं, लोगो के अदर

उस देवी की वापसी का डर बढ़ता जा रहा है। इन नये हुक्मरानों ने बुनियादी कामों के प्रति दिलचस्पी लेने की बजाय अपनी सारी ताकत हास्यास्पद आडंबरों में गवां दी और हँसी के पात्र बन गये हैं। एक से बढ़कर एक शक्तिशाली लोग, जिनके नाम के साथ तमाम प्रशासनिक खूबियाँ और बुद्धिमत्ता जुड़ी हुई थी, एकदम खोखले साबित हुए हैं।

इसमें तो कोई संदेह नहीं कि लिखने का समय आ गया है। लेकिन शुरू कहाँ से किया जाये? कहते हैं, आजादी एक धमाके के साथ आयी थी। लेकिन दिमागों में अभी तक डर बना हुआ है। मित्रों ने मुझे आगाह किया, "इन नये हुक्मरानों के बारे में लिखने का साहस कैसे कर रहे हो? ये लोग सत्ता में हैं।" आजादी को कसौटी पर रखने का भी यही समय था।

आगामी पन्नों में जनता पार्टी से संबंधित सभी लोगों का व्यापक विवरण नहीं मिलेगा। निस्सन्देह कई महत्वपूर्ण लोग छूट गये होंगे। यदि उन सबको लिया जाता तो यह एक मोटी पुस्तक बन जाती। लेकिन जिन लोगों को शामिल किया गया है वे सभी का प्रतिनिधित्व करते हैं। जनता नेताओं के अतीत पर जोर दिया गया है लेकिन इसकी वजह यह है कि उनके 80 या 75 या 50 वर्षों की तुलना में पिछला एक वर्ष ज्यादा महत्वपूर्ण है। उनके वर्तमान या उनके भविष्य को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक उनके अतीत को न समझ लिया जाय। (मुख्य चरित्रों का जीवन-परिचय पुस्तक के अंत में दिया गया है।)

आपके हाथों में यह पुस्तक देने से पूर्व मैं अपने मित्रों और वरिष्ठ सहकर्मियों को धन्यवाद देना चाहूँगा, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन के बिना यह पुस्तक पूरी नहीं हो सकती थी। खास तौर से मैं निखिल चक्रवर्ती, गणेश शुक्ला, गिरीश माथुर, रजीत राय, एच० के० दुआ और एम० पी० सिन्हा का उल्लेख करना चाहूँगा जिन्होंने व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में अपने विस्तृत ज्ञान से मुझे हमेशा अवगत कराया। साथ ही मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि घटनाओं और तथ्यों के बारे में कोई गलती हुई हो तो जिम्मेदारी उनकी नहीं है।

मैं लखनऊ, अहमदाबाद, बंबई, बंगलौर तथा अन्य शहरों के अपने मित्रों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय और सुझाव दिये।

अपने भाई मधुसूदन ठाकुर का मैं विशेषरूप से आभारी हूँ—उनकी मौजूदगी को मैंने पुस्तक लिखने के दौरान उनकी गैरहाजिरी में भी बराबर महसूस किया।

मैं अपने बच्चों का भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने भरसक मेरी मदद की और जो हर क्षण मेरी मदद के लिए तैयार रहते थे। मेरी बिटिया ऋचा, जो पिछली किताब के लिखे जाने के समय से अब आठ महीने ज्यादा उम्र की हो चुकी है केवल खेलने से ही संतुष्ट नहीं थी और वह टाइपराइटर पर भी काम करना चाहती थी और मुझे कोई शक नहीं कि उसने किया होता तो यह काम बेहतर ढंग से होता।

—जनार्दन ठाकुर

क्रम

पृष्ठभूमि . गॅठजोड का पाप

18 जनवरी 1977 को जेल से रिहा होने के कुछ ही देर बाद मोरारजी देसाई ने राहत की सास लेते हुए पीलू मोदी से कहा, 'हम लोग गॅठजोड के पाप से बच गये।'' उसी दिन घोषणा हुई थी कि मार्च मे चुनाव होगे। विरोधी दलो का विलय अब असभव लगता था। समय बेहद कम था। जो काम सालो मे नही हो पाया वह भला हफ्तो मे कैसे हो सकता था। 'जो भी हुआ भले के लिए ही हुआ' देसाई ने सोचा। अपनी इस 81 साल की उम्र मे भी देसाई हमेशा की तरह अपनी बात पर ही अडे रहते थे। राजनीतिक रगमच से वह लगभग अलोप हो चुके थे, उनकी पार्टी के टुकडे टुकडे हो गये थे, लेकिन वह सोच भी नही सकते थे कि वह काग्रेस-जन के अलावा और कुछ हो सकते है। विपक्ष के दूसरे लोगो की निगाह मे वह सब-कुछ हारकर भी अपने फटे पुराने झडे के लिए लड रहे थे। खुद अपनी निगाह मे उनकी यह लडाई उनका धार्मिक कर्त्तव्य था।

लेकिन दल विहीन जनतत्र के भूतपूर्व महारथी जयप्रकाश नारायण के लिए विरोधी दलो का विलय आज पहले से भी कही ज्यादा निष्ठा का मुद्दा बन गया था। उनकी ख्याति, उनका अहकार, इतिहास मे उनका स्थान—सब कुछ बस एक बुनियादी मुद्दे पर आकर टिक गया था और वह था विरोधी दलो का विलय। प्रतिपक्ष के इस धर्म पिता ने साफ शब्दो मे धमकी दी—'एक पार्टी के रूप मे आप लोग चुनाव लडो, वरना मेरा आप लोगो से कोई सरोकार नही।' इस बार धमकी काम कर गयी।

ऐसा कोई भी दल बने जिसमे कुछ दम हो तो उसका नेता बनने के लिए तैयार बैठे थे चौधरी चरणसिह। उनकी महत्वाकाक्षा आकाश को चूम रही थी। वह दो बार उत्तर प्रदेश का मुख्यमत्री-पद पाने मे कामयाबी हासिल कर चुके थे। अब उनकी निगाह दिल्ली की गद्दी पर लगी हुई थी। दोमुही बातें करने वाले कुछ विरोधी नेताओ ने उनसे कह रखा था कि नेता तो अपने आप उनको ही बनाया जायेगा। दरअसल यह एक चाल थी ताकि चरणसिह को इदिरा के गिरोह मे शामिल होने से रोका जा सके, जिसके लिए वे कुछ दिनो से ललक रहे थे। उनके

वफादार सिपहसालारों ने इस चाल को समझ लिया था और वे बार-बार चौधरी साहब को इन वायदों में न फँसने के लिए आगाह कर रहे थे।

20 जनवरी, 1977 को जब मोरारजी देसाई के निवास स्थान, 5 डूप्लेक्स रोड पर विरोधी दलों की पहली बैठक हुई तो चौधरी के समर्थकों ने उनसे आग्रह किया, "आप मत जाइये, वे लोग आपको कभी भी पार्टी अध्यक्ष नहीं बनायेंगे।" देसाई को भी उस दिन एक संवाददाता-सम्मेलन में भाग लेना था। चरणसिंह के आदमियों ने कहा, "विरोधी दलों के अगुवा नेता मोरारजी बनेंगे और अगर आप वहाँ मौजूद रहे तो आपको भी शर्माशर्मी अपनी मंजूरी देनी पड़ेगी।" चरणसिंह पशोपेश में पड़ गये पर ऐन मौके पर जन संघ के दो नेता, अटलबिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी, भागते हुए यू० पी० निवास पहुँचे और चरणसिंह को फुसलाया— "विरोधी दलों की कोई कारगर बैठक आपके बिना कैसे हो सकती है? विरोधी दलों के विलय की दिशा में आज तक जितने प्रयास हुए हैं उनमें आप भी तो एक प्रेरणा-स्रोत थे।" भारतीय लोक दल के तीसमारखाँ सिंधु भोले भाले अध्यक्ष राजी हो गये। उनको बैठक में पहुँचा ही दिया गया। 5 डूप्लेक्स रोड पहुँचने पर चौधरी ने देखा कि मोरारजी पहले से ही इस तरह बर्ताव कर रहे हैं मानो वही विरोधी दलों के जमघट के अध्यक्ष हों।

बैठक से वापस आने पर चरणसिंह के समर्थकों ने कहा, "आप इस बेइज्जती को कब [illegible] करें।" उनकी दलील थी कि जे० पी० कभी [illegible] पार्टी का नेता नहीं बनायेंगे। [illegible] इसका कारण भी बताया—आपने हमेशा जे० पी० के आंदोलन का विरोध [illegible] के तरीकों से आपका मतभेद रहा, सम्पूर्ण क्रांति के मसौदे की असलियत [illegible] खिलायी और आप दोनों के नजरिये में ज़मीन-आसमान का फर्क है। उन लोगों ने सुझाव दिया, "साफ़ साफ़ कह दीजिये कि आप इस तरह के विलय से सहमत नहीं हैं, केवल चुनाव-समझौता ही हो सकता है।"

चरणसिंह अपने समर्थकों की बात मानने को तैयार थे, लेकिन इससे जन-मन पर बुरा असर पड़ सकता था। यही सोचकर वह दुविधा में पड़े रहे। उन्होंने सोचा कि आज अगर मैं किनारा कर जाता हूँ तो सारे लोग मुझे थू-थू करने लगेंगे और बहुत मुमकिन है कि मेरे कुछ राजनीतिक साथी भी मेरा साथ न दें। लेकिन पार्टी के नेतृत्व का सवाल तो मैं उठाऊँगा ही—ऐसे ही नहीं छोड़ दिया जायेगा।

और अगली बैठक में उन्होंने यह सवाल उठा भी दिया, 'पहले लीडरशिप का सवाल तय हो जाना चाहिए।' सोशलिस्ट नेता एस० एम० जोशी लपककर चरणसिंह के पास पहुँचे और उन्हें उठाकर बाहर लान में ले गये। चरणसिंह ने उनसे कहा कि यह तो बहुत ही अनुचित है कि लीडरशिप के सवाल को ऐसे ही लटका दिया जाये। मुझे इस बात में कोई ऐतराज़ नहीं होगा कि यह मसला जयप्रकाशजी पर छोड़ दिया जाये। उन्हें तब तक यह उम्मीद थी कि अंत में [illegible] सर्वोदयी नेता उनको ही पसंद कर लें। जोशी ने फौरन जेब से एक चिट्ठी निकाली। यह जे० पी० की चिट्ठी थी, जिसमें लिखा था कि वह मोरारजी देसाई को नयी पार्टी का अध्यक्ष बनाना चाहते हैं।

दो-तीन दिन बाद ही, 23 जनवरी, 1977 को, मोरारजी देसाई के ड्राइंग रूम में पत्रकारों और कैमरामैनों की भीड़ का शोर गुल गूंज रहा था—वे इस अप्रत्याशित आज़ादी से फूले नहीं समा रहे थे और हँसी मज़ाक में तल्लीन थे। आज जनता पार्टी के गठन का एलान किया जाना था। दीवान के बीचोबीच जे० पी० बैठे थे, जो बीमार और कमजोर लग रहे थे। उनके चेहरे पर सूजन थी,

[illegible]

पर वे काफी खुश नज़र आ रहे थे। उनके एक तरफ मोरारजी देसाई और दूसरी तरफ चौधरी चरणसिंह बैठे हुए थे, जो नयी पार्टी के क्रमश: अध्यक्ष और उपाध्यक्ष थे। बैठक के दौरान उत्तर प्रदेश के इस दिग्गज के मुख से एक शब्द भी नही निकला। वह खिन्न मन से खामोश बैठे रहे। केवल उनकी तीखी संदेह-भरी आँखें चारो तरफ घूम रही थी। कोई भी महसूस कर सकता था कि यह सब कुछ उनके गले नही उतर रहा था। उनके दु:खो का प्याला भरा हुआ लग रहा था।

यू० पी० निवास लौटने पर वह रो पडे और अपने समर्थकों की ओर मुखातिब होते हुए बोले "सारी ज़िंदगी की कमाई बर्बाद हो गयी। अब मुझे सी० बी० गुप्ता जैसे लोगो के लिए वोट मांगना पडेगा।" गुस्से से उनका चेहरा तमतमा रहा था।

चौधरी के समर्थकों ने एक नया तरीका ढूढ निकाला, 'अच्छा तो सारे उत्तर भारत मे टिकटो का बँटवारा आपके हाथो होना चाहिए।" यह बात चरणसिंह को जँच गयी। आखिरकार चुनाव के बाद की स्थिति ही ज्यादा मायने रखती है। वह अपने भरोसे के लोगो को टिकट न दे सकें और वे लोग चुनाव जीत न जाये तो महज पार्टी का अध्यक्ष बन जाने से कोई फायदा नही। उनके पुराने राज-नीतिक साथी उडीसा के बीजू पटनायक ने चरणसिंह के इस नये फार्मूले को मोरारजी देसाई तथा पार्टी की राष्ट्रीय समिति के सदस्यो तक पहुँचा दिया। उन लोगो ने इसे मंजूर कर लिया।

चरणसिंह को पूरी तरह तो नही लेकिन कुछ हद तक तसल्ली हुई। चौधरी को खुश करने और साथ ही लोक सभा का टिकट बाटने [illegible] की मेहर-बानी पाने के लिए जन संघ के दो वरिष्ठ नेताओ ने कहा [illegible]रारजी भाई को तो डी० के० बरुआ बनाया है, इंदिरा तो आप होंगे।"

जनता पार्टी को जन्म दिया इंदिरा गाधी ने। भले ही यह उनकी इच्छा न रही हो। जनता नींद मे बेसुध दानव की तरह एक साथ जाग उठी और उसने जनता पार्टी का झण्डा उठा लिया। आपात स्थिति की तकलीफें और विपक्ष का दमन नही होते तो शायद जनता पार्टी का गठन एक सपना ही बना रहता। ऐसा लगता है, गोया भारत एक बंद कमरा हो जिसकी खिडकी अचानक खुल गयी हो और ताजा हवा का एक झोंका अंदर आ गया हो। देखते देखते इस झोंके ने तेज हवा फिर आधी और अंत मे बवंडर का रूप ले लिया और जब तक लोग होश सभालें, सारे दिग्गज महारथियो के पाँव ज़मीन से उखड गये। कुछ ही हफ्तो के अंदर अँधेरे से घिरे हुए विरोधी नेता निराशा के दलदल से निकलकर अभूतपूर्व विजय शिखर पर पहुँच गये। राजसत्ता उन्हें बिना मांगे ही मिल गयी। विजेता और पराजित, दोनो ही लोग समान रूप से चकित थे। विजय की उस घडी मे जयप्रकाश नारायण ने कहा, 'अगर जन-उभार नही होता तो एक हज़ार जे० पी० भी इस तरह की सफलता नही हासिल कर पाते।"

तत्कालीन विरोधी नेता वर्षों से प्रयत्नशील थे, उन्होंने हर तरह के जोड तोड आज़मा लिये थे—सयुक्त मोर्चा, महागँठबंधन, जनता मोर्चा, आधा तीतर आधा बटेर—लेकिन कोई दाव-पेंच नही चला। वे कभी कभी कांग्रेसी सत्ता के इर्द गिर्द चक्कर तो काट पाते, पर उसका एक अंश भी कभी न पा सके।

1967 के चुनाव मे गैर कांग्रेसवाद को कुछ हद तक कामयाबी मिली, लेकिन साल खत्म होने से पहले ही एक एक करके 9 राज्यों मे सरकारें उनके हाथो से

वफादार सिपहसालारो ने इस चाल को समझ लिया था और वे बार बार चौधरी साहब को इन वायदों में न फँसने के लिए आगाह कर रहे थे।

20 जनवरी 1977 को जब मोरारजी देसाई के निवास स्थान, 5 डुप्लेक्स रोड पर विरोधी दलों की पहली बैठक हुई तो चौधरी के समर्थकों ने उनसे आग्रह किया "आप मत जाइए, वे लोग आपको कभी भी पार्टी अध्यक्ष नहीं बनायेंगे।" देसाई को भी उस दिन एक संवाददाता सम्मेलन में भाग लेना था। चरणसिंह के आदमियों ने कहा 'विरोधी दलों के असली नेता मोरारजी बनेंगे और अगर आप वहां मौजूद रहे तो आपको भी शर्माशर्मी अपनी मंजूरी देनी पड़ेगी।" चरणसिंह पशोपेश में पड़ गये पर ऐन मौके पर जन संघ के दो नेता अटलबिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी भागते हुए यू० पी० निवास पहुँचे और चरणसिंह को फुसलाया— विरोधी दलों की कोई कारगर बैठक आपके बिना कैसे हो सकती है ? विरोधी दलों के विलय की दिशा में आज तक जितने प्रयास हुए हैं उनमें आप भी तो एक प्रेरणा-स्रोत थे।" भारतीय लोक दल के तीसमारखां किंतु भोले भाले अध्यक्ष राजी हो गये। उनको बैठक में पहुँचा ही दिया गया। 5 डुप्लेक्स रोड पहुँचने पर चौधरी ने देखा कि मोरारजी पहले से ही इस तरह बर्ताव कर रहे हैं मानो वही विरोधी दलों के जमघट के अध्यक्ष हों।

[illegible] से वापस आने पर चरणसिंह के समर्थकों ने कहा "आप इस बेइज्जती को [illegible] करें।" उनकी दलील थी कि जे० पी० कभी उन्हें पार्टी का नेता नहीं बनायेंगे। [illegible] इसका कारण भी बताया—आपने हमेशा जे० पी० के आंदोलन का विरोध [illegible] के तरीकों से आपका मतभेद रहा, 'संपूर्ण क्रांति' के मखौल की असलियत आ[illegible] [illegible]खलायी, और आप दोनों के नजरिये में जमीन-आसमान का फर्क है। उन लोगों ने सुझाव दिया साफ साफ कह दीजिए कि आप इस तरह के विलय से सहमत नहीं हैं केवल चुनाव समझौता ही हो सकता है।"

चरणसिंह अपने समर्थकों की बात मानने को तैयार थे लेकिन इससे जन मत पर बुरा असर पड़ सकता था। यही सोचकर वह दुविधा में पड़े रहे। उन्होंने सोचा कि आज अगर मैं किनारा कर जाता हूँ तो सारे लोग मुझे थू थू करने लगेंगे और बहुत मुमकिन है कि मेरे कुछ राजनीतिक साथी भी मेरा साथ न दें। लेकिन *पार्टी के नेतृत्व का सवाल तो मैं उठाऊँगा [illegible]—ऐसे ही नहीं छोड़ दिया जायगा।*

और अगली बैठक में उन्होंने यह सवाल उठा भी दिया, पहले लीडरशिप का सवाल तय हो जाना चाहिए।" सोशलिस्ट नेता एस० एम० जोशी लपककर चरणसिंह के पास पहुँचे और उन्हें उठाकर बाहर लॉन में ले गये। चरणसिंह [illegible] उनसे कहा कि यह तो बहुत ही अनुचित है कि लीडरशिप के सवाल को ऐसे ही लटका दिया जाय, मुझे इस बात में कोई ऐतराज नहीं होगा कि यह मसला जयप्रकाशजी पर छोड़ दिया जाये। उन्हें तब तक यह उम्मीद थी कि अंत में [illegible] सर्वोदयी नेता उनको ही पसंद कर लें। जोशी ने फौरन जेब से एक चिट्ठी निकाली। यह जे० पी० की चिट्ठी थी, जिसमें लिखा था कि वह मोरारजी देसाई को नयी *पार्टी का अध्यक्ष बनाना चाहते हैं।*

दो-तीन दिन बाद ही, 23 जनवरी, 1977 को मोरारजी देसाई के ड्राइंग रूम में पत्रकारों और कैमरामैनों की भीड़ का शोर-गुल गूंज रहा था—वे इस अप्रत्याशित आजादी से फूले नहीं समा रहे थे और हँसी मजाक में तल्लीन थे। आज जनता पार्टी के गठन का एलान किया जाना था। दीवान के बीचोबीच जे० पी० बैठे थे जो बीमार और कमजोर लग रहे थे। उनके चेहरे पर सृजन थी,

पर वे काफी खुश नजर आ रहे थे। उनके एक तरफ मोरारजी देसाई और दूसरी तरफ चौधरी चरणसिंह बैठे हुए थे, जो नयी पार्टी के क्रमश अध्यक्ष और उपाध्यक्ष थे। बैठक के दौरान उत्तर प्रदेश के इस दिग्गज के मुख से एक शब्द भी नही निकला। वह खिन्न मन से खामोश बैठे रहे। केवल उनकी तीखी सदेह भरी आँखें चारो तरफ घूम रही थी। कोई भी महसूस कर सकता था कि यह सब कुछ उनके गले नही उतर रहा था। उनके दुखो का प्याला भरा हुआ लग रहा था।

यू० पी० निवास लौटने पर वह रो पडे और अपने समर्थकों की ओर मुखातिब होते हुए बोले, "सारी जिंदगी की कमाई बर्बाद हो गयी। अब मुझे सी० बी० गुप्ता जैसे लोगो के लिए वोट माँगना पडेगा।" गुस्से से उनका चेहरा तमतमा रहा था।

चौधरी के समर्थकों ने एक नया तरीका ढूढ निकाला 'अच्छा तो सारे उत्तर भारत म टिकटो का बँटवारा आपके हाथो होना चाहिए।" यह बात चरणसिंह को जँच गयी। आखिरकार चुनाव के बाद की स्थिति ही ज्यादा मायने रखती है। वह अपने भरोसे के लोगो को टिकट न दे सकें और वे लोग चुनाव जीत न जाये तो महज पार्टी का अध्यक्ष बन जाने से कोई फायदा नही। उनके पुराने राजनीतिक साथी उडीसा के बीजू पटनायक ने चरणसिंह के इस नये फार्मूले को मोरारजी देसाई तथा पार्टी की राष्ट्रीय समिति के सदस्यो तक पहुँचा दिया। उन लोगो ने इसे मजूर कर लिया।

चरणसिंह को पूरी तरह तो नही लेकिन कुछ हद तक तसल्ली हुई। चौधरी को खुश करने और साथ ही लोक-सभा का टिकट बाँटने [illegible] शक्ति की मेहरबानी पाने के लिए जन सघ के दो वरिष्ठ नेताओ ने कहा 'मोरारजी भाई को तो डी० के० बरुआ बनाया है, इदिरा तो आप होंगे।"

जनता पार्टी को जन्म दिया इदिरा गाधी ने। भले ही यह उनकी इच्छा न रही हो। जनता नीद मे बेसुध दानव की तरह एक साथ जाग उठी और उसने जनता पार्टी का झण्डा उठा लिया। आपात स्थिति की तकलीफें और विपक्ष का दमन नही होते तो शायद जनता पार्टी का गठन एक सपना ही बना रहता। ऐसा लगता है, गोया भारत एक बद कमरा हो जिसकी खिडकी अचानक खुल गयी हो और ताजा हवा का एक झोंका अदर आ गया हो। देखते देखते इस झोंके ने तेज हवा फिर आँधी और अत मे बवडर का रूप ले लिया और जब तक लोग होश सभालें, सारे दिग्गज महारथियो के पाँव जमीन से उखड गये। कुछ ही हफ्तो के अदर अँधेरे से घिरे हुए विरोधी नेता निराशा के दलदल से निकलकर अभूतपूर्व विजय शिखर पर पहुँच गये। राजसत्ता उन्हे बिना माँगे ही मिल गयी। विजेता और पराजित, दोनो ही लोग समान रूप से चकित थे। विजय की उस घडी मे जयप्रकाश नारायण ने कहा, 'अगर जन उभार नही होता तो एक हजार जे० पी० भी इस तरह की सफलता नही हासिल कर पाते।"

तत्कालीन विरोधी नेता वर्षो से प्रयत्नशील थे, उन्होंने हर तरह के जोड-तोड आजमा लिये थे—सयुक्त मोर्चा, महागठबधन, जनता मोर्चा, आधा तीतर आधा बटेर—लेकिन कोई दाव-पेंच नही चला। वे कभी कभी कांग्रेसी सत्ता के इर्द गिर्द चक्कर तो काट पाते, पर उसका एक अश भी कभी न पा सके।

1967 के चुनाव मे गैर कांग्रेसवाद को कुछ हद तक कामयाबी मिली, लेकिन साल खत्म होने से पहले ही एक एक करके 9 राज्यो मे सरकारें उनके हाथो से

निकलने लगी। 1967 की संयुक्त मोर्चा सरकारों के गिरने की वजह इंदिरा गांधी और उनके आदमियों की तरह तरह की तिकड़मों से ज्यादा इन दलों के अंतर्विरोध थे। अधिकतर सरकारें आपसी कटुता की वजह से टूटीं।

फिर भी कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा बनाने की कोशिशें कभी छोड़ी नहीं गयीं। कई लोग अपने-अपने तरीके से प्रयत्न करते रहे। सबकी अपनी एक अलग निराशा की कहानी है कि किसने कितनी मेहनत की किस तरह से इन प्रयासों को ध्वस्त किया गया। हर एक के अपने विचार हैं और विभिन्न विचारों के लोगों को एक मंच पर इकट्ठा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालने से कोई नहीं चूकता।

1969 के शुरू के दिनों की बात है। पीलू मोदी ने एक दिन मोरारजी देसाई को टेलीफोन किया। उस समय देसाई अविभाजित कांग्रेस सरकार के वित्त मंत्री थे। मोरारजी काम के बोझ से लदे हुए थे फिर भी उन्होंने टेलीफोन उठा लिया। स्वतंत्र पार्टी के बातूनी और भारी भरकम नेता मोदी ने मोरारजी से पूछा, "आपको कभी फुरसत भी रहती है! थोड़ा समय निकालिये तो मुझे आपसे पूरा एक घंटा बातचीत करनी है। जब समय हो तो मुझे बता दीजिये।"

कुछ दिनों बाद पीलू ने मोरारजी से बातचीत करते हुए दाना फेंका। पीलू मोदी ने कहा कि इस तरह बहुत दिन नहीं चलेगा और नये सिरे से मोर्चेबंदी की जरूरत है। मोरारजी भी सुखद स्थिति में नहीं थे। संसद में उन पर लगातार हमले हो रहे थे। सोशलिस्ट नेता मधु लिमये ने मोरारजी के पुत्र कांतिलाल देसाई के खिलाफ जेहाद बोल रखा था। यहां तक कि खुद उनकी पार्टी के चंद्रशेखर भी जो उन दिनों युवा तुर्क' बनने की प्रक्रिया में थे, बार बार यह आरोप लगा रहे थे कि बिड़ला के मामलों की जांच में मोरारजी रुकावट बन रहे हैं। सबसे ज्यादा चिढ़ उन्हें यह हो रही थी कि इंदिरा गांधी एक अजीब दोतरफा रवैया' अख्तियार कर रही थीं। मोरारजी महसूस कर रहे थे कि इंदिरा गांधी 'अपने समर्थकों को इतने ओछे ढंग से खुलेआम मेरी आलोचना करने से नहीं रोक रही हैं।' इंदिरा गांधी तो उल्टे इस आलोचना को शह दे रही थीं।

पीलू मोदी ने कहा कि उनकी समझ में नहीं आता कि मोरारजी कैसे यह सब बर्दाश्त कर रहे हैं। उन्होंने मोरारजी पर आरोप लगाया कि आप इंदिरा गांधी के साथ आंख मिचौनी खेल रहे हैं। जाहिर था कि वह मोरारजी को इंदिरा गांधी के खिलाफ कोई बड़ा कदम उठाने के लिए उकसा रहे थे, लेकिन उनकी चाल बेकार रही। मोरारजी ने बड़ी संजीदगी के साथ जवाब दिया 'मैं अब इतना बूढ़ा हो चुका हूं कि किसी नयी पार्टी को बनाना मेरे बस का काम नहीं है। महात्मा गांधी यह कर सकते थे—मैं इस काबिल नहीं हूं।'

आगे चलकर हालात ऐसे पैदा हुए कि मोरारजी और उनके साथियों को अलग-अलग रास्ते अख्तियार करने पड़े। 1971 के लोकसभा चुनावों से पूर्व संगठन कांग्रेस, जन संघ और स्वतंत्र पार्टी के नेताओं की बैठक चण्डीगढ़ में हुई जिसमें इन पार्टियों ने चुनाव लड़ने के लिए एक गठबंधन किया। इसमें सोशलिस्टों को शामिल नहीं किया गया लेकिन बाद में बिहार में संगठन कांग्रेस के कुछ लोगों ने इस बात पर जोर दिया कि सोशलिस्टों को अलग रखकर कोई गठजोड़ नहीं किया जाना चाहिए। कुछ लोगों ने तो संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष एस० निजलिंगप्पा को घेरकर सोशलिस्टों को शामिल करने के लिए मजबूर कर दिया। इस प्रकार अपना गठबंधन 'प्रदूषित' किये जाने पर कई स्वतंत्र पार्टी वाले व जन संघ

के लोग आग बबूला हो गये। उनके गँठबंधन को 'महान समझौता' (ग्रैण्ड अलॉयंस) कहा जाने लगा—जले भुने अंदाज में जन संघ के एक भूतपूर्व अध्यक्ष बलराज मधोक ने, जो बाद में अपनी पार्टी से अलग हो गये, कहा कि यह गँठजोड़ "न महान है, न समझौता ही।"

चुनाव परिणामों से देखा जाये तो सचमुच ही उसमें महान कुछ भी नहीं था। पार्टियों के आपसी समझौता का बुरी तरह से उल्लंघन किया गया था। बात बढ़ायी-चढ़ायी न जाये तो भी कहना पड़ेगा कि सभी ने एक-दूसरे को धोखा दिया। बिलकुल रंग में भंग हो गया। 1971 में ऐसी हवा बँधी कि लगभग एक वर्ष तक विपक्ष की सारी राजनीति असमंजस की अवस्था में रही। जैसा कि पीलू मोदी ने कहा, "मैं एक सोफे पर पड़ा छत की ओर देखा करता था। मैं इस्तीफा देने लगा था। फिर हममें से कुछ सदस्य संसद में संगतराशों की तरह हथौड़ियाँ व छेनियाँ लेकर उनकी (इंदिरा की) भारी भरकम नाक को दुरुस्त करने में लग गये।"

उत्तर प्रदेश में चरणसिंह अपने घावों को सहलाने में लगे थे। उनकी पार्टी भारतीय क्रांति दल, 1971 के चुनाव में अकेले ही लड़ी थी और स्वयं चरणसिंह अपने गढ़ मुजफ्फरनगर में—जो जाटों के इलाके का केन्द्र है—बुरी तरह हार गये थे। उनको अपने ठोस और अजेय किले पर गर्व था और उसका हाथ से निकल जाना उनके लिए भूल सकना मुश्किल था। वह अपने दल के भविष्य के बारे में हतोत्साहित, निराश और विक्षुब्ध थे। दल बदल और छल-बदल के जरिये जो 1967 के बाद की विशेषता बन गये थे, चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री पद दो बार हथियाने में सफलता पा ली थी। 1969 के मध्यावधि चुनाव में उन्हें आशानुकूल काफी सफलता मिली थी और भारतीय क्रांति दल को विधान-सभा में 99 सीटें हासिल हुई थीं। लेकिन 1973 तक खुद उनके ही द्वारा शुरू की गयी प्रक्रिया का नतीजा यह हुआ कि उनकी पार्टी के सदस्य घटकर केवल 42 रह गये और इस प्रकार विपक्षी दल के रूप में मान्यता पाने के लिए भी एक सीट की कमी रह गयी। एक निर्दलीय सदस्य भानुप्रतापसिंह की मदद से वह अपने को एक बिना पार्टी का नेता बन जाने की शर्म से बचा सके।

1974 के विधान सभा चुनाव नजदीक आने पर चरणसिंह संयुक्त विरोधी दल बनाने के लिए चिंतित हुए। बीजू पटनायक, जो एक रंगीन हस्ती हैं, उनकी मदद के लिए लखनऊ पहुँचे ताकि चरणसिंह और संगठन कांग्रेस के राज्य नेता चंद्रभानु गुप्ता के बीच कोई तालमेल बिठा सकें। दिल्ली से अशोक मेहता पहुँचे, जो पी० एस० पी० से इन्दिरा गांधी के मोह-जाल से होते हुए संगठन कांग्रेस की अध्यक्षता तक का लम्बा सफर तय कर चुके थे। समझौते की बड़ी कोशिशें की गयी लेकिन उत्तर प्रदेश के दो दिग्गजों—चरणसिंह और चंद्रभानु गुप्ता के अक्खड़पन और आपसी वैमनस्य के बीच कोई कमी नहीं आ सकी। दोनों के मिलने की कोई सूरत ही नहीं बन पायी। दोनों में से कोई भी दूसरे के नीचे काम करने को तैयार नहीं था। सी० बी० गुप्ता से पूछा गया कि यदि राज्य में संयुक्त विरोधी दल के नेता के रूप में और इस दल के चुनाव में जीत जाने की हालत में मुख्यमंत्री के रूप में चरणसिंह को नियुक्त किया जाये तो उन्हें कोई एतराज होगा? सी० बी० गुप्ता ने संवाददाताओं को जवाब दिया, 'चरणसिंह और उनके साथी सबसे पहले संगठन कांग्रेस में शामिल हों बाद में हमारी पार्टी तय करेगी कि नेता किसे बनाया जाय।"[3] उनका ख्याल था कि

न्याहरी लोगो की समझौते की कोशिश मे लगने की कोई जरूरत नही है, क्योंकि इससे कोई फायदा नही होगा। "हम कोई शर्मीले नव विवाहित दम्पत्ति नही है, जिन्हे एक दूसरे के नजदीक आने के लिए औरो की मदद की जरूरत हो। किसी तरह की कारगर बातचीत तभी हो सकती है जब श्री अशोक मेहता और श्री बीजू पटनायक जैसे दोस्त चले जायें।" काफी निराश होकर बीजू पटनायक वापस लौट गये।

फरवरी 1973 म बीजू पटनायक ने जयप्रकाश नारायण से भेंट की और उनसे अनुरोध किया कि वह एक अखिल भारतीय मोर्चे का नेतृत्व करें जो काग्रेस का विकल्प बन सके। लेकिन जे० पी० न फौरन ही उनके उत्साह को ठडा कर दिया। वह इस बात से सहमत थे कि मनुष्य की स्वतनता और जनतत्र के प्रति निष्ठित कोई भी व्यक्ति देश की मौजूदा राजनीतिक हालत को देखकर खुश नही हो सकता। फिर भी वह बीजू पटनायक के प्रस्ताव को स्वीकार नही कर सके, क्योंकि उनका विश्वास था कि जब तक 'सिद्धाता के आधार पर और अवसरवाद स मुक्त होकर' कोई मोर्चा नही बनता, उसे सफलता नही मिल सकती। उन्होंने जोर दिया कि इस तरह के मोर्चे को 'इन्दिरा हटाओ' जैसे नकारात्मक उद्देश्यो तक सीमित नही रहना होगा—जनता के सामने उसे ठोस नीति और कार्यक्रम पश करने होग।"[1] घटनाओ का प्रवाह कुछ ऐसा रहा कि बाद मे जयप्रकाश को एक ऐसे मिले जुले विरोधी मोर्चे की अगुवाई करनी पडी जिसका एकमात्र उद्देश्य था—इन्दिरा हटाओ। जनता के सामने कोई ठोस कायक्रम पेश करने का मौका यदि जनता पार्टी को मिला तो वह इन्दिरा गाधी के कुकर्मों के कारण ही मिल सका।

जे० पी० बहुतो के लिए और शायद अपने लिए भी एक पहेली रहे ह। व कई रास्तो पर चले हैं, लेकिन लगभग हर बार वह एक बद गली मे ही पहुँच गये हैं। लेनिनवाद और माक्सवाद से लेकर समाजवाद होते हुए विनोबा के भूदान और जीवनदान तक जे० पी० ने बडे बीहड रास्तो को तय किया जिसका औचित्य उनके समथको और अनुयायियो तक की समझ म भी आसानी से नही आता। 1975 म जेल म लिखी एक कविता म उन्होने कहा

> सफलताएँ जब कभी आयी निकट,
> दूर ठेला है उन्हे निजी माग से।
> तो क्या वह मूखता थी ?
> नही।
> जग जिन्हे कहता विफलता
> थीं शोध की वे मजिलें।

जे० पी० एक ऐसे भिन्न मतावलम्बी व्यक्ति हैं जिनके बारे मे यह कह सकना मुश्किल लगता है कि वह क्या चाहते हैं। हार हुए पक्षो का झडा उठाने मे मानो उनको विचित्र आनन्द प्राप्त होता है। 1930 वाले दशक म काग्रेस स सबध टूटने के बाद जयप्रकाश नारायण देश की राजनीति की मुख्य धारा मे ही नही बल्कि आजादी प्राप्ति के बाद की वास्तविकताओ म भी लगातार अलग-थलग पडते गये थे। प्राय वह जनता और पपीहा की धरती के यात्री बनते थे।

'भारत छोड़ो'-आंदोलन के चमचमाते सितारों में से एक तथा युवकों के आदर्श जे० पी० का सत्ता पर कभी अधिकार नहीं रहा। लेकिन अपने जीवन में वह कभी सत्ता के खेल से बाहर भी नहीं रहे, हालांकि उनका एक दूसरी तरह की राजनीति में विश्वास रहा। काफी पहले, 1963 में उन्होंने एक अमेरिकी पत्रकार से कहा भी था कि "पार्टी और राजनीति" से रिटायर होने की घोषणा के बावजूद वह 'सर से पांव तक" राजनीति से सराबोर हैं और इसके 'समूचे स्वरूप को बदलने की कोशिश में लगे हैं।"[5] यह बहुत स्वाभाविक था कि जे० पी० धीरे धीरे जवाहरलाल नेहरू से दूर होते गये, जो एक ऐसी घटिया राजनीति में सर से पांव तक डूबे थे जिसमें जे० पी० को जाहिरा तौर पर नफरत थी। 1948 में, जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भारत का भावी प्रधानमंत्री' कहा था पर 1955 तक जे० पी० को नेहरू एक बवालेजान समझने लगे थे। इसके अलावा उस समय तक नेहरू अपने उत्तराधिकारी के रूप में दूसरे लोगों के बारे में सोचने लगे थे—उन लोगों के बारे में जो उनके ज्यादा नजदीक थे। उन्होंने जे० पी० पर आरोप लगाना शुरू किया कि वह 'राजनीति और भूदान के खंभों के पीछे लुका छिपी खेल रहे हैं।"

दोनों नेताओं के बीच कभी प्यार और कभी नफरत वाला विचित्र संबंध था, जो कम-से-कम एक हद तक राजनीति की मुख्य धारा से जे० पी० के अलगाव पर तो रोशनी डालता ही है, आजादी बाद के वर्षों में जे० पी० ने जो कुछ कहा और किया उस पर भी प्रकाश डालता है। इस नेता के व्यक्तित्व को पूरी तरह समझने के लिए—जिसको आज कुछ लोग भारत का 'दूसरा गांधी' कहकर जयजयकार करते हैं—हमें आजादी के आंदोलन के दिनों पर गौर करना पड़ेगा, जब जे०पी० उग्र युवा क्रांतिकारी थे और जवाहरलाल नेहरू के बाद दूसरे स्थान पर समझे जाते थे। नेहरू-परिवार के संदर्भ से अलग करके जे० पी० को समझना मुश्किल है और यह सच्चाई भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि आजादी के आंदोलन के काफी शुरू के वर्षों में ही नेहरू महात्मा गांधी के काफी 'चहेते' बन गये थे। जे० पी० के राजनीतिक जीवन के अधिकांश भाग की रचना में इतिहास की इस सच्चाई की महत्वपूर्ण भूमिका है।

जे० पी० ने महात्मा गांधी के आह्वान पर तीसरे दशक के शुरू के वर्षों में कालेज छोड़ दिया था। जवाहरलाल उनसे तेरह साल बड़े ही नहीं थे एक अति समृद्ध घराने में पैदा भी हुए थे जिसका उन्हें लाभ मिलता रहा। उनकी देखभाल के लिए एक पढ़ी लिखी अंग्रेज आया थी और उनकी शिक्षा हैरो तथा कैम्ब्रिज में हुई थी। वह अच्छी अंग्रेजी लिख बोल सकते थे और शुरू से ही उन्हें नेतृत्व की अगली कतार में डाल दिया गया था। जयप्रकाश भी काफी आकर्षक और खूबसूरत थे—इतने खूबसूरत कि आज भी बिहार के बुजुर्ग लोग उनके आकर्षक व्यक्तित्व की चर्चा करते हैं। लेकिन वह सभ्यता की होड़ में पिछड़े हुए बिहार-यू० पी०-सीमा के एक गांव सिताबदियारा के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए थे। फिर भी जे० पी० इन विषम स्थितियों में जकड़े जाने वाले नहीं थे। उन्होंने विभिन्न स्रोतों से कुछ पैसा इकट्ठा किया, अपनी जवान पत्नी को कस्तूरबा के जिम्मे छोड़ा और अमेरिका के लिए रवाना हो गये जहां उन्होंने आठ वर्ष तक भीषण संघर्ष किया और शिक्षा प्राप्त की। उनकी पत्नी प्रभावती महात्मा गांधी के जबरदस्त अनुयायी डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के एक बहुत नजदीकी मित्र की पुत्री थीं। लेकिन चमकती आंखों वाले पथिक जे० पी० उग्र मार्क्सवादी बन चुके थे

और उन्होंने एक मौके पर गांधी को "कमजोर आर्थिक विश्लेषण, अच्छे इरादों और फालतू नसीहतों के दलदल में फँसा बुर्जुआ सुधारवादी' बताया था।

गांधी के आलोचक होने के बावजूद जे० पी० हमेशा झुककर गांधी के पाँव छूते थे—जे० पी० के मित्र मीनू मसानी इस आदत पर अक्सर उन्हें चिढ़ाते भी थे। मसानी उन्हें 'हिंदू मार्क्सवादी' कहते थे—यह जे० पी० के व्यक्तित्व में समाये तमाम परस्पर विरोधी तत्वों में से महज एक तत्व था। उस समय भी उनके अन्दर भावी गांधीवादी होने के बीज मौजूद थे। बुद्धिमान लोगों की निगाह में जे० पी० और गांधी के स्नेहयुक्त संबंध छिपे नहीं थे। गांधी और कस्तूरबा के लिए प्रभावती बेटी की तरह थी और इसीलिए जे० पी० को वे अपने दामाद जैसा मानते थे। फिर भी उनके संबंधों में एक तरह की मनोवैज्ञानिक अड़चन थी और यह शायद जवाहरलाल के साथ गांधी के विशेष संबंधों की वजह से थी। शायद महात्मा गांधी भी नेहरू परिवार की चमक दमक से चौंधिया गये थे।

जवाहरलाल की मृत्यु होने तक जे०पी० प्रधानमंत्री बनने की मंजिल से गुजर चुके थे। अब यह पद उनकी तुलना में बहुत छोटे लोगों के हाथों में पहुँच चुका था (इनमें इंदिरा गांधी भी शामिल हैं जो अपने मंत्रिमंडल में 'एकमात्र मर्द' थीं)। अब उन्हें इस पद की ख्वाहिश भी नहीं थी। इस पद के लिए कोशिश करना भी शायद उनकी शान के खिलाफ था। उन्होंने 'भारत-रत्न' पाने की इच्छा भी नहीं जाहिर की। छोटे लोगों द्वारा दी जाने वाली उपाधियां भी उनके लिए नहीं थीं। जब उन्हें कोई और ऊँची चीज चाहिए थी और उसी तलाश में वह कभी एक धर्म-कार्य हाथ में लेते, कभी दूसरा। 1970 का दशक आते-आते वह काफी थकान और ऊब महसूस करने लगे थे। वह नहीं समझ पा रहे थे कि उनके कामों से कुछ हासिल होगा या नहीं। वह कुछ देर के लिए हर काम से छुट्टी पाना चाहते थे—शायद इसलिए कि वह अपने भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा बना सकें। अक्तूबर 1972 में उन्होंने घोषणा की, "मैं चाहता हूँ कि मुझे एकदम अकेला छोड़ दिया जाय ताकि मैं आराम कर सकूं, कुछ सोच सकूं और लिख पढ़ सकूं।"

इसी एक साल के 'एकांतवास' के दौरान बीजू पटनायक ने जे० पी० को इंदिरा गांधी के खिलाफ खुली मुठभेड़ में खींच लाने की कोशिश की। जे० पी० का विचार था कि अभी वह समय नहीं आया था।

फरवरी 1974 में उत्तर प्रदेश के चुनाव आ गये जिनसे देश की हाल की राजनीति का इतिहास बदल गया। तब तक संसद में प्रतिपक्ष के नेताओं ने अपनी छोटी हथौड़ी और छेनी से धीरे धीरे किंतु मजबूती के साथ, उस भारी भरकम 'नाक' पर प्रहार करके उस पोंगा बटोर कर दिया था। 1971 के चुनाव के बाद इंदिरा को जो ताकत मिली थी उसमें तेजी से कमी आती जा रही थी। उनके 'गरीबी हटाओ' नारे का खोखलापन जग जाहिर हो रहा था। हर तरफ से उनकी लोकप्रियता कम होती नजर आ रही थी। दूसरी ओर ऐसा लगता था कि विरोधी दल 1971 की अपनी करारी हार भूल गये थे। उनके अंदर उम्मीद की एक नयी लहर दौड़ रही थी। उन्होंने इंदिरा के खिलाफ व्यापक और खुलमखुल्ला संघर्ष छेड़ने के लिए अपनी आस्तीनें चढ़ा ली थीं और उत्तर प्रदेश को अपनी पहली रण भूमि बनाने पर तुले हुए थे।

अप्रैल 1973 में मोरारजी देसाई जनता में जोशीले लफ्जों में अपील कर रहे

थे कि इन्दिरा गांधी का तख्ता पलट दें। उन्होंने भविष्यवाणी की कि उत्तर प्रदेश के चुनाव में इन्दिरा गांधी के भाग्य का फैसला हो जायेगा। इन्दिरा गांधी की हार होगी और एक राष्ट्रीय सरकार या, ज्यादा बेहतर सरकार का, गठन होगा।[8]

लगभग उन्हीं दिनों पीलू मोदी मद्रास की जनता को बता रहे थे कि उनकी पार्टी ने यू० पी० के चुनावों को "जोरदार ढंग" से लड़ने का फैसला किया है, क्योंकि 'हम मानते हैं कि दिल्ली की चाबी यू० पी० ही है।'

सबसे ज्यादा शोर जन संघ मचा रहा था और दावा कर रहा था कि वह कांग्रेस से सीधी मुठभेड़ के लिए अब तैयार है। पार्टी के अध्यक्ष एल० के० आडवाणी ने कानपुर में हिम्मत के साथ कहा कि उत्तर प्रदेश के अगले चुनाव जन संघ के लिए परीक्षा की घड़ी होंगे।[9]

चौधरी चरणसिंह कब पीछे रहने वाले थे! संगठन कांग्रेस के साथ उन्हें नाकामयाबी मिली थी, क्योंकि सी० बी० गुप्ता उनके गुप्त किंतु स्पष्ट इरादों को मानने वाले नहीं थे—चौधरी साहब चाहते थे कि उत्तर प्रदेश के अगले मुख्यमंत्री वह खुद बनें और संयुक्त दल के नेता भी वही रहें। व्यक्तित्व पर आधारित पार्टी में उनका विश्वास था और वह सोच भी नहीं पाते थे कि पार्टी और सरकार की रहनुमाई करने के लिए उनसे भी ज्यादा काबिल कोई हो सकता है। संगठन कांग्रेस से नाकामयाब होने के बाद उन्होंने भारतीय क्रांति दल, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और मुस्लिम मजलिस के साथ एक और चुनाव गँठबन्धन किया। और इसको कोई औपचारिक रूप दिये जाने से पहले ही उन्होंने इस गँठबन्धन में शामिल सभी विपक्षी नेताओं का हस्ताक्षर किया हुआ एक संयुक्त बयान हासिल कर लिया। इस बयान में साफ पता चल जाता है कि सी० बी० गुप्ता के साथ समझौता क्यों नहीं हो सका था। भारतीय क्रांति दल, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और मुस्लिम मजलिस की संयुक्त घोषणा में कहा गया था—'ऊपर उल्लिखित पार्टियाँ चौधरी चरणसिंह के नेतृत्व में चुनाव लड़ेंगी और उनके नेतृत्व में ही सरकार का गठन करेंगी। एक ही चुनाव चिह्न हलधर, पर चुनाव लड़ेंगी।'[10]

उत्तर प्रदेश में मार्च 1977 के लोकसभा चुनावों की तुलना में 1974 में हलधर चुनाव चिह्न वाले झण्डे और पोस्टर ज्यादा और हर जगह दिखायी दे रहे थे। बलिया के धूल-भरे छोटे से कस्बे में हल और किसान की झाँकी के नीचे बैठकर कुछ हट्टे-कट्टे किसान गा रहे थे—"मैं दिल्ली चला जाऊँगा तुम देखते रहियो।" यह उस समय की एक बहु प्रचलित हिंदी फिल्म के गाने की पैरोडी थी। उन दिनों भी चौधरी चरणसिंह की निगाह दिल्ली पर लगी हुई थी।

इस चुनाव से पहले या इसके बाद कभी भी इतना भीषण पोस्टर-युद्ध देखने को नहीं मिला। शहरों से लेकर छोटे कस्बों और गाँवों तक समूचे उत्तर प्रदेश में दीवारें रंग बिरंगे पोस्टरों से भरी पड़ी थीं—इनमें से अधिकांश पोस्टर आफसेट मशीनों पर छपे थे। दीवारों पर लगे बड़े पोस्टरों में कांग्रेस सरकार द्वारा शुरू की गयी योजनाओं और राज्य में डाली गयी असंख्य आधारशिलाओं का वर्णन था—यह राज्य के क्रियाशील नेता हेमवतीनंदन बहुगुणा की कलाकारी का नमूना थी। उन्हें इन्दिरा गांधी ने उत्तर प्रदेश चुनाव में कामयाबी हासिल कराने के लिए भेजा था। बड़े बड़े पोस्टर लगे थे जिनमें कहा गया था—'कांग्रेस को विजयी बनाइये और उत्तर प्रदेश का विकास कीजिये।' हर जगह इन पोस्टरों के सामने जन संघ के पोस्टर चिपके थे, जिसमें एक दुबला-पतला ग्रामीण कह रहा

थी—'26 साल तक हमने इंतजार किया, जिसका कोई नतीजा नहीं निकला—लेकिन अब जन संघ आया है।' इंदिरा गांधी के चमकते, मुस्कराते चेहरों वाले हर पोस्टर के बराबर में एक नाटकीय पोस्टर लगा होता था जिसमें अटलबिहारी वाजपेयी का मुट्ठी ताने दिखाया गया था और उसके नीचे एक संदेश लिखा था—"उत्तर प्रदेश की सरकार अटलजी के सबल हाथों में।" इनके बीच में भारतीय क्रांति दल का नारा घिसट रहा था—"चरणसिंह को विजयी बनायें।" चारों तरफ इन्हीं बेसुरे नारों का शोर था।

अपने जबर्दस्त अभियान के बावजूद विरोधी दलों को धूल चाटनी पड़ गयी। कांग्रेस विजयी रही, यद्यपि उसे कुल 32 प्रतिशत वोट मिले। चुनाव ने एक बार फिर अति नाटकीय ढंग से यह दिखला दिया कि टुकड़ों टुकड़ों में बँटे विपक्ष के लिए कांग्रेस के धुरंधरों का तख्ता पलटने की कोशिश करना कितनी बेकार है।

हालांकि मिले जुले विरोधी दल की बात अभी भी पहले ही जितनी दुर्गाह्य थी पर 1974 के परिणामों ने एक बार फिर नेताओं को इस दिशा में सोचने के लिए मजबूर कर दिया। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि विरोधी दलों के और खासतौर से जन संघ के, कुछ नेताओं को मजबूरन इस नतीजे पर पहुँचना पड़ा कि वे अकेले इन्दिरा गांधी को हरा नहीं सकते। इसके लिए उन्हें किसी और का सहारा लेना पड़ेगा। वे ऐसी किसी ताकत की चारों ओर तलाश करने लगे।

जे० पी० एक बार फिर क्षितिज में उभरने लगे थे। उनकी प्रिय पत्नी प्रभावती की मृत्यु ऐसे समय हुई जब गुजरात व बिहार में आंदोलन लोगों को, खास तौर से नौजवानों को झकझोर रहे थे। उन्होंने जयप्रकाश को आकर्षित कर लिया। जे० पी० को 'अधिक गहराई तक जाने वाली, अधिक व्यापक" राजनीति पसंद है।[9] सितम्बर 1973 में उन्होंने वह पत्र व्यवहार, जो उस वर्ष के शुरू में इंदिरा गांधी से हुआ था प्रकाशित कर दिया। वह पत्र-व्यवहार जे० पी० द्वारा दिल्ली की मुद्रा की रुखाई पर "गहरे निराश व दुख" प्रकट करते हुए समाप्त हुआ था। इसके बाद उन्होंने संसद सदस्यों के नाम एक खुला पत्र अपने अखबार एवरीमैन्स में प्रकाशित किया। इस अखबार का प्रकाशन उन्हीं दिनों शुरू किया गया था, जो जे० पी० की उन दिनों की बेचैनी का मापदण्ड था।

1974 के शुरू होने तक जे० पी० को विश्वास हो गया था कि देश में तब्दीली का समय आ गया है। 3 फरवरी 1974 को उन्होंने कहा, "इतिहास की धारा को बदलने के लिए 1942 जैसा एक और आंदोलन शुरू होता नजर आता है।' हालांकि अधिकांश लोग जे० पी० की इस बात से सहमत नहीं होंगे कि 1942 का आंदोलन और 1974 में बिहार तथा गुजरात की घटनाएँ समानांतर थीं पर उन्होंने निश्चय ही नौजवानों के तेवर समझ लिये थे—और युवा शक्ति पर उनको बहुत विश्वास तो था ही।

गुजरात की उथल-पुथल में उनकी लगभग नहीं के बराबर भूमिका थी और कभी कभी तो वे यह भी समझने लगे थे कि उन्हें इस आंदोलन में किनारे कर दिया गया है। फिर भी स्थिति का स्वयं जायजा लेने के लिए उन्होंने गुजरात की यात्रा की। इस यात्रा में उनकी यह धारणा और पुष्ट हो गयी कि परिवर्तन का समय आ गया है—ऐसा परिवर्तन नहीं जिसमें नागनाथ की जगह सांपनाथ को बिठा दिया जाये बल्कि एक गहरे परिवर्तन की जरूरत है जो राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक धरातल पर चौतरफा पुनरोत्थान कर सके। इस तरह वे

परिवर्तन को उन्होंने कुछ ही दिनों बाद एक नाम दे दिया—'सपूर्ण क्रांति'।

गुजरात से लौटते समय इंदिरा गांधी से मिलने के लिए जे० पी० दिल्ली में रुके। उन्होंने तीन क्षेत्रों में अपने सहयोग का प्रस्ताव किया—भ्रष्टाचार के विरुद्ध सघर्ष, भूमि सुधार और ग्रामीण विकास में। इंदिरा गांधी ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। जे० पी० के बारे में वे हमेशा सदिग्ध रही और ऐसा लगता है कि उन्होंने यह सोच रखा था कि यह बूढ़ा आदमी अब किसी काम का नहीं है, इससे न तो कोई मदद मिल सकती है और न यह कोई नुकसान पहुँचा सकता है। अपने व्यवहार में इंदिरा गांधी काफी ठीक-ठाक ही रही, लेकिन जे० पी० को लगा, जैसे उनकी कुछ उपेक्षा हुई है।

बिहार आदोलन में जब वह कूदे तो ऐसा नहीं था कि उनका इरादा इंदिरा गांधी से मुठभेड़ करने का हो हालांकि दूरदर्शी लोगों को दिखायी दे रहा था कि घटनाओं का रुख आसानी से मुठभेड़ की ओर मुड़ सकता है। आदोलन के प्रारंभिक दिनों में जे० पी० को यह उम्मीद थी कि इंदिरा गांधी की पार्टी के अंदर से ही इतना सशक्त दबाव उन पर पड़ेगा कि वह सही दिशा में काम करने लगेंगी। शायद उन्होंने उस समय तक यह महसूस नहीं किया था कि कांग्रेस जन का मनोबल किस कदर टूट चुका था। बहुत कम लोग ऐसे थे जिनके अंदर यह साहस था कि वे उस निरकुश महिला के सामने खड़े हो सकें। चन्द्रशेखर एक ऐसे व्यक्ति साबित हुए जिन्होंने जे० पी० और इंदिरा के बीच बातचीत शुरू किये जाने की जरूरत पर लगातार जोर दिया लेकिन इससे तिहाड़ की यात्रा का ही उनका टिकट पक्का हो सका। लगभग अंत तक जे० पी० ने यह सतर्कता बरती कि इंदिरा गांधी को अपने कदम पीछे हटाने का मौका रहे। लेकिन वह इतनी अहंकारी थी कि कभी पीछे हटने का नाम नहीं लिया। इंदिरा गांधी के अंदर पल रही नफरत को भड़काने में लगे थे कांग्रेस के अंदर व बाहर के कम्युनिस्ट, जो लगातार 'फासिस्ट खतरे' का कुचलने की बात करते रहे।

जे० पी० के आदोलन को यदि किसी ने तेज किया तो वह इंदिरा गांधी ही थी। आदोलन के एकदम शुरू के दिनों में भुवनेश्वर में एक भाषण के दौरान उन्होंने बिना किसी का नाम लिये जयप्रकाश नारायण पर जबदस्त प्रहार किया और कहा कि जो लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई छेड़ने की बात करते हैं वे खुद भ्रष्ट व्यापारियों के अतिथि बनकर रहते हैं। हालांकि बाद में उन्होंने कहा कि उनका मतलब जे० पी० से नहीं था और इस तरह अपने वक्तव्य से मुकरने की कोशिश की, लेकिन दोनों के बीच सम्बन्ध अब काफी खराब हो चुके थे। इंदिरा गांधी के साथ दूसरी मुलाकात के बाद जे० पी० के सम्बन्ध पूरी तरह टूट गये—इस मुलाकात में इंदिरा गांधी ने सत्ता के मद का परिचय दिया और यह दिखाने की कोशिश की गोया जे० पी० किसी व्यक्तिगत रियायत के लिए उनके पास गये हों। बिहार विधान-सभा को भंग करने की जे० पी० की मांग को उन्होंने बड़ी बेरुखी से नामंजूर कर दिया। लड़ाई की मोर्चे-बंदी अब पूरी हो गयी थी।

पटना वापस पहुँचते ही जयप्रकाश नारायण ने एलान किया 'हम एक बहुत लम्बी और कठिन लड़ाई लड़नी है।' आदोलन बिना किसी उल्लेखनीय प्रगति के सात महीनों से घिसट रहा था। जे० पी० को शायद यह उम्मीद थी कि गुजरात के आदोलन की तरह यहाँ भी जल्दी ही नतीजे सामने आ जायेंगे। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। लेकिन ठीक उस समय जब आदोलन की आग लगभग बुझने लगी थी, सरकार ने उसमें घी डाल दिया। 4 नवंबर 1974 को जनता और पुलिस के

नीच तीन घंटे तक संघर्ष होता रहा और इससे भी बड़ी बात यह हुई कि जे० पी० के कंधे पर पुलिस की हलकी लाठी पड़ गयी। इससे आंदोलन की आग एक बार फिर तेज हो गयी। लेकिन उसके बाद ?

'मुझे कोई जल्दी नहीं है" जे० पी० ने कुछ ही दिनों बाद पटना की एक आम सभा में कहा "हमारी लड़ाई का फैसला अगले चुनाव में हो जायगा। मैं प्रधानमंत्री की चुनौती को स्वीकार करता हूँ। चुनाव में मैं खुद उम्मीदवार नहीं रहूँगा, लेकिन मैं इस लड़ाई का नेतृत्व करूँगा और इस बार लड़ाई में केवल दो पक्ष होंगे—एक तरफ कांग्रेस और सी० पी० आई० तथा दूसरी तरफ अन्य सभी दल।"

'अन्य सभी दलों' के एक पक्ष बन जाने का कोई संकेत नहीं दिया था। शुरू में जे० पी० स्वयं विरोधी पार्टियों के बारे में संदेह रखते थे। आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करने से पूर्व उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि छात्र संघर्ष समिति के सदस्यों को अपने मूल राजनीतिक दलों से संबंध तोड़ लेने चाहिए। वह यह भी नहीं चाहते थे कि विरोधी पार्टियाँ आंदोलन में हिस्सा लें, लेकिन संघर्ष की रणनीतिक जरूरतों को देखते हुए वह मजबूर थे—पार्टियों के संगठनात्मक समर्थन के बिना वह कुछ नहीं कर सकते थे। जन संघ खास तौर से आंदोलन में पूरी ताकत के साथ कूद पड़ा था। चाहे नुक्कड़ों पर भूख हड़ताल करनी हो, चाहे विधान सभा के बाहर धरना देना हो—सभी के लिए अधिकतर कार्यकर्ता आर० एस० एस० ही जुटाता था। आंदोलन शुरू होने के फौरन बाद ही इसका संगठन लगभग पूरी तरह नानाजी देशमुख के हाथ में चला गया। संगठन कांग्रेस और सोशलिस्ट भी आंदोलन में शामिल हो गये थे। विरोधी दलों को संघर्ष से जितना ही बाहर रखने के लिए जे० पी० प्रयत्नशील थे, उतना ही यह आंदोलन विरोधी दलों के लिए विरोधी दलों द्वारा संचालित विरोधी दलों का आंदोलन बन गया। दल विहीन जनतंत्र और संपूर्ण क्रांति के इस मसीहा ने आंदोलन को अपनी मौजूदगी से वह सम्मान प्रदान कर दिया जो अन्यथा उसे न मिलता।

जे० पी० की चिढ़ और नाराजगी भी समय समय पर सामने आने लगी। वाराणसी में एक भाषण के दौरान उन्होंने कहा 'जन संघ के लिए यह तभी संपूर्ण क्रांति होगी जब श्री एल० के० आडवाणी या श्री अटलबिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री बना दिया जाये और यदि श्री चरणसिंह का सत्ता पर कब्ज़ा हो जाय तो बी० एल० डी० के लिए भी यह संपूर्ण क्रांति बन जायगी ।' जन संघ के नेता इस तरह की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने में हमेशा सतर्क रहते थे, लेकिन चरणसिंह तुरंत भड़क उठते थे।

सच्चाई यह थी कि जे० पी० ने उनकी दुखती रग को दबा दिया था। चरणसिंह ने कभी किसी ऐसे प्रदर्शन या आंदोलन में दिलचस्पी नहीं ली जिससे उनका मतलब न पूरा होता हो। न किसी ऐसी पार्टी के गठन में भी इच्छुक नहीं थे जिसके मुखिया वह खुद न बन सकें। जे० पी० का आंदोलन भी पूरी तरह उनके गले नहीं उतर सका। एक बार तो ऐसा भी हुआ कि उन्होंने आंदोलन वापस लेने की सलाह देते हुए जे० पी० को पत्र लिखा। जिन्दगी भर घटिया किस्म की लड़ाई राजनीति के अभ्यस्त चरणसिंह को जे० पी० के ऊँचे विचारों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। जे० पी० ने जब राजनीति में फँसे बगैर वर्तमान व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन की बातें कीं तो चरणसिंह समझ ही नहीं सके। 'संपूर्ण क्रांति' के बारे में जे० पी० के विचार उन्हें एकदम बकवास लगते थे।

जे० पी० की योजनाओ मे यदि चरणसिंह को अपने हित की बात दिखायी देती तो शायद वह एक दूसरा ही नजरिया अपनाते। लखनऊ म अपनी पार्टी की एक बैठक म चरणसिह ने कहा कि जे० पी० के आदोलन के साथ वह सहयोग कर सकते है बशर्ते इससे 'पार्टी के हितो को कोई चोट न पहुँचे।" चरणसिंह और उनकी राजनीति को जो लोग जानते है उनके लिए इस वाक्य का एक ही अथ था—वह जे० पी० के आदोलन को सही मान लेंगे यदि आदोलन सफल होन पर ताज उ हे पहनन का मौका दिया जाये।

1974 के चुनाव म जबदस्त नाकामयाबी के बाद चरणसिंह ने एक बार फिर विभिन्न दलो के ज्यादा मजबूत और बडे गँठबधन के विषय मे सोचना शुरू कर दिया था। अपने दोस्त बीजू पटनायक और बलराज मधोक के साथ उन्होने एक नयी पार्टी के गठन के बारे मे बातचीत शुरू कर दी थी। पीलू मोदी उस समय गुजरात मे थे। जब उन्हे पता चला कि चरणसिंह, बीजू पटनायक और कुछ अन्य नेता दिल्ली मे इकटठे हुए है, मोदी फौरन गुजरात से दिल्ली के लिए रवाना हुए, ताकि बातचीत मे हिस्सा ले सकें। इस बैठक मे मोटे तौर पर यह फैसला किया गया कि इन पार्टियो के विलय की कोशिश की जाये। इस बैठक के फलस्वरूप भारतीय लोक दल का जन्म हुआ जो भारतीय क्रांति दल, सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, स्वतत्र पार्टी, उत्कल काग्रेस तथा तीन अन्य छोटे मोटे गुटो के विलय से बनी थी। यह नयी पार्टी किसी भी अथ मे राष्ट्रीय स्तर पर काग्रेस का विकल्प नही हो सकती थी। इसका प्रभाव क्षेत्र कमोवेश उत्तर प्रदेश, बिहार, उडीसा और हरियाणा के कुछ इलाको तक सीमित था। भारतीय क्रांति दल की तरह यह भी एक व्यक्ति के इद गिद टिकी पार्टी थी। हालाकि 29 अगस्त 1974 को इसका विधिवत गठन कर दिया गया था फिर भी इमरजेंसी की घोषणा होने तक पार्टी सदस्यो की सूची नही तैयार की गयी थी। इसकी सारी समितिया तदथ समिति के रूप मे काम कर रही थी।

मई 1975 म गुजरात म हुए चुनाव मे विरोधी दलो के बीच केवल एक बात पर सहमति हो सकी थी और वह थी मोर्चा बनाने की बात। मोरारजी देसाई का रुतबा कुछ बढ गया था, क्योकि उनके अनशन से मजबूर होकर इन्दिरा गाधी ने गजरात मे चुनाव कराने का आदेश जारी किया था। उनकी आवाज मे थोडे अधिकार की बू आने लगी थी। गुजरात मे चुनाव सबधी बातचीत से जे० पी० को हमेशा अलग रखा गया। इससे वह इतने दुखी थे कि सिफ चुनाव प्रचार के अतिम दिनो म वह थोडी देर के लिए अहमदाबाद गय। वही पहली बार उन्होन मोर्चों के बजाय एक पार्टी' का विचार लोगो के सामने रखा।

जिस दिन इलाहाबाद हाईकोट का फैसला आया उसी दिन गुजरात के चनाव परिणाम भी आने लगे थे। विपक्षी नेताओ को नये सिर से कुछ उम्मीद होने लगी थी। इन्दिरा गाधी से इस्तीफे की माँग का उनका अभियान तेज हो गया था और साथ ही उसी दिन चार प्रमुख विरोधी दलो—बी० एल० डी० सगठन काग्रेस जन सघ और सोशलिस्ट पार्टी—की राष्ट्रीय कायकारिणी की सयुक्त बैठक नयी दिल्ली म वाई० एम० सी० ए० म शुरू हुई जो कई दिनो तक चली। चरणसिंह ने एक नयी पार्टी बनाने के लिए जोरदार वकालत की। उनका दिमाग अनेक दिशाओ मे काम कर रहा था। उन्होने विरोधी नेताओ के प्रस्तावित घेरन की भी आलोचना की थी और आकाशवाणी स एक प्रसारण म उन्होने कहा था कि वैधानिक तौर पर इन्दिरा गाधी इस्तीफा दन के लिए बाध्य नहीं है।

उन्होंने हमेशा यह एहतियात बरता था कि कभी भी कोई रास्ता अख्तियार कर सकें।

चरणसिंह की दलीलों से दूसरी कोई विरोधी पार्टी सहमत नहीं हुई। मोरारजी देसाई ने कहा कि वह गुजरात जैसे मोर्चे के पक्ष में हैं। जन संघ ने दल के विघटन के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। यदि बहुत हुआ तो वह एक संघीय ढाँचे में शामिल हो सकता है। उग्र मज़दूर नेता और सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष जार्ज फर्नांडीज़ ने जोरदार शब्दों में अपना फैसला सुना दिया—'विभिन्न विचार-धाराओं का आपस में विलय नहीं हो सकता।"

कुछ ही दिनों बाद इन्दिरा गांधी ने इन दलों पर हमला बोल दिया।

21 जुलाई 1975 को जे० पी० ने अपनी जेल डायरी में लिखा—"मेरी दुनिया के खण्डहर मेरे चारों ओर पड़े हैं।" उनके सारे अनुमान गलत साबित हो गये थे। अब तक इन्दिरा गांधी के बारे में उनका भ्रम बना रहा। वह इन्दिरा गांधी को ऐसा नहीं समझते थे जैसी वह साबित हुईं। अगर उन्हें पहले पता चल गया होता तो वे दूसरे ढंग से काम करते। इंग्लैंड से प्रकाशित एक पत्रिका से भेंट में जे० पी० ने बताया : "मैं कभी यह सोच नहीं सकता था कि इतनी आसानी से देश का जनतंत्र तानाशाही में तब्दील हो सकता है। यदि मुझे इसका तनिक भी अंदाज़ा होता और अगर मैं इस खतरे को पहले भाँप पाता तो निश्चय ही मैं और अधिक सोच विचार कर आंदोलन का नेतृत्व करने की कोशिश करता, कोई और तरीका ढूँढने की ओर ध्यान देता। मेरा खयाल है कि तब मैं सीधी कारवाई की बजाय राजनीतिक कारवाई और जनतांत्रिक कारवाई पर अपनी शक्ति केन्द्रित करता। मैं खुद किसी पार्टी में शामिल नहीं होता, लेकिन चुनाव पर और चुनाव की तैयारी के लिए विरोधी दलों को एकजुट करने पर ज्यादा ध्यान देता। मैं इस बात की निगरानी रखता कि किसी भी निर्वाचन-क्षेत्र में विपक्ष से केवल एक उम्मीदवार खड़ा हो। थोड़े में कहूँ तो मैं इस तरह की राजनीति पर ज्यादा ध्यान देता और इस पर ही जोर देता।"[10]

क्या यह चरणसिंह की राजनीति की जीत नहीं होती?

जेल में भी चरणसिंह इसी दिशा में सोच रहे थे। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों के बन्दियों की बैठकों की अध्यक्षता की और जेल-जीवन के सामूहिक कष्ट के दौरान ऐसा लगा कि विपक्ष के रूप में महज एक पार्टी की ज़रूरत पर अब ज्यादा लोग सहमत थे। लेकिन कुछ ही महीनों के अन्दर इन्दिरा गांधी के साथ समझौते के लिए चोरी छिपे कोशिशें भी चलने लगीं। अशोक मेहता, एच० एम० पटेल तथा कई अन्य विरोधी नेताओं ने प्रधानमंत्री को जी हुजूरी भरे खत भेजने शुरू कर दिये। मार्च 1976 में जब अचानक चरणसिंह को रिहा किया गया तो सबको थोड़ी हैरानी हुई। उस समय बहुत कम लोगों को यह पता था कि बीजू पटनायक अपने परम मित्र मोहम्मद यूनुस से जो प्रधानमंत्री के विशेष दूत थे तथा आम मेहता से जो एक तरह से असली गृह-मंत्री थे बराबर सम्पर्क बनाये हुए थे। इससे पहले चरणसिंह के एक सिपहसालार को पैरोल पर रिहा करके तिहाड़ जेल भेजा गया था ताकि वह पता लगा सके कि चरणसिंह आजकल क्या सोच रहे हैं और यदि मुमकिन हो तो उन्हें सरकार की ओर मिलाने की कोशिश करे।

अपनी रिहाई के फौरन बाद चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश विधान सभा में एक जोरदार भाषण दिया जिसमें इमरजेंसी का विरोध किया। लेकिन इसके साथ ही

उन्होंने भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक बैठक बुलायी जिसमें फैसला किया गया कि वह 'जनमत को शिक्षित करें और लोक संघर्ष समिति से अपने को अलग कर ले।"

जेल में कुछ ही महीने गुज़ारने के बाद जयप्रकाश नारायण महसूस करने लगे थे कि डूबती हुई नाव को छोड़कर चूहे भागने लगे हैं।"[11] लेकिन उन्होंने आशा नहीं छोड़ी थी।

26 मई 1976 को बम्बई में जयप्रकाश ने भारतीय लोक दल, संगठन कांग्रेस, जन संघ और सोशलिस्ट पार्टी को लेकर एक नयी राष्ट्रीय पार्टी का ऐलान किया। यह घोषणा की गयी कि जून 1976 के अंतिम हफ्ते में बंबई में विरोधी दलों के एक सम्मेलन के अवसर पर नयी पार्टी के गठन का बाकायदा एलान किया जायेगा।

यह ज़ाहिर था कि घोषणा का मकसद विरोधी दलों पर विलय के पक्ष में मनोवैज्ञानिक असर डालना था। जे० पी० से एस०एम० जोशी तथा अन्य नेताओं ने कहा था कि अगर उन्होंने एक बार किसी नयी पार्टी की घोषणा कर दी तो विरोधी नेताओं के लिए बच निकलना मुश्किल होगा। कुछ भी हो, वे जे० पी० की अंतिम इच्छा की अवहेलना नहीं कर सकेंगे। जब वे देखेंगे कि एक पार्टी बन ही गयी है तो उनके लिए इसमें शामिल होने से इंकार करना मुश्किल हो जायेगा।

दरअसल वे अपने ढुलमुल दोस्तों को पहचान नहीं सके थे। नयी पार्टी की घोषणा से सबसे पहले चरणसिंह चौकन्ने हुए। यह नयी पार्टी क्या चीज़ है? क्या यह चारों पार्टियों के अलावा एक पाँचवीं पार्टी है? 30 मई 1976 को भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुलायी गयी, ताकि जे० पी० की घोषणा पर विचार किया जा सके। बैठक में एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें कहा गया था कि भारतीय लोक दल की कार्यकारिणी जे० पी० के विचार का स्वागत करती है पर साथ ही "जिस ढंग से नयी पार्टी बनाने की कोशिश की गयी है उस पर चिंता व्यक्त करती है।"

बात यह हुई कि जे० पी० के कुछ नज़दीकी लोगों से अनजाने में ही यह खबर निकल गयी कि प्रस्तावित नयी पार्टी का अध्यक्ष एस० एम० जोशी को बनाया जायेगा और चरणसिंह के नाम पर विचार नहीं हुआ।

नयी पार्टी की घोषणा किये जाने से कुछ ही दिनों पहले चरणसिंह ने जे० पी० से भेंट की थी और बहुत गुस्से में वापस आये थे। उन्होंने जे० पी० के नाम एक खत लिखा— '22 मई 1976 को बातचीत के दौरान आपकी कही गयी बात मुझे अच्छी तरह याद है। आपने कहा था कि मैं एक नयी पार्टी के गठन के लिए इसलिए इतना उत्सुक हूँ कि मैं उसका नेता बनना चाहता हूँ।" पत्र के अंत में अपने हस्ताक्षर से पूर्व उन्होंने एक पंक्ति लिखी थी— 'दुख से बोझिल।'

जे० पी० की 'इकतरफा घोषणा' से भड़क कर भारतीय लोक दल ने अब एक नया पैंतरा लिया कि सबसे पहले नयी पार्टी की नीति के बारे में चारों दलों की सहमति ज़रूरी है, और दूसरे, नयी पार्टी के उद्घाटन से पूर्व वर्तमान पार्टियों का विघटन हो जाना चाहिए। विलय के प्रस्ताव को खटाई में डालने के लिए इन दोनों में से कोई भी एक शर्त ही काफी थी।

और बात खटाई में पड़ गयी। 8 जुलाई 1976 को एक बार फिर चारों विरोधी दलों की दिल्ली में बैठक हुई। यहाँ चरणसिंह ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मसला उठाया। उन्होंने कहा कि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि आर० एस०

उन्होंने हमेशा यह एहतियात बरता था कि कभी भी कोई रास्ता अख्तियार कर सकें।

चरणसिंह की दलीलों से दूसरी कोई विरोधी पार्टी सहमत नहीं हुई। मोरारजी देसाई ने कहा कि वह गुजरात जैसे मोर्चे के पक्ष में हैं। जन संघ ने दल के विघटन के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। यदि बहुत हुआ तो वह एक संघीय ढांचे में शामिल हो सकता है। उग्र मजदूर नेता और सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष जार्ज फर्नांडीज ने जोरदार शब्दों में अपना फैसला सुना दिया—'विभिन्न विचार-धाराओं का आपस में विलय नहीं हो सकता।"

कुछ ही दिनों बाद इन्दिरा गांधी ने इन दलों पर हमला बोल दिया।

21 जुलाई 1975 को जे० पी० ने अपनी जेल डायरी में लिखा—"मेरी दुनिया के खण्डहर मेरे चारों ओर पड़े हैं।" उनके सारे अनुमान गलत साबित हो गये थे। अब तक इन्दिरा गांधी के बारे में उनका भ्रम बना रहा। वह इन्दिरा गांधी को ऐसा नहीं समझते थे जैसी वह साबित हुई। अगर उन्हें पहले पता चल गया होता तो वे दूसरे ढंग से काम करते। इंग्लैंड से प्रकाशित एक पत्रिका से भेंट में जे० पी० ने बताया 'मैं कभी यह सोच नहीं सकता था कि इतनी आसानी से देश का जनतन्त्र तानाशाही में तबदील हो सकता है। यदि मुझे इसका तनिक भी अंदाजा होता और अगर मैं इस खतरे को पहले भांप पाता तो निश्चय ही मैं और अधिक सोच विचार कर आंदोलन का नेतृत्व करने की कोशिश करता, कोई और तरीका ढूंढने की ओर ध्यान देता। मेरा खयाल है कि तब मैं सीधी कारवाई की बजाय राजनीतिक कारवाई और जनतान्त्रिक कारवाई पर अपनी शक्ति केन्द्रित करता मैं खुद किसी पार्टी में शामिल नहीं होता, लेकिन चुनाव पर और चुनाव की तैयारी के लिए विरोधी दलों को एकजुट करने पर ज्यादा ध्यान देता। मैं इस बात की निगरानी रखता कि किसी भी निर्वाचन-क्षेत्र में विपक्ष से केवल एक उम्मीदवार खड़ा हो। थोड़े में कहें तो मैं इस तरह की राजनीति पर ज्यादा ध्यान देता और इस पर ही जोर देता ।"[10]

क्या यह चरणसिंह की राजनीति की जीत नहीं होती?

जेल में भी चरणसिंह इसी दिशा में सोच रहे थे। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों के बंदियों की बैठकों की अध्यक्षता की और जेल-जीवन के सामूहिक कष्ट के दौरान ऐसा लगा कि विपक्ष के रूप में महज एक पार्टी की जरूरत पर अब ज्यादा लोग सहमत थे। लेकिन कुछ ही महीनों के अंदर इन्दिरा गांधी के साथ समझौते के लिए चोरी छिपे कोशिशें भी चलने लगीं। अशोक मेहता, एच० एम० पटेल तथा कई अन्य विरोधी नेताओं ने प्रधानमन्त्री को जी हजूरी भरे खत भेजने शुरू कर दिये। मार्च 1976 में जब अचानक चरणसिंह को रिहा किया गया तो सबको थोड़ी हैरानी हुई। उस समय बहुत कम लोगों को यह पता था कि बीजू पटनायक अपने परम मित्र मोहम्मद यूनुस से, जो प्रधानमन्त्री के विशेष दूत थे, तथा ओम मेहता से, जो एक तरह से असली गृह मन्त्री थे बराबर सम्पर्क बनाये हुए थे। इसमें पहले चरणसिंह के एक सिपहसालार को पैरोल पर रिहा करके तिहाड़ जेल भेजा गया था ताकि वह पता लगा सके कि चरणसिंह आजकल क्या सोच रहे हैं और यदि मुमकिन हो तो उन्हें सरकार की ओर मिलाने की कोशिश करे।

अपनी रिहाई के फौरन बाद चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश विधान सभा में एक जोरदार भाषण दिया जिसमें इमरजेंसी का विरोध किया। लेकिन इसके साथ ही

उन्होंने भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की एक बैठक बुलायी जिसमें फैसला किया गया कि वह 'जनमत को शिक्षित करें और लोक संघर्ष समिति से अपने को अलग कर ले।"

जेल में कुछ ही महीने गुजारने के बाद जयप्रकाश नारायण महसूस करने लगे थे कि डूबती हुई नाव को छोड़कर चूहे भागने लगे हैं।'[11] लेकिन उन्होंने आशा नहीं छोड़ी थी।

26 मई 1976 को बंबई में जयप्रकाश ने भारतीय लोक दल, संगठन कांग्रेस, जन संघ और सोशलिस्ट पार्टी को लेकर एक नयी राष्ट्रीय पार्टी का ऐलान किया। यह घोषणा की गयी कि जून 1976 के अंतिम हफ्ते में बंबई में विरोधी दलों के एक सम्मेलन के अवसर पर नयी पार्टी के गठन का बाकायदा एलान किया जायेगा।

यह जाहिर था कि घोषणा का मकसद विरोधी दलों पर विलय के पक्ष में मनोवैज्ञानिक असर डालना था। जे० पी० से एस०एम० जोशी तथा अन्य नेताओं ने कहा था कि अगर उन्होंने एक बार किसी नयी पार्टी की घोषणा कर दी तो विरोधी नेताओं के लिए बच निकलना मुश्किल होगा। कुछ भी हो, वे जे० पी० की अंतिम इच्छा की अवहेलना नहीं कर सकेंगे। जब वे देखेंगे कि एक पार्टी बन ही गयी है तो उनके लिए इसमें शामिल होने से इंकार करना मुश्किल हो जायेगा।

दरअसल वे अपने ढुलमुल दोस्तों को पहचान नहीं सके थे। नयी पार्टी की घोषणा से सबसे पहले चरणसिंह चौंकने हुए। यह नयी पार्टी क्या चीज है? क्या यह चारों पार्टियों के अलावा एक पांचवीं पार्टी है? 30 मई 1976 को भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुलायी गयी, ताकि जे० पी० की घोषणा पर विचार किया जा सके। बैठक में एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें कहा गया था कि भारतीय लोक दल की कार्यकारिणी जे० पी० के विचार का स्वागत करती है पर साथ ही "जिस ढंग से नयी पार्टी बनाने की कोशिश की गयी है उस पर चिंता व्यक्त करती है।"

बात यह हुई कि जे० पी० के कुछ नजदीकी लोगों से अनजाने में ही यह खबर निकल गयी कि प्रस्तावित नयी पार्टी का अध्यक्ष एस० एम० जोशी को बनाया जायेगा और चरणसिंह के नाम पर विचार नहीं हुआ।

नयी पार्टी की घोषणा किये जाने से कुछ ही दिनों पहले चरणसिंह ने जे० पी० से भेंट की थी और बहुत गुस्से में वापस आये थे। उन्होंने जे० पी० के नाम एक खत लिखा— '22 मई 1976 को बातचीत के दौरान आपकी कही गयी बात मुझे अच्छी तरह याद है। आपने कहा था कि मैं एक नयी पार्टी के गठन के लिए इसलिए इतना उत्सुक हूँ कि मैं उसका नेता बनना चाहता हूँ।' पत्र के अंत में अपने हस्ताक्षर से पूर्व उन्होंने एक पंक्ति लिखी थी— 'दुख से बोझिल।"

जे० पी० की 'इकतरफा घोषणा' से भड़क कर भारतीय लोक दल ने अब एक नया पैंतरा लिया कि सबसे पहले नयी पार्टी की नीति के बारे में चारों दलों की सहमति जरूरी है, और दूसरे, नयी पार्टी के उद्घाटन से पूर्व वर्तमान पार्टियों का विघटन हो जाना चाहिए। विलय के प्रस्ताव को खटाई में डालने के लिए इन दोनों में से कोई भी एक शर्त ही काफी थी।

और बात खटाई में पड़ गयी। 8 जुलाई 1976 का एक बार फिर चारों विरोधी दलों की दिल्ली में बैठक हुई। यहाँ चरणसिंह ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मसला उठाया। उन्होंने कहा कि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि आर० एस०

एम० के किसी भी स्वयं-सेवक का नयी पार्टी में नहीं आने दिया जाना चाहिए और नयी पार्टी के किसी भी सदस्य का आर० एस० एस० से संबंध नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो इसे 'दोहरी सदस्यता' माना जायगा और इस बात की इजाज़त नहीं दी जा सकती।

8 अक्तूबर 1976 को भारतीय लोक दल और संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री अशोक मेहता के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार यह तय हुआ कि दोनों पार्टियों का विलय करके 'जनता कांग्रेस' के नाम से एक पार्टी बनायी जायेगी, उसका संविधान संगठन कांग्रेस का रहेगा और उसका अध्यक्ष चौधरी चरणसिंह को बनाया जायेगा। लेकिन अशोक मेहता के प्रस्ताव का सी० बी० गुप्ता और पश्चिम बंगाल के पी० सी० सेन ने डटकर विरोध किया। अगले महीने फिर बी० एल० डी० के नेताओं और अशोक मेहता के बीच पत्राचार हुआ। संगठन कांग्रेस ने अब यह रवैया अख्तियार किया कि वह किसी नयी पार्टी के गठन के लिए अपना अस्तित्व समाप्त नहीं करेगी। उसका पुराना इतिहास है, जिसके पीछे एक परम्परा है साथ ही देश भर में इसकी काफी संपत्ति पड़ी हुई है। संगठन कांग्रेस इन चीज़ों से हाथ धोने की स्थिति में नहीं थी। क्या बी० एल० डी० के लिए यह ज्यादा आसान नहीं होगा कि वह अपने को भंग कर दे और संगठन कांग्रेस के साथ मिल जाये? यह प्रस्ताव कहीं चौधरी चरणसिंह के सामने रखने लायक था!

जयप्रकाश नारायण को इन बातों से बहुत क्षोभ हुआ और 14 नवंबर 1976 को उन्होंने कुछ विरोधी नेताओं से कहा, "मैं विलय के काम से अपने को अलग ही रखना चाहता हूँ।"

प्रसंगवश भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी को बताया गया कि जन संघ के नेता ओ० पी० त्यागी ने जे० पी० के सचिव सच्चिदानंद से कहा था कि उनकी पार्टी कभी भी चरणसिंह को नये दल का नेता नहीं स्वीकार करेगी।

तब तक चरणसिंह के दो दूत—ब्रह्मदत्त और सतपाल मलिक ने इंदिरा गांधी से बातचीत कर ली थी। नाटे कद के ब्रह्मदत्त देहरादून के रहने वाले हैं। वे पहले एम० एन० राय के समर्थक थे और बाद में सोशलिस्ट पार्टी में होते हुए बी० के० डी० और बी० एल० डी० तक पहुंचे थे। कुछ समय तक उन्होंने चरणसिंह की पत्रिका नव क्रांति में काम किया था और वहीं से पार्टी के एक नेता ने उन्हें भारतीय लोक दल की राष्ट्रीय कार्य समिति का सदस्य बना दिया। उत्तर प्रदेश विधान परिषद में वह विपक्ष के नेता भी रह चुके थे। 31-वर्षीय सतपाल मलिक मेरठ के एक सुसंस्कृत और मृदुभाषी जाट हैं, जो समाजवादी युवजन सभा से होते हुए चरणसिंह तक पहुँचे थे। मलिक मेरठ विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रह चुके थे और 1974 में भारतीय क्रांति दल के टिकट पर उत्तर प्रदेश विधान-सभा का चुनाव भी उन्होंने जीता था। चरणसिंह ने उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्र छपरौली के बगल वाला निर्वाचन क्षेत्र बागपत सौंपा था। मलिक चरणसिंह के प्रति अंधी निष्ठा रखते थे और जल्दी ही पार्टी के अखिल भारतीय मंत्री बना दिये गये थे।

इमरजेंसी की घोषणा के बाद सतपाल मलिक भूमिगत हो गये और जन संघ के नेता नानाजी देशमुख से उनकी कई मुलाकातें हुईं। देशमुख उन दिनों छिपकर रह रहे थे। मलिक उनसे विचार विमर्श करके कोई कार्य पद्धति तय करने के लिए उत्सुक थे। लेकिन जब दरियागंज के एक मकान में नानाजी से उनकी

मुलाकात हुई तो उन्होने महसूस किया कि जन सघ के इस नेता की चिंता आर० एस० एस० के कल्याण तक ही सीमित है। उसी दिन से मलिक ने तय कर लिया कि जन सघ के साथ किसी भी तरह का ताल मेल सभव नही है।

नवबर 1975 म मलिक ने मेरठ के पास गढमुक्तेश्वर मे सत्याग्रह करके अपने को गिरफ्तार करा दिया। उन्हे फतेहगढ जेल भेज दिया गया। वहा उनकी सघ-विरोधी और आर० एस० एस० विरोधी भावनाओ का और भी बल मिला। उन्होने देखा कि आर० एस० एस० के लोग दूसरो के साथ खाना तक नही खाते।

एक रात आर० एस० एस० के एक बदी के तकिये के नीचे मलिक को कुछ पत्र मिले जो आर० एस० एस० के सरसघचालक बालासाहब देवरस ने इदिरा गाधी को लिखे थे, जिनमे उन्होने सरकार को अपनी अनुशासन बद्ध सना (आर० एस० एस०) का सहयोग प्रदान करने का वायदा किया था। बाद मे मलिक को तिहाड जेल भेज दिया गया। कहा जाता है कि ओम मेहता के इशारे पर ऐसा किया गया था ताकि वह वहाँ जाकर यह पता करें कि चरणसिंह इन दिनो क्या सोच रहे हैं।

तिहाड मे सत्तपाल मलिक ने देवरस की चिटि्ठया चरणसिह को दी। उन्होने इन्दिरा गाधी के साथ समझौते की सभावना पर भी अपने नेता से विचार विमश किया। मलिक को पैरोल पर रिहा कर दिया गया। ब्रह्मदत्त दूसरी जेल म थे, उन्ह भी पैरोल पर रिहा कर दिया गया।

ओम मेहता ने चरणसिंह के इन दोनो दूतो से प्रधानमत्री की मुलाकात का इतजाम किया। 4 नवबर 1976 को यह मुलाकात हुई। दोनो लोगों को यह महसूस हुआ कि इदिरा गाधी अपनी स्थिति को वैधानिक बनाने के लिए चिंतित हैं और यदि ऐसे मौके पर चरणसिह ने उनकी मदद कर दी तो वे खुश होंगी। मलिक और दत्त ने इदिरा गाधी को बताया कि उनके और चरणसिंह के मिल जाने का समय आ गया है। इस पर इन्दिरा गाधी का जवाब था—"वही हमेशा हाथ पीछे करते है।"

काग्रेस के साथ भारतीय लोक दल के विलय की सभावनाओ पर बातचीत करत हुए दोनो दूतो ने प्रस्ताव रखा कि मत्रिमडल म चौधरी साहब को दूसरे नम्बर पर रखने की बात करनी चाहिए। यदि ऐसा हुआ और उन्ह गृह मत्रालय दिया गया तो सारी चीजें एकदम ठीक हो जायेंगी। चौधरी के पक्ष म दलील देते हुए उन्होंने कहा कि चरणसिंह खुद ही बहुत अनुशासन प्रिय हैं। इदिरा गाधी को उन्होने याद दिलाया कि चरणसिह न जे० पी० से अपना आदोलन वापस लेने के लिए कहा था। उन्होने हमेशा जे० पी० के आदोलनात्मक रवैये को नामजूर किया है।

इन्दिरा गाधी न इन बातो को ध्यान से सुना, लेकिन किसी तरह का आश्वासन नही दिया।

इसके एक ही महीने बाद बीजू पटनायक ने, चरणसिंह तथा इदिरा के दो आदमियो—मोहम्मद यूनुस और ओम मेहता के बीच बातचीत का इतजाम किया। उन्ही दिनो बीजू पटनायक ने ओम मेहता को एक चिट्ठी लिखी थी जो 'माई डियर ओम' वाली चिट्ठी के नाम से मशहूर है। बातचीत के हर स्तर पर जो लोग सक्रिय थे उनके अनुसार इस मुलाकात का उद्देश्य 'चरणसिंह—इन्दिरा धुरी' कायम करना था।

लोक सभा के चुनावों की घोषणा से महज दस दिन पूर्व, 8 जनवरी 1977 को चरणसिंह ने इंदिरा गांधी के नाम एक लम्बा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने बताया था कि वे इंदिरा के प्रति कितने वफादार रहे हैं और इंदिरा गांधी ने बिना किसी कसूर के इनको हमेशा गलत समझा।

उन्होंने लिखा— 'आपको याद होगा कि 3 जनवरी 1968 को आपको वाराणसी में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता करनी थी। उस समय संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का काफी मजबूत संगठन था। उसकी स्थानीय इकाई ने आपको गिरफ्तार करने तथा आपके ऊपर मुकदमा चलाने के लिए आपको जन अदालत में पेश करने का फैसला किया था। उन लोगों ने अपने इस इरादे को एक सार्वजनिक सभा में और प्रेस वक्तव्यों में जाहिर कर दिया था। हालांकि उस समय संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी मेरी सरकार में शामिल थी और विधान-सभा में उसके सदस्यों की संख्या 45 थी और हालांकि मैं एक गैर-कांग्रेसी सरकार का नेता था, फिर भी मैंने आपकी वाराणसी-यात्रा के लिए विशेष दिलचस्पी लेकर इंतजाम कराये तथा वाराणसी तक आपके साथ गया। मेरे आदेशों से संसद-सदस्य श्री राजनारायण तथा संसोपा के अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ता और विधायक जेल में डाल दिये गये। विज्ञान कांग्रेस में आपके भाषण के समय वहाँ एक विशाल प्रदर्शन आपके विरुद्ध होने वाला था। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को पण्डाल तक पहुँचने से रोक दिया और तितर बितर कर दिया ।

संसोपा के लोग बहुत गुस्से में थे। मैं शुरू से ही जानता था कि मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ उसका क्या नतीजा होगा? और 17 फरवरी को विधान सभा का अधिवेशन शुरू होने से एक दिन पहले ही मैंने इस्तीफा दे दिया—कांग्रेस से मैंने इसलिए इस्तीफा दिया था क्योंकि आपने सही काम करने में या सही काम करवाने में असफलता का परिचय दिया था। लेकिन आपके लिए एक सही काम करने की वजह से मुझे मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा ।'

इंदिरा गांधी के साथ हाथ मिलाने की होड़ में आर० एस० एस० के सर्वेसर्वा बालासाहब देवरस अकेले ही नहीं थे।

नवम्बर 1975 में जे० पी० को जसलोक अस्पताल पहुँचाया गया। वह अब मौत की कगार पर खड़े थे। उनके गुर्दों ने काम करना बंद कर दिया था और किसी को पता नहीं था कि उनकी जिंदगी अब कितने दिन और चलेगी। जे० पी० इमरजेंसी के बारे में अपने दृष्टिकोण को साफ साफ और बिना किसी लाग-लपेट के व्यक्त करना चाहते थे ताकि उनकी मृत्यु के बाद कोई उनके विचारों को गलत ढंग से पेश न कर सके। यह इतिहास में अपने स्थान के बारे में उनकी चिंता का प्रमाण था—यह चिंता हमेशा उनके साथ लगी रही।

उनके दोस्त मीनू मसानी ने 'अंतिम वसीयतनामा' का मसौदा तैयार किया। बम्बई के प्रमुख वकील सोली सोराबजी एक लेख्य प्रमाणक के साथ अपने कानूनी रजिस्टर और अपनी मोहर लेकर आये तथा उन्होंने मसौदे को औपचारिक रूप दिया। 5 दिसम्बर 1975 को लिखे गये इस दस्तावेज में कहा गया था 'अगर मैं इस दुनिया से हटा दिया गया तो देश और विदेश के अपने मित्रों को और विशेष रूप से भारतीय जनता को मैं यह बताना चाहूँगा कि भारत की स्थिति के बारे में मेरे विचार आज भी बिलकुल वही हैं जो 25 जून 1975 को थे और जो जुलाई 1975 में मैंने प्रधानमंत्री को अपने पत्र में लिखे थे। दरअसल उस समय से आज तक जितनी

भी अशोभनीय घटनाएँ हुई हैं उनसे मेरी आशकाओ को ही बल मिला है मैं उम्मीद करता हूँ कि भारत की जनता अपने को वर्तमान अत्याचारी शासन से अहिंसात्मक ढग से मुक्त करने मे शीघ्र ही सफल होगी।"

लेकिन जे० पी० को अपनी आशाएँ फलीभूत होती और अपनी दुनिया को एक बार फिर बसा हुआ देखने के लिए अभी जीवित रहना था।

23 मार्च 1977 को जनता पार्टी का प्रधानमत्री बनाने के लिए वह दिल्ली पहुँचे। उन्ह जनता पार्टी के गठन के लिए की गयी बैठक की अध्यक्षता किये ठीक दो महीने हुए थे। इन दो महीनो मे देश की राजनीति का पूरी तरह कायाकल्प हो चुका था।

लोग साँस रोककर उस व्यक्ति का इतजार कर रहे थे—उस बीमार और कमजोर व्यक्ति का, जिसने मौत के दरवाजे से वापस आकर यह सब शुरू किया था। आज भी वह किसी पद पर नही था, फिर भी अचानक उसे इतनी शक्ति मिल गयी थी जितनी शायद दिल्ली की उस महारानी के पास भी कभी नही थी जिसकी अपनी खूबसूरत भौहो की महज एक शिकन से न जाने कितने ही मत्रियो और मुख्यमत्रियो का वारा-न्यारा हो जाता था। सचमुच उस दिन जे०पी० 'लोकनायक' की गरिमा से युक्त लग रहे थे। अपनी व्हील चेयर पर हवाई जहाज से जब वह नीचे आये तो ऐसा लगता था कि हर आदमी एक-दूसरे से यही सवाल कर रहा हो कि वह किसे प्रधानमत्री बनायेंगे।

प्रधानमत्री के चयन का काम जे० पी० के लिए भी आसान नही था। बिहार के आदोलन के दिनो मे उनके साथ हुई काफी लम्बी बातचीत को याद किया जा सकता था। पटना स्थित कदमकुआ के अपने निवास-स्थान से दूर बसे एक कस्बे की तरफ कार से जाते समय हर एक दो मील पर लोगो की भीड उन्ह रोक लेती थी और वह थोडी देर ठहर कर कुछ-न-कुछ बातचीत कर लेते थे। तभी उनके सामने यह सवाल आया कि अगला प्रधानमत्री कौन होगा ? उस समय ऐसा लगा कि यह सवाल बहुत बेतुका है। लेकिन जे० पी० ने ऐसा महसूस नही किया। वह काफी दूर तक की बात सोच रहे थे। उनके चेहरे पर अचानक तनाव आ गया। थोडा रुक रुक कर उन्होने कहा, 'ढेर सारे लोग हैं जो प्रधानमत्री के पद के लिए दावा करेंगे मोरारजी भाई भी दावा करेंगे और चरणसिंह भी वाजपेयी भी इस पद के दावेदार होंगे मैं नही जानता कि क्या होगा मुझे यह सोचते हुए भी डर लगता है।" जे० पी० का डर बहुत उचित था।

उस समय जाहिर है कि जगजीवनराम चर्चा मे कही नही थे। लडाई मे वह दूसरी तरफ थे। लेकिन उनके न होने से भी ऐसा नही लगता था कि प्रधानमत्री के चुनाव का काम आसान होगा।

और अब, जब फैसले की घडी अचानक आ गयी थी, ऐसा लगता था कि यह काम और भी कठिन हो गया है। इतजार करती हुई भीड अटकलें लगा रही थी। किसी ने कहा कि जे० पी० जगजीवनराम को ही प्रधानमत्री बनायेंगे। चाहे जो हो जगजीवनराम की ही वजह से इतनी बडी कामयाबी हासिल हो सकी है। लेकिन जे० पी० के एक घनिष्ठ सहयोगी नौजवान ने कहा कि 'जे० पी० मोरारजी देसाई के पक्ष म हैं।" किसी ने सवाल किया—क्यो ? और उसने जवाब दिया, 'क्या नही ? 19 महीने तक जेल मे कौन पडा रहा ? मोरारजी या बाबूजी ? कौन ज्यादा बेदाग है।

लोगो की धारणा थी कि जे० पी० जगजीवनराम को काफी मानते हैं।

1942 म दानो एक साथ हजारीबाग जेल मे थे और बिहार-आदोलन के दिना म जगजीवनराम एक मात्र बुजुग काग्रेस नेता थे जिनके बारे म समभा जाता था कि वह अदर से जे० पी०के सघप के प्रति सहानुभूति रखते ह। हालाकि उन्होन सावजनिक भाषणो म आदोलन की आलोचना की थी जिसका मकसद स्पष्ट ही अपनी नेता इदिरा गाधी को खुश करना था, लेकिन औरो की तरह उ होन कभी जय प्रकाश नारायण के खिलाफ कुछ नही कहा। लेकिन वह भी इमरजेंसी की हवा म वह गय थे। और एक मौके पर जे० पी० ने अपनी जेल डायरी मे लिखा है—"ट्रिब्यून ने जगजीवनराम के भाषण को तीन कॉलमो की हेड-लाइन दी है, जिसम उन्हाने बहुत जोर देकर कहा है कि वे बीस सूत्री कायक्रम को लागू करने के लिए प्रधानमत्री का नेतत्व बहुत जरूरी है। मुझे हैरानी हो रही है कि वफादारी का इस जोर शोर से एलान करने की कौन सी जरूरत आ गयी! क्या इसके पीछे कोई कारण छिपा है, या थोडे थोडे समय बाद अपनी वफादारी जाहिर करने का ही यह सिलसिला है? यकीन नही होता कि जगजीवन बाबू जैसा आदमी इतने खुले ढग से इस तरह की जी हुजूरी करे! कितना पतन हो गया है!"

प्रधानमत्री पद के लिए जगजीवनराम अब एक प्रमुख दावेदार थे। 2 फरवरी 1977 को उनके काग्रेस छोडने के बाद से ही सारे लोगो का ध्यान उनके निवास स्थान 6 कृष्ण मेनन माग पर केंद्रित हो गया था। ऐसा लगता था कि प्रचार-साधनो ने भी मोरारजी के 5 डुप्लेक्स रोड को भुला दिया था। रोजाना चार बजे जगजीवनराम के यहा सवाददाता सम्मेलन होता था, जिसमे दुनिया भर के पत्रकार हिस्सा लेत थे। उस रोमहषक रविवार के बाद से तो जब शाम को आकाशवाणी ने श्रोताओ के मन-पसद कायक्रम मे अंग्रेजी गाने— 'ब्यूटीफुल सण्डे वी आर फ्री' (सुन्दर इतवार है, हम आजाद हैं)—का रिकाड दो बार बजाया जगजीवनराम के यहा के पत्रकार सम्मेलन ऐसे हो गय मानो कोई प्रधानमत्री वहा बोल रहा हो। जगजीवनराम ने कुछ ऐसा ही आभास भी दिया। उनके खिडन के बावजूद दो दिन तक लगातार एक विदेशी पत्रकार उनसे सवाल करता रहा कि क्या वह प्रधानमत्री पद के लिए दावा करेंगे? लेकिन उस पत्रकार की धन के पक्केपन की दाद देनी चाहिए कि तीसरे दिन उसी प्रश्न के उत्तर म जगजीवनराम ने कह दिया "जब कभी देश ने मेरे कधे पर कोई जिम्मेदारी डालनी चाही है जिंदगी मे आज तक मैंने उसे टाला नही है।" वहाँ के वातावरण से कोई भी यह महसूस कर सकता था कि जगजीवनराम के समथको न यह पूरी तरह मान लिया है कि बाबूजी के कधो पर देश की जिम्मेदारी डाल दी जायेगी। इसम कोई शक नही कि वह तो जिम्मेदारी को लेने के लिए पूरी तरह तयार थे।

इस ऐतिहासिक विजय म जगजीवनराम और काग्रेस फार डेमोक्रेसी (सी० एफ० डी०) के उनके सहयोगियो ने जो महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी उस पर कोई उँगली नही उठा सकता था। उनके टाइम त्रम ने काग्रेस को उठाकर अलग फेंक दिया था। इससे भी बडी बात यह थी कि उसने देश के मिजाज और माहौल म एक गुणात्मक तबदीली पैदा करनी थी। मार्टिन वुलकाट ने विस्फोट के दूसरे दिन गार्डियन म लिखा—'जनतत्र एक धमाके के साथ वापस आ गया है। एक ही क्षण म जनता का डर गायब हो गया। एक साथ ही जनता की भावनाओ का का बाँध टूट गया। आजादी मिलन के समय ही लोगो ने ऐसे दृश्य देखे थे, उसके बाद कभी नही। अपने साथ जगजीवनराम व बहुगुणा हरिजनो को तो लाय ही मुसलमानो को भी ल आय, और मतदाताओ के यही दो वग अभी तक काग्रेस का

सहारा बने हुए थे। राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के निधन से कांग्रेस को एक और झटका लगा। इन्दिरा गाधी की जो दुर्दशा हुई उसका वर्णन कलकत्ता के एक मतदाता ने बडे दिलचस्प शब्दो मे किया। उसने कहा कि फखरुद्दीन अली अहमद के निधन के बाद अब इन्दिरा गाधी 'राम और रहीम" दोनो को खो चुकी है।[12]

'राम' की भूमिका को सबने सराहा, लेकिन किसी ने यह नही सोचा था कि वह और उनके साथी इसकी कीमत चाहगे। कांग्रेस को विरोधी दलो की कमजोरी पता थी। चुनाव अभियान मे बराबर कांग्रेस विरोधी नेताओ को अपने नेता का एलान करने के लिए चुनौती देती रही। विरोधी लोग बडी चालाकी से इस सवाल को टालते रहे लेकिन अब वे इसे नही टाल सकते थे।

अतिम परिणाम आने के फौरन बाद जनता पार्टी के प्रवक्ताओ ने सवाद दाताओ से कहा कि इस खेल मे अब चाल कांग्रेस फार डेमोक्रेसी के हाथ म है। उसे पहले जनता पार्टी के साथ विलयन का फैसला करना है, तभी वह साथ मिलकर नेता के चुनाव मे भाग लेगी। जनता और सी० एफ० डी० के लोगो ने एक झण्डे और एक चुनाव चिह्न के तहत चुनाव लडा था और देश आस लगाये था कि दोनो कधे-मे कधा मिलाकर काम करेंगे। सी० एफ० डी० के रवैये पर टिप्पणी करने मे जनता पार्टी के प्रवक्ता काफी सतकता बरत रहे थे। जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत मिल गया था और सी० एफ० डी० की मदद के बगैर भी वह सरकार बना सकती थी। लेकिन वह ऐसा करना नही चाहती थी क्योंकि उससे नयी सरकार की *विश्वसनीयता पर आच आती।*

जे० पी० के पहुँचने के साथ ही घटनाओ का केंद्र बिंदु गाधी पीस फाउडेशन के अहाते का वह छोटा सा बँगला बन गया, जहां से 26 जून 1975 की भोर मे जे० पी० को गिरफ्तार किया गया था। उस शाम जे० पी० से मिलने जाने से पहले जगजीवनराम ने उन्ह एक खत लिखा कि दोनो पार्टियो मे हुई बातचीत के अनुसार वह जनता पार्टी म सी० एफ० डी० के विलय के लिए राजी है। उस समय तक जगजीवनराम को पूरा यकीन था कि उनको ही प्रधानमत्री बनाया जायेगा।

यदि जनता और सी० एफ० डी० के नव निर्वाचित ससद सदस्यो पर चुनाव छोडा गया होता तो जगजीवनराम को बहुमत मिल सकता था। जनता पार्टी के कुल 302 ससद-सदस्य थे (इनम तीन निर्दलीय शामिल थे जिन्होंने बाद मे जनता पार्टी की सदस्यता ले ली थी)। उनमे अलग-अलग दलों के सदस्यो की सख्या मोटे तौर पर इस प्रकार थी—जन सघ—93, बी० एल० डी०—71 सगठन कांग्रेस—51 सोशलिस्ट—28 चन्द्रशेखर-गुट—6, सी० एफ० डी—28 *असबद्ध या क्षेत्रीय दल—25। बी० एल० डी० के पास कोई ठोस सख्या नही थी।* उनके 71 सदस्या मे से लगभग 26 राजनारायण क और लगभग 14 बीजू पटनायक के समथक थे और शेष ऐसे लोग थे जो चौधरी चरणसिंह के प्रति पूरी तरह वफादार थे।

चरणसिंह को जन सघ के नेताओ ने आश्वासन दे दिया था कि उन्ह 'इन्दिरा गाधी बनाया जायगा।" उन्होंने यह समझ लिया था कि जनता पार्टी मे जितनी पार्टियाँ शामिल हैं उनमे जन सघ ही ऐसी है जो उनके लिए सबसे ज्यादा उपयोगी साबित हागी। यदि वह जनसघ से बनाये रहे तो ताज उनके सर पर ही रखा जायगा। लकिन वह देख रहे थे कि सतपाल मलिक और ब्रह्मदत्त नामक उनके

दोनो सिपहसालार बेहद वफादार होने के बावजूद जन सघ के साथ उनके सबधो म रोडा रहेगे। मलिक ने ही देवरस की चिट्ठियो को जेल से उडाया था, जिसके लिए आर० एस० एम० उन्हे कभी माफ नही कर सकता था। इसके अलावा चरणसिह के दूत बनकर वे दोनो इदिरा गाधी से भी मिल चुके थे और दोनो पक्षो के बीच चल रही गुपचुप बातचीत का उन्हे अदर से पता था। थोडे म कह तो उन्हे जरूरत से ज्यादा जानकारी थी और वे आसानी के साथ जन सघ और चरणसिह के दरमियान बन रहे सबधो को मटियामेट कर सकते थे। चरणसिह के कुछ दरबारियो ने उनसे कहा कि ये दोनो लोग ऐसी बातें कह सकते है जिनसे चरणसिह को नुकसान होगा। इससे पहले कि वे कोई शरारत करे उनके खिलाफ कारवाई करना ही समझदारी का काम होगा। चरणसिह ने उन दोनो को फौरन बी० एल० डी० से मुअत्तिल कर दिया। चरणसिह ने सोचा कि इससे जन सघ खुश हो जायेगा और पुरानी बातो को भुला देगा।

लेकिन जब मौका आया तो चरणसिह रह गये ठनठन गोपाल। किसी ने प्रधानमत्री पद के लिए उनका नाम भी प्रस्तावित नही किया।

जन सघ जगजीवनराम के पक्ष मे हो गया था। अगर चुनाव होता तो कँवरलाल गुप्ता और उनके एक दो साथी ही जगजीवनराम का विरोध करते बाकी लोग जगजीवनराम के लिए वोट देते। इसकी वजह यह थी कि प्रधानमत्री के पद पर किसी हरिजन को बैठाने से जनता पार्टी की एक 'शानदार नयी तसवीर' उभरती। इसके अलावा जगजीवनराम को सी० एफ० डी० को काफी तादाद मे अल्पसख्यको और तथाकथित प्रगतिशील तत्वो का समथन प्राप्त था इसलिए उनके नेतत्व से, उनके समथन से जनता पार्टी को मजबूत बनाया जा सकता था। यदि जगजीवन बाबू के पीछे जन सघ रहता तो मुसलमानो और हरिजनो के बीच भी इसकी साख बन जाती। जन सघ के कुछ ऐसे आलोचक भी थे जिनका कहना था कि उनके जगजीवनराम का समथन करने का एक दूसरा ही कारण है। उनका कहना था कि जन सघ सोचता है कि ऐसे प्रधानमत्री पर काबू रखना आसान होगा जिसके समथको की सख्या बहुत कम हो। लेकिन सी० एफ० डी० के 28 सदस्य ही जगजीवनराम के एकमात्र समथक नही थे। उन्हे सोशलिस्टो और चन्द्रशेखर के गुट का भी समथन हासिल था।

मोरारजी देसाई के समथको को साफ नजर आ रहा था कि चुनाव का क्या नतीजा हो सकता है। उनकी तरफ के उस्ताद लोगो म थे कुछ सर्वोदयी नेता तथा राजनीतिक जोड-तोड म माहिर उत्तर प्रदेश के चन्द्रभानु गुप्ता। गुप्ता की मदद कर रहे थे उनके पुराने आश्रित और ढोलकिये राजनारायण, जो अभी पूरी तरह चरणसिह के हनुमान नही बने थे। सी० बी० गुप्ता राजनारायण की नस-नस पहचानते है इसलिए नाटक के खत्म होने तक वह राजनारायण की हरकतो पर पूरी तरह नजर रख रहे थे।

लोक सभा के परिणामो की घोषणा होने के फौरन बाद सर्वोदय के लोगो की एक गुप्त सभा आगे की रणनीति तय करने के लिए हुई। जे० पी० की तरह सत्ता के खेल से बाहर रहते हुए भी उसम सराबोर सर्वोदय के लोग सजग थे कि प्रधानमत्री के चुनाव म वे कोई गलत पक्ष न ले लें। वे जे० पी० के विचार जानना चाहते थे, ताकि सही आदमी की पीठ पर हाथ रख सकें। सव सेवा सघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा दौडते हुए पटना गये और यह खबर लेकर लौटे कि जे० पी० मोरारजी देसाई को प्रधानमत्री बनाना चाहते है। यह महत्वपूर्ण सूचना चुपचाप

देसाई तक पहुँचा दी गयी—इसलिए नहीं कि जे० पी० ऐसा चाहते थे, बल्कि इसके पीछे वही खुशामदी प्रवृत्ति काम कर रही थी जिससे लोग उभरते हुए सितारे का कृपापात्र बनने का प्रयास करते हैं।

दूसरे खेमे के लोग भी जे० पी० के विचार से पूरी तरह अनभिज्ञ नहीं थे। इसलिए जगजीवनराम और बहुगुणा जोर दे रहे थे कि सामान्य जनतान्त्रिक ढंग से नेता का चुनाव होना चाहिए। लेकिन उनसे कहा गया कि मौजूदा हालत में चुनाव कराने से पार्टी के अंदर अनावश्यक तनाव पैदा हो जायेंगे और जिस जनता ने पार्टी को इतना बड़ा बहुमत दिया है उसी की नजरों में पार्टी गिर जायेगी। आखिर में एक बीच का रास्ता निकाला गया जिसे जगजीवनराम व बहुगुणा ने मान लिया—कांग्रेस की परम्परा के अनुसार सहमति से चुनाव किया जाये। जे० पी० संसद-सदस्यों से एक-एक कर मिलें, उनके विचार जान लें और फिर 'सर्व सम्मति से घोषणा कर दें।" जे० पी० मान गये। यद्यपि वहां एकत्र सर्वोदयी नेताओं को यह तरीका पसंद नहीं था, पर वे बीच में बोल ही नहीं सकते थे। उस समय तो वे यही कर सकते थे कि मत-संग्रह की प्रक्रिया में जे० बी० कृपालानी को शामिल करा दें। किसी ने जे० पी० के कान में यह सुझाव रखा और बात बन गयी। जे० पी० ने कहा कि यह तो अच्छा होगा कि कृपालानी उनको सदस्यों के विचार जानने में मदद करें। जगजीवनराम के लोगों को यह पसंद नहीं आया लेकिन इस बात पर एतराज करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। और 23 मार्च 1977 की शाम को गांधी शांति प्रतिष्ठान के सचिव राधाकृष्ण ने जे० पी० की तरफ से संवाददाताओं को बताया कि मत संग्रह का काम अगले दिन सवेरे शुरू होगा। दोनों बूढ़े व्यक्ति—जे० पी० और जे० बी०—दो अलग-अलग कुर्सियों पर बैठेंगे और एक एक कर संसद-सदस्य एक चिट पर अपनी पसन्द लिखकर उन्हें देंगे।

मोरारजी के समर्थकों को लगा कि वे लड़ाई हार गये—दूसरे दिन सवेरे एक तमाशा होगा जिसका नतीजा पहले से ही मालूम है। वे जानते थे कि जे० पी० और जे० बी० दोनों मोरारजी देसाई के पक्ष में हैं लेकिन कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं हैं। जो पद्धति तय की गयी थी उसमें ये दोनों बुजुर्ग महज क्लर्क बनकर रह गये थे। सर्वोदयी लोगों को बेहद चिंता हो रही थी लेकिन वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। काफी रात गये भीड़ के छंट जाने के बाद, चार सर्वोदयी—राधाकृष्ण, सिद्धराज ढड्ढा, नारायण देसाई और गोविन्दराव देशपांडे गांधी शांति प्रतिष्ठान की लॉन में बैठकर विचार विमर्श करने लगे। जो कुछ हो रहा है बहुत अनुचित है—यह उनकी राय थी। नाम की घोषणा जे० पी० करेंगे, सब लोग समझेंगे कि यही नाम जे० पी० को पसंद था, और लोगों को जे० पी० की पसंद की झलक भी नहीं मिलेगी। उनका कहना था कि जे० पी० को इस तरह बांध देना अच्छा नहीं है। यही समय है जब कुछ किया जाना चाहिए।

उनमें से एक ने चन्द्रशेखर को फोन किया लेकिन पता चला कि वह जगजीवनराम के यहाँ हैं। रात के ग्यारह बज रहे थे लेकिन चारों लोग बेहद बेचैन थे। उन्होंने तय किया कि आज सो कर गुजारने वाली रात नहीं है। वे फौरन जगजीवनराम के घर पहुँचे। वहाँ कोई बड़ी-सी बैठक चल रही थी। लगता था कि जगजीवनराम के सारे समर्थक जमा हैं। जॉर्ज फर्नांडीज नंदिनी सतपथी और एच० एन० बहुगुणा। चारों लोगों ने चन्द्रशेखर के पास खबर भिजवायी। चन्द्रशेखर उन लोगों में से थे जो जे० पी० के बहुत ही करीब थे,

लेकिन वह मोरारजी देसाई के प्रशसक नही थे और जो तरीका अपनाया गया था उसम उन्ह कोई आपत्तिजनक बात नही दिखायी दे रही थी।

फिर चारो लोग अपनी कार से मोरारजी देसाई के यहा पहुँचे और वहा से एल० के० आडवाणी के पास गये। आडवाणी ने कहा कि जन सघ जगजीवनराम का समर्थन करेगा, क्योकि उनसे बताया गया है कि जे० पी० ऐसा ही चाहते हैं। राधाकृष्ण ने कहा कि यह बिलकुल गलत है, जे० पी० तो मोरारजी देसाई को प्रधानमत्री बनाना चाहते है।

आडवाणी को बडी हैरत हुई। बोले, "आपने पहले क्यो नही बताया ?" उनकी पार्टी ने एक ही दिन पहले फसला किया है और अब कुछ करना बहुत कठिन होगा। फिर भी, अगले दिन सवेरे राजघाट पर गाधी की समाधि पर शपथ लने के लिए जब सब लोग इकट्ठे होगे तो इस विषय पर जन सघ के सदस्यो से बात की जायगी।

जब चारो गाधी शाति प्रतिष्ठान वापस पहुँचे तो रात के ढाई बज रहे थे। सवेरे पाच बजे वे फिर निकल पडे। राधाकृष्ण और नारायण देसाई मोरारजी के पास और गोविन्दराव तथा सिद्धराज ढडडा नानाजी देशमुख के पास गये।

"आपको पता है कि क्या हो रहा है ?" राधाकृष्ण ने मोरारजी से पूछा। उन्होने मोरारजी को बताया कि मत सग्रह का तरीका अपनाया जायेगा तो वह बाजी हार जायगे। लेकिन मोरारजी उनसे सहमत नही थे। राधाकृष्ण ने महसूस किया कि वह तो अपनी 'खयाली दुनिया' म पडे हुए हैं। "जब हमने मोरारजी को सारी स्थिति बतायी तो उन्होने हर बार की तरह इसे भी ईश्वर पर छोड दिया।"[13]

मोरारजी के घर से दोनो बीजू पटनायक के यहा गये। उनका विचार था कि वहाँ से चरणसिंह के नजरिये का अदाजा मिलेगा। उन दिनो चरणसिंह मूत्र रोग से पीडित विलिगडन अस्पताल म पडे थे, लेकिन पटनायक तथा बी० एल० डी० के अन्य नेताओ के साथ उनका सपर्क बना हुआ था। पटनायक ने राधाकृष्ण और नारायण देसाई को बताया कि चरणसिंह ने धमकी दी है कि अगर जगजीवनराम को प्रधानमत्री बना दिया गया तो वह जनता पार्टी से अपने को अलग कर लेंगे। पटनायक ने यह भी बताया कि चरणसिंह इस आशय का एक पत्र जे० पी० को लिख रहे है।

दोनो गाधी शाति प्रतिष्ठान वापस आ गये और उन्होने जे० पी० से बातचीत की। उन्होने पूछा कि आप वस्तुत चाहते क्या है ? जे० पी० ने बताया कि मेरे दिमाग म यह बात बहुत साफ है कि देसाई को प्रधानमत्री पद मिलना चाहिए। मैं यह भी चाहता हूँ कि जगजीवनराम और चरणसिंह भी मत्रिमडल में रह।

फिर मत-सग्रह का ढोग करने की क्या तुक है ? वह खुद को ख्वाहमख्वाह तनाव म क्यो डाल रहे ह ? दोनो व्यक्तियो ने जे० पी० को इस बात पर राजी कर लिया कि मत सग्रह का काम एकदम फिजूल है। जे० पी० ने कहा, 'दूसरो से भी आप बात करिये।"

राजघाट पर उन्होने अटलबिहारी वाजपेयी से बातचीत की। वाजपेयी ने बताया कि उन्ह नही पता था कि जे० पी० मोरारजी देसाई को चाहते हैं। यदि ऐसा है तो जन सघ उनका साथ देगा। इसम पहले नानाजी देशमुख भी मान चुके थे कि जयप्रकाश नारायण की इच्छा के विपरीत जाने का तो सवाल ही पैदा नही होता। जन सघ किसी तरह का सकट पैदा करना नही चाहता और उसने फसला

किया है कि वह सब से कम अडचन के रास्ते पर-चलेगा।

इस बीच गाधी शाति प्रतिष्ठान म एकत्रित ससद सदस्यो की भीड म काफी बेचैनी फैल रही थी। नेता के विधिवत चुनाव का समय और स्थान तय हो चुका था और दोपहर म बारह बजे पार्लियामेंट के सेंट्रल हॉल मे चुनाव होना था। हर पल उत्सुकता बढती जा रही थी।

सवेरे नौ बजे के आस-पास जे० बी० कृपालानी पहुँचे और उन्ह राधाकृष्ण तथा अन्य लोगो ने बताया कि रात म जो तरीका तय किया गया था उसे अब खत्म कर देने का फैसला किया गया है। कृपालानी इसके पीछे निहित उद्देश्य से सहमत थे, लेकिन वर्षो की तपस्या से पैनी हुई राजनीतिक दृष्टि से आगे देखते हुए उन्होने कहा कि एकतरफा फैसला नही किया जाना चाहिए, क्योकि इसस उनकी बडी आलोचना होगी। अगर इस तरीके को बदलना ही है तो खुद ससद सदस्यो को ही ऐसा करने दीजिये। यह बहुत उचित और व्यावहारिक सलाह थी।

तब तक सी० बी० गुप्ता और राजनारायण अपना तुरुप का पत्ता चल चुके थ। चाचार्य सी० बी० गुप्ता ने चरणसिंह को पटाने के लिए राजनारायण को विलिंगडन अस्पताल भेज दिया था। वहा पहुँचते ही राजनारायण ने बिस्तर पर लेटे चरणसिंह से कहा "जगजीवन बाबू प्रधानमत्री बनने जा रहे है।" चरणसिंह की भौह नफरत से तन गयी। जगजीवनराम के प्रति चरणसिंह की अरुचि किसी से छिपी नही है। राजनारायण ने अब दूसरा पत्ता फेंका बाबूजी तो नाममात्र के प्रधानमत्री रहगे असली प्रधानमत्री तो आपका दोस्त बहुगुणा होगा।"[14] राजनारायण के चेहरे पर एक व्यग्य भरी मुसकान थी।

तीर निशाने पर लगा। चरणसिंह कुछ भी बर्दाश्त कर सकते थे लेकिन उत्तर प्रदेश की राजनीति म अपने सबसे बडे दुश्मन हमवतीनदन बहुगुणा को वह फूटी आखो नही देख सकते थे। वह बौखलाकर बोले "इन लोगो के नीचे काम करने की बजाय मैं दोबारा जेल जाना पसन्द करूँगा।"

राजनारायण अपने साथ समस्या का समाधान भी लाये थे। उन्होन कहा "बेहतर हो कि आप अपनी भावना को जयप्रकाशजी तक पहुँचा दीजिये, वरना बहुत देर हो जायेगी।"

चरणसिंह ने महज चार पक्तियो का एक पत्र जे० पी० के नाम लिखा कि वह जगजीवनराम के प्रधानमत्री होने पर उनके साथ काम नही कर सकेंगे, लेकिन वह मोरारजी देसाई के पक्ष मे प्रधानमत्री पद के लिए अपना नाम वापस लेने के लिए तैयार ह।

यह पत्र लेकर राजनारायण तजी से रवाना हुए—आगे-आग वह खुद, पीछे पीछे उनके नौजवान चमचे। कुछ चमचो को उन्होने गाधी शाति प्रतिष्ठान म जगजीवनराम के खिलाफ हवा बनान के लिए पहले ही छोड रखा था। ये लोग गस्से म कह रह थ, 'चमार कैसे प्रधानमत्री बनगा? कल तक हमे जेल मे बद किया और आज प्रधानमत्री बनेगा!"

मोरारजी देसाइ अपने निवास-स्थान 5 डूप्लेक्स रोड, पर सवाददाताओ से बातचीत म मशगूल थे। कुछ नौजवानों ने उनके हाथ म एक पर्चा देकर कहा 'चौधरी साहब न यह पत्र जयप्रकाश जी के नाम लिखा है।" जाहिर है कि यह वही खत था जिसे राजनारायण ने लिखवाया था। चरणसिंह ने इसे जे० पी० के नाम लिखा था और मोरारजी देसाई के पास उसे ले जाने की कोई जरूरत नही थी। लेकिन राजनारायण मोरारजी के प्रति वफादारी दिखान का कोई मौका

हाथ से नही जाने देना चाहते थे। मोरारजी ने लापरवाह ढग से पत्र को पढा। लेकिन जो लोग वहा मौजूद थे उन्हे यह समझते देर नही लगी कि पत्र म कोई बहुत जरूरी बात कही गयी है, क्योकि उन्होने नौजवानो से कहा, 'इसे फौरन जयप्रकाशजी के पास ले जाओ।" वह फिर सवाददाताओ से बातचीत मे लग गये। बातचीत भावी प्रधानमत्री के बारे म हो रही थी। मोरारजी बोले कि वह सोच भी नही सकते कि एक 'भ्रष्ट आदमी' कैसे प्रधानमत्री बन सकता है। उन्होने उसका नाम भी ले दिया और इस बात की चिता नही की कि टेप रिकॉर्डर उनकी बातो को दज कर रहा है। उन्होने उस पद के प्रति बेहद अलगाव दिखाने का नाटक किया जो कुछ ही घटो के अन्दर उन्हे प्राप्त होने वाला था। अपने छोटे छोटे बालो पर हाथ फेरते हुए उन्होने कहा, 'मैं उन लोगो मे से नही हूँ जो जोड तोड मे यकीन रखते है।"

उधर गाधी शाति प्रतिष्ठान मे अपनी राय का इदराज कराने के लिए ससद सदस्यो ने मेला लगा रखा था। इनमे से अधिकाश को अभी तक यह नही पता चला था कि मत-सग्रह की योजना छोड दी गयी थी। खुद जगजीवनराम राधाकृष्ण के मकान म थे और उन्हे कुछ पता नही था कि क्या हो रहा है। जिस समय राजनारायण पत्र लेकर वापस पहुँचे सी० बी० गुप्ता ने वहा जमा भीड को एक अनौपचारिक बैठक का रूप दे दिया, और खुद इसकी अध्यक्षता करने लगे। बडी ऐठ के साथ राजनारायण उठे और चरणसिह का पत्र पढने लगे, मानो कोई बम फेंक रहे हो। उसके बाद उन्होने प्रस्ताव किया कि मत सग्रह की अनावश्यक प्रक्रिया की बजाय दोनो नेताओ अर्थात जे० पी० और कृपालानी को अधिकार दे दिया जाय कि वे प्रधानमत्री के लिए नाम की घोषणा कर दें। प्रस्ताव का तुरत अनुमोदन हो गया लेकिन अनेक सदस्य विरोध मे उठ खडे हुए। विरोध प्रकट करने वालो मे प्रमुख थे रामधन जो चन्द्रशेखर के घनिष्ठ मित्र हैं। लेकिन अब वे केवल आग ही उगल सकते थे, और कुछ नही कर सकते थे। जगजीवनराम को पता चला तो वह चुपचाप वहाँ से खिसक लिये।

पार्लियामेंट के सेंट्रल हाल म सदस्यो के इकट्ठा होने तक यह सकट खुलकर सामने आ गया था। प्रसन्नचित्त मोरारजी देसाई बडे शात भाव से मच के नीचे जगमगाती बत्तियो के बीच बैठे थे। जगजीवनराम और बहुगुणा का कही पता नही था। सी० एफ० डी० के सदस्यो को एक एक कर चुपचाप हॉल से बाहर बुला लिया गया। कुछ देर बाद आचार्य कृपालानी अदर पहुँचे और उनके पीछे एक व्हील चेयर मे जे० पी०। जे० पी० इतने कमजोर और उत्तेजित थे कि वह कुछ बोल नही सकते थे। इसलिए कृपालानी के जिम्मे मोरारजी के नाम की घोषणा का काम छोड दिया गया। अभी लोगों की हर्ष ध्वनि समाप्त भी नही हुई थी कि कृपालानी ने बडे उदास लहजे म कहा, 'सविधान म दो प्रधानमत्री बनाने की गुजाइश नही है।'

आखिरकार मोरारजी को मन की मुराद मिल गयी। उन्होने भी सोचा कि जिदगी म एक बार तो अपनी भावनाओ को जग जाहिर किया जा सकता है। उन्होने कहा, "आम तौर से मैं कभी भावुक नही होता। लेकिन मेरे कधो पर जो भार सौंपा गया है उससे मैं अभिभूत हो गया हूँ।' अपने सक्षिप्त अभिवचन म जे० पी० ने चेतावनी दी कि जरूरत पडने पर सरकार की आलोचना करने के लिए वह आजाद रहना चाहेगे लेकिन तुरत ही देसाई ने उनको वचन दिया कि वह "जे० पी० की सलाह के अनुसार काम करेंगे।" जे० पी० बहुत भावुक हो

गये। अपने आमू पोछने के लिए उन्होंने चश्मा उतार लिया आखिरकार एक तो ऐसा प्रधानमत्री बना जो उनकी सलाह पर चलने का वायदा कर रहा है। नेहरू-युग का अत देखने के लिए ही वह जीवित थे। अपन लम्बे कायकाल से मानो विदा लते हुए उ होने कहा, मैं बीमार हूँ और शायद अधिक दिन तक जिंदा न रह सकू। लेकिन आज मैं इस आश्वासन के साथ जाते हुए बहुत खुश हूँ।"

समारोह के खत्म होने पर दादा कृपालानी ने मोरारजी से कान मे कहा, 'आपको जाकर बाबूजी से मिल लेना चाहिए।" देसाई ने बडी बेरुखी से जवाब दिया, "मैं क्या उनके पास जाऊँ?"

जगजीवनराम के खेमे म गुस्से की लहर दौड गयी थी। क्राति' कडवी लगने लगी थी। 6 कृष्ण मेनन माग के बाहर और भीतर लोग बौखलाये हुए थे। हरिजनो की भीड न जनता पार्टी के झण्डो को फाड दिया और पैरो तले रौंद दिया। जगजीवनराम एक कमरे से दूसरे कमरे मे मेज-कुर्सियो को लात मारते हुए बेचैनी से घूम रहे थे और अपने नौकरो पर बरस रहे थे। बीच-बीच म वह चीख पडते कि यह विश्वासघात किया गया है। जनता पार्टी के कई नेता उ ह शात करने उनके घर पहुँचे और उनसे बताया गया कि जे० पी० ने कहा है कि जो भी पद वह लेना चाह ल सकत हैं। जगजीवनराम गुस्से से चिल्ला उठे, "जयप्रकाश नारायण कौन होत है मुझे कुछ देने वाले?'

चार दिन के इस सनसनीखेज नाटक के बाद जगजीवनराम राजी हो गये कि देसाई जो भी मत्रालय उन्हें सौंपेगे वह सहर्ष स्वीकार करेंगे। बस, वह इतना ही चाहते थे कि कुछ ऐसा हो जिससे उनकी इज्जत बनी रहे और जे० पी० ने ऐसा कर भी दिया। पटना से उन्होंने टेलीफोन पर एक सदेश भेजा, 'आपके सहयोग के बिना नये भारत का निर्माण सभव नही है।'

और इस प्रकार वे "नये भारत के निर्माण" म लग गये।

टिप्पणियाँ

1 मोरारजी देसाई द स्टोरी ऑफ माइ लाइफ।
2 चरणसिंह के एक सिपहसालार से लेखक की बातचीत।
3 द स्टेटसमन, 8 अगस्त 1973
4 मीनू मसानी, द इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया, 19 मई 1974
5 वलेस हैगेन, आफ्टर नेहरू हू?
6 द स्टेटसमन, 3 अप्रल 1973
7 इंडियन एक्सप्रेस 14 अप्रैल 1974
8 द स्टेटसमन, 11 फरवरी 1973
9 वलेस हैगन द्वारा आफ्टर नेहरू हू? म उद्धृत।
10 स्वराज, मरे, इंग्लण्ड 12 फरवरी 1976
11 जे० पी०, जेल डायरी, 12 सितम्बर 1975
12 एम० जे० अकबर, आनन्द बाजार पत्रिका, 11 फरवरी 1977
13 चरणसिंह के एक समथक स लेखक की बातचीत।

2

मोरारजी देसाई—हमेशा सही

रूखी और भारी आवाज में किसी ने शिकायत की, "यह आदमी कभी खादी नहीं पहनता। महज़ यहाँ आने के लिए उसने खादी के कपड़े खरीदे हैं।"

मोरारजी देसाई ने अपने सामने खड़े उस नौजवान की ओर घूरकर देखा और गरम पड़े, "अपनी बनियान दिखाओ।"

नौजवान हिचकिचाया लेकिन हुक्म-उदूली की हिम्मत नहीं पड़ी। वह आगे बढ़ा। देसाई ने उसकी कमीज़ का कॉलर खिसकाते हुए अंदर झाँक कर देखा। उसने मिल की बनी बनियान पहन रखी थी। जहाँ तक देसाई की बात थी, उसका नाम खारिज कर दिया गया। वह दूसरी अर्जी देखने लगे।

यह घटना नवम्बर 1956 की है। 1957 के आम चुनावों में उम्मीदवारों का चयन करने के लिए देसाई को कांग्रेस प्रेक्षक बनाकर पटना भेजा गया था। बेहद ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ मोरारजी ने निश्चय कर लिया था कि वह 'किसी से भी प्रभावित हुए बिना सर्वोत्तम पुरुषों और महिलाओं का चयन करेंगे।' उम्मीदवारों के चयन में उन्होंने पूरी तरह से हर एक की छानबीन की।

पटना से रवाना होने से पूर्व एक खूबसूरत नवयुवती देसाई के पास आयी और उनसे बड़ी इज्जत के साथ कहा, 'मोरारजी भाई, आप बिहार के कांग्रेस जन को कुछ मशविरा देंगे?" राज्य में कांग्रेस दो प्रमुख नेताओं डाक्टर श्रीकृष्ण सिन्हा और डाक्टर अनुग्रहनारायण सिन्हा की आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण जातिवाद के दलदल में बुरी तरह फँसी थी और इस महिला ने सोचा कि शायद देसाई कांग्रेस जन को इस संबंध में कोई सलाह दें। उन दिनों मोरारजी का बहुत रौब था। वह बंबई के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे। उनकी शोहरत थी कि वह खरे व बेलाग आदमी हैं। जवाहरलाल नेहरू ने उनको अभी हाल में दिल्ली बुला लिया था और वह शीघ्र ही केन्द्रीय मंत्री बनने वाले थे।

देसाई ने तीखी नज़रों से उस महिला की ओर देखा। वह मोहकता की जीती जागती तस्वीर थी। घुंघराले बाल, चमकती चूड़ियाँ और पॉलिश किये नाखून। बेशक उन्होंने खादी पहन रखी थी, लेकिन उनकी साड़ी पर जरी का भड़कीला

काम किया हुआ था। उन्हें पता था कि यह बिहार की ससद सदस्या तारकेश्वरी सिन्हा है, जिन्हें कई लोग 'ससद की सुदरी' कहा करते हैं।

देसाई ने नाखशी जाहिर करते हुए कहा, 'आप बहुत महँगे कपड़े पहनती हो।" और इसके साथ ही उन्होंने किफायतशारी और सादा जीवन पर एक छोटा सा लेक्चर दे डाला। काग्रेस मे महिलाओ को ऐसा कपड़ा नही पहनना चाहिए, दिखावा करना अच्छा नहीं है।

जब देसाई ने चूड़ियों पर छीटाकशी की तो तारकेश्वरी सिन्हा ने फौरन विरोध किया "यह बिहार का रिवाज है। काई शादीशुदा औरत अगर चूड़ी नहीं पहनती तो इसे बुरा माना जाता है।" लेकिन जवाब मे देसाई को एक और लेक्चर झाड़ने का मौका मिल गया।

प्रगतिशील खयालो की महिला तारकेश्वरी अपनी व्यक्तिगत जिंदगी के तौर-तरीके म किसी के दखल देने की आदी नहीं थी। उनको मोरारजी की बातो मे मिथ्या दम्भ की गध आयी। अपनी निगाह म देसाई कितने ही उचित और विनीत हो पर किसी की साडी और चूडिया मे उन्हे कोई सरोकार नही हो सकता। उसी दिन तारकेश्वरी ने जवाहरलाल नेहरू को एक पत्र लिखा, जिसमे देसाई द्वारा की गयी व्यक्तिगत टिप्पणियो पर विरोध प्रकट करते हुए हैरानी जाहिर की कि काग्रेस ससदीय बोर्ड ने राज्यों मे ऐसे प्रेक्षक क्यो नही भेजे जिनको सही और गलत की ज्यादा समझ हो। नेहरू ने पत्र पर अपनी टिप्पणी लिखकर उसे तत्कालीन काग्रेस अध्यक्ष यू० एन० ढेबर को भेज दिया।

अखबारो म भी इस मनको काग्रेस प्रेक्षक के बारे म छोटी-छोटी खबर छपी थी। बिहार काग्रेस के सदर दफ्तर सदाकत आश्रम म एक उम्मीदवार की बनियान देखने वाली घटना का पटना के एक दैनिक अखबार ने बाक्स आइटम बनाकर छापा था और यह किस्सा दिल्ली तक पहुँच गया था।

पटना से वापस पहुँचते ही मजाकिया स्वभाव वाले फीरोज गाधी ने तारकेश्वरी को पार्लियामेंट के सेंट्रल हॉल म बुलाया और पूछा 'तारकेश्वरी, जरा यह बताना कि क्या मोरारजी ने महिला उम्मीदवारो के पेटीकोटो का भी मुआयना किया ?" फीरोज गाधी की इस फबती से सभी हँस पडे। तारकेश्वरी ने लाख विरोध किया, लेकिन किसी को क्या परवाह ? कई दिन तक सेंट्रल हॉल मे बनियान और पेटीकोट के मजाक पर ठहाके लगते रहे।

आखिरकार मोरारजी तक यह मजाक पहुँचा। इस पर उन्हे गुस्सा आना स्वाभाविक था, लेकिन मोरारजी का तो दावा है कि उन्होने तमाम मनोभावो पर काबू पा लिया है जिसम क्रोध भी शामिल है। इसलिए वह गुस्सा भी नहीं कर सके, हालांकि वह इस बात को भूल नही पाये।

मार्च 1958 मे देसाई का केन्द्रीय वित्त मन्त्री के पद पर नियुक्त करने के बाद नेहरू ने तारकेश्वरी सिन्हा को बुलाया और कहा कि वह उन्हे उप मन्त्री बनाना चाहते हैं और मोरारजी देसाई के तहत रखना चाहते है। तारकेश्वरी ने कहा कि एक बार मोरारजी के साथ नाखुशगवार टक्कर हो चुकी है इसलिए उनके साथ उप मन्त्री नियुक्त होने से दोनो के लिए नाजुक स्थिति पैदा हो सकती है। लेकिन नेहरू अड़े रहे—शायद उन्हें एक घोर परहेजगार व्यक्ति के साथ तड़क भड़क-पसद सुन्दरी को रखने मे मजा आ रहा था।

तारकेश्वरी सिन्हा देसाई से मिलने गयीं और उनसे बोलीं 'नेहरूजी मुझे आपका डिप्टी मिनिस्टर बनाना चाहते हैं, लेकिन हम लोगो के बीच तनाव पैदा

हो चुका है, इसलिए मैंने उनसे कहा कि शायद आपको कुछ बुरा लगे। लेकिन वह इस पर अड़े हुए है, इसलिए मैं आपके पास आयी हूँ। यदि आपको मेरे बारे म कोई एतराज हो तो ।"

"तुमने लोगो से यह क्यो कहा कि मैंने पटना म महिला-उम्मीदवारो के पेटीकोटो की छानबीन की ?" देसाई ने पूछा।

एकदम गलत," तारकेश्वरी ने जवाब दिया, 'मैंने किसी से ऐसा नही कहा। सही बात तो यह है कि जब किसी ने ऐसा कहा तो मैंने जोरदार विरोध किया।"

"लेकिन तुमने मेरे खिलाफ नेहरूजी को खत लिखा था।" मोरारजी को यू० एन० ढेबर ने वह खत दिखाया था।

"हा, मैंने लिखा था। आपकी व्यक्तिगत टीकाओ से मुझे गुस्सा आ गया था।"

'तुमने मेरी सलाह चाही थी और मैंने अपनी सलाह दे दी थी। यदि तुम्ह मेरी सलाह पसद नही थी तो दूसरो को लिखने की बजाय तुम्ह मुझसे कहना चाहिए था।"

तारकेश्वरी ने बताया कि उन्ह यह पसद नही है कि वह क्या पहनती हैं और कैसे रहती हैं इसमे कोई दखल दे। ये व्यक्तिगत मामले हैं और वह अपना रास्ता तय करने मे किसी की दखलदाजी नही पसद करती। यदि उनके डिप्टी मिनिस्टर होने मे देसाई को कोई एतराज हो तो उन्ह बता देना चाहिए।

"मुझे कोई एतराज नही है" मोरारजी ने शात लहजे मे कहा, "तुम्हारा स्वागत है—तुम मेरे साथ आ सकती हो।"

तारकेश्वरी मोरारजी के मत्रालय मे उप मत्री हो गयी और जल्दी ही उनके बीच काफी आपसी सद्भाव पैदा हो गया।

मोरारजी देसाई यह आरोप सुनना कभी पसद नही करते कि क्रोध की भावना उनकी एक कमजोरी है या यह कि उनके मन मे नफरत के लिए भी कोई जगह है। उन्होने जीवन भर परिश्रम करके घृणा की भावना का विश्लेषण किया है और उसे अपने मन से निकाल दिया है। वह मानवीय दुर्बलताओ के विरुद्ध इतने दिन व इतनी मुस्तैदी से लडे हैं कि उनके लिए सदाचार अपने म स्वय पूजनीय बन गया है।

बात तब की है जब वे केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मत्री (नवबर 1956 मार्च 1958) थे। एक दिन बम्बई के उद्योगपति स्वर्गीय के० सी० महिन्द्रा उनसे मिलने गये। महिन्द्रा तीन औद्योगिक यूनिटें कायम करने के लिए लाइसेंस चाहते थे और इसके लिए उन्होने मत्रालय म दरख्वास्त दी थी। लेकिन उनकी मोरारजी से इस विषय पर बातचीत नही हुई। महिन्द्रा इतिहासकार भी थे। किसी तरह बात शिवाजी व अफजलखा के बारे म होने लगी और फिर इसी विषय पर हानी रही। महिन्द्रा ने शिवाजी के खिलाफ राय जाहिर की तो मोरारजी बिगड गये। बहस म गर्मी आ गयी और मोरारजी ने महिन्द्रा को अँग्रेजो का पिट्ठू कह दिया। जब तक बातचीत खत्म हुई काफी कडवाहट पैदा हो गयी थी।

उसी दिन महिन्द्रा मनुभाई शाह से मिलने गये। वह मोरारजी के मत्रालय में राज्य मत्री थे। अपने व्यापार के सिलसिले म बातचीत करने से पहले महिन्द्रा ने शाह को मोरारजी के साथ हुई झडप के बारे म बताया। बाद म मोरारजी ने

भी इस बारे में मनुभाई को बताया और महिन्द्रा के खिलाफ काफी सख्त-सुस्त बातें कीं।

उसी रात जब मोरारजी ने दिन भर की फाइलें देखनी शुरू कीं तो उन्हें महिन्द्रा की दरख्वास्त से संबंधित तीनों फाइलें मिलीं। मनुभाई ने इन फाइलों को उनके पास भेज दिया था। गुस्से में वह उन फाइलों को देखते रहे। फिर उन्होंने मनुभाई को फोन मिलाया।

"आप समझते हैं कि मैं बहुत ओछा और छोटे दिमाग का आदमी हूँ?" उन्होंने मनुभाई से सवाल किया।

एक क्षण के लिए मनुभाई समझ नहीं पाये कि मोरारजी का इशारा किस तरफ है।

मोरारजी कहने लगे, "आपने महिन्द्रा की तीनों फाइलें मेरे पास यह जानते हुए भी भेज दी हैं कि उनसे मेरी लड़ाई हो चुकी है। क्या आप सोचते हैं कि मैं इतना नीच हूँ? आप सोचते हैं कि मैं बदला लूंगा? आपने सोचा होगा कि गुस्से में मैं तीनों दरख्वास्तें नामंजूर कर दूंगा। आपकी जानकारी के लिए मैं बता दूँ कि मैंने तीनों दरख्वास्तें मंजूर कर ली हैं।"

मुमकिन है कि अगर उस दिन इस तरह की बहस नहीं हुई होती तो मोरारजी को महिन्द्रा की दरख्वास्तों में कोई खामी मिल जाती और वे उन्हें नामंजूर कर देते। लेकिन यह उनके लिए अब एक चुनौती बन गयी थी। उन्हें साबित करना था कि वह इस तरह की मानवीय कमजोरियों के शिकार नहीं हैं।

मोरारजी का दिमाग बहुत ही विचित्र जटिलताओं का पुलिंदा है। वह बहुत अड़ियल, रूखे, नुकीले, कांटेदार स्वभाव के हैं जो समझते हैं कि उनसे कभी गलती हो ही नहीं सकती। "मेरे दिमाग में तनिक भी संदेह नहीं है"—यह जुमला मोरारजी के भाषणों का ऐसा अभिन्न हिस्सा बन चुका था कि उन दिनों गुजरात और बम्बई के राजनीतिज्ञों और पत्रकारों के बीच इस पर खासा मजाक चल पड़ा था। बहस में वह आपसे सहमत हो सकते हैं, पर उनका ही मुद्दा हमेशा ऊपर रहेगा, क्योंकि उन्हें अपने पक्ष के सही होने में कभी संदेह नहीं रहता। बहस सैक्स पर हो रही हो या नशाबंदी पर, गोआ पर हो या सिक्किम पर या इस विषय पर कि आदमी को क्या खाना चाहिए—उन्हें अपने तर्क हमेशा सही लगते हैं।

इस दिमागी बनावट का एक अंश तो उन्हें अपने पूर्वजों से—जो अनाविल ब्राह्मण थे—विरासत में मिला है जो "साफगोई, एक हद तक गर्म मिजाज और आजाद खयालों के लिए जाने जाते थे।"[1] एक अंश उन्हें अपने परिवार के बेहद धार्मिक माहौल में तथा 'रामायण', 'महाभारत' तथा 'पंचतंत्र' के अध्ययन से मिला था। वह कहा करते हैं, 'नैतिकता के बारे में मेरे विचार इन्हीं पुस्तकों के जरिये बने थे।' जिंदगी के शुरू के दिनों की आर्थिक तंगी और लड़कपन में ही लगे झटकों का निश्चय ही उनके व्यक्तित्व के निर्माण में हाथ रहा है। मोरारजी केवल 15 वर्ष के थे तो उनके पिता ने कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। इसका उन पर मनोवैज्ञानिक असर तो पड़ा ही, साथ में उनके युवा कंधों पर एक बड़े परिवार का बोझ आ गया, जिसमें शामिल थी उनकी दादी, माँ, तीन छोटे भाई, दो बहनें और वह छोटी लड़की जिससे पिता की मौत के तीन दिन बाद ही उनकी शादी हुई थी।

इसके साथ-साथ उनके मन में हमेशा ही यह कांटा रहा है कि जिंदगी में बार-बार उनके साथ अन्याय किया गया है। 1920 वाले दशक के उत्तरार्द्ध में, उनकी

जवानी के दिनों में जब वह डिप्टी कलेक्टर थे, उनके अँग्रेज कलेक्टर ने उनके साथ अन्याय किया। उनके खिलाफ उसने रिपोर्ट की, जिसकी वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ने का फैसला कर लिया। सबसे ज्यादा तकलीफ उन्हें इस बात से होती थी कि हमेशा सही काम करने के कारण ही उन्हें सजा भुगतनी पड़ी। अँग्रेज कलेक्टर के साथ अपने झगड़े के बारे में मोरारजी ने द स्टोरी ऑफ माइ लाइफ में लिखा है 'गोधरा में अपना पद संभालने के बाद से ही डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और मेरे बीच किसी-न किसी बात पर कहा सुनी हो जाती थी। ज्यों ही वह स्टेशन पर उतरा उसने मुझसे कहा कि मैं उसका सामान बँगले तक पहुँचाने का इतजाम कर दूं। मैंने ऐसा कर दिया और जो खर्च आया उसका बिल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास भेज दिया। मुझे लगा कि उसने यह पसन्द नहीं किया। मेरे बिल देने पर उसने भुगतान कर दिया। फिर मुझसे कहा कि मैं एक भैंस का इतजाम कर दूं जो उसके बगले के अहाते में रहेगी ताकि नियमित रूप से दूध मिल सके। सच पूछिये तो इस तरह के काम के लिए उसे मुझसे नहीं कहना चाहिए था, लेकिन उसके कहने पर मैंने जवाब दिया कि अगर वह भैंस की कीमत दे तो वह इतजाम हो सकता है। यह बात भी उसे पसद नहीं आयी। नतीजा यह हुआ कि उसने मुझसे भैंस का इतजाम कराने के बजाय किसी और से करा लिया। उसने मुझे आदेश दिया कि कलेक्टर के बँगले की सफाई आदि का खर्च फुटकर खर्चों की मद से किया जाय। मैंने कहा कि यह उचित नहीं है और उसे यह खर्च खुद ही बर्दाश्त करना होगा। यह बात भी उसे पसद नहीं आयी। मैं उनका व्यक्तिगत सहायक था और मैंने उसे शिकायत करने का कोई वाजिब मौका नहीं दिया। लेकिन मैंने यह महसूस किया कि वह मुझसे खुश नहीं है ।'

मोरारजी को जिंदगी भर यह महसूस होता रहा है कि उन्हें धोखा दिया जा रहा है या उनके खिलाफ साजिश हो रही है। 1959 में जब जवाहरलाल और इन्दिरा गांधी ने द्विभाषी बबई राज्य के विभाजन का फैसला किया तो उन्हें बेहद तकलीफ हुई। तत्कालीन गृह मंत्री गोविंदवल्लभ पंत के निवास-स्थान पर एक बैठक हुई जिसमें नेहरू, इन्दिरा गांधी और बम्बई राज्य के मुख्य मंत्री वाई० बी० चह्वाण शामिल थे। पंतजी ने ज्यों ही बहस शुरू की, मोरारजी ने कहा, 'कांग्रेस कार्य-समिति और केंद्र सरकार ने जब बबई राज्य बाँटकर तीन अलग अलग राज्य बनाने का फैसला किया तो आपने वृहत बबई राज्य के निर्माण का निश्चय किया था। उस समय मैं आपके प्रस्ताव से सहमत हो गया। आप अब इस राज्य का बँटवारा करने की योजना बना रहे हैं। क्या आप इसे उचित समझते हैं ?"' उन्हें बहुत साफ-साफ लगा कि अन्य लोगों ने उनकी गैर मौजूदगी में पहले ही फैसला कर लिया है।

देसाई का कहना है कि "वह फैसला लिये जाने के बाद मैं जवाहरलालजी से मिला और कहा कि क्या यह उचित है कि कांग्रेस कार्य समिति और केंद्र सरकार ने पहले एक फैसला लिया, उस फैसले के लिए मुझे बलि का बकरा बना दिया तथा महाराष्ट्र की जनता की नजरों में मुझे गिरा दिया और उस फैसले को बदला जा रहा है ? मैंने उनसे यह भी पूछा कि उन दिनों मेरे ऊपर हमले हो रहे थे तो उन्होंने मेरे बचाव के लिए कुछ कहा क्या नहीं ? जवाहरलालजी ने बड़े शांत भाव से समझाया कि उनके और देश के लिए बड़ी कठिनाइयाँ खड़ी हो गयी हैं जिनकी वजह से उन्हें मजबूरन पहला फैसला बदलने का समर्थन करना पड़ रहा है। जब नेहरू ने मेरी भावनाओं को समझ लिया तो मैंने उनसे कहा कि मुझे इस

बात से ही काफी तसल्ली है कि आप मेरी दुदशा को समझ रहे हैं, अब मुझे कोई शिकायत नही है।"

लेकिन इन सारी बातो से उनके अदर एक कसक बनी रही। बाद मे वाई० बी० चह्वाण से मुलाकात होने पर उन्होने पूछा, "जब आप लोगो ने पहले ही इस विषय पर विचार विमश कर लिया था तो इसके बारे म मुझे बताया क्यो नही ?" देसाई का कहना है कि चह्वाण ने इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि उन्हे अँधेरे मे रखा गया। मोरारजी ने लिखा है कि "फिर इस विषय पर मैंने कुछ नही कहा।"

1961 मे गोविन्दवल्लभ पत की मृत्यु के बाद काग्रेस ससदीय दल के उपनेता का सवाल पैदा हुआ। देसाई को जरा भी शक नही है कि नेहरू ने पहले ही से उनको इस पद से अलग रखने की सारी जोड-तोड कर रखी थी। जब तक मोरारजी बबई मे थे उन्हे नेहरू का पूरा विश्वास प्राप्त था और खुद को वे प्रधानमत्री का सबसे ज्यादा 'गोपनीय सलाहकार' समझते थे। यहाँ तक कि गोविन्दवल्लभ पत को कौन-सा पद दिया जाना चाहिए जैसे विषय पर भी नेहरू ने उनकी सलाह ली थी और देसाई का दावा है कि उन्होने ही प्रधानमत्री को राजी किया था कि पतजी को गृह मत्रालय दिया जाये। लेकिन धीरे-धीरे देसाई के प्रति नेहरू का रवैया बदलता गया। मोरारजी ने इस तबदीली पर गौर किया और इसका विश्लेषण किया। अत मे वे इस नतीजे पर पहुँचे कि "जवाहरलालजी की यह आदत है कि किसी को तीन साल से अधिक समय तक अपना सलाहकार नही रखते हैं।"

देसाई की धारणा है कि नेहरू के साथ उनके सबधो म असली अडचन यह थी कि वह हमेशा सिद्धातो के लिए लडते थे। "जवाहरलालजी जानते थे कि मैं उनकी इच्छा के अनुकूल हर काम करने के लिए राजी नही होऊँगा।" देसाई का कहना है कि नेहरू के साथ गडबडी यह थी कि उनका "ईश्वर म विश्वास नही था और सामान्यत सत्य का पालन करते समय कभी-कभी असत्य का सहारा ले लेने मे उन्हे कोई एतराज नही होता था।" मोरारजी नेहरू को इस बात का श्रेय देते हैं कि वह स्वय असत्य से अलग रहने की कोशिश करते थे लेकिन अपनी सारी खूबियो के बावजूद 'जब उनके साथियो मे से कोई उनको खुश करने के लिए अपनी मर्जी से या उनके इशारे पर झूठ का सहारा लेता था तो नेहरूजी आँख मूद लेते थे।" मोरारजी ने लिखा है 'दिल्ली आने के बाद मैंने महसूस किया कि इस तरह के मामलो म मैं नेहरू के लिए उपयोगी नही हूँ। इसीलिए उन्होने यह फैसला किया होगा कि मुझे उप-नेता न बनने दिया जाये।"

देसाई को जब यह पता चला कि जगजीवनराम को इस पद के लिए उम्मीदवार बनाया गया है तो वे नेहरू के पास गये और विरोध प्रकट किया। मौलाना आजाद और गोविन्दवल्लभ पत की मृत्यु के बाद मोरारजी देसाई मत्रिमडल म दूसरे स्थान पर पहुँच गये थे और उन्होंने नेहरू को याद दिलाया कि यह सवमान्य रिवाज है कि दूसरे स्थान पर जो व्यक्ति हो उसे ही उप-नेता बनाया जाय। तब नेहरू ने दो उप-नेताओ के चयन का प्रस्ताव रखा—एक लोक-सभा से और एक राज्य-सभा से।

यह सुनकर देसाई गुस्से से उबल पडे "अगर आपने यह प्रस्ताव सरदार पटेल के सामने रखा होता तो वे मत्रिमडल से इस्तीफा देकर अलग हो जाते। मैंने अब तक इस नियम को स्वीकार किया है कि अगर सवसम्मति से मेरा चुनाव हो तभी

मैं पार्टी मे किसी पद को लूगा। इसलिए यदि उप नेता के पद के लिए कई उम्मीदवार खडे होते हैं और चुनाव होता है तो मैं अपने को अलग कर लूगा और ऐसी हालत मे मैं समझता हूँ कि मुझे मन्त्रिमडल से भी इस्तीफा दे देना चाहिए।"

नेहरूजी ने उ ह बताया कि जगजीवनराम को चुनाव म खडा होने से रोकना बडा कठिन है। मोरारजी उलझन मे पडे थे। वह समझ रहे थे कि इन लोगो ने चुनाव कराने का फैसला कर लिया है क्योकि उ ह पता है कि अगर सवसम्मति से मोरारजी को नही चुना गया तो वह मैदान से हट जाना ज्यादा पसद करेंगे। लेकिन उनका यह सोचना गलत था। मोरारजी इतनी आसानी से हार मानने वाले नही थे। उ होने नेहरू से कहा कि तब तो वह चुनाव लडना ही पसद करेंगे। "सामा य तौर पर ऐसा वातावरण था कि मैं चुनाव जीत जाता। लेकिन जवाहरलालजी ने अपनी रणनीति बदल दी और मुझसे पूछा कि यदि किसी मत्री को ससदीय दल का उप नेता न बनाकर लोक-सभा के और राज्य सभा के एक एक साधारण सदस्य को उप नेता का पद दे दिया जाये तो मुझे कोई एतराज होगा ?"

बाद मे नेहरू ने यही फैसला किया और देसाई को तनिक भी सदेह नही रहा कि इन सारी योजनाओ का मकसद उ ह उप नेता पद से अलग रखना था।

देसाई के दिमाग मे इसमे भी कोई सदेह नही है कि कामराज-योजना का मुख्य उद्देश्य उ ह मन्त्रिमडल से बाहर करना था। स्वण नियन्त्रण आदेश और अनिवाय जमा योजना—दोनो को नेहरू, कृष्ण मेनन तथा अ य लोगो ने प्रस्तावित किया था। देसाई का कहना है कि शुरू मे उ होने इन योजनाओ का विरोध किया, लेकिन नेहरू के दबाव की वजह से उ ह कार्यान्वित करना पडा। लेकिन ये योजनाएँ बेहद अलोकप्रिय साबित हुइ तो नेहरू जन मत के तूफान म बह गये। वह तो इस बात के लिए भी तैयार हो गये कि इनको वापस ले लिया जाये, लेकिन एक बार शुरू कर दिये जाने के बाद देसाई अडे रहे।

इस समय तक नेहरू के दिमाग मे एक और चिंता न घर कर लिया था—उनके बाद प्रधानमत्री कौन होगा ? देसाई का कहना है कि कामराज-योजना 'जवाहरलालजी द्वारा उठाया गया दूसरा कदम था जिससे मौका आने पर मुझे उनका उत्तराधिकारी बनन स रोका जा सके। जल्दी ही यह स्पष्ट हो गया कि वह इन्दिराजी का अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। यह कोई आश्चय का बात नही है। पडित मोतीलालजी ने गाधीजी से अनुरोध किया था कि उनके बाद काग्रेस अध्यक्ष जवाहरलालजी को बनाया जाये और उनका चुनाव हो भी गया यह दिखान के लिए कि कामराज-याजना खास तौर से मेरे खिलाफ नही है लालबहादुरजी को भी शामिल कर लिया गया लेकिन आपस मे यह समझौता था कि तीन चार महीनों बाद इ ह मन्त्रिमडल मे वापस ले लिया जायेगा।"

काफी दिन तक देसाई अपने को नेहरू का वास्तविक उत्तराधिकारी समझते रहे। दूसरे लोग भी यही सोचते थे। माच 1958 म देसाई की पहली विदेश-यात्रा के अवसर पर लदन के कुछ अखबारो ने उनका स्वागत करते हुए अपनी हेड लाइन म लिखा— नेहरू के उत्तराधिकारी पश्चिमी देशो की यात्रा पर", और अमरीका म उनके मेजबानो न 'भारत के भावी प्रधानमत्री' कहकर उनका परिचय कराया। देसाई न न तो इन बातो का कभी विरोध किया और न कभी विनम्रता से काम लिया।

देसाई का यह बहुत बाद मे पता चल सका कि उनके प्रति नेहरू के अदर

धीरे-धीरे जो बेरुखी पैदा हुई है उसकी वजह उनकी पश्चिमी देशों की यात्रा के समय हुआ इस तरह का 'प्रोपेगंडा' था। उन्होंने लिखा है कि लोगों और अखबारों के इस कथन को वह पसन्द तो नहीं करते थे कि वह नेहरू के बाद प्रधानमंत्री बनेंगे लेकिन "अगर कोई ऐसा कह रहा हो तो मैं उसे रोक भी नहीं सकता था। मैं जानता था कि इससे लोगों के मन में मेरे प्रति ईर्ष्या पैदा होगी। जवाहरलालजी के उत्तराधिकारी के रूप में मेरे नाम का उल्लेख उस समय भी किया जाता था जब मौलाना साहब और पंतजी ज़िन्दा थे और मैं इसे बहुत अनुचित समझता था।"

1950 वाले दशक में नेहरू ने कम-से-कम दो बार प्रधानमंत्री-पद से अलग होने की बात कही। हालाँकि उन्होंने पद से हटने की बात नहीं उठायी थी, फिर भी दोनों बार संभावित उत्तराधिकारी के रूप में किसी-न-किसी तरह मोरारजी का नाम भी लिया गया। इस तरह की बात एक बार उन दिनों भी उठी थी जब मोरारजी बंबई के मुख्यमंत्री थे। कुछ वरिष्ठ पत्रकारों ने मोरारजी से पूछा कि क्या वह नेहरू के बाद भारत के प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं? मोरारजी ने जवाब दिया, "मुझसे अभी तक इस तरह की कोई बात नहीं कही गयी है।"

नेहरू की मृत्यु के बाद मोरारजी को इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनको ही सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री-पद दिया जायेगा। लेकिन फौरन ही एक जबरदस्त बहस छिड़ गयी और एक विशेष दूत द्वारा देसाई के पास यह संदेश भिजवाया गया कि यदि वह लालबहादुर शास्त्री को प्रधानमंत्री मान लें तो उन्हें उप प्रधानमंत्री बना दिया जायेगा।

देसाई ने बड़े तीखे शब्दों में उस संदेशवाहक को जवाब दिया, 'मैं इस तरह की सौदेबाजी पसंद नहीं करता और न किसी पद के लिए अपना आत्म-सम्मान छोड़ता हूँ।"

मध्यप्रदेश के नेता डी० पी० मिश्रा, जो काफी दिनों से इन्दिरा गांधी के 'चाणक्य' बने हुए थे, एक दूसरा सुझाव लेकर देसाई के पास पहुँचे। मिश्रा ने देसाई से कहा, 'आप इन्दिरा गांधी का नाम प्रस्तावित कर दीजिये।" देसाई को यह बात बड़ी हास्यास्पद लगी और उन्होंने अपनी नाराजगी भी जाहिर कर दी।

मिश्रा ने कहा, "यह तो महज एक चाल है। जब आप इन्दिराजी का नाम प्रस्तावित करेंगे तो लालबहादुरजी इसे स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए इन्दिराजी चुनाव नहीं लड़ेंगी और आपको अपना समर्थन दे देंगी। इस प्रकार आपकी जीत पक्की हो जायेगी।"

मोरारजी इस तरह की रणनीतियों को समझते नहीं थे। जिन लोगों को पिछले कई वर्षों में उनके करीब रहने का मौका मिला है उनका विश्वास है कि मोरारजी जोड़-तोड़ और तिकड़म नहीं कर सकते। लेकिन इतना तो वह समझ ही गये कि मिश्रा के सुझाव के पीछे दाल में ज़रूर कुछ काला है। किसी को इतना घूम-फिर कर चलने की क्या ज़रूरत है?

चालाक रणनीतिज्ञ मिश्रा ने मोरारजी को याद दिलाया कि भगवान श्रीकृष्ण भी इस तरह की पैंतरेबाजी और हेर-फेर में यकीन रखते थे। बचपन से ही धर्मग्रंथों के अध्ययन में तल्लीन देसाई ने जवाब में एक छोटा-सा लेक्चर दे डाला—"श्रीकृष्ण भगवान का अवतार थे और वे पूर्ण पुरुषोत्तम के नाम से जाने जाते थे, जबकि राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता था। राम ने एक आदर्श मानव की तरह व्यवहार किया और इसलिए हमें राम की तरह का आचरण करना

चाहिए। श्रीकृष्ण भगवान की लीला कर रहे थे, वह जो चाहे कर सकते थे लेकिन साधारण मनुष्य उनकी नकल नहीं कर सकता। हम वही करना चाहिए जिसकी शिक्षा कृष्ण ने 'गीता' मे दी है। मैं किसी तरह के षडयंत्र मे शामिल होना नही चाहता जिसकी वजह से मैं प्रधानमंत्री न बनू तो लालबहादुरजी को भी यह पद न मिले। मैं लालबहादुरजी को इस पद के लिए इंदिराजी की तुलना मे ज्यादा योग्य व उपयुक्त मानता हूँ, इसलिए यह प्रस्ताव नहीं रख सकता कि इंदिराजी को प्रधानमंत्री बनाया जाये।"

इन्ही भाषणो और प्रवचनो के कारण देसाई अपने समर्थको मे भी अलग-थलग पड जाते है। लेकिन वर्षों की साधना के जरिये उन्होंने अपने दिमाग मे अपनी ऐसी तस्वीर बना ली है जिसके लिए उन्हे लगातार खुद को उचित ठहराना पड़ता है। अपने लिए उन्होंने खुद ही परेशानी पैदा कर ली है।

दाव पेंच मे माहिर लोगो ने देसाई को मात दे दी। उनके असहमति प्रकट करने पर भी कांग्रेस कार्य-समिति ने फैसला किया कि कांग्रेस-अध्यक्ष कामराज ससद-सदस्यो की आम राय का पता लगायें। देसाई का कहना है, "श्री कामराज ने विचित्र ढग से सदस्यो की राय का पता लगाया और एक दिन मुझसे मिलकर उन्होंने कहा कि लोगो की राय लालबहादुरजी के पक्ष मे है। मैंने जवाब दिया कि आपके द्वारा किये गये मत सग्रह पर मेरा कोई विश्वास नही है आप जो चाहे कर सकते हैं।"

देसाई सोचते थे कि यदि चुनाव कराया जाता तो उनकी या शास्त्री के जीतने की सभावना बराबर बराबर थी। अन्य लोगो की राय थी कि देसाई हार जाते। जो भी हो, देसाई ने चुनाव न लडने का फैसला कर लिया। बाद मे उन्होंने इसकी व्याख्या की, "यदि उन परिस्थितियो मे मैं चुना भी जाता तो मेरे लिए काम करना बहुत मुश्किल हो जाता और मेरा सारा समय तथा मेरी सारी शक्ति विरोधियो से निबटने मे ही बीत जाती, या ऐसी हालत पैदा होती कि मैं तग आकर इस्तीफा ही दे देता।"

इस तरह का कोई डर उन्हे शास्त्री की मृत्यु के बाद इंदिरा गाधी के खिलाफ चुनाव लडने से नही रोक सका। कामराज किंग मेकर के रूप मे उभर कर आ चुके थे और तुले हुए थे कि इंदिरा को प्रधानमंत्री बनाना है। उनके इस इरादे के पीछे नेहरू के प्रति उनकी वफादारी का उतना हाथ नही था जितना उनके व उनके दोस्तो के इस खयाल का था कि इंदिरा गाधी तो महज एक 'गूगी गुडिया' है। देसाई को 169 वोट और इंदिरा गाधी को इसके लगभग दुगुने वोट मिले। बाद मे पुरानी घटनाओ के बारे मे सोचते हुए उन्होंने कहा कि चुनाव लडने के पीछे उनकी यह इच्छा नही थी कि वे प्रधानमंत्री बनें। उन्होंने कहा कि "मैं इंदिराजी को इस पद के योग्य नही समझता हूँ, इसलिए मैंने चुनाव मे उनका विरोध करना अपना कर्तव्य माना।"

1967 के चुनावो के बाद उन्होंने फिर इंदिरा गाधी के खिलाफ खडे होने का इरादा जाहिर किया लेकिन बाद मे पार्टी को टूटने से बचाने का दिखावा करके पीछे हट गये और इंदिरा को अपना नेता मान लिया। उप प्रधानमंत्री के रूप मे मंत्रिमडल मे शामिल होने से पहले दोनो मे हुई बातचीत इंदिरा गाधी जैसी अभिमानी महिला को हरगिज पसद नही आयी होगी। मंत्रिमडल मे दूसरा स्थान दिये जाने का दावा करते हुए उन्होंने कहा, "मेरे मंत्रिमडल मे शामिल होने से आपको तभी मदद मिलेगी जब मैं आपकी गैर-मौजूदगी मे आपकी ओर से पूर

अधिकार के साथ बोल सकू। यह तभी सभव हो सकता है जब मुझे उप-प्रधान-मत्री बनाया जाये—विरोधी दलो के एक से बढकर एक योग्य नेता चुनाव जीत कर आये हैं और वे बडे अच्छे वक्ता हैं। मेरा अनुभव आपसे अधिक है, इसलिए आपकी अपेक्षा मैं बेहतर ढग से उनकी बहस का जवाब दे सकता हूँ। आपको अभी तक इस काम का ज्यादा अनुभव नही है। विपक्ष का जवाब मैं ज्यादा कारगर ढग से दे सकता हूँ। इसलिए मुझे गृह मत्रालय भी दिया जाना जरूरी है।"

कुछ ही समय बाद ससद के सेंट्रल हॉल मे एक बहस छिड गयी। यह कहा जाने लगा कि मोरारजी न इदिरा को अपने पद के लायक, न चह्वाण को गृह-मत्रालय के योग्य समझते है। लगता है कि मोरारजी ने इदिरा से जो कहा था, उसी को तोड मरोड कर यह रूप दिया गया था। पर जब दोनो की बातचीत हुई थी तो वहाँ और कोई तो मौजूद नही था। इसलिए मोरारजी के दिमाग मे जरा भी शुबहा नही रहा कि देवीजी ने स्वय यह बात फैलायी है।

मोरारजी उप प्रधानमत्री तो बन गये पर मिला वित्त मत्रालय ही, जो वह नही चाहते थे। लेकिन देवीजी मौके के इतजार म रहीं और जब एक साथ उन्होंने बिना किसी बात की परवाह किये मोरारजी से वित्त मत्रालय छीनते हुए कहा कि मैं तजुर्बा हासिल करना चाहती हूँ' तो लगा कि वह मोरारजी को उनकी साफगोई का उलाहना दे रही हैं।

मोरारजी को इसम जरा भी शक नही था कि भारत का प्रधानमत्री बनने के लिए वही सबसे ज्यादा उपयुक्त व्यक्ति थे। लेकिन ऐसे लोग भी थे जो उनकी इस राय से इत्तफाक नही करते थे। दरअसल ऐसे सभी ससद-सदस्य और राजनीतिज्ञ, जिन्होने देसाई को कई वर्षों तक नजदीक से देखा है कहते थे कि जवाहरलाल नेहरू के बाद यदि देसाई प्रधानमत्री बन जाते तो सब गुड गोबर हो जाता। ऐसा समझने की वजह केवल यही नही थी कि बबई म अपने मुख्य मत्रित्व मे उन्होने शराब-बदी कर दी थी फिल्मो मे चुम्बन व मद्यपान के दृश्यो को अवैध कर दिया था, आधी रात तक सभी रेस्टोरेंटस बद करने का आदेश दे दिया था, और हर तरह के आमोद प्रमोद तथा मनोरजन के खिलाफ कडाई की थी। वह हिन्दू सदाचारी' तो मान ही जाते थे, साथ ही उनके तानाशाही अदाज से सभी नाराज रहते थे।

मोरारजी न गुजरात काग्रेस का निर्विवाद मठाधीश बनने की कोशिश की। वह किसी तरह का विरोध बर्दाश्त नही कर पाते थे और अगर कोई व्यक्ति उनके नजरिये से अलग कुछ भी कहने के लिए खडा होना चाहता था तो उस पर बरस पडते थे और उसे बैठा देते थे। अनेक लोग उन्हे 'सर्वोच्च नेता" कहा करते थे और मोरारजी शायद यह पसद भी करते थे। उन्होंने कभी किसी से 'सर्वोच्च' कहने के लिए मना नही किया और जल्दी ही गुजराती अखबारो मे यह शब्द बहुधा व्यग्य के रूप मे इस्तेमाल होने लगा। व्यग्य चित्रकारो न एक लबी छडी के ऊपर गाधी टोपी लगाकर उन्हे चित्रित किया। मोरारजी की यह एक प्रचलित तस्वीर बन गयी थी—एक सख्त और सीधी छडी जिसने अपने ऊपर गाधीवाद का मुलम्मा चढा रखा हो। बबई के मुख्यमत्री के रूप म उन्हे कभी जनता पर प्रहार करने म झिझक नहीं हुई—ऐसे अवसरो पर वह बला की निशानबाजी म रूप की दृढता और कार्यक्षमता से काम लेते।[2] उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि उनकी पुलिस ने सैकडो बार गोली चलायी। मोरारजी का कहना है कि जिन दिनो सयुक्त महाराष्ट्र आदोलन चल रहा था, नेहरू न दिल्ली स फोन पर उनसे

कहा कि सेना और टैंकों के इस्तेमाल में उन्हें हिचकिचाने की जरूरत नहीं है, लेकिन मोरारजी को इस बात का गर्व है कि उन्होंने पुलिस की मदद से ही सारा काम चला लिया। उनका अनुमान है कि पुलिस की गोलियों से लगभग एक सौ व्यक्ति मारे गये।

गुजरात कांग्रेस की बैठकों में 'सर्वोच्च' वाली यह प्रवृत्ति हमेशा काम करती रही। वह अक्सर कहा करते थे, 'मैंने आपकी बात सुन ली, लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वही ठीक है।" लोगों का कहना था कि यदि वह एक कदम भी आगे बढ़ते तो तानाशाह बन जाते।

कामराज-योजना के अंतर्गत सरकार से निकाले जाने पर मोरारजी को बहुत बुरा लगा, लेकिन इससे दो वर्ष पहले ही वह खुद भी गुजरात में 'दस साला नियम' के जबरदस्त हिमायती थे, जिसके अनुसार राज्य के तीन बड़े-बड़े नेताओं—डॉक्टर जीवराज मेहता, रसिकभाई पारीख और रतुभाई अडानी—को मंत्रिमंडल से अलग होना पड़ता। गुजरात के इस सर्वोच्च नेता ने शायद यह नहीं सोचा कि दस वर्ष तक सरकार में रहने का वह जो नियम बना रहे हैं उसमें खुद भी मारे जा सकते हैं। राज्य और केन्द्र में कुल मिलाकर मोरारजी स्वयं लगातार 24 वर्ष तक मंत्रिपद पर बने रहे थे। गुजरात में उनके खिलाफ आवाज़ उठनी शुरू हुई—"मोरारजी भाई आप भी इस्तीफा दें।" वह इसके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने इसी में बुद्धिमानी समझी कि 'दस साला नियम' को चुपचाप दफना दिया जाये।

सिद्धांतवादी व्यक्ति होने का दावा करने और अपने को ईश्वर की इच्छा का निमित्त मात्र मानने पर भी मोरारजी अपने को कलंक से बचा नहीं सके। यह कहा जाने लगा कि अंग्रेजों की बारह वर्ष सेवा करने के बाद उनकी समझ में आया कि वह देश की 'कुसेवा' कर रहे हैं और उन्होंने अपने 'पापों का प्रायश्चित' करना तभी तय किया जब उनके अंग्रेज आकाओं ने उनके खिलाफ कदम उठाया। एक साम्प्रदायिक दंगे के दौरान डिप्टी कलेक्टर के नाते किये गये उनके काम की अप्रैल 1930 में जाँच की गयी तो सरकार ने उन्हें अपने साम्प्रदायिक झुकाव के कारण पक्षपात करने का दोषी पाया और उनको वरिष्ठता के क्रम में चार स्थान नीचे कर दिया गया। वह अंग्रेजों के प्रति इतने वफादार रहे थे कि जब उनके छोटे भाई पढ़ाई छोड़कर महात्मा गांधी के आंदोलन में शरीक होना चाहते थे तो मोरारजी ने उनको लिखित चेतावनी भेजी—"अगर तुम सरकार के खिलाफ आन्दोलन में शरीक होते हो तो मैं तुम्हें रुपये नहीं भेज सकूँगा, क्योंकि मैं उसी सरकार की सेवा कर रहा हूँ।' लेकिन जब जाँच के बाद उनके खिलाफ रिपोर्ट हुई तो मोरारजी की होशियारी से तराशी हुई, सँवारी हुई अंतरात्मा" अचानक चीत्कार कर उठी और उन्हें यह इलहाम हुआ कि अब बाकी जीवन पापों का प्रायश्चित करके गुजार देना चाहिए।

मोरारजी देसाई इस हद तक सदाचारी हैं कि 32 साल की उमर में ही उन्होंने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध रखना समाप्त कर दिया। कांग्रेस में शामिल होने के कुछ वर्ष बाद वर्धा जाने पर उन्होंने गांधी के साथ एकांत में बातचीत करने के लिए समय चाहा। गांधी ने रात में 2 बजकर 45 मिनट पर मिलने का समय दिया। जब देसाई उनसे मिलने गये तो विचारधारा संबंधी दो प्रमुख मुद्दों पर बात हुई। उनमें से एक मुद्दा यह था कि टहलते समय महात्माजी हमेशा स्त्रियों के कंधों पर हाथ रखकर चलते थे। मोरारजी का कहना था कि निश्चय ही गांधी स्वयं अनुशासित सुप्रवृत्तियों में दूर और संयमी व्यक्ति थे,

जिनका अपने आप पर पूरी तरह नियंत्रण था। फिर भी उनकी इस आदत से 'बहुत बडा सामाजिक जोखिम" पैदा हो सकता है। देसाई की दलीलो से गाधी सहमत नही थे, लेकिन देसाई ने उनसे कहा कि उन्हे विश्वास है कि गाधीजी फिर इस पर सोचेंगे। और जिस दिन "मेरी बात से वह सहमत हो जायेंगे, अपनी इस आदत को बदल देंगे।" बाद मे गाधीजी ने अपने अखबार हरिजन मे लिखा कि उस नौजवान के तर्कों मे काफी सत्यता है। देसाई का एक विजय की अनुभूति हुई। लेकिन सभी जानते हैं कि गाधीजी न अपनी आदत नही बदली। महत्व की बात यह है कि मोरारजी स्वय महात्मा गाधी को उपदेश देन से नही चूकते थे।

इसलिए जब अपने को सदाचारी कहने वाले देसाई जैस जाने माने व्यक्ति पर यह आरोप लगाया गया कि 'एक मुस्लिम महिला स घुले मिले रहत हैं' तो लोगो को आश्चय हुआ। यह आरोप उन दिनो लगाया गया जब वह बबई के मुख्यमत्री थे। बबई के मसखरे आज भी कहते हैं कि सदाबहार केन्द्रीय मत्री जगजीवनराम वहाँ के एक आलीशान अस्पताल मे टाटाओ के सबसे ऊँचे चिकित्सकों म से एक डॉक्टर की देख रेख मे इलाज करा रहे थे। यह बडे लोगो का डॉक्टर ऐसा रगीन मिजाज था कि उमके सामने इग्लैंड के 'प्रोफ्यूमो काड' के डॉक्टर स्टीफेन वाड की क्या हैसियत होगी! 'प्रोफ्यूमो-काड जग-जाहिर होने से बहुत पहले ही इस डॉक्टर ने काफी शोहरत पा ली थी—एक डॉक्टर की हैसियत से और एक ऊँचे समाज के छैला की हैसियत से भी। वह बडे मरीजो के मनोरजन का बहुत ध्यान रखता था और उसक पास मिस कीलर व मिस मैंडी-जैसी अनेक सुदरियाँ थी। उनम से एक रसभरी सुदरी को डॉक्टर ने दिल्ली से आये 'बडे' मरीज की देखभाल के लिए भेज दिया। अस्पताल म मोरारजी जगजीवनराम से मिलने आये तो उस सुदरी ने अपना मोह-जाल फना दिया। जगजीवनराम को बहुत कुढन हुई और आज तक वह कुढन बाकी है। बात फैल गयी। उन दिनो केंद्रीय गृह मत्री गोविंदवल्लभ पत थे। दूसरों का मजा किरकिरा करने म माहिर पत ने उस सुदर महिला को देश से निष्कासित कर पाकिस्तान भेज दिया, जहाँ स वह आयी थी। कुछ जबानदराज तो कहते हैं कि उसकी विदाई के आँसू भरे दृश्य उनको अभी तक याद हैं।

एक मराठी पत्रिका ने इस 'काड' के बारे म लगातार लख छापे तो उनका प्रतिवाद नही किया गया और ये कहानियाँ, जो सभव है कि अप्रामाणिक हो, सच बनी रही। लेकिन इन बातो म क्या रखा है! कोई कितना भी सदाचारी क्यो न हो, उसके अदर भी कमजोरियाँ हो सकती है और उसके लिए उसे माफ कर दिया जाना चाहिए।

देसाई पर जो दूसरा कलक का टीका लगा वह आज भी उनके चमचमाते सफेद खादी के कपडो जैसे जीवन पर एक अमिट काले धब्बे की तरह मौजूद है। इसका ताल्लुक उनके इकलौते पुत्र कातिभाई देसाई स है, जिन्हे आज व्यापक रूप से "जनता सरकार के सजय गाधी" के नाम से जाना जाता है। हाल ही म कातिभाई देसाई ने सजय से अपनी तुलना किये जान पर एक विदेशी सवाददाता को अपने पिता के घर से बाहर तो खदेड दिया पर एक पते की बात यह कही कि "सजय गांधी के पास कोई अनुभव नहीं था जबकि मेरी उम्र 52 साल है और मैंने बहुत अनुभव इकट्ठे किये हैं।"[3]

दोनो के बीच इतनी समानता है कि नजर आये बिना रह नही सकती। सजय पढने म कभी अच्छा नही था और यही हाल कातिभाई का था। वह इटर

साइस की परीक्षा मे फेल हो गये। जिस तरह इन्दिरा गाधी ने अपने लडके की पढाई लिखाई के बारे मे उसकी तरफदारी की और उसके पिछड जाने के बहाने निकाले, उसी तरह काति के ईमानदार पिता मोरारजी देसाई ने भी पढाई के मामले मे अपने लडके की नाकामयाबी को उचित ठहराते हुए कहा कि उसके असफल होने का एक कारण यह था कि उसने मेरे कहने से साइस पढना शुरू किया ताकि वह इजीनियरिंग की पढाई कर सके।" सजय ने सोचा, वह आटोमोबाइल इजीनियर बनेगा। काति उससे भी एक कदम आगे निकले। वह ऐरानाटिकल इजीनियर बनने का सपना देख रहे थे। वह टाटा एयरवेज कपनी मे पचास रुपये महीने पर अप्रेंटिस लग गये। लेकिन कुछ ही दिनो के अदर वह और सपने देखने लगे। बबई के बडे बडे पूजीपतियो को मत्री के इस पुत्र मे अपार समावनाए दिखायी दी। उन्होने दाने फेंकने शुरू किये और उन दानो को चुगने मे काति को तनिक भी हिचकिचाहट नही हुई। सजय को आगे बढाने के लिए तेजा था, काति को बढाने के लिए बिडलाओ शराफो, रूइयाओ की कतार लगी थी। देसाई-परिवार के लिए जयन्ती तेजा भी कोई अजनबी व्यक्ति नही था। दरअसल तेजा को मोरारजी देसाई ने ही तीनमूर्ति भवन से परिचित कराया था। केन्द्रीय वित्त मत्री के पद पर काम करते समय देसाई ही 1962 मे तेजा के पहले जहाज का उदघाटन करने नागासाकी शिपयाड मे गये थे।

मोरारजी देसाई बताते है कि एक दिन आर० डी० बिडला उनसे मिलने उनके घर पर आये। देसाई उस समय किसी से बातचीत मे लगे थे, इसलिए बिडला को ड्राइग रूम मे बैठना पडा। वहाँ उन्होने काति को देखा और पूछा कि वह आजकल क्या कर रहे हैं। काति ने बताया कि वह टाटा एयरवेज में एप्रटिस है। बिडला ने सुझाव दिया कि भारत की बजाय उन्हे अमेरिका मे एप्रटिसशिप के लिए जाना ज्यादा बेहतर होगा। काति ने पूछा कि बाहर जाने के लिए पैसा कहाँ है? बिडला ने फौरन उन्हे अमरिका भेजने का प्रस्ताव कर दिया। तेजा की झलक मिल रही है न!

जब मोरारजी को पता चला तो उन्होने बिडला से कहा कि काति के सामने इस तरह का प्रस्ताव नही रखना चाहिए था। लेकिन बिडला ने जवाब दिया कि उन्होने यह सुझाव बडे सहज ढग से दिया है और इसके पीछे उनका कोई इरादा नही है।" सचमुच बिडला का भला क्या इरादा हो सकता था! वह तो बबई के किसी भी तेज नौजवान को देखकर इस तरह का प्रस्ताव कर ही देते!

कुछ भी सही, काति जल्दी से-जल्दी धनवान बनने मे बहुत कुशल साबित हुए। कुछ ही वर्षों के अदर उनके चारो तरफ पैसा-ही-पैसा हो गया। अक्तूबर 1964 मे काति के व्यक्तिगत सचिव ने एक हलफनामा दिया जिसमे अन्य बातो के अलावा यह कहा गया था कि उसके मालिक के पास बम्बई मे तीन कारें (दो फिएट और एक मरसडीज), जमीन का बहुत बडा प्लॉट और बबई के सबसे समृद्ध इलाके मे चार फ्लैट हैं। इसके अलावा विदेशो से मँगाये गये दो रेफ्रीजिरेटर, एक पार्टेबल रफ्रीजिरेटर दो प्रडिग रेडियोग्राम, चीनी छुरी काँटे और क्रॉकरी है तथा उन्होने अपने रसोईघर की मरम्मत कराने मे दस हजार रुपये खर्च किये।

इन बातो पर मोरारजी की प्रतिक्रिया होती—"काति तो एक शुद्ध नौजवान भर है।"

अपने लडके के व्यापार सबधी मामलो के बारे मे मोरारजी देसाई निहायत

भोलपन का परिचय देते हैं। कांति के न्यू इंडिया इश्योरेंस कम्पनी की नौकरी स्वीकार करने के बाद कम्पनी के जनरल-मैनेजर जब मोरारजी से मिलने गये तो उन्होंने पूछा, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि बीमे के काम के लिए किन कारणों से आपने कांति को अपने यहाँ नौकरी दी ? जनरल मैनेजर ने उन्हें आश्वासन दिया कि कांति की नियुक्ति का इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है कि वह मोरारजी के लड़के हैं। मोरारजी ने यह जानना चाहा कि क्या और लोगों को आम तौर से जितनी तनख्वाह दी जाती है उससे ज्यादा कांति को दी जा रही है ? जनरल-मैनेजर ने फिर उन्हें आश्वासन दिया कि कांति के साथ कोई पक्षपात नहीं किया गया है। इस जवाब से मोरारजी संतुष्ट हो गये। ऐसा लगता है, गोया वह किसी व्यापारी से इस बात की आशा कर रहे हों कि वह कहेगा कि उनके लड़के को इसलिए नौकरी दी गयी क्योंकि वह उनका लड़का है।

मोरारजी को यह विश्वास था कि उनका लड़का अपने ग्राहकों पर उनके प्रभाव का इस्तेमाल नहीं कर रहा है। असल में उनको गर्व था कि अपने पहले ही वर्ष में उनके लड़के ने दूसरों से ज्यादा लोगों का बीमा किया जिसके लिए उसे इनाम भी मिला। 1964 तक कांति के खिलाफ एक व्यापक अभियान शुरू हो गया था और महाराष्ट्र तथा गुजरात के कांग्रेस-जनों के बीच एक ज्ञापन बाँटा गया, जिसका शीर्षक था— कांति देसाई की समृद्धि के बारे में।" इसमें कांति देसाई और फानिक्स मिल्स के सम्बन्धों की कहानी थी जिसमें कांति को सबसे पहली बार अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई थी।

काफी पहले जून 1949 में बंबई के ऐंटी-करप्शन ब्यूरो के पास एक शिकायत आयी, जिसमें आरोप लगाया गया था कि फोनिक्स मिल्स के प्रबंधकों ने सामान की खरीद और खपत में भारी धोखाधड़ी की है। ब्यूरो के अफसरों ने मिल पर छापा मारा और कई ट्रक बहियाँ बरामद कीं। आरोपों की जाँच के लिए सूती कपड़े की वित्त-व्यवस्था से सम्बन्धित एक विशेषज्ञ नियुक्त किया गया जिसने अपनी रिपोर्ट में मिल मालिकों की भयंकर गलतियों की पुष्टि की।

जिन दिनों रिपोर्ट आयी, मोरारजी बंबई के गृह मंत्री थे। कुछ विचित्र कारणों से उन्होंने इस रिपोर्ट पर दुबारा जाँच करायी और दूसरी जाँच के लिए बड़ौदा के एक पुलिसमैन को नियुक्त किया। दूसरी जाँच में मामले की लिपाई पुताई हो गयी। मिल में जब्त किये गये सारे कागजात इंश्योरेंस को जो मिल के मालिक थे, लौटा दिये गये और कुछ ही दिनों के अंदर अचानक हुई आगजनी की एक घटना में ये सारे कागजात जलकर भस्म हो गये। एक साल के अन्दर कांति को इंश्योरेंस से 30 लाख के बीमे का कारोबार मिला।

संसद में कांति-कांड के धमाके से परेशान होकर मोरारजी ने लोक-सभा में विधिवत एक बयान दिया—'मेरे लड़के ने 1964 से ही अपने सारे व्यापारिक सम्पर्क समाप्त कर दिये और मेरे निजी सचिव के रूप में काम कर रहा है। उसके खिलाफ आरोप लगाये जाने पर मैंने पुलिस से इन आरोपों की जाँच करवायी और मैंने देखा कि वह इन चीजों से कोसों दूर है। केवल बददिमाग लोग यह अफवाह फैलाने में लगे हैं कि उसके व्यापारिक सम्पर्क कायम हैं।' कौन-सा पुलिस-अफसर उनके लड़के के खिलाफ रिपोर्ट देता ? बंबई के वरिष्ठ पुलिस-अधिकारियों को आज भी याद है कि कांति की शिकायत पर गंभीरता से अमल न करने के कारण किस तरह मोरारजी देसाई ने उनकी फजीहत की थी। मोरारजी उस घटना को इस तरह बयान करते हैं—' 1946 में मंत्रिमंडल का गठन होने के

वाद मुझे नरायन दबूलकर रोड पर एक मकान दिया गया —मेरे बँगले के वाहर कुछ लाग झगड रहे थे। झगडा और शोरगुल सुनकर मेरे लडके ने पुलिस-कमिश्नर को फोन किया कि वह जरूरी बदोबस्त करें। मेरा लडका उस समय 20 साल का था और वह कालेज मे पढ रहा था। पुलिस-कमिश्नर को यह अच्छा नही लगा कि मेरा लडका उ ह फोन करके आवश्यक कदम उठान का अनुरोध करे और उन्होंने मुझसे कहा कि कभी कभी इस तरह के फोन से नाजुक स्थिति पैदा हो सकती है। कमिश्नर की शिकायत मुझे उचित नही लगी वह पुलिस कमिश्नर एक योग्य व्यक्ति था लेकिन मुझे वाद मे पता चला कि वह अँग्रेज़ी हुकूमत के आम पूर्वाग्रहो मे ऊपर नही उठ सका था ।"

काति की बात पर ध्यान न दने के लिए पुलिस-अफसरो की लानत मलामत से सम्बधित कहानी का दूसरा पहलू कुछ ऐसा था जिसे बहुत दिनो तक भुलाया नही जा सका।

जहाँ तक 1964 से अपने पिता की सेवा के लिए काति के सभी व्यापारिक सम्ब धो के तोड लेने की बात है, 10 अगस्त 1968 का **ब्लिट्ज** देखा जा सकता है जिसम आर० के० करजिया ने मोरारजी के नाम एक खुला पत्र लिखा है और उन कमचारियो की सूची की फोटो कापी छापी है जो दोदमाल्स के प्रबधको के रूप मे 1 जनवरी 1967 को काम कर रहे थे। इस सूची म पाँचवें स्थान पर काति का नाम था। उन्हे डाइरेक्टर आफ सेल्स के रूप म दिखाया गया था जिसका मूल वतन 2050 रुपये था।

करजिया के पत्र म एक और कहानी का जिक्र था। उसने सयुक्त राष्ट्र सघ क एक प्रकाशन को उद्धत किया था जिसमे सितम्बर 1967 मे रायो द जनरो म आयोजित अतराष्ट्रीय मुद्रा कोष के गवर्नरो की बैठक का सक्षिप्त विवरण था। मुद्रा काप की इस बैठक म जिस भारतीय प्रतिनिधि मडल ने भाग लिया था उसके सदस्या के भी नाम इसमे दिये गये थे, जो इस प्रकार थे गवनर— मोरारजी देसाई, आल्टरनेट गवनर—एल० के० झा, और सलाहकार—एस० के० बनर्जी, कातिलाल देसाई एम० गोहन आदि।

करजिया न देसाई से पूछा, हम जानना चाहते हैं कि क्या भारतीय प्रतिनिधि मडल के सलाहकार क रूप म ब्राजील म काति के ठहरने का खच सरकार न बर्दाश्त किया ? आपके इतने दिनो के सावजनिक जीवन की वजह से काति का आज लाभ नही मिल रह ता उस कैसे दजना विदेशी व्यापारिक व अय सगठनो म निमत्रण आत रहत है ? क्या नयी दिल्ली के इतने बडे सचिवालय म काति देसाई के अलावा और कोई ऐसा निजी सचिव है जिसे व्यक्तिगत हैसियत स टोक्यो ताइवान मनीला, सिओल आदि मे निमत्रण मिलत हो ?'

राज्य-सभा म प्रगापा क एक सदस्य बाँकेबिहारी दास न कोरियन टाइम्स के कुछ अश पढकर सुनाय जिनम दक्षिण कोरिया के उप विदेशमत्री के साथ काति की बातचीत के बार म लिखा था। दास न जानना चाहा कि किस प्रकार मोरारजी देसाई के अवतनिक निजी सचिव अचानक भारत के भ्रमणकारी राजदूत बन गय ?

पता चला कि 1968 म मोरारजी जब मनीला गय थे तभी काति दक्षिण पूर्वी एशिया क दूसरा क दौर पर गय। फिर दक्षिण कोरिया और भारत न एक समझौत पर हस्ताक्षर किय जिसक अनुसार कोरिया का भारत म 300 टन यार्न मशीन थ और बदल म वह भारत को कुछ निर्धारित सामानो का निर्यात

करता। समझौते को दक्षिण कोरिया के उप-विदेश मंत्री और भारत की ओर से 'तीन सदस्यीय भारतीय आर्थिक मिशन' के नेता कांति देसाई ने अंतिम रूप दिया। तत्कालीन वाणिज्य मंत्री दिनेशसिंह का इस प्रतिनिधि-मण्डल के बारे में कोई जानकारी तक नहीं थी।

जिस प्रकार इंदिरा गांधी दावा करती थी कि उनकी जानकारी में उनके प्रधानमंत्री होने से उनके लड़के ने अपने व्यापार में कोई फायदा नहीं उठाया, उसी प्रकार मोरारजी ने भी संसद में अपनी अनभिज्ञता की दलील दी। बेहद मासूमियत का नाटक करते हुए उन्होंने कहा 'मेरा लड़का क्या-क्या करता है इसके बारे में मुझे कोई विस्तार से जानकारी नहीं है। मैं हमेशा उसकी गतिविधियों से बहुत निर्लिप्त रहता आया हूँ और इस बात का ध्यान रखता रहा हूँ कि मेरी सरकारी जिम्मेदारियों को पूरा करने में वह कहीं बीच में न आये ।"

मोरारजी जब अंतत प्रधानमंत्री बन गये तो लोगों का कहना था कि "अब वह एक बदले हुए इंसान हैं।" उन्होंने अपना अड़ियलपन अब छोड़ दिया है। अब वह पहले की तरह कठमुल्लावादी नहीं हैं और थोड़े नरम-मिजाज थोड़े संतुलित और थोड़े उदार हो गये हैं। लेकिन ऊपरी परत को थोड़ा सा खुरचने पर मोरारजी का वही पुराना रूप मिल जायेगा।

प्रधानमंत्री मोरारजी का असली रूप उनके संवाददाता सम्मेलनों में नहीं छिपा रह पाता था और शायद यही वजह थी कि उन्होंने यदि अक्सर नहीं तो महीने में कम-से कम एक बार संवाददाता सम्मेलन करने के वायदे को जल्दी ही भुला दिया।

24 मार्च 1977 को उनके पहले संवाददाता-सम्मेलन में एक पत्रकार ने सवाल किया, "क्या आप 1 सफदरजंग रोड (भूतपूर्व प्रधानमंत्री का निवास) पर रहने जा रहे हैं ?"

मोरारजी देसाई मैं क्यों वहां जाऊँगा ? क्या उस मकान के साथ कोई पवित्रता जुड़ी हुई है ?

कुछ ही महीनों बाद मोरारजी 1 सफदरजंग रोड पर रहने लगे।

उनसे पूछा गया—कई राज्य सरकारों को गिराने की बात चल रही है। क्या आप अपनी मंजूरी देंगे ?

देसाई मैं किसी राज्य की सरकार को गिराने नहीं जा रहा हूँ। लेकिन यदि जनता खुद ही इन सरकारों को गिरा दे तो मैं क्या करूँ ?

प्रश्न महोदय, जयप्रकाश नारायण ने सुझाव दिया है कि कांग्रेस की जिन राज्यों में हार हुई है (1977 के लोक सभा चुनावों में) वहाँ राज्य विधान-सभाओं का नये सिरे से चुनाव कराया जाये ।

देसाई जहाँ कांग्रेस हार गयी है नहीं नहीं। यदि वहाँ की सरकारें वैधानिक हैं और उन्हें बहुमत प्राप्त है तो हम कैसे नये सिरे से चुनाव करा सकते हैं ? यह काम सही ढंग से किया जाना चाहिए। बिलकुल इस तरह किया जाना चाहिए कि हम उन गलतियों को न दुहराने लगें जो पिछली सरकार करती थी।

लगभग एक महीने बाद ही मोरारजी ने धमकी दी कि यदि कार्यकारी राष्ट्रपति बी० डी० जत्ती ने देश के 9 कांग्रेस शासित राज्यों की विधान-सभाएँ

भग करने के आदेश पर हस्ताक्षर नही किये तो लोक-सभा के ताजा चुनावों का आदेश दिया जायेगा।

देसाई के अधिकाश सवाददाता-सम्मेलनो मे केवल शब्दाडम्बर देखने को मिलता था, जिसमे कभी कोई किसी नतीजे पर नही पहुँचता था—हाँ, देसाई के खास मजाक और हाजिर जवाबी का कभी कभी नमूना भी देखने को मिल जाता था।

16 मई 1977 को एक रिपोटर ने कहा—आपके साथी श्री चरणसिंह पार्टी और सरकार दानो मे विवाद के विषय बने हुए है ।

देसाई ने उस रिपोटर को बीच मे टोकते हुए कहा, 'सरकार के अन्दर वह एकदम विवाद के विषय नही है। *आप किसी तरह का विवाद क्यो देख रहे है?* सरकार म कहा आपको विवाद दिखायी दे रहा है ? विवाद केवल अखबारो म है। मेरे पास कोई विवाद नही है ।

प्रश्न — माननीय प्रधानमत्री आपने अभी कहा कि श्री चरणसिंह को लेकर सरकार के अदर कोई विवाद नही है लेकिन अखबारो म एक खबर छपी है कि गृह मत्री ने सरकारी फाइल म अनुचित ढग से हेरा फेरी की और आप खुद भी सम्बद्ध अधिकारी से नाराज थ। असलियत क्या है ?

प्रधानमत्री — यह आप अखबारो से पूछिये उन्होने कब मुझे नाराज देखा ? मैं किसी से नाराज नही हूँ।

प्रश्न — सच्चाई क्या है ?

प्रधानमत्री — मैंने आपको सच्चाई के बारे म बता दिया। आप एक पत्रकार की बात पर भरोसा कर रहे ह। इससे पता चलता है कि हमने आपको कैसी आजादी दी है। यह इसका सबूत है। हम इसे खत्म करना नही चाहत। जो कुछ लिखा जा रहा है, उसे मैं रोकना नही चाहता। लेकिन अगर आप गलत सूचनाओ को अपन दिमाग पर लाद रहना चाहते ह तो मैं क्या कर सकता हूँ ? इसीलिए आपको भविष्य म बहुत सावधान रहन की जरूरत है।

प्रश्न — सवाल यह है कि हम सही बात जानना चाहत हैं।

प्रधानमत्री — आप सारी बातें खोल देना चाहत है। मैं आपकी मदद करना नही चाहता।

प्रश्न — लेकिन यह एक स्वतन्त्र समाज है।

प्रधानमत्री — मेरी बात सुनिये, मैं इस काम म आपकी मदद करना नही चाहता।

प्रश्न — स्वतन्त्र समाज म सारी बातें सबके सामन आनी चाहिए।

प्रधानमत्री — लेकिन आपकी मर्जी के मुताबिक नही।

प्रश्न — फिर अपनी मर्जी के मुताबिक ही आप बताइय।

प्रधानमत्री — वह मैं कर रहा हूँ। आप चाहत हैं कि मैं वही कहूँ जो आप चाहत रह हैं।

प्रश्न — आप हमारे ऊपर कीचड उछाल रह है।

प्रधानमत्री — मुझे अफसोस है। मैंने आप पर क्या कीचड उछाला ? आप बताइये—मैं माफी माँग लूगा। आप जरूर बताइय—मैंन

	क्या कीचड़ उछाला है ?
प्रश्न	यही कि अखबारों में गलत छपा है।
प्रधानमंत्री	मैं कहता हूँ कि गलत छपा है—यह कीचड़ उछालना हुआ। आप ही बताइये यह कैसे कीचड़ उछालना हुआ ? आप साबित करिये। आप पहले अपनी खबर को सही साबित करिये तब मैं बताऊँगा आप जो चाहे छापते रहें।
प्रश्न	महोदय, सवाल बहुत साफ है। सवाल यह है कि क्या गृह मंत्री ने बी० एल० डी० के अध्यक्ष की हैसियत से चुनाव-आयोग को जो पत्र लिखा था वह फाइल में से निकाल लिया गया ?
प्रधानमंत्री	मैं इस बारे में क्या कुछ कहूँ ? यह मेरे रिकॉर्ड में कहीं नहीं है। मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। हाँ, कुछ हुआ जरूर था लेकिन अब कोई ऐसी बात नहीं है। आप पिछली बातों के लिए इतने परेशान क्यों है ? क्या आप लोग डाक्टर हैं जिसके लिए पोस्टमार्टम जरूरी है ?
प्रश्न	क्योंकि वह पत्र वापस फाइल में पहुँच गया।
प्रधानमंत्री	यदि वह पत्र वापस फाइल में है तो हो सकता है वह फाइल से बाहर गया ही न हो ? क्या सबूत है ?
प्रश्न	आप इसका लाभ लेना चाहते हैं।
प्रधानमंत्री	क्यों न चाहूँ ? आपको भी एक लाभ देना चाहता हूँ। अगर मैं कोई वाजिब लाभ पाना चाहता हूँ तो आपको क्या एतराज है ? हाँ, यदि मेरे वाजिब लाभ उठाने में आपकी दिलचस्पी है तो आप भी वैसा करने की कोशिश करें। लेकिन मैं आपकी मदद नहीं करने जा रहा।

कई लोगों का कहना है कि मोरारजी देसाई इस चक्कर में नहीं पड़ते कि वह अपनी कैसी तस्वीर पेश कर रहे हैं। वह इस बात की भी परवाह नहीं करते कि उनके बारे में क्या लिखा जा रहा है। लेकिन अनेक पत्रकारों का, जिन्होंने उनके बारे में कभी कुछ लिखा है अनुभव कुछ और ही है। प्रधानमंत्री बनने पर नया नया जोश था तो उन दिनों देसाई ने इन्दिरा गांधी की ही तरह रोज सवेरे जनता से मिलना शुरू किया। चरणसिंह भला क्यों इस काम में पीछे रहते—उन्होंने भी रोज सवेरे अपना दरबार लगाना शुरू किया। एक महिला-पत्रकार ने दिल्ली के इन तीनों दरबारों के बारे में लिखते समय इन्हें "दीवान-ए-आम" कहा और लिखा कि इन्दिरा गांधी जहाँ अपने 'बेहद आकर्षक और मोहक रूप में नजर आती थीं मोरारजी देसाई उतनी ही "उतावली और अत्यंत रूखेपन के साथ' लोगों से मिलते थे। इस रिपोर्ट के प्रकाशित होते ही साउथ-ब्लाक से उस पत्रकार के पास फोन गया 'कल के अखबार में जिसने रिपोर्टिंग की थी उससे प्रधानमंत्री मिलना चाहते हैं।'

बाद में पता चला कि प्रधानमंत्री इस बात से उतना परेशान नहीं थे कि उन्हें यह कहा गया था कि वे "उतावली और रूखेपन के साथ' मिलते थे। उस रिपोर्टिंग में लिखी गयी एक दूसरी बात से उन्हें परेशानी थी। उन्होंने छूटते ही उस महिला-पत्रकार से पूछा, आफ्टर शेव आफ्टर शेव लोशन की स्लिप्स

खुशबू आपने यह लिखना क्यो जरूरी समझा ?" उन्होने अक्सर लोगो से कहा है कि वह शेविंग सोप तक का इस्तेमाल नही करते, केवल पानी से ही दाढी बना लेते है। और अब लिखा जा रहा है आफ्टर शेव लोशन के बारे मे। वह भी शायद विदेशी हो। पत्रकार ने बताया कि यह तो महज एक 'आब्जर्वेशन' था और वह नही समझती कि यह किसी भी रूप मे आपत्तिजनक है।

लेकिन आप जानती है, यह एक ऐसी टिप्पणी है जिसका लोग गलत अर्थ लगा सकते है," मोरारजी ने कहा, "वे यह सोचने लगते है कि आप घुमा फिरा कर क्या कहना चाहती हैं। मिसाल के तौर पर एक अमेरिकी पत्रकार ने अपने किसी लेख मे लिखा कि मैं दिन भर मे चार बार कपडे बदलता हूँ। इससे मेरे बारे मे एक अजीब सी धारणा बनती है।"

विषय बदलकर वह औरतो के बारे मे बात करने लगे और उन्होने इस झूठ प्रचार' की चर्चा की कि वह औरतो के खिलाफ है। वर्षों पहले उन्होने कुछ कहा था जिसके विरुद्ध ससद की महिला-सदस्यो ने एक प्रकार से विद्रोह कर दिया था। प्रधानमत्री बनने के बाद टाइम ने उनकी उस पुरानी टिप्पणी को फिर से उद्धृत किया था। मोरारजी ने कहा 'मैं महिलाओ का सबसे बडा समर्थक रहा हूँ और विधान मडल मे मैंने अपेक्षाकृत ज्यादा औरतो को स्थान दिया है। लेकिन इतिहास के तजर्बो और भारत, श्रीलका तथा इसराइल की तीनो महिला प्रधानमत्रियो के अनुभवो से सबक लेकर मैंने अपने विचार बदल दिये। मैं आपको बता दू—अगर मिसेज थैचर को ब्रिटेन का प्रधानमत्री बना दिया जाये तो वह भी वैसा ही आचरण करने लगेंगी। देखिये कुल मिलाकर महिलाएँ पुरुषो की तुलना मे ज्यादा विनम्र होती है और वे उतनी क्रूर नही होती है जितने पुरुष। लेकिन जब कोई औरत क्रूरता पर उतारू हो जाती है तो वह सारे रिकॉर्ड तोड देती है फिर तो पुरुष उसके सामने कही नही टिकता।" ससद मे महिलाओ के जबरदस्त विरोध के बाद देसाई ने 'विदेशी महिलाओ' से माफी माँग ली पर देश की औरतो से माफी माँगने से इकार कर दिया। लेकिन अतत यहा की भी औरतो ने मोरारजी जैसे अडियल आदमी से माफी मँगवा ही ली। औरतो के हठ का जवाब नही!

मोरारजी ने महिला-पत्रकार से कहा 'मैं औरतो से नफरत नहीं करता।' सचमुच, उन्होने ठीक ही कहा। तारकेश्वरी सिन्हा उन महिला राजनीतिज्ञो मे से हैं जिन्हे मोरारजी के काफी करीब रहने का सौभाग्य मिला और वह दावे के साथ कहती हैं कि जितने बुजुर्गों से उनकी भेट हुई है उनमे मोरारजी बेहद शिष्ट लगे। उन्हे वे दिन याद आते है जब वह मोरारजी के मत्रालय मे उपमत्री थी। देसाई इतने सयमी और आत्म अनुशासित हैं कि भीषण गर्मी मे भी वह पखा नही चलाते। तारकेश्वरी इस तरह के सयम मे विश्वास नही करती थी। जब वह देसाई से मिलने गयी तो उन्होने जाकर पखा चला दिया। देसाई ने कोई विरोध नही किया और जब तारकेश्वरी अगली बार उनसे मिलने आयी तो देसाई ने खुद ही उनके लिए पखा चला दिया। तारकेश्वरी को बहुत अजीब लगा कि एक बुजुर्ग आदमी उतनी दूर चलकर स्विच ऑन करे और वह खुद ही इसके लिए उठने लगी पर देसाई नहीं माने। उन्होने ही पखे का स्विच दबाया। उम्र अधिक होने से क्या हुआ—आत्मा तो अभी जवान है! प्रधानमत्री के रूप मे अपने पहले सवाददाता-सम्मेलन मे उन्होने कहा उम्र अधिक होने से कोई फर्क नहीं पडता आदमी का मन से जवान होना चाहिए। लेकिन अगर उम्र का भी सवाल पैदा हो तो अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार मैं अभी केवल 19 साल का हूँ।" (फरवरी 29

फरवरी को पैदा हुए थे)।

अपनी विदेश-यात्रा के समय देसाई ने एयर इंडिया के व्यापारिक विमान से यात्रा करने का फैसला किया। इसकी वजह से पैदा हुई असुविधाओं के बारे में एक संवाददाता ने लिखा। उसने यह भी लिखा कि इस यात्रा में कांति देसाई भी मोरारजी के साथ थे और वे एक तरफ के रियायती टिकट (दिल्ली अम्सटडम) पर यात्रा कर रहे थे। पर वे लंदन में रुक गये। अम्सटडम से लंदन तक की यात्रा के लिए उनसे अलग से पैसा नहीं लिया गया। "जाहिर है कि एयर इंडिया ने श्री कांतिभाई देसाई के प्रति अपनी सद्भावना का विशेष रूप से परिचय दिया।"

उस संवाददाता को प्रधानमंत्री से मिलने के लिए संसद्-भवन में बुलाया गया—"आपने वह खबर दी थी या आपके किसी अन्य सहयोगी ने ?" प्रधानमंत्री ने पूछा।

"मैंने दी थी।" संवाददाता ने कहा।

"मुझे अफसोस है कि आपके पास गलत जानकारी थी।"

उस रिपोर्टर को पक्का पता था कि उसकी जानकारी सही थी, पर देसाई भी अपनी बात पर अड़े थे। उसने कहा 'किस बारे में ? आपके लड़के के बारे में ?" संवाददाता ने सोचा कि इस बात से शायद वह चुप हो जायें। पर वह भी अपनी बात पूरी तरह समझाने के लिए तैयार बैठे थे। उन्होंने बताया कि उनका लड़का उनका परिचारक है और उसने अपना कारोबार इसीलिए छोड़ दिया है ताकि वह उनकी देखभाल कर सके। "आपको पता है मैं 81 साल का हूँ और मेरे साथ कोई-न-कोई मेरी मदद के लिए चाहिए। अगर मेरा बेटा मेरी मदद करता है तो इसमें क्या नुकसान है ?"

उस रिपोर्टर ने जवाब दिया कि इसमें कोई नुकसान नहीं है सिवाय इसके कि कांति देसाई पार्टी में या सरकार में किसी पद पर नहीं हैं। रिपोर्टर ने याद दिलाया कि जनता पार्टी की सफलता के पीछे एक प्रधानमंत्री के सुपुत्र की करतूतों का काफी हाथ है।

'क्या आप मुझसे यह कह रहे हैं कि मेरा लड़का भी दूसरा संजय गांधी है ?" प्रधानमंत्री ने शांत लहजे में कहा।

पत्रकार ने जवाब दिया कि 'मेरा कहना या न कहना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि लोग क्या समझ रहे हैं ?' संवाददाता सम्मेलनों में प्रधानमंत्री के साथ उनके लड़के के मौजूद रहने का क्या औचित्य है ? सार्वजनिक सभाओं में क्या अपने पिता के साथ उसका रहना जरूरी है ? यहाँ-वहाँ, हर जगह वह प्रधानमंत्री के साथ साथ क्यों रहता है ?

अचानक देसाई उस पत्रकार से अपने बुढ़ापे के बारे में अपने प्रति अपने लड़के की निष्ठा के बारे में बात करने लगे 'मैं जानता हूँ कि लोग उसके बारे में बातें करते हैं लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि वह कोई गलत काम नहीं कर सकता। जब से मैंने प्रधानमंत्री का पद संभाला है आप उसके द्वारा किया गया एक भी गलत काम बता दें तो मैं वायदा करता हूँ कि उसके खिलाफ कारवाई करूँगा, ऐसी हालत में इस्तीफा देने में भी नहीं हिचकिचाऊँगा।'

एयर इंडिया का मॉस्को स्थित मैनेजर बेहद घबराया हुआ था। उसकी डेस्क के सामने यात्रियों की भीड़ लगी थी जो अपने टिकटों को कन्फर्म करने के लिए खड़े थे, लेकिन बेचारे मैनेजर के पसीने छूट रहे थे। टिकटों को हाथ में लेकर इधर-

फरवरी को पैदा हुए थे)।

अपनी विदेश-यात्रा के समय देसाई ने एयर इंडिया के व्यापारिक विमान से यात्रा करने का फैसला किया। इसकी वजह से पैदा हुई असुविधाओं के बारे में एक संवाददाता ने लिखा। उसने यह भी लिखा कि इस यात्रा में कांति देसाई भी मोरारजी के साथ थे और वे एक तरफ के रियायती टिकट (दिल्ली अम्सटर्डम) पर यात्रा कर रहे थे। पर वे लंदन में रुक गये। अम्सटर्डम से लंदन तक की यात्रा के लिए उनसे अलग से पैसा नहीं लिया गया। "ज़ाहिर है कि एयर इंडिया ने श्री कांतिभाई देसाई के प्रति अपनी सद्भावना का विशेष रूप से परिचय दिया।"

उस संवाददाता को प्रधानमंत्री से मिलने के लिए संसद भवन में बुलाया गया—"आपने वह खबर दी थी या आपके किसी अन्य सहयोगी ने ?" प्रधानमंत्री ने पूछा।

"मैंने दी थी।" संवाददाता ने कहा।

"मुझे अफसोस है कि आपके पास गलत जानकारी थी।"

उस रिपोर्टर को पक्का पता था कि उसकी जानकारी सही थी, पर देसाई भी अपनी बात पर अड़े थे। उसने कहा "किस बारे में ? आपके लड़के के बारे में ?" संवाददाता ने सोचा कि इस बात से शायद वह चुप हो जायें। पर वह भी अपनी बात पूरी तरह समझाने के लिए तैयार बैठे थे। उन्होंने बताया कि उनका लड़का उनका परिचारक है और उसने अपना कारोबार इसीलिए छोड़ दिया है ताकि वह उनकी देखभाल कर सके। "आपको पता है मैं 81 साल का हूँ और मेरे साथ कोई-न-कोई मेरी मदद के लिए चाहिए। अगर मेरा बेटा मेरी मदद करता है तो इसमें क्या नुकसान है ?'

उस रिपोर्टर ने जवाब दिया कि इसमें कोई नुकसान नहीं है सिवाय इसके कि कांति देसाई पार्टी में या सरकार में किसी पद पर नहीं हैं। रिपोर्टर ने याद दिलाया कि जनता पार्टी की सफलता के पीछे एक प्रधानमंत्री के सुपुत्र की करतूतों का काफी हाथ है।

"क्या आप मुझसे यह कह रहे हैं कि मेरा लड़का भी दूसरा संजय गांधी है ?" प्रधानमंत्री ने शांत लहजे में कहा।

पत्रकार ने जवाब दिया कि मेरा कहना या न कहना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि लोग क्या समझ रहे हैं ?' संवाददाता सम्मेलनों में प्रधानमंत्री के साथ उनके लड़के के मौजूद रहने का क्या औचित्य है ? सार्वजनिक सभाओं में क्या अपने पिता के साथ उसका रहना जरूरी है ? यहाँ-वहाँ, हर जगह वह प्रधानमंत्री के साथ-साथ क्यों रहता है ?

अचानक देसाई उस पत्रकार से अपने बुढ़ापे के बारे में, अपने प्रति अपने लड़के की निष्ठा के बारे में बात करने लगे "मैं जानता हूँ कि लोग उसके बारे में बातें करते हैं लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि वह कोई गलत काम नहीं कर सकता। जब से मैंने प्रधानमंत्री का पद संभाला है आप उसके द्वारा किया गया एक भी गलत काम बता दें तो मैं वायदा करता हूँ कि उसके खिलाफ कार्रवाई करूँगा, ऐसी हालत में इस्तीफा देने में भी नहीं हिचकिचाऊँगा।'

एयर इंडिया का मॉस्को स्थित मैनेजर बेहद घबराया हुआ था। उसकी डेस्क के सामने यात्रियों की भीड़ लगी थी जो अपने टिकटों का कन्फर्म करने के लिए खड़े थे, लेकिन बेचारे मैनेजर के पसीने छूट रहे थे। टिकटों को हाथ में लेकर इधर-

रूप म वह रात म सडको पर घूमते रहते थ और जरूरत स ज्यादा स्पीड से जाने वाली गाडियो और ट्रको के नबर नोट करके पुलिस को सौंप देत थे। उनके पास अगर सरकार चलाने का कोई फलसफा है तो वह वही है जो उन 12 पाप-भरे वर्षों" म बन सका जब वे अंग्रेज हुक्मरानो की नौकरी म थे और जिससे बाद म नफरत करने लगे थे। उनमें अदर न तो नेहरू-जैसा कोई करिश्मा है और न लालबहादुर शास्त्री-जैसी शराफत या विनम्रता। उनके पास हमेशा नौकरी की शर्तों और नियमो से बँधे किसी मजिस्ट्रेट की रुखाई और अडियलपना रहा और उनका नजरिया भी किसी एस प्रशासक से बढकर नही रहा है जिसके जिम्मे जनता की शिकायतें दूर करने का काम हो। केवल दिमागी उपकरणों स ही कोई अच्छा प्रधानमत्री नही बन सकता। इससे वह केवल फाइलें खिसका सकता है या उनका ढेर लगा सकता है।

जनता पार्टी के पहले प्रधानमत्री की त्रासदी यह है कि वह बुनियादी तौर पर डिप्टी-कलक्टर ही बना रहा है।

टिप्पणियाँ

1 मोरारजी देसाई, द स्टोरी ऑफ माइ लाइफ, मैकमिलन, नयी दिल्ली, 1977।
2 फ्रैंक मोरेस, इंडिया टुडे मैकमिलन नयी दिल्ली।
3 पाक्षिक इंडिया टुडे म प्रकाशित कांति देसाई का इटरव्यू, 16 31 दिसबर 1977।

उधर रखते हुए उसने फिर कहा, "मुझे फौरन क्रेमलिन जाना है।"

मामला क्या है ? क्रेमलिन जाने की ऐसी कौन सी जरूरत आ गयी ? "प्रधानमंत्री ने अपने बेटे कांतिभाई को फौरन मुझे क्रेमलिन बुलाया है। वह अपना टिकट भी कन्सल्ट करवाना चाहते हैं।"

कांति अपने बूढ़े पिता के साथ मॉस्को गये थे, लेकिन अब वह कहीं और जाना चाहते थे। क्या उनसे यह नहीं उम्मीद की जाती थी कि प्रधानमंत्री के साथ वह वापस भारत तक आयें ?

'नहीं, वह यूरोप जाना चाहते हैं" मैनेजर ने कहा और क्रेमलिन की ओर तेजी से रवाना हो गया।

उधर सोवियतस्काया होटल में प्रधानमंत्री का दल रंगरेलियाँ मना रहा था। संगमरमर के बड़े-बड़े खंभों, शानदार झाड़ फानूसों और नाच के लिए बने विशाल कमरों वाला यह होटल जारशाही के दिनों में राजघराने के लोगों का घर था पर अब सोवियत सरकार ने इसे विदेशी प्रतिनिधिमंडलों के लिए एक विशिष्ट होटल बना दिया है। 12 लोगों के इस दल में एयर इंडिया के तजुर्बेकार पाइलट और नेहरू व दमिजाज विमान-परिचारिकाएँ शामिल थीं। वे दमाई के विमान को दिल्ली से यहाँ तक लाये थे, लेकिन विमान लंदन जा चुका था और ये लोग यहीं रुक गये थे। सातों दिन, जब प्रधानमंत्री सोवियत संघ में ठहरे रहे यह दल सोवियतस्काया होटल में खाता-पीता रहा और होटल के बरामदे सारी रात इनकी रंगरेलियों में गूंजते रहे। लगता था, जैसे दास्तोवस्की के पात्र जिन्दा हो गए हों। होटल में ठहरे भद्र मेहमानों के लिए सारा-कुछ बहुत परेशानी पैदा करने वाला था।

भारत वापस आते समय जहाज तेहरान में रुका और कांति अपना सामान लेकर उतर गये। उनके स्वागत के लिए ईरान के शहंशाह का नजदीकी वही परिवार हवाई अड्डे पर मौजूद था जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने कुद्रेमुख परियोजना के लिए इमरजेंसी के दिनों में एक बी० आई० पी० को काफी राशि दी थी। उस समझौते की ढीली गाँठों को थोड़ा और कसा जाना था तथा किसी और बड़ी राशि के दिये जाने की फुसफुसाहट दूर से सुनी जा सकती थी। कुछ दिन तेहरान में गुजारने के बाद कांति देसाई पेरिस और स्विटजरलैंड के लिए रवाना हो गये। ताज्जुब है कि उन्हें यह याद ही नहीं रहा कि उनके पिता की उम्र 81 साल है और उन्हें मदद की जरूरत है।

अगर मोरारजी देसाई डिप्टी कलेक्टर के रूप में नौकरी करते रहे होते तो वह 1951 में रिटायर हो जाते। उसके छब्बीस वर्ष बाद वह भारत के प्रधानमंत्री बने। ज्यादा समय नहीं हुआ कि उन्हें ऐसे दिन भी गुजारने पड़े थे जब उन्हें 'खत्म' समझकर लोगों ने भुला ही दिया था। चाहे जो हो यह उनकी जबर्दस्त वापसी उनके धीरज और जिद की एक महान विजय है।

उन्होंने कई बड़े बड़े ओहदों पर काम किया और स्वास्थ्य खान पान तथा 'जीवन जल' की दैनिक खुराक के बारे में अपनी व्यक्तिगत सनक के साथ-साथ स्पष्टवादी और खरा इंसान होने के कारण उन्हें बहुत सारे लोगों से तारीफ मिली। लेकिन उनके अंदर एक महान नेता जैसी चमक कभी नहीं दिखायी दी। बुनियादी तौर पर वह एक ऐसे आदमी बने रहे जो फाइलों में फँसा रहता हो जो कानून और व्यवस्था के लिए परेशान रहता हो। बंबई में एक नौजवान मंत्री के

रूप म वह रात म सडको पर घूमते रहते थ और जरूरत स ज्यादा स्पीड स जाने वाली गाड़ियो और ट्रको के नबर नोट करके पुलिस को सौंप देते थे। उनके पास अगर सरकार चलाने का कोई फलसफा है तो वह वही है जो उन 12 'पाप-भरे वर्षों" म बन सका जब वे अंग्रेज हुक्मरानो की नौकरी मे थे और जिससे बाद म नफरत करने लगे थे। उनके अदर न तो नेहरू-जैसा कोई करिश्मा है और न लालबहादुर शास्त्री-जैसी शराफत या विनम्रता। उनके पास हमेशा नौकरी की शर्तों और नियमो से बँधे किसी मजिस्ट्रेट की रुखाई और अड़ियलपना रहा और उनका नजरिया भी किसी ऐसे प्रशासक से बढकर नही रहा है जिसके जिम्मे जनता की शिकायतें दूर करने का काम हो। केवल दिमागी उपकरणों से ही कोई अच्छा प्रधानमत्री नही बन सकता। इससे वह केवल फाइलें खिसका सकता है या उनका ढेर लगा सकता है।

जनता पार्टी के पहले प्रधानमत्री की त्रासदी यह है कि वह बुनियादी तौर पर डिप्टी-कलेक्टर ही बना रहा है।

टिप्पणियाँ

1 मोरारजी देसाई, द स्टोरी ऑफ माइ लाइफ, मैकमिलन, नयी दिल्ली, 1977।
2 फ्रैंक मोरेस, **इडिया टुडे** मैकमिलन, नयी दिल्ली।
3 पाक्षिक **इडिया टुडे** म प्रकाशित काति देसाई का इटरव्यू 16-31 दिसबर 1977।

3

चरणसिह—"ताज आपके सिर पर ही होगा"

कम-से कम तीन भविष्यवक्ताआ ने चरणसिह से वायदा किया है कि ताज आपक
सिर पर ही रखा जायेगा। 76 वर्षीय गह-मत्री अपन को जनता पार्टी का सरदार
पटेल समझने है और उनको अफसोस है तो एक ही बात का—कि उनकी उम्र
दस साल कम क्या न हुई ?[1] लेकिन उनके ज्योतिषिया तान्त्रिको व गुरुआ का
कहना है कि चिता न कीजिये आप जरूर प्रधानमत्री बनेगे। उनके दरवार क
इद गिर्द भी वही परिचित चेहरे घूमत नजर आते है जिनकी इदिरा की मजलिस
म कतार लगी रहती थी—नेमिचद्र जैन उफ च द्रास्वामी जो रातोरात एक
चालबाज ठेकेदार स एस तान्त्रिक बन गये कि ऊँचे लोगो क समाज म चल निकल,
लखनऊ के तथाकथित तान्त्रिक व्यसन रत पुरुषोत्तम नाथ कपूर जो ट्रेन क एक
वातानुकूलित डिब्बे म एक औरत और एक बोतल शराब के साथ पकडे गय थ,
रहस्यमय जय गुरुदेव जिनक नारे शहरा की दीवारा पर जब-तब इस तरह
दिखायी दने लगते है जसे किसी की पित्ती उछल आये। यह सभी और अ
पण्डित, ओझा टोटका करने वाले झाड फूक करने वाल उनके यहा मधु लि
और श्यामनदन मिश्र और नानाजी देशमुख-जैसे लोगो के साथ कधे-स-कधा सट
नजर आते है—य लोग जिस कल गद्दी पर बिठाने का वायदा करते है आ
उसकी मेहरबानियो क लिए आपस म होड लगाते है। और अपने आका क लि
इन भाति भाति क गुरुओ व स्वामियो को जमा करना दरबारी मसखर
राजनारायण का काम है।

राजनारायण ने ही चरणसिह को सबसे पहल 'चेयरसिह' (कुर्सी सिह) नाम
दिया था। यह तब की बात है जब लोहिया भक्त राजनारायण उन दिनो लखनऊ
के बेताज बादशाह च द्रभानु गुप्ता के ढोलकिया बने हुए थ और चरणसिह की
आँख का काँटा। उनका काम था उत्तर प्रदेश विधान-मडल के भीतर व बाहर
चरणसिह पर कीचड उछालना, उनको नगा करना। चरणसिह पर निशानबाजी
करना आसान था—इधर स उधर पलट जान म उन्हे कोई मात नही दे सकता
था। तीन दिन म वह तीन बार एक स दूसरी और दूसरी स तीसरी तरफ हुए।

दलबदलुओं का सरताज' ऐसा खिताब है जो मानो उनके लिए ही बना हो।
उत्तर प्रदेश म बनिया ब्राह्मण प्रभुत्व पर जाटो-अहीरो की ओर स हमला
बोलन स पहले चरणसिंह न अपनी वफादारी का आश्वासन दत हुए सी० बी०
गुप्ता को एक खत लिखा। लेकिन छोटे कद के उस बेहद चालाक व्यक्ति को अपने
दोस्तो और दुश्मनो की गजब की पहचान है—उसने फौरन ही एक व्यंग्य भरा
जवाब चरणसिंह को लिख भेजा 'पतजी ने आपको अपना ससदीय सचिव बनाया।
मुझे पता है आप उनके प्रति कितने वफादार थे। डॉ० सपूर्णानद न तो आपको
बाकायदा मत्री ही बना दिया। उनके प्रति भी आपकी वफादारी मुझसे छिपी
नही है। मुझे पता है कि मैं आपकी वफादारी पर कितना भरोसा कर सकता
हूँ।

1946 म गोविन्दवल्लभ पत को एक ससदीय सचिव की तलाश थी और
उनको गाजियाबाद का यह निठल्ला वकील मिल गया (ऐसे ही बहुत बाद को
भिवानी का भी एक निठल्ला वकील किसी को मिल गया था।)। पत को आदमी
पसद आया और उन्होन उस पर विश्वास किया। लेकिन चरणसिंह को लगा कि
उनको अपनी सेवाओ का वाजिब इनाम नही मिला। शुरू स ही उनके मन म
मजबूती स एक गाँठ बन गयी थी और उनको यकीन हो गया था कि जाटो को
अपनी आर्थिक शक्ति के अनुकूल सामाजिक व राजनीतिक रुतबा कभी नही
मिलेगा। उनके जिले मेरठ म जाट सबसे महत्वपूर्ण खुशहाल सम्पत्तिधारी जाति
थे लेकिन गाँवो की परम्परागत ऊँच-नीच म उनको अभिजात वर्ग का दर्जा नही
दिया जाता था। उनको 'पिछडा' हुआ माना जाता था और चरणसिंह को महसूस
होता था कि उन्हे जान-बूझकर उच्च वर्ग से नीचे रखा जा रहा है। भारत के
गृह मत्री होन के बाद लखनऊ म एक भाषण देते हुए उनकी यह भावना उनकी
जबान पर आ ही गयी। जनता पार्टी के विधायको से उन्होन कहा "1946 म
मुझे केवल ससदीय सचिव बनाया गया जबकि मेरे अदर इससे ज्यादा काबलियत
थी।'

जब वह पत के प्रति वफादार थ उन्ही दिनो एक अलग जाट-राज्य की
स्थापना के लिए ब्रिटिश गवर्नर के साथ चुपके चुपके साँठ-गाँठ भी कर रहे थ।
पतजी को जब पता चला तो चरणसिंह ने बिलकुल निर्दोष बनने का नाटक
किया। लेकिन बाद म सपूर्णानद सी० बी० गुप्ता और सुचेता कृपालानी के
मन्त्रिमडल म मत्री रहते हुए भी चरणसिंह अलग राज्य की स्थापना के आदोलन
की 'प्रेरणा दने वाली शक्ति' बन रहे। जाटो के अलग राज्य के कुदरती तौर पर
वही नेता होते। जब वह खुद उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री बने तब से ही उन्होने
पृथक जाट राज्य की बात करना बद कर दिया।

चरणसिंह हमेशा अपने को सही मानते थे और अपने अनेक गुणो व योग्यता
पर बहुत भरोसा था। जिन लोगो ने उत्तर प्रदेश पर शासन किया उन्हे चरणसिंह
हमेशा हिकारत की निगाह स देखते थ। उन दिनो वह मुह फट भी थ। वह
अक्सर अपन चमचो म बैठकर मन्त्रिमडल के अन्य सदस्यो को 'चोर और लम्पट'
कहा करत थ। अयोग्य आदमियो का बोझ ढोना उनको बराबर खलता रहा और
उन्होने ठान लिया था कि वह सत्ता के गढ पर कब्जा जरूर करेगे।

जब उन्होन सत्ता की ड्योढी के अदर कदम रखा तो वह बिलकुल सीधे-सादे
खरे व बेलाग आदमी समझे जाते थे—आर्यसमाजी विचारो म डूबे ऐसे व्यक्ति
जिनके बारे म कोई गोल माल नही था और जो बिलकुल अक्खड थे। लेकिन उन

दिनो म भी कुछ लोग थे जो उनको कुछ गहराई म जाकर देख सकत थ। उत्तर प्रदश क एक अवकाश प्राप्त अधिकारी को उन दिनो की एक छोटी-सी घटना आज भी याद है जब चरणसिह ससदीय सचिव थे। कुछ सप्लाई इसपक्टरो को तरक्की दी जानी थी। एक दिन सम्बद्ध विभाग के सचिव को चौधरी चरणसिह का फोन मिला और वह उनसे मिलने गया।

चरणसिह ने उनस कहा 'मैं समझता हूँ कि जिन सप्लाई इसपक्टरो को तरक्की दी जानी है उनकी सूची तुमने बना ली है। क्या मैं उस फाइल को देख सकता हूँ?

सचिव ने बताया कि इस सिलसिल म मुझे कुछ भी पता नही है लेकिन पता करके फाइल ला दूगा। कोई अडर सक्रेटरी उस फाइल पर काम कर रहा होगा। कुछ दिन बाद सचिव महोदय उस फाइल को लेकर चरणसिह के पास पहुँचे।

नौजवान ससदीय सचिव चरणसिह ने अधमुदी और सदिग्ध नजरो स फाइल को देखना शुरू किया। सप्लाई इस्पेक्टरो की सूची पर निगाह पडते ही उन्होने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि केवल ईमानदार लोगो को ही तरक्की दी जाये।'

सचिव इस बात से पूरी तरह सहमत थ और उन्होने बताया कि ईमानदारी को ही मुख्य कसौटी माना जाना चाहिए।

चरणसिह ने सूची का पहला ही नाम पढा तो मुह बना लिया और कहा मैंने सुना है कि यह आदमी बिलकुल ईमानदार नही है। इसके खिलाफ कई शिकायत है।'

दूसरा नाम पढा तो फिर मुह बना लिया, यह आदमी? मुझे बताया गया है कि बहुत ही बेईमान है।" उन्होन तीसरा चौथा और पाँचवाँ नाम पढ इनमे स किसी भी नाम से उन्हे खुशी नही हुई। हर आदमी के बारे म उनको कोई न कोई शिकायत थी।

लकिन सर इस सूची को सीनियार्टी और सर्विस रिकार्ड के आधार तयार किया गया है। जब तक किसी के खिलाफ लिखित रिपोर्ट न हो उस बेईमानी या ईमानदारी के बारे म जानना कठिन है।' सचिव ने कहा।

तब तक चरणसिह पूरी सूची पढ गय थे और सबसे नीचे लिखे एक नाम प उनकी निगाह ठहरी हुई थी। इस नाम को देखकर उनके चेहरे पर अचान चमक आ गयी 'यह आदमी मानसिह मुझे बताया गया है कि, बहुत ईमानदार है। इसके बारे मे बडी अच्छी रिपोर्टें है।

सचिव ने कहा 'लेकिन वह सूची म इतने नीचे है कि उसको अभी तरक्की नही दी जा सकती। कुछ ही जगह है जिनको भरना है।'

यह सब मुझे नही पता। मैं केवल इतना जानता हूँ कि ईमानदार आदमी को तरक्की का मौका मिलना चाहिए।"

सचिव को मानसिह के फरिश्तो का भी पता नही था लेकिन वह समझ गय कि ससदीय सचिव की राय उसके बारे म बहुत अच्छी है। कुछ दिन बाद उस सचिव को सी० बी० गुप्ता स मिलने का अवसर मिला जो सम्बद्ध विभाग के मत्री थ। अधिकारी ने अपने और चरणसिह के बीच हुई बातचीत का ब्योरा उन्हे दिया।

वह किस इस्पेक्टर की बात कर रहे थे?" सी० बी० गुप्ता ने पूछा।

कोई मानसिह नाम का आदमी है। चौधरी साहब कह रहे थे कि वह बहुत

इमानदार है ।"

'अरे, मानसिंह !" सी० बी० गुप्ता ने कहा और ठठाकर हँस पड़े—"तुम मानसिंह को नहीं जानते ?"

सचिव ने अपनी अनभिज्ञता जाहिर की। शायद उसे जानना चाहिए था कि यह कौन आदमी है। उसने कहा 'लेकिन सर, उसका नाम तो सूची में बहुत नीचे है।'

'अरे भई कर दो उसको अगर हो सके। गुप्ता ने कहा, 'वह चरणसिंह का छोटा भाई है।"

संपूर्णानंद की सरकार को गिराने में चौधरी चरणसिंह का काफी योगदान था। उस समय तक उन्होंने किनारे पर खड़े रहकर वार करने की रणनीति अपना ली थी ताकि वह 'तीसरी ताकत' बनकर उत्तर प्रदेश की राजनीति में दो गुटों की लड़ाई में निर्णायक भूमिका निभा सकें। 1959 में संपूर्णानंद-मन्त्रिमंडल के नौ मन्त्रियों ने सी० बी० गुप्ता के पक्ष में इस्तीफा दे दिया। हालांकि चरणसिंह भी संपूर्णानंद के खिलाफ थे, लेकिन उन्होंने सबके साथ इस्तीफा नहीं दिया। वह उस मौके का इंतजार करते रहे कि जब उनके दल बदलने से गुप्ता को निर्णायक लाभ मिले। यह सर्वविदित है कि कुछ महीनों बाद चरणसिंह ने इस्तीफा तभी दिया जब सी० बी० गुप्ता ने यह वायदा कर दिया कि मुख्यमन्त्री-पद के लिए वह चरणसिंह का समर्थन करेंगे। गुप्ता ने उन्हें धोखा दिया, लेकिन चरणसिंह फिर मौके के इंतजार में चुप बैठ गये।

1967 के चुनावों के बाद जब सी० बी० गुप्ता ने अपने मन्त्रिमंडल का गठन किया तो चरणसिंह उसमें शामिल नहीं हुए। इसके लिए उन्होंने अपनी शर्तें रखी। बाद में इन्दिरा गांधी को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा है 'उस समय (1967) मेरे समर्थन से विरोधी दलों के 275 सदस्य हो जाते (विरोधी दलों के 227 सदस्य चुने गये थे जबकि कांग्रेस को केवल 198 सीटें ही मिली थीं) लेकिन मैंने समर्थन देने से इंकार कर दिया और कहा कि कांग्रेस छोड़ने का मेरा कोई इरादा नहीं है। कुछ दिन बाद जब कांग्रेस विधान मंडलीय दल के नेता के चुनाव के लिए बैठक हुई तो सी० बी० गुप्ता के साथ मैं भी इस पद के लिए उम्मीदवार बना। आपने अपने दो विश्वासपात्र व्यक्तियों—उमाशंकर दीक्षित और दिनेश सिंह—को लखनऊ भेजा, ताकि वे सी० बी० गुप्ता के पक्ष में बैठ जाने के लिए मुझे राजी करें।"

चरणसिंह चाहते थे कि सी० बी० गुप्ता अपने मन्त्रिमंडल में उनके तीन सिपहसालारों को शामिल कर लें। ये थे—जयराम वर्मा, उदितनारायण शर्मा और जगनप्रसाद रावत। उन्होंने गुप्ता से यह मांग भी की थी कि वह अपने तीन समर्थकों को मन्त्रिमंडल में शामिल न करें। ये थे—कैलाशप्रकाश, जो मेरठ कांग्रेस में चरणसिंह के प्रतिद्वंद्वी थे, बनारसीदास और शिवप्रसाद गुप्ता। ये दोनों सी० बी० गुप्ता के बेहद वफादार लोगों में से थे।

इन्दिरा गांधी के संदेशवाहकों ने नेतृत्व की लड़ाई से चरणसिंह को अपना नाम वापस ले लेने के लिए इस शर्त पर राजी कर लिया कि उनसे सलाह मशविरे के बाद ही मन्त्रिमंडल की सूची को अंतिम रूप दिया जायेगा। लेकिन जब गुप्ता चुन लिये गये तो उन्होंने चरणसिंह को एक सूची भेजी जिसमें न तो चौधरी के मनपसंद लोगों को शामिल किया गया था और न उसमें से उन लोगों को अलग

किया गया था जिन्ह चरणसिंह नही चाहते थे। सूची देखते ही चरणसिंह गुस्से म आग-बबूला हो गये। उन्होंने सूची को फेंक दिया। और कहा जाता है कि वह चिल्लाने लगे— सभी झूठे है।" इसी वायदा खिलाफी की वजह से चरणसिंह ने इंदिरा गाधी के विरुद्ध यह बहुचर्चित आरोप लगाना शुरू कर दिया कि 'वह गलती से भी कभी सच नही बोलती।" लेकिन गुप्ताजी बराबर यही कहते रहे कि उन्होंने चरणसिंह से कोई वायदा नही किया था कि मन्त्रिमडल म किसे लेंगे, किसे नहीं लेंगे।

चरणसिंह और जयराम वर्मा ने जब मन्त्रिमडल म शामिल होने से इकार किया तो गुप्ताजी ने कहा कि यह तो "विशुद्ध ब्लैक मेल" है।[4]

गुप्ता मन्त्रिमडल के गठन के महज 18 दिन बाद, 1 अप्रैल 1967 को, चरणसिंह अपने सोलह साथियो के साथ विपक्ष से जा मिले और राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव को नामजूर करने के लिए उन्होंने विरोधी दलो के साथ वोट दिये। राममनोहर लोहिया ने इसका स्वागत किया और कहा कि चरणसिंह ने एकदम सही' काम किया है। प्रसोपा के अध्यक्ष एन० जी० गोरे ने कहा, 'यह भारतीय राजनीति के बदलते हुए युग का सकेत है। यह इस बात का प्रतीक है कि हम राजसत्ता की 'इस हाथ दे उस हाथ ले' वाली राजनीति के युग म प्रवेश कर रहे है।'

चरणसिंह की पहली सविद सरकार 11 महीने से भी कम समय के अन्दर ही गिर गयी और उसम शामिल दलो म बेइंतहा आपसी कडवाहट पैदा हो गयी। लेकिन 1969 म काग्रेस का विभाजन होने पर फिर चरणसिंह को किनारे पर खडे होकर वार करने वाली राजनीति" खेलने का मौका मिला। सी० बी० गुप्ता का सिंडीकेट मन्त्रिमडल और कमलापति त्रिपाठी के नेतृत्व वाली इंदिरा-काग्रेस के बीच कुर्सी के लिए जबदस्त खीचतान चल रही थी। जनवरी 1970 म गुप्ता के सोलह कैबिनेट मन्त्रियो म से नौ ने इस्तीफा दे दिया। लोगो को तरह-तरह के प्रलोभन देकर फँसाने म माहिर सी०बी०गुप्ता ने हर एक को मन्त्री बनाने का वायदा किया और 29 नये लोगो को अपने मन्त्रिमडल म शामिल कर लिया। लेकिन इससे भी काम नही चला और गुप्ता की गद्दी खिसकने लगी। तब उन्होंने चरणसिंह को किसी भी कीमत पर अपनी ओर मिलाने की कोशिशे की। त्रिपाठी का गुट भी चरणसिंह को अपनी ओर मिलाना चाहता था। जाट नेता अब अपने सही रग पर था। दरअसल वह इसी तरह की स्थिति को पसद करते है। भागकर सी०बी० गुप्ता के एक सिपहसालार कृष्णानदराय जो चरणसिंह के घोषित राजनीतिक शत्रु थे मुख्यमन्त्री-पद का प्रस्ताव लेकर चरणसिंह के पास गये। चरणसिंह को आश्वासन दिया गया कि सी० बी० गुप्ता उनके पक्ष म इस्तीफा दे देंगे गुप्ता इंदिरा गाधी के आदमियो के शासन से ज्यादा बेहतर यह समझते है कि राज्य म चरणसिंह की हुकूमत हो।

एक हफ्ते तक मोल-तोल होने के बाद चरणसिंह ने एलान किया कि वह दूसरी सविद सरकार का नेतृत्व करेंगे और इस बार उसम सगठन काग्रेस जनसघ ससोपा और भारतीय क्रांति दल को शामिल किया गया। लेकिन साथ ही उन्होंने अपने लिए दूसरे दरवाजे भी खुले रखे। उन्होंने प्रधानमन्त्री इंदिरा गाधी से दिल्ली म भेंट की और सवाददाताओ को बताया कि बी० के० डी० और काग्रेस के सभावित गठबधन के नेतृत्व के बारे म उन्होंने फैसला इंदिरा गाधी पर छोड़ दिया है और यह प्रस्ताव भी किया है कि वह अपनी पार्टी का काग्रेस के साथ

विलय कर देंगे। लेकिन विलय उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद होना चाहिए, वरना, "लोग कहगे कि मैंने मुख्यमंत्री होने के लिए ही ऐसा किया है।"

अब चरणसिह से नये सिरे से बातचीत करने के लिए दिल्ली से सिडीकेट काग्रेस के नेता रामसुभगसिह पहुँचे। चरणसिह रामसुभगसिह स मिलने के लिए राजी नही हुए, लेकिन सिडीकेट काग्रेस के अन्य नेताओ के साथ लबी बातचीत जारी रखी। ये नेता लोग चौधरी से इस बात का आश्वासन लेना चाहते थे कि वह कभी इन्दिरा गाधी स सहयोग नही करेंगे। उधर चरणसिह कुछ और ही सोच रहे थे—वह प्रधानमंत्री की लखनऊ-यात्रा का इतजार कर रहे थे।

इन्दिरा गाधी के लखनऊ पहुँचने स एक दिन पहले बी० के० डी० ने एक प्रस्ताव पास कर माँग की कि काग्रेस व बी० के० डी० की मिली जुली सरकार चलाने से सबधित सभी मसलो को तुरत स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए। लेकिन इन्दिरा गाधी के लखनऊ पहुँचने पर चरणसिह को बहुत बडा धक्का लगा। प्रधानमंत्री ने उनसे मिलने और समस्याओ के सुलझाने के लिए बातचीत करने म कोई दिलचस्पी नही दिखायी। प्रधानमंत्री के लिए आयोजित एक समारोह म चरणसिह भी गये लेकिन इन्दिरा गाधी ने उनकी ओर ध्यान ही नही दिया। इससे बी० के० डी० के अध्यक्ष के आत्म-सम्मान को चोट पहुँची। फिर वह कमलापति त्रिपाठी के घर गये लेकिन पडितजी ने भी उनसे राजनीति पर बात-चीत करने म कोई दिलचस्पी नही दिखायी। चरणसिह के एक सहयोगी ने बहुगुणा को ट्रक काल किया पर काग्रेस-महासचिव बहुगुणा ने फोन पर ही बहुत रूखा जवाब दे दिया।

इन सब बातो से भडक कर बी० के० डी० ने एक दूसरा प्रस्ताव पास किया जिसम कहा गया कि वह काग्रेस के साथ विलय के लिए वचनबद्ध नही है।

अब चरणसिह अपने पुराने दुश्मन सी० बी० गुप्ता से जिन्हे वह 'हर तरह के भ्रष्टाचार की जड कहते थे' हाथ मिलाने को आमादा हो गये। पर उन्होने गुप्ता-विरोधी तेवर तब तक बनाये रखे जब तक उन्हे मुख्यमंत्री पद से सी० बी० गुप्ता के त्यागपत्र की प्रतिलिपि मिल नही गयी जिसमे उन्होने राज्यपाल स अनुरोध किया था कि नये मंत्रिमडल के गठन के लिए चरणसिह को आमत्रित किया जाय। चरणसिह यही तो चाहते थे।

दूसरा कोई होता तो इसके बाद वह गुप्ता का समर्थक बन जाता लेकिन चरणसिह ऐसे लोगो म से नही है। उन्होने फौरन गुप्ता को एक पत्र लिखकर स्पष्ट कर दिया कि उन्होने (चरणसिह ने) प्रस्तावित सविद सरकार के अन्य घटको तथा सिडीकेट काग्रेस के लोगो से किसी तरह का वायदा नही किया है।

सी० बी० गुप्ता का इस्तीफा प्राप्त कर लेने तथा उनको अपना पत्र भेज देने के बाद चरणसिह बलिराम भगत स सम्पर्क करने के लिए आगे बढे। उनके और इन्दिरा गाधी के बीच बातचीत शुरू कराने म बलिराम भगत की महत्वपूर्ण भूमिका थी। भगत को बातचीत के लिए लखनऊ बुलाया गया। इसके बाद उन्होने दोनो से खुले बाजार मोल तोल शुरू कर दी—चरणसिह इन्दिरा काग्रेस के नेताओ और विरोधी दलो के प्रतिनिधियो स एक साथ ही बातचीत चला रहे थे। कभी-कभी तो एक ही वक्त दोनो गुटो के साथ बातचीत होती थी—काग्रेस के नेता एक कमरे म बैठे होते थे और बगल के कमरे म विरोधी दलो के नेता बातचीत का इतजार कर रहे होते। और बी० के० डी० के नेता कभी एक कमरे म जाते, कभी दूसरे म।

बातचीत म चरणसिह का साथ दे रहे थ उनके अतरग मित्र और मेरठ के प्रमुख व्यापारी पृथ्वीनाथ सेठ। वर्षों से वह चौधरी साहब के न केवल राजदार थ बल्कि खजाची भी थ। उनके घनिष्ठ सम्बन्धो की एक अलग ही कहानी है। 1940 मे जब चरणसिह जेल गये तो उन्होने पृथ्वीनाथ के पिता गोपीनाथ सेठ से एक हजार रुपया अपने परिवार के खर्च के लिए कर्ज लिया था। जेल से बाहर आने पर चरणसिह बूढे सेठजी से मिलने गये और अपने साथ मेरठ के तीन नागरिको को भी ले गये ताकि वे उन्हे कर्ज माफ करने के लिए राजी कर सकें। सेठ ने कहा कि वह चरणसिह के लिए विशेष रिआयत यह कर सकते है कि वह कोई तीन सौ रुपये माफ कर दें। इस बात से चरणसिह बहुत चिढ गये और किसी तरह की रिआयत लेने से इकार करते हुए लौट आये।

जब चरणसिह उत्तर प्रदेश म मत्री बने तो गोपीनाथ सेठ ने मेरठ म उनके सम्मान म एक बहुत बडी दावत दी। उस दावत म मौजूद एक पुराने नेता ने सेठ से हैरानी जाहिर करते हुए पूछा कि ऐसे आदमी के लिए इतनी शानदार पार्टी क्यो दी जिसे वह कुछ दिन पहले तक एकदम गया-गुजरा समझते थे। बूढे सेठजी ने जवाब दिया 'यह अब वह आदमी नहीं मत्री है।' जल्दी ही उनके पुत्र पृथ्वीनाथ सेठ चौधरी चरणसिह के जिगरी दोस्त बन गये। जैसे-जैसे चरणसिह का सिक्का जमता गया, पृथ्वीनाथ के पाव मजबूत होते गये। सबसे पहले वह उत्तर प्रदेश म एम० एल० सी० बने और बाद म राज्य सभा के सदस्य। उनका व्यापार दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से बढता गया। उत्तर प्रदेश के विभिन्न इलाको म उनके कोल्ड स्टोरेज और खेती के बडे-बडे फार्म बन गये।

दोनो पक्षो से मोल तोल के सिलसिले म पृथ्वीनाथ सेठ और बी० के० डी० की विधायिका तथा चरणसिह की पत्नी गायत्रीदेवी ने काग्रेस के साथ गठजोड का समर्थन किया। उन्होने दलील दी कि छोटे छोटे दलो का भरोसा करने से बहतर है कि एक दल का सहारा लिया जाये। इसके अलावा इन छोटे दलो ने पहली सविद सरकार के दिनो म उन्हे धोखा भी दिया था। चरणसिह भी अपने को इसके लिए तैयार करने लगे। चार दिन का यह वीभत्स नाटक जो 10 फरवरी 1970 को सी० बी० गुप्ता का इस्तीफा स्वीकार किये जाने से शुरू हुआ था और इदिरा गाधी की तरफ से बातचीत म शामिल डी०पी० मिश्रा की पत्रकारो के समक्ष इस घोषणा के साथ समाप्त हुआ कि चरणसिह तथा काग्रेस के बीच पूरी तरह समझौता" हो गया है।

सी० बी० गुप्ता को मुह की खानी पडी लेकिन उन्होने तय कर लिया था कि किसी-न किसी दिन इसका बदला जरूर लेंगे।

मेरठ के काग्रेस जन अक्सर चरणसिह को 'तानाशाह' कहा करते है। जिला काग्रेस मे उनकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। 1946 1952 और 1957 म ऐसे किसी भी काग्रेसी को मेरठ के किसी ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से टिकट नहीं मिला जिसे चरणसिह का समर्थन न प्राप्त हो।'[6]

जिले के एक काग्रेस-कार्यकर्ता ने चरणसिह के बारे म बताया, उनके अन्दर उदारता नहीं है चरणसिह पूरी पूरी वफादारी चाहते हैं। आपको नीचे झुकना होगा और तब सर्वशक्तिमान चौधरी चरणसिह की दया की भीख आप पा सकेंगे। वह चाहते हैं कि उनके अलावा और कोई नेता मेरठ म न आये। वह मेरठ को अपनी जागीर समझते ह …।'

चरणसिंह की राजनीतिक शैली के बारे म बात करते समय अक्सर मूलचन्द
शास्त्री के मामले का उदाहरण दिया जाता है। मूलचन्द भी एक जाट थ और
चरणसिह के रहमोकरम पर जिंदा रहते थे। 1953 म उन्होंने शास्त्री को मेरठ
जिला परिषद् का अध्यक्ष बनवाया लेकिन जल्दी ही शास्त्री ने साबित कर दिया
कि उनकी अपनी भी कुछ महत्वाकाक्षा है। उन्होंने जिला परिषद को अपने ढग
म चलाना शुरू किया। चरणसिंह बिगड गये और उ होने अपने अनुयायियो को
आदेश दिया कि शास्त्री क खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जाये। अविश्वास
प्रस्ताव पास नही हो सका। चरणसिंह हार मानने वाले नही थे। तीन साल बाद
उन्होंने शास्त्री को जिला परिषद से बाहर कर दिया और इस बात का भी पूरा
इतजाम कर लिया कि 1957 के चुनाव म शास्त्री को टिकट न मिले।

1957 क चुनाव म चौधरी चरणसिह अपने गढ छपरौली म कुछ सौ
वोटो से हारते हारते बचे। उनके प्रतिद्वद्वियो म एक हरिजन भी था। तानाशाह
का मुकाबला करने की हिमाकत करने वाला यह जरूर ही कोई विचित्र प्राणी
होगा। चुनाव के कुछ ही दिन बाद उस हरिजन की हत्या कर दी गयी और कहा
जाता है कि इस हत्या क मुकदम म कई जाट शामिल थे। चरणसिह के उत्तर
प्रदेश का गृह मत्री हो जाने के बाद सरकार न यह मुकदमा वापस ल लिया।

चरणसिंह अपनी बिरादरी के सशक्त और समृद्ध किसानो स ही ताकत
हासिल करत है और उनके हितो को बराबर आगे बढाते है। वह इन किसाना के
प्रमुख सिद्धातकार हैं और 1959 म नागपुर काग्रेस अधिवेशन म सहकारी खेती
के सवाल पर उन्होंने जवाहरलाल नेहरू तक से टक्कर ली थी। चरणसिंह ने इस
एक बोल्शेविक प्रस्ताव कहा था और जी जान से इसका विरोध किया था। उत्तर
प्रदेश जमींदारी उन्मूलन समिति के वह एक प्रमुख सदस्य थे और इस बात की
गारटी क लिए उन्होंने जी-तोड मेहनत की थी कि जमींदारी प्रथा फिर से अपना
सिर न उठा सके। वह किसाना की स्वतत्र मिल्कियत के बहुत बडे हिमायती
हैं और इन किसाना का ही मेरठ जिले म उनकी सत्ता क आधार पर कब्जा है।

चरणसिह अच्छी तरह जानते थे कि उनको आगे बढाने के लिए जैसी राज
नीति चाहिए उसक लिए जाट काफी नही है चाहे वे कितने ही शक्तिशाली हो।
इसलिए उ होने धीरे धीर अपने राजनीतिक आधार को व्यापक बनाना शुरू
किया और इसम अहीरो गूजरो और राजपूतो को शामिल कर लिया—इन चारो
जातियो के मेल को 'अजगर' का नाम दिया गया। पूर्वी उत्तर प्रदेश म उन्होंने
अपने आपको अहीरो का नेता बताया और बिहार म 'यादवो के सबसे पुराने
नेता के रूप म' अपना परिचय दिया।

लेकिन चरणसिंह सबसे कहते है कि वह जात-पांत जैसी सकीर्णताओ म
विश्वास नही रखते। लोगो को यह बताया जाता है कि उन्होंने अपने घर म हमेशा
एक हरिजन नौकर रखा। उनके आलोचक इसकी तुलना अमेरिका के गोरे घरानो
म काम करने वाले नीग्रो लडको से करते है जिनको नौकर रखकर गोरे अपने
को नस्लवाद विरोधी दिखाने का ढोंग करते है।

लेकिन चरणसिंह के पास जाति विरोधी होने का लिखित प्रमाण भी मौजूद
है। काफी पहले 1954 म, उन्होंने जवाहरलाल नेहरू को एक लम्बा खत लिखा
था जिसम सुझाव दिया था कि गजेटिड पदो पर नौकरी के उम्मीदवारो के
लिए यह आवश्यक होना चाहिए कि वह अपनी जाति के सकीर्ण दायरे से निकल
कर दूसरी जाति म शादी करे। विधायक होने के लिए भी उन्होंने इसी तरह की

शर्तें लगाने के लिए आग्रह किया था। चरणसिह न अपने पत्र म लिखा था, 'मेरे जैस लोग अपने अनुभव स बखूबी जानत ह कि सुविधा-प्राप्त या सुविधा प्राप्त समझी जाने वाली जाति से भिन्न जाति मे पैदा होने का क्या मतलब होता है। उनके साथ जिस तरह की बदसलूकी की जाती है और केवल दूसरी जाति म पैदा होने के कारण समाज म उनके साथ जिस तरह का भेद भाव बरता जाता है उसस बहुधा लोग अपना धर्म छोडकर किसी दूसर धर्म म शामिल हो जात हैं चाहे जो भी अडचनें हो यदि इन बातो को ध्यान म रखकर सविधान म कोई सशोधन किया जा सके तो मेरे इस छोटे से दिमाग क अनुसार देश की बहुत बडी सेवा होगी ।' जवाब म नेहरू न लिखा ' मैं इस बात स सहमत नही हो सकता कि कानून के जरिये या दबाव डालकर शादी के लिए किसी को मजबूर किया जाय।

चरणसिह क अदर कही बहुत गहरे म एक कसक है और एक गाठ पडी है कि वह तथाकथित अभिजात' वर्ग म नही पैदा हुए। यह बात बार बार जाहिर हो जाती है। दिसम्बर 1977 म मिरहची (उ० प्र०) म केन्द्रीय गृह मन्त्री ने कहा मैं एक जाट हूँ एक जाट परिवार म पैदा हुआ हूँ। अगर मैं मुसलमान बनना चाहूँ तो फौरन बन सकता हूँ लेकिन मैं ब्राह्मण नही बन सकता मैं राजपूत नही बन सकता। यहाँ तक कि मैं वैश्य भी नही बन सकता। इतना ही नही अगर मैं हरिजन भी बनना चाहूँ तो वह भी असम्भव है क्योंकि सविधान इस बात की इजाजत नही देता। अच्छा होगा ऐसी जाति प्रथा ध्वस्त हो जाये।

उनकी लडकियो म स एक ने जब दफ्तर म क्लर्की करने वाले एक कायस्थ लडके स शादी कर ली तो चरणसिह बहुत झल्लाये। गाँव की जाट बिरादरी न उन्हें जाति से बाहर कर देने की धमकी दी और कहा उसका हुक्का पानी बद कर दो। चरणसिह बिरादरी वालो को शात करने के लिए भाग भाग नूरपुर पहुँच। जाटो की पचायत बैठी और इसम बड बडे धाकड और मुस्तद चौधरी जमा हुए।

"जाटो म लौंडा नही मिला तुझ ?" सबने गुस्स स पूछा।

चरणसिह न उन्हें समझाने की कोशिश की—'अगर लडकी बिना शादी किये कायस्थ लडके के साथ भाग जाती तो क्या आप लोग इसे पसद करत ? आपकी नाक नही कट जाती ?'

जाट लोग शात हो गये।

वर्षों स उनके करीब रहन वाल उत्तर प्रदेश के एक राजनीतिज्ञ का कहना है, 'चरणसिह शुरू से आखिर तक जाट ही जाट है।'

अपनी पार्टी म किसी भी पद पर नियुक्ति के लिए चौधरी चरणसिह जाति को बहुत महत्व देत हैं। और फिर वह आदमी गाँव का भी होना चाहिए उसके पास इतनी जमीन होनी चाहिए कि वह अपना काम चला सके, वह सम्पन्न किसान होना चाहिए।

उत्तर प्रदेश विधान मडल क भूतपूर्व बी० के० डी०-सदस्य रामगोपाल एक घटना की याद करत हुए बतात हैं कि पार्टी की एक समिति के लिए उम्मीदवारो के बार म विचार हो रहा था। जब पहल उम्मीदवार का नाम आया तो चरणसिह ने सवाल किया, उसका नाम क्या है ?

रघुराज" रामगोपाल ने कहा।

'रघुराजसिह ?' चरणसिह ने पूछा।

"नही वह सिंह नही है केवल रघुराज है।"

"लेकिन वह है क्या ?"

'कुर्मी है।"

चरणसिंह ने 'चंगा' की मुद्रा म सर हिला दिया।

रामगोपाल पिछडी जाति के नही हैं और यह बतान म बहुत झिझकत है कि उनकी जिंदगी के एक महत्वपूर्ण अवसर पर चरणसिंह न उनको कैसे धोखा दिया। लेकिन किसी तरह बात बाहर निकल ही आयी। 1971 के चुनाव मे हार जाने के बाद चरणसिंह रामगोपाल के पास गये और कहा कि वह एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करना चाहते हैं।

पत्र का काम सभालने के लिए रामगोपाल तैयार हो गये, लेकिन उन्होंने कहा कि इस काम के लिए वह पैसे बिलकुल नही लेंगे।

चरणसिंह काफी खुश हुए और बोले, 'जो बात मैं कहना चाहता था वह खुद तुमने ही कह दी।"

उन लोगो न नवक्रांति नामक अखबार निकाला और रामगोपाल दिन रात काम करने लगे। उसके बाद उत्तर प्रदेश विधान-परिषद के चुनाव का समय आया और कुछ लोगो न चरणसिंह को सुझाव दिया कि रामगोपाल को विधान-परिषद म भेज देना चाहिए। रामगोपाल को उम्मीदवार बना लिया गया तो उन्होंने चरणसिंह को जाकर धन्यवाद दिया।

लेकिन कुछ ही दिन बाद चरणसिंह ने रामगोपाल से पूछा, मैंने सुना है कि सी० बी० गुप्ता तुम्हे विधान-परिषद या राज्य-सभा म कोई सीट देने जा रहे है ?" दरअसल सी० बी० गुप्ता के एक सदेशवाहक ने रामगोपाल से भेंट की थी, क्योकि उन दिनो रामगोपाल उस साप्ताहिक पत्र म गुप्ता के खिलाफ बडे तीखे लेख लिख रहे थे। उनसे कहा गया कि उन्हे विधान परिषद या राज्य-सभा का सदस्य बनाने से गुप्ताजी को प्रसन्नता होगी, लेकिन रामगोपाल न यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।

उन्होने चरणसिंह को सारी बात बतला दी। बी० के० डी० के नेता न अपनी अधमुदी और सदेह भरी नजरो से रामगोपाल की तरफ देखा और कहा चन्द्रावती बहुत रो रही है।" चन्द्रावती चरणसिंह की एक रिश्तेदार है जो इस समय उत्तर प्रदेश सरकार म मंत्री है। वह भी विधान परिषद का सदस्य होना चाहती थी और चरणसिंह के पास आयी थी।

रामगोपाल बहुत उलझन म पड गये। उन्होने कुछ नही कहा, लेकिन उनसे बताया गया कि चरणसिंह न अपने कुछ आदमियो को हिदायत दी है कि रामगोपाल का समर्थन न किया जाय। और सचमुच जब मतदान हुआ तो बी० के० डी० के बारह सदस्य खुलेआम उनके खिलाफ चले गये और बडी मुश्किल से रामगोपाल जीत सके। बी० के० डी० के विद्रोहियो के खिलाफ अनुशासन की कोई कारवाई नही की गयी।

1967 म जिन विधायको ने चरणसिंह के साथ दल बदला था उनम से एक विधायक थे रामनारायण त्रिपाठी। चरणसिंह जब अपने मन्त्रिमडल के लिए लोगो का चयन करने लगे तो उन्हे सुझाव दिया गया कि उन्हे त्रिपाठी को भी ले लेना चाहिए। उन्होने इनकार कर दिया। त्रिपाठी के एक समर्थक ने चरणसिंह की नाराजगी के बावजूद कहा कि जब कभी किसी ब्राह्मण का नाम आता है तो वह विरोध कर देते हैं। इस बात से चरणसिंह हमेशा के लिए त्रिपाठी से नाराज हो

गय। 1969 के मध्यावधि चुनावो म त्रिपाठी हार गये।
चरणसिंह यह कभी नही भूल सकत कि ब्राह्मण और वैश्य मिलकर उनकी
उन्नति के माग म रोडे अटकाने की कोशिश करते रहे हैं। वे यह भी नही भूल
सकते कि मुख्यमत्री बनाने क लिए समथन करने का वायदा करके सी० वी०
गुप्ता मुकर गये थ। उन्ह यह भी हमेशा याद रहता है कि वनिया ब्राह्मण गुट
बराबर कोशिश करता रहा है कि मत्री होने पर भी उनके पास जहा तक मुमकिन
हो कम से कम अधिकार रह। जब वह सी० वी० गुप्ता के मत्रिमडल म कृषि मत्री
थे तो उनके विभाग की सामान्य जिम्मेदारियाँ उनस लेकर अन्य मत्रियो को दे दी
गयी जो गुप्ता के प्रति ज्यादा वफादार थे। जब सी० वी० गुप्ता की आश्रित
सुचेता कृपालानी मुख्यमत्री बनी तो उन्होने चरणसिंह को वन विभाग दिया और
राजनीतिक क्षेत्रो म यह मजाक चल निकला कि उन्ह फॉरेस्ट मिनिस्टर' (वन का
मत्री) नही बल्कि मिनिस्टर फार रेस्ट (अर्थात आराम का मत्री) बनाया गया
है। खुद अपन ज़िले मेरठ की राजनीति म भी चरणसिंह देखते थे कि सी० वी०
गुप्ता उनकी स्थिति को नीचे-नीचे काटन म लगे हैं।
उनके भीतर कही गहरे बैठा असतोष अक्सर उबल पडता "बनिये ने कभी
हुकूमत की है? हुकूमत तो राजपूतो ने और जाटो ने की है।[8]

चरणसिंह देश के पहले मुख्यमत्री थ जिन्होन नागरिको को बिना मुकदमा चलाय
हिरासत म रखन के तानाशाही अधिकार खुद अपने हाथो म लिये थे। राज्य क
छात्र-आदोलन और ज़मीन पर कब्जा करने के आदोलन का जवाब उन्होने
निरोधक नजरबदी अधिनियम के ज़रिये दिया। यह उपाय किसान भू-स्वामियो के
हितो की रक्षा के लिए बनायी गयी उनकी रणनीति का एक प्रमुख अश था।
अध्यादेश के मकसद के बारे म भी चरणसिंह न किसी को सदेह म नही छोडा।
4 अगस्त 1970 को जल्दी जल्दी बुलाय गय एक सवाददाता सम्मेलन म उन्होने
अपना बयान वितरित किया जिसम चेतावनी दी गयी थी 'यह अभियान उनके
(आदोलनकारियो क) लिए पिकनिक साबित न हो और उन्ह जेल उतनी आराम
की जगह न लग जितनी वह आज़ादी के मिलने के बाद स हो गयी है तो मुझे
उम्मीद है कि उन लोगो को कोई शिकायत नही होगी।' उनका मतलब साफ
था—जेलो म आदोलनकारियो की वही हालत होगी जो अंग्रेजो के जमाने म
होती थी और उनको वहाँ वसी ही यातनाएँ झेलनी होगी जैसी तब दी जाती थी।[9]
विधान सभा म सबसे बडी पार्टी का नेता होने के नाते चरणसिंह अपने को
'जनता की इच्छा का साक्षात रूप मानत थे। इस हैसियत से उन्होने एलान किया
कि उस तरह क जन आदोलन जो गाधीजी चलाते थे अब प्रासगिक नही हैं।''
अधिनियम की आलोचना की गयी। आलोचको म काग्रेस जन भी थे जिनके सहारे
उन दिनो चौधरी का शासन चल रहा था। आलोचक कहते थे कि इस अधिनियम
स उत्तर प्रदश म अधेरगर्दी होने लगी है। चरणसिंह ने 'प्रगतिशील राजनीतिज्ञो
व आराम कुर्सी वाले आलोचको' की निदा की।[10]
एक राजनीतिक टिप्पणीकार ने लिखा बडे आत्मविश्वास के साथ जिसन
अब अहकार का रूप ले लिया है चरणसिंह ने यूनियन बनाने के अधिकार को
छीनकर विश्वविद्यालय के छात्रो पर हमला करने का फैसला किया है।'[11]
लोगो को याद है कि उत्तर प्रदेश म जब वह राजस्व-मत्री थे लगभग
27 000 पटवारियो न अचानक हडताल कर दी थी और दबाव डालने के लिए

अपने इस्तीफे दे दिये थे। चरणसिंह ने सारे इस्तीफे मंजूर कर लिये और 27,000 नये कर्मचारियों की नियुक्ति कर दी जिन्हें उन्होंने 'नयपाल' नाम दिया।

मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने राज्य से बाहर गुड़ भेजे जाने का आदेश दिया जिससे गुड़ निर्माताओं को और ज्यादातर धनी किसानों को काफी लाभ हुआ। इसी एक फैसले से जाट किसानों द्वारा नियंत्रित मुजफ्फरनगर और मेरठ की गुड़-मंडी ने करोड़ों रुपये बनाये।

जब चौधरी चरणसिंह मेरठ और मुजफ्फरनगर की यात्रा पर गये तो खुशी में डूबे वहाँ के मंडी मालिकों ने अपने इस 'हीरो' पर सौ-सौ रुपये के नोटों की वर्षा की। वहाँ मौजूद एक आदमी का कहना है कि निश्चय ही उस दिन चरणसिंह ने तकरीबन 10 लाख रुपये जमा किये होंगे।

चरणसिंह को इन इलाकों में देवता की तरह पूजा जाता था और लोग उन पर धन ऐसे चढ़ाते थे जैसे मंदिर में भी नहीं चढ़ाते होंगे। इन इलाकों में यात्रा के दौरान उन्हें दी गयी थैलियों और उन पर बरसाये गये नोटों का मोटे तौर पर हिसाब करें तो लगभग एक करोड़ रुपया उन्हें मिला होगा। खुद उनकी पार्टी के लोग भी कहते हैं कि इतना पैसा मिला कि उसका हिसाब करना कठिन है। चरणसिंह के मुख्य खजांची थे मेरठ में उनके प्रिय सेठ पृथ्वीनाथ, लेकिन इस धन का कैसे इस्तेमाल हुआ यह बहुतों के लिए अभी तक रहस्य है।

चरणसिंह खुद कोई पैसा नहीं छूते थे। कोई भी देवता नहीं छूता। लेकिन लोगों ने देखा कि अचानक मेरठ की साकेत कालोनी में चरणसिंह की एक शानदार नयी बिल्डिंग खड़ी हो गयी। शायद इसकी जानकारी भी चरणसिंह को नहीं होगी, क्योंकि उन्हें राजनीति से फुरसत ही नहीं मिलती थी। यह इमारत अभी तैयार भी नहीं हुई थी कि राज्य बिजली बोर्ड ने इसे काफी ऊँचे किराये पर ले लिया। बिजली बोर्ड की ऑडिट रिपोर्ट में यह बात सामने आयी तो अधिकारियों को काफी परेशानी भी उठानी पड़ी थी। चरणसिंह के कुछ समर्थक इसके लिए पृथ्वीनाथ और चरणसिंह की शक्तिशाली पत्नी गायत्रीदेवी को दोषी ठहराते हैं। उनका कहना है कि जब चरणसिंह को यह पता चला कि उनका मकान किसी सरकारी विभाग ने किराये पर ले लिया है तो बहुत गुस्सा हुए।

1970 में चरणसिंह ने एलान किया कि उन्होंने राज्य के चीनी उद्योग के राष्ट्रीकरण करने का फैसला किया है। लेकिन कुछ ही दिन में वह पीछे हट गये और उन्होंने राष्ट्रीकरण के सवाल पर विचार करने के लिए तीन सदस्यों की एक समिति बना दी। एक सदस्य उनके कृपापात्र सेठ पृथ्वीनाथ ही थे। कहा जाता है कि सेठ को समिति में राष्ट्रीयकरण का विरोध करने के लिए ही रखा गया था। पृथ्वीनाथ सेठ पश्चिमी यू० पी० के बहुत बड़े चीनी उद्योगपति गूजरमल मोदी के रिश्तेदार हैं। कहा जाता है कि चुनाव के दिनों में बी० के० डी० को मोदी ने बहुत चंदा दिया था। चरणसिंह की सरकार ने भी मोदीनगर में मजदूर-आंदोलन का दमन करने में काफी मदद दी थी और इस बार तो पुलिस ने आन्दोलनकारी मजदूरों पर गोली भी चलायी थी। बाद में मोदी 'पंथी' हो गये जिसके लिए भी कहा जाता है मोदी ने खासी कीमत अदा की थी।

चीनी उद्योग के राष्ट्रीयकरण के सवाल पर अपने कदम वापस लेने के लिए चरणसिंह की सरकार ने एक कानूनी विवाद खड़ा कर दिया। समिति की पहली बैठक में ही पृथ्वीनाथ सेठ ने इसरार किया कि पहले कानूनी पहलू पर विचार कर लिया जाये। राज्य-सरकार ने कहा कि उसे चीनी-मिलों को अपने हाथों में

लेन का अधिकार नही है और यू० पी० के एडवोकेट-जनरल न इस राय का समथन किया। इसके बाद राज्य व केंद्रीय सरकार म बहस छिड गयी—केंद्रीय अटार्नी जनरल न कहा कि राज्य-सरकार अपने आप राष्ट्रीयकरण कर सकती है। यह गतिरोध अक्तूबर 1970 मे राष्ट्रपति शासन लागू होने तक चलता रहा।

कांग्रेस से अलग होने के तुरत बाद चरणसिह ने एक बयान म कहा—'बिना किसी रोक टोक के प्रचार किया जा रहा है कि मैंने लाखो रुपया रिश्वत लकर चीनी मिलो के राष्ट्रीयकरण का सवाल टाल दिया। हो सकता है मेरे ऊपर आरोप लगाने वाल अपनी तराजू से मुझे तोलते हो और इस तरह की बातो पर विश्वास करते हो।

उन्होने ब्यौरे स बताया कि कैसे उन्होने केंद्रीय सरकार से प्रार्थना की कि चाहे सी० बी० आई० के ज़रिये, चाहे किसी न्यायाधीश द्वारा इस आरोप की खुलआम अथवा चुपचाप जाँच करा ली जाये। लेकिन इंदिरा गाधी राजी नही हुइ।

इसी बीच इलाहाबाद हाई कोट म एक बहुत दिलचस्प मामला आया जो चरणसिह की सरकार पर कुछ रोशनी डालता है। रामपुर स्थित रज़ा बुलद शुगर फैक्टरी के लिए सरकार की ओर से एक रिसीवर नियुक्त किये जाने के खिलाफ जस्टिस जी० एस० लाल ने एक याचिका मजूर की। अपनी याचिका म प्रार्थी ने कहा था कि रिसीवर की नियुक्ति के बाद से फैक्टरी को प्रतिदिन तीस हजार रुपये का घाटा उठाना पड रहा है। कारखाने की कुल देय राशि 68 लाख 95 हज़ार से बढकर 1 करोड 17 लाख हो गयी है।

चरणसिह की सरकार ने जिस व्यक्ति को रिसीवर नियुक्त किया था वह था केन इस्पेक्टर मानसिह—चौधरी चरणसिह का वही 'ईमानदार भाई'। उसके खिलाफ कोई कारवाई नही की जा सकी।

चरणसिह के एक पुराने राजनीतिक साथी न एक बार कहा कि यदि चरणसिह को अपने ढग से काम करने दिया जाये तो वह 'सारे राजा महाराजाओ को उनकी पूरी शान शौकत के साथ फिर से वापस बुला ल।'' प्रीवी-पर्स समाप्त करने के प्रस्ताव के व कट्टर विरोधी थे। उनका कहना था कि जो करार किया जाये उसे निभाना हमारा नैतिक कर्तव्य है।' उन्होने अपने पक्ष म इग्लड और जापान के उदाहरण दिये। उनका कहना था कि यह समझना बकवास है कि प्रीवी पर्स के समाप्त करने से जनतत्र को सफलता मिल जायेगी। जापान और ब्रिटेन जैसे विकसित देश किसी से कम जनतान्त्रिक या कम प्रगतिशील नही हैं। इन देशो म सोशलिस्ट पार्टियां भी सत्ता म आयी लेकिन उन्होने भी राजघरानो को समाप्त नही किया।'

चरणसिह को समाजवाद शब्द से ही चिढ है वह इसे एक अभिशाप मानते है—ऐसा रामगोपाल का कहना है जो उनके तमाम राजनीतिक साथियो म कुछ ज्यादा ही बहतर ढग से समझते है। एक दिन रामगोपाल न चरणसिह स पूछा कि बी० के० डी० की विचारधारा क्या है।

'मैं गाधीवाद म विश्वास करता हूँ समाजवाद म मुझे कोई विश्वास नही है,' उन्होने कहा।

'लेकिन गाधीजी ने यह कभी नही कहा था कि यह समाजवाद के विरुद्ध है,' रामगोपाल ने जवाब दिया।

“गाधीजी तो कभी समाजवाद के बारे म बात ही नही करते थे,” चरणसिंह
वाले।
कुछ दिन बाद रामगोपाल न गाधीजी का लिखा ‘मेरा समाजवाद’’ शीर्षक
लख पढकर चरणसिंह को सुनाया। सुनते ही उन्होने मुह बना लिया और जवाब
दिया, ‘मैं फिर भी समाजवाद शब्द को पसद नही करता।’’
लकिन अब चरणसिंह अपन ‘गाधीवादी समाजवाद’ के बारे म बहुत बात-
चीत करते है।
जवाहरलाल नेहरू ने एक बार उत्तर प्रदेश के किसी राजनीतिज्ञ से कहा था
कि चरणसिंह 17वी या 18वी शताब्दी के व्यक्ति है। उनका युग चेतना म कोई
भी सरोकार नही है। किसी ने जाकर यह बात चरणसिंह से कह दी और उन्होने
नेहरू का एक विरोध-पत्र भेज दिया कि उन्होने ऐसी बात क्यो कही?
चरणसिंह की पक्की धारणा है कि गाधीजी ने जो गलतियाँ की उनम सबसे
बडी गलती थी जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमत्री बनाना। उनका विचार है कि
जब तक इस देश म ऐसा नेतत्व रहेगा जो शहरो की ओर उन्मुख हो तब तक
भारत के कल्याण की कोई उम्मीद नही की जा सकती। चरणसिंह का कहना है
कि उनके लिए सबसे बडी रुकावट वग चेतना है। एक किसान का लडका दिल्ली
मे शासन चलाये? नही, यह नही हो सकता। समाचार-जगत मेरे ग्रामीण चरित्र
को कभी नही बर्दाश्त कर सकते ।’’
लेकिन गाधीजी से ज्यादा ग्रामीण कौन हो सकता है? और गाधीजी से
अधिक स्वीकाय कौन होगा जिसे एक स बढकर एक आधुनिक लोग भी मानते
है?

राजनारायण चरणसिंह की ‘दुष्ट आत्मा है। उन्होने चरणसिंह को चुनाव
आयोग की फाइल म से चिट्ठी निकलवान क लिए राजी किया जिसस
जनता पार्टी के अदर एक गभीर सकट पैदा हो गया। चरणसिंह मुहफट और
बरहम हो सकत है लेकिन जोड-तोड करने का काम उनके बस का नही है।
उनकी दिलचस्पी सीधे साद खेला म है। वह शतरज की बजाय ताश खलना पसद
करगे। जी-हुजूरी करने वाल आसानी स उनसे फायदा उठा लेत है—यह हमेशा
हुआ है तथा आज भी हो रहा है।
गह मत्री के यहाँ राजनारायण धरना देने की मुद्रा म पालथी मारकर बठ
गये और उन्ह उकसाना शुरू कर दिया—‘वे आपको बेइज्जत करना चाहते है।
लोक-सभा के चुनाव म सारे उत्तर भारत म टिकट बाटने का पूरा अधिकार
आपको मिला था लेकिन अब वे आपको उत्तर प्रदेश के लिए केवल प्रेक्षक बना
रहे है। इस तरह वे आपको अपमानित करने म लगे है।’’
चरणसिंह चुपचाप सुनत रहे और राजनारायण तथा दूसर लोग उनको
अपमानित किय जाने की एक-एक घटनाएँ गिनाते रहे—‘क्या आपके गुट को
मत्रिमडल म उचित प्रतिनिधित्व मिला है? आपने कितने लोगो को गवनर
बनाया गया? कितने लोगो को राजदूत बनाया गया? सारी महत्वपूण जगह तो
वे अपने आदमियो से भर रहे हैं ।’
सबस ज्यादा निराशा तो उस समय हुई जब चन्द्रशेखर को जनता पार्टी का
अध्यक्ष बनाया गया। राजनारायण बौखला उठे एक युग टक को लाकर माथ
पर बिठा दिया।’

धीरे धीरे चरणसिंह तैयार होने लगे थे। राजनारायण पटेल भी विलिंगटन
अस्पताल म अपनी इस तरकीब को आजमा चुक थे जब उन्होंने मोरारजी के
समथन म पत्र प्राप्त किया था। इस बार फिर उनको कामयाबी मिलन जा
रही है।

आपके लिए सबसे ज्यादा सम्मानजनक तरीका यह होगा कि प्रेक्षक क इस
फर्जी पद से आप इस्तीफा दे द।" राजनारायण ने सलाह दी।
चरणसिंह भी धीरे धीरे राजनारायण की तरह सोचने लगे। राजनारायण
ने कहा—'चुनाव चिह्न वापस ल लीजिय फिर व आपकी ताकत का समझेगे।
बी० एल० डी० के चुनाव चिह्न पर ही लडकर जनता पार्टी लोक-सभा का चुनाव
जीती थी। इस मौके पर अगर वह चिह्न वापस ले लिया गया तो पार्टी म बहुत
जबदस्त सकट पैदा हो जायेगा और चद्रशेखर एड कपनी आपके सामने घुटने टक
देगी।' राजनारायण ने अपने एक चमचे से कहा 'इलेक्शन कमीशन से फोन
मिलाओ।' चरणसिंह उपमुख्य चुनाव-आयुक्त से बातचीत करने के लिए मजबूर
हो गये। वह पत्र फाइल से निकाल लिया गया और गह-मत्री के पास पहुँचा दिया
गया।

11 मई 1977 को चुनाव-आयोग से चद्रशेखर के पास एक आवश्यक सदेश
आया जिसम पूछा गया था कि उनकी पार्टी का चुनाव चिह्न क्या होगा और कहा
गया था कि फौरन फैसला कर लीजिये, समय बिलकुल नही है, उसी दिन तय हो
जाना चाहिए। चद्रशेखर को सदेश पाकर धक्का लगा। उन्होंने पार्टी म व
सरकार म अपने सहयोगिया स बातचीत की। उन लोगा ने इस चुनौती का सामना
करने का फसला किया। चद्रशेखर ने फौरन ही काय-समिति की आपात बठक
बुलायी ताकि किसी दूसरे चुनाव चिह्न के बारे म फैसला किया जा सके। इस
बीच मोरारजी देसाई ने उपमुख्य चुनाव-आयुक्त को बुलवाया और आयोग की
फाइल से सरकारी कागज बाहर निकालने के लिए उस जबदस्त डाट पिलायी।
चुनाव-अधिकारी घबराया हुआ गह मत्री के घर पहुँचा। तब तक चद्रशेखर ने
चरणसिंह के पास यह खबर भिजवा दी थी कि यदि गायब किया गया पत्र शाम
के चार बजे तक आयोग क दफ्तर म नही पहुँच जाता है तो पार्टी कोई दूसरा
चुनाव चिह्न ले लेगी। राजनारायण के लिए अब काफी परेशानी पैदा हो गयी।
उनकी योजना नही चली। उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्रेक्षक पद से चरणसिंह का
इस्तीफा लकर जनता पार्टी के अध्यक्ष के पास भेज दिया था। अब एक ही तरीका
था कि जो गलती की गयी थी उसे जल्दी-से-जल्दी दुरुस्त किया जाये। चुनाव
चिह्न वाला पत्र आयोग को वापस भेज दिया गया ताकि उसे उसकी जगह रख
दिया जाये।

14 मई 1977 को राजनारायण ने चद्रशेखर के मकान के बाहर एक प्रदशन
आयोजित किया जिसम लोग गला फाड फाडकर चिल्ला रहे थे— चरणसिंह
नही तो चुनाव नही।' लेकिन उस शाम बदहवास राजनारायण जनता पार्टी के
हेड क्वाटर म दौडते हुए पहुचे चरणसिंह का इस्तीफा लिया और उसे फाडकर
फेंक दिया। खबरें जानने के लिए उत्सुक सवाददाताओ के सवाल का जवाब देते
हुए उन्होंने कहा चरणसिंह एकदम वहीं हैं जहा पहले थे। वह उत्तर प्रदेश म
प्रेक्षक क रूप म जायग। पार्टी के अदर किसी तरह का सकट नही है।'

चरणसिंह शायद ही कभी मुसकराते हो। लेकिन उस सवेरे कैमरामनो के फ्लशो

की चमचमाती रोशनी म उनके होठो पर एक हल्की मुसकान मलती दिखायी दे रही थी। ऐसा लगता था, जैसे उन्होने सारी दुनिया जीत ली हो। इन्दिरा गाधी की नाटकीय गिरफ्तारी के दूसर दिन सवेर गह मत्री शास्त्री भवन म एक सवाददाता सम्मेलन म बोल रहे थे। अभी तक उनक पास बहुत ज्यादा बधाइ के तार तो नही आय थे, लेकिन उनके जवाब स लगता था कि उ ह इतन तार मिलन की उम्मीद है कि कई ट्रक भर जायगे। सवाददाताओ स वह बडे सतोष के साथ सी० बी० आई० की काय-कुशलता की तारीफ कर रह थ— 'किसी भी देश को इस तरह के सगठन पर गर्व हो सकता है।'' चरणसिह न उत्तर प्रदेश म एक कुशल प्रशासक के रूप म काफी शोहरत हासिल की थी और वह बेहद मेहनती तथा अपने काम मे पक्के मत्री के रूप म वे मशहूर थे। आज की घटना से लग रहा था कि उन्होन काफी मन से होम-वक' किया था। लेकिन कुछ ऐस लोग भी थ जिन्ह उनकी सफलता म सदेह हो रहा था। अगर इन्दिरा गाधी के खिलाफ लगाये गय आरोप झूठे साबित हो गय तो क्या होगा ? क्या वे इस्तीफा दे दग ? मैं इस्तीफा क्यो दूगा ?'' चरणसिह न दम्भ भरे आत्मविश्वास के साथ कहा गाया इन्दिरा गाधी के खिलाफ उठाये गय कदम म किसी तरह की चूक नही की गयी थी।

तीस हजारी कोट के बाहर भारी भीड जमा थी। तजी स यह खबर फैल गयी थी कि इन्दिरा गाधी को यहाँ पेश किया जाना है। लेकिन पुलिस लाइन्स के आफिसस मेस से—जहाँ विनोबा की शिष्या सुशीला देशपाडे के साथ उन्होने एक कमरे म रात गुजारी थी—उन्ह पालियामेंट स्ट्रीट म एक मजिस्ट्रेट की अदालत मे ले जाया गया। बैरक-जैसी अदालतो के चारो तरफ पुलिस न काफी जबदस्त इतजाम कर रखा था। दगा फसाद क समय तैनात किय जाने वाली पुलिस के लोग हाथो म खपच्चीदार ढालें लिये सडको पर अकडते हुए चहलकदमी कर रह थे। तमाशबीनो की भीड जमा थी, पक्ष और विपक्ष से नारेबाजी भी हो रही थी—''इन्दिरा को फाँसी दो'', इन्दिरा की जय।

जिस समय अदर अदालत म वकीलो म बहस चल रही थी बाहर आँसू-गैस के गोले फेंके जा रहे थे। कठघरे म खडी इन्दिरा गाधी की आँखो पर भी आँसू-गैस का असर हुआ। 'मुझे थोडा पानी चाहिए' उन्होने कहा और सजय गाधी पानी लाने के लिए बाहर लपके। उन्होने एक रूमाल पानी म भिगोया और अपनी आख पर रख लिया।

तकरीबन एक घटे बाद वह आजाद थी। उन्हे बिना शत रिहा कर दिया गया था क्योकि मजिस्ट्रेट को 'गिरफ्तारी का कोई उचित कारण नही मिल सका था। रातोरात उनको शहीदो का रुतबा मिल गया था। शुरू स ही उनके मामले म गलतियाँ हो रही थी।

उस शाम बेहद खुश राजीव गाधी ने एक विदेशी सवाददाता से कहा, 'खुद मम्मी भी इतना बढ़िया सिनरियो नही लिख सकती थी।'' सचमुच ऐसा लगता था गोया चरणसिह एकदम इन्दिरा गाधी के इशारो पर चल रहे हो। इन्दिरा गाधी एसे ही नायाब मौके की तलाश म थी। गिरफ्तारी उनके लिए एक वरदान हो गयी। फ्रास के ला माद अखबार ने इस घटना पर टिप्पणी करत हुए लिखा— "भारत म राजनीतिक बदियो को अक्सर शहीद का दजा दिया जाता है। जैसाकि देसाई के अधिकतर मत्रियो के लिए हुआ, यहाँ जेल सत्ता के महल की ड्योढी मानी जाती है।'

अपने उतावलेपन के कारण चरणसिह इन्दिरा गाधी के हाथो म खेल गये।

उनके दरबारी चमचे उन्हें दिन रात यह कहकर उकसाते थे कि जो सेहरा आप
माथे पर बँधना चाहिए था वह तो शाह कमीशन को मिल रहा है। उनके ए
काफी नज़दीकी समर्थक ने शह देते हुए कहा यह शाह कमीशन है क्या ? आ
ही ने तो इसे बनाया है। फिर भी सारी वाहवाही उसे मिल रही है। आप उस
गिरफ्तार करिये और फिर सारा देश आपके कदम चूमने लगेगा। आप सारे देश
के हीरो बन जायेंगे।"

कई हफ्तों से चरणसिंह चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे कि "एक बहुत बड़ी
मछली के लिए' जाल बिछाया जा चुका है। उनके करीबी लोगों को कई दिन
पहले से ही पता चल गया था कि महात्मा गांधी के जन्म दिन, 2 अक्तूबर को
इंदिरा गांधी गिरफ्तार की जायेंगी निस्संदेह इंदिरा गांधी को भी अपनी भावी
गिरफ्तारी का सुराग लग गया था। (यहाँ तक कि उन्होंने साइक्लोस्टाइल किय
अपना बयान भी तैयार कर रखा था)। पर यह सुराग कैसे लगा—इसके बारे में दो
राय है। कुछ लोगों के अनुसार सी० बी० आई० में उनके एक वफादार अफसर ने
उनको बता दिया। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि यह सूचना एक तांत्रिक ने
पहुँचायी थी जिसका दोनों खेमों में उठना-बैठना है।

इंदिरा गांधी को एक ऐसा नाटक दिखाने का मौका मिल गया, जिसमें उन्हें
महारत है।

3 अक्तूबर 1977 की शाम को 5 बजे के आस पास जब सी० बी० आई० के
पुलिस सुपरिंटेंडेंट एन० के० सिंह 12 विलिंगडन क्रिसेंट पहुंचे और इंदिरा गांधी
को गिरफ्तार करने के लिए बढ़े तो वह गरज पड़ी— मुझे हथकड़ी पहनाइये।
मैं तब तक नहीं जाऊँगी जब तक मुझे हथकड़ी नहीं पहनायी जायगी।"

संजय गांधी शहर भर के अपने गुंडे दोस्तों को अंधाधुंध फोन करते जा रहे
थे। एक दूसरे फोन से आर० के० धवन कांग्रेस नेताओं और अखबारों के दफ्तरों
को इत्तला देने में लगे थे। एक संवाददाता को मनका गांधी की पत्रिका सूर्या के
आफिस से फोन मिला कि यदि वह इंदिरा गांधी के मकान पर अभी फौरन
पहुंचे तो कुछ खबरें मिल सकती है।

मेरे खिलाफ वारंट और एफ० आई० आर० कहाँ है ?" इंदिरा गांधी ने
एन० के० सिंह से पूछा।

सी० बी० आई० के अफसर को लग रहा था गोया वही अपराधी हो। उसने
हकलाते हुए कहा, सी० बी० आई० के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह एफ०
आई० आर० की नकल या गिरफ्तारी का वारंट दिखाये।"

'यह चरणसिंह का नया कानून होगा,' इंदिरा गांधी के वकील फ्रेंक ए थोना
ने कहा।

'जब तक आप मुझे हथकड़ी नहीं पहनायेंगे, मैं यहाँ से हिलूंगी भी नहीं—
लाइये हथकड़ी और मुझे ले चलिये। वह तेज़ी से अन्दर की तरफ चली गयी।

उन्होंने तैयार होने में काफी समय लगाया—लगभग तीन घंटे। सी० बी०
आई० के अफसरों ने कहा कि अगर वे जाती मुचलका दे दें तो उन्हें उनको वहीं
रिहा किया जा सकता है। मैं क्यों ऐसा करूँ ? वह चीख पड़ी और फिर अंदर
चली गयी।

इससे पहले कि वह अंतिम रूप से तैयार होकर पुलिस के साथ जाने के लिए
बाहर आती भूतपूर्व रक्षा-मंत्री बंसीलाल कुछ संवाददाताओं को मना रहे थे कि
वे इंदिरा गांधी से कुछ सवाल पूछें ताकि रवानगी में थोड़ी और देर की जा

गके। उन्होंने कहा कि इन्दिरा गाधी चाहती हैं कि पत्रकार उन्हें बातचीत म लगाय रखें।"

जब वह बाहर आयी तो उनके चेहरे पर उदासी और तनाव दिखायी दे रहा था, पर जैसे ही कैमरो ने तसवीरें लेनी शुरू की वह मुसकरा पड़ी। इस बार वह सचमुच अपन आस-पास सवाददाताओ की भीड का स्वागत कर रही थी। उनके सवालो का जवाब देने के लिए तैयार खडी थी। दरअसल वह इसी इतजार मे थी कि सवाददाता उनसे और सवाल करें। जब वह जाने के लिए तयार हुइ तो आठ बज चुके थ। शायद पडितो ने इसी को शुभ घडी बताया था। तब तक मजय की पलटन भी पहुँच गयी थी। पुलिस की गाडी उन्हे लेकर बड्कल लेक की तरफ रवाना हुई ता पीछे हुल्लडबाजो का एक लबा कारवाँ भी चल दिया। और फिर रेलवे क्रासिंग के पास वह नाटकीय घटना घटी—भारत की भूतपूव मलिका एक पुलिया पर बैठकर दिल्ली की सीमा से बाहर जाने से इनकार कर रही थी।

शुरू से अत तक इस मामले मे जितना अनाडीपन बरता गया उससे ज्यादा बेवकूफी की कल्पना भी नही की जा सकती, और फिर भी चरणसिह इसे बिलकुल न्यायोचित' ठहराने मे लगे थे। इन्दिरा गाधी के प्रति जो नरमी दिखायी गयी उसे वह उनके प्रति अपने सम्मान का सूचक बता रहे थे। कुछ ही दिन बाद उन्होने कहा "मैं उन्हे अपनी बहन की तरह समझता हूँ। वह 11 वर्षो तक प्रधानमत्री रही है। वह एक ऐसे व्यक्ति की बेटी हैं जिसने एक अरसे तक देश पर हुकूमत की।" मानो यह कहने से जल्दबाजी और अनाडीपन के साथ किये गय काम के भौंडेपन को छुपाया जा सकता हो!

चरणसिह ने प्रधानमत्री तथा अपने कुछ अन्य सहयोगियो को विश्वास दिलाया था कि इन्दिरा गाधी के खिलाफ उनके पास "फौजदारी के पक्के पकाये मामले" ह और किसी तरह की गडबडी की कोई आशका नही है। वह इतने ज्यादा निश्चित थे कि उन्होने कानूनी मुद्दो पर कानून मत्री से भी सलाह करने की जरूरत नही महसूस की। लेकिन जिस काम को करके वह एक बडे हीरो बनना चाहते थे, उसी ने दिखा दिया कि प्रशासनिक क्षमता और योग्यता के लिए उनकी शोहरत निराधार है।

शाह आयोग को तो उन्होने एक तरह से खत्म ही कर दिया। 4 अक्तूबर को जिस समय विजय की मुद्रा मे गह मत्री सवाददाता-सम्मेलन म बोल रह थे जस्टिस शाह ने आयोग की बैठक को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया। उन्होने इस गिरफ्तारी को आयोग के काम म हस्तक्षेप माना। एक बार तो उन्होन अपना इस्तीफा भी भेज दिया लेकिन प्रधानमत्री ने उनसे इसे वापस ले लेने के लिए आग्रह किया। "इससे जनता सरकार का ही खात्मा हो जायगा," मोरारजी ने जस्टिस शाह से कहा।

उधर चरणसिह के मकान पर परदे के पीछे एक और नाटक चल रहा था। गिरफ्तार किय जाने वाले लोगो की जो सूची सी० बी० आई० के पास थी उनम प्रसिद्ध उद्योगपति और कई अखबारो के मालिक, के० के० बिडला का भी नाम था। इन्दिरा गाधी की गिरफ्तारी से कुछ ही दिन पहले राजनारायण ने के० के० बिडला और गह मत्री के बीच एक मुलाकात का जुगाड बैठाया था। बिडला चरणसिह के मकान पर गये, लेकिन उनके लिए यह एक मुश्किल मुलाकात थी। बताया जाता है कि उनके जबदस्त हिमायती राजनारायण न चरणसिह से अनुरोध किया कि बिडला से अलगाव बुद्धिमानी' नही होगी, बिडला महज 'एक व्यक्ति

नही वल्कि एक साम्राज्य' है। के० के० बिडला को हर बात की जानकारी मिलते
रही और उन्हे सुराग मिल गया था कि उनकी गिरफ्तारी होने वाली है। वह
विदेश यात्रा पर रवाना हो गये।

4 अक्तूबर को चरणसिंह के नजदीकी क्षेत्रो में इस अफवाह से बेचैनी फैली
थी कि गृह मत्री को निकालने के लिए बडे पैमाने पर काम हो रहा है। किसी
व्यावसायिक सस्थान का सबसे बडा अधिकारी चरणसिंह को निकालने की योजना
को अमली रूप देने दिल्ली आया है। जनता पार्टी के कुछ ससद-सदस्यो को खरीदने
की तैयारियाँ जारी हैं। उस रात लगभग साढे नौ बजे नानाजी देशमुख को गृह
मत्री ने अपने घर बुला भेजा। गृह मत्री के मकान के चारो तरफ सुरक्षा का कडा
इतजाम था। ऐसा लगता था कि हर झाडी के पीछे पुलिस के जवान बैठे हैं।
अदर से राजनारायण के साथ जय गुरुदेव निकल रहे थे। राजनारायण ने बाबा के
पैर छुए आशीर्वाद लिया और नानाजी देशमुख के साथ वापस अदर लौट गये।

चरणसिंह अपने तीन महान सलाहकारो के बीच घिरे बैठे थे। ये थ—
राजनारायण नानाजी देशमुख और किसी जमाने मे इंदिरा गाधी के चहेते
दिनेशसिंह, जो जनता पार्टी मे शामिल हो गये है। चरणसिंह को सलाह दी गयी
थी कि वह एक साथ बहुत से लोगो से टक्कर न लें।

लखनऊ की एक सक्षिप्त यात्रा से वापस आने पर चरणसिंह को पार्टी-अध्यक्ष
चन्द्रशेखर का एक पत्र मिला, जिसमे उन्होने इन्दिरा गाधी की गिरफ्तारी के
मामले को कायदे से सचालन न करने पर क्षोभ प्रकट किया था। गृह मत्री
इसमे अपनी व्यक्तिगत निंदा की गध मिली—खास तौर से इसलिए कि चन्द्रशेख
के पत्र का पार्टी के महामत्रियो ने अनुमोदन किया था। चरणसिंह ने सरकार से
अपना इस्तीफा लिखा। उनके चमचो को जब इस्तीफे की खबर मिली तो वे भाग
भागे पहुचे और कहने लगे 'अगर आपने इस्तीफा दे दिया तो जनता सरकार
गिर जायेगी।' चन्द्रशेखर को भी समझाया बुझाया गया और उन्होने एक दूसरा
पत्र लिखा जिसमे कहा कि उन पर कीचड उछालने का कोई इरादा नही था।
चरणसिंह ने फौरन अपना इस्तीफा वापस ले लिया।

इस घटना के बारे मे चरणसिंह ने सवाददाताओ को जो विवरण दिया वह
थोडा भिन्न था। कुछ ही हफ्ता बाद उन्होने एक भेंट वार्ता मे कहा 'राजनीतिक
जिम्मेदारी (इंदिरा गाधी के मामले के सचालन की) मेरी थी इसीलिए मैं
इस्तीफा देना चाहता था ब्रिटिश परपरा के अनुसार मुझे इस्तीफा दे देना
चाहिए था और मेरा इस्तीफा आज भी लिखा रखा है। लेकिन मेरे दोस्तो ने कहा
कि यदि अन्य मामलो मे भी ब्रिटिश परपरा का पालन किया जाता हो तब तो
आप इस्तीफा दें लेकिन यदि ऐसा नही है तो आप क्यो इस्तीफा दें? मेरे दोस्तो
ने यह भी कहा कि यदि आप इस्तीफा दे देंगे तो जनता पार्टी कितने दिन टिक
सकेगी ।''

उनके 'दोस्तो' ने चाहे जो सोचा हो, लेकिन चरणसिंह की इज्जत धूल मे मिल
चुकी थी। लौह पुरुष एकदम खोखला निकला। लेकिन अपनी इस भयकर
असफलता पर परदा डालने के लिए उन्होने सारे देश की यात्रा की और जगह
जगह बहादुरी भरे बयान दिये लेकिन बाद मे फँस जाने पर कुछ बयानो से मुकर
गये। बबई की एक पत्रिका से भेंट मे उन्होने बताया आपको यह जानकर हैरानी
होगी कि मैंने और गृह सचिव ने दो महीने से ज्यादा समय पहले जस्टिस शाह से
बात की थी और हमने उनको बता दिया था कि इस तरह (भ्रष्टाचार) के

मामले हम खुद ही देखेंगे।" ससद मे जब उन पर आरोप लगाया गया कि उन्होने शाह आयोग के काम मे दखलदाजी की है तो उन्होने बडे सौम्य लहजे मे कहा कि उन्हे ऐसा एक भी मौका याद नही जब जस्टिस शाह द्वारा कार्यभार ग्रहण किये जाने के बाद उन्होने जस्टिस शाह से भेंट की हो।

चरणसिंह के दोस्त उनकी तसवीर फिर से बनाने मे लगे है। इसके लिए उन्होंने भी उन्ही तरीका का सहारा लिया, जो सजय गाधी अपनी मा की घटती प्रतिष्ठा को वापस लाने के लिए अपनाता था। उन्होने ट्रको मे भर-भर कर उत्तर प्रदेश और हरियाणा से लोगो का लाना शुरू किया, ताकि दुनिया को दिखा सकें कि उनका नेता कितना शक्तिशाली है। चरणसिंह के समर्थन मे पहला प्रदर्शन, जो सजय गाधी के अधकार भरे दिनो की याद दिलाता था 14 नवम्बर को आयोजित किया गया। हजारो की सख्या मे ग्रामीण-जन 'चरणसिंह की जय' के नारे लगाने के लिए राजधानी मे लाये गये। इसके लिए दिन चुना जवाहरलाल नेहरू का जन्म दिन—वे नेहरू की मूर्ति जो तोडना चाहते हैं। प्रदर्शन के पीछे राजनारायण की योजना काम कर रही थी और वह गला फाड फाड कर उन लोगो की निन्दा करने मे जुटे थे, जो "गृह मत्री पर कीचड उछालने मे लगे हैं।" एक 'दोस्त' ने प्रस्ताव पेश किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया—इसमे चरणसिंह के प्रति जनता के पूर्ण समर्थन को व्यक्त किया गया था और 'पूंजीवादी ताकतो तथा नौकरशाही की भर्त्सना की गयी थी, जो उन्हे बदनाम कर रहे है और गृह मन्त्री-पद छोडने के लिए मजबूर कर रहे है।"

दिल्ली-पुलिस ने लगभग 240 ट्रको का चालान किया जो चरणसिंह के समर्थको को दिल्ली के बाहर से लाये थे। बाद मे एक 'नीति सम्बन्धी फैसले के अनुसार' चालान रद्द कर दिये गये। ट्रैफिक पुलिस के एस० पी० का तबादला कर दिया गया।

14 नवम्बर की रैली तो उस बडे तमाशे की रिहर्सल भर थी, जिसने 23 दिसम्बर 1977 को दिल्ली मे हगामा मचा दिया। 23 दिसम्बर को चौधरी चरणसिंह का 76वां जन्म दिन था। इस अवसर पर आयोजित 'किसान रैली' से पूर्व 'दिल्ली चलो' की अपील करते हुए चरणसिंह के एक प्रमुख समर्थक चांदराम ने एलान किया, 'वह (चरणसिंह) किसानो और मजदूरो के मसीहा है। जाति-वाद की जड से उखाडने का साहस केवल उनके ही अदर है। उन्होने सार्वजनिक जीवन को भ्रष्टाचार और गदगी से मुक्त कराने का बोझ अपने कधो पर लिया है। कानून का पालन करने वाली सरकार की फिर से स्थापना करने का श्रेय उनको ही प्राप्त है। वह उन लोगो मे से है जो बडी से बडी हस्ती और बडे से बडे उद्योगपति पर हाथ उठाने का साहस रखते है। जनता पार्टी के बीज भी उन्होने ही डाले—सबसे पहले 1973-74 मे भारतीय क्रांति दल की स्थापना के द्वारा और फिर सभी विरोधी दलो को मिलाकर एक पार्टी का रूप देकर। वह एक साधारण किसान परिवार मे पैदा हुए है और उन्होने गरीबी देखी है—इसलिए वर्षों के प्रशासनिक अनुभवो के धनी हमारे गृह मन्त्री हरिजनो पिछडी जातियो किसानो और मजदूरो का भला नही कर सकते तो और कौन कर सकता है?'

अपने प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए लाये गये लाखो किसानो को सम्बोधित करते हुए इस शक्तिशाली नेता ने एलान किया— अब आप दिल्ली का रास्ता जान गये है।" वह अपने शहर विरोधी विचारो को नही दबा सके। बोले "वे (शहर वाले) मेरे ग्रामीण रूप को कभी नहीं सह सकते उन्हे बर्दाश्त नही

है कि एक किसान का लडका दिल्ली म राज सभाल हुए है ।"

कई साल पहले जब चरणसिंह खाली उत्तर प्रदेश म ही चमकते थे, एक पनी दष्टि वाल पत्रकार न उनके ममूबो को भाँप लिया था—'वह (चरणसिंह) चहलकदमी तो लखनऊ म करते हैं, पर उनकी दूरबीन नयी दिल्ली पर लगी रहती है।"[13]

अब वह दिल्ली पहुँच गये थे और उन्ह शहरी लोगो को अपनी ताकत दिखान का मौका मिल गया था। उन्होने किसानो से कहा, 'आप तब तक गरीबी दूर नही कर सकने, जब तक आपके हाथ म सत्ता न आ जाये और आपकी सरकार न बन जाये।"

उनको महानतम समकालीन भारतीय नेता' और 'लौह पुरुष' कहकर उनकी जय जयकार करने के लिए मत्रियो, मुख्यमत्रियो और जनता पार्टी के नेताओ की भीड जमा थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि रैली मे केवल दो नेताओ की तसवीर लगी थी—महात्मा गाधी की और सरदार पटेल की।

मोरारजी ने यह कहकर कि उनका गदी व्यक्ति-पूजा' म कोई यकीन नही है अपने को इस समारोह से अलग रखा। यह कोई पहला मौका नही था जब मोरारजी ने ऐसा कहा हो। काफी पहले 1966 म जब सी० बी० गुप्ता के प्रश सको और दोस्तो ने लखनऊ म उनका जन्म दिन मनाने के लिए जबदस्त समारोह का आयोजन किया था और 43 लाख रुपये की थैली भेंट की थी, उस समय भी सयोजको के नाम भेजे गये एक सदेश मे मोरारजी ने कहा था कि वह इस समारोह म जरूर भाग लेते पर 'सिद्धातत मैं जन्मदिन समारोहो म भाग नही लेता हूँ।"

चरणसिंह के एक दूसरे सहयोगी जगजीवनराम ने किसान रैली पर टिप्पणी करने से इनकार किया। जब उनसे बार-बार जोर देकर पूछा गया तो उन्होने झल्लाकर कहा, मुझसे बहूदे सवाल मत पूछिय।'

उत्तर प्रदेश के एक हरिजन विधायक ने जब चरणसिंह के पास पत्र लिखकर जन्म दिन मनाने के रिवाज पर एतराज किया तो जवाब म चरणसिंह ने उसे लिख भेजा मैं बडे पमाने पर इस तरह के किसी आयोजन के पक्ष मे नही था लकिन मेरे दोस्तो और कुछ अन्य नौजवानो की राय मुझसे एकदम अलग थी—उनका कहना था कि जन्म दिन समारोहो का आयोजन कोई नयी बात नही है। इसस पहले भी अन्य राजनीतिक व्यक्तियो द्वारा इस तरह के समारोहो का आयोजन होता रहा है। उदाहरण के लिए इस वष 5 अप्रल को लोगो ने श्री जगजीवनराम का जन्म दिन मनाया। मुझे नहीं पता कि उस समय आपने या आपके सलाह कारो ने इस तरह का कोई विरोध पत्र भेजा था या नहीं। यदि जनता बडी सख्या मे मौजूद थी तो मेरे प्रति अपने प्यार के कारण और यह अपने-आप आयी थी।'

इस चाटुकारी का राग अलापने म प्रेस इन्फामेशन ब्यूरो के कुछ अफसर भी पीछे नही रहे—इदिरा गाधी का गुणगान करते-करते उन्ह वर्षों स इस काम का प्रशिक्षण मिल चुका था। किसान रैली जिस दिन हुई उसके आस पास उन्होने चरणसिंह की साइक्लोस्टाइल की हुई 16 पष्ठ लबी प्रशस्ति वितरित की जिसका शीषक था—धमयोद्धा। यह गह मत्री का केवल जीवन-परिचय नही था जिसे जब जी चाहे प्रसारित करने का पूरा-पूरा अधिकार प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो का है। यह एक महान हस्ती के पक्ष म दी गयी दलीलो स भरा दस्तावेज था, जिसम एक जगह कहा गया था श्री चरणसिंह को इसलिए अनेक वाम-पथी दलो के विरोध

का सामना करना पड़ा कि वह उनके पैरों तले की जमीन काटने में लगे थे। इन दलों की खीज समझ में आती है, क्योंकि ये गरीबों के दुःखों से लाभ उठाकर ही फलते-फूलते हैं। इसीलिए कम्युनिस्ट पार्टी उनको अपना सर्वप्रमुख शत्रु मानती है। आज भी कम्युनिस्ट पार्टी उन्हें कुलक कहकर बदनाम करती है जबकि जमींदार उनको अपना ऐसा विरोधी मानते हैं जो उनके साथ कोई रियायत नहीं करेगा। आज श्री चरणसिंह केन्द्र में सत्तारूढ़ हैं—या यूं कहिये कि सत्तारूढ़ त्रिमूर्ति का एक महत्वपूर्ण अंग हैं ।"

अगर प्रधानमंत्री ने गणराज्य दिवस पर दी जाने वाली उपाधियों को खत्म नहीं किया होता तो इस दस्तावेज को लिखने वाले अफसर को कम-से-कम 'पद्मश्री' तो मिल ही जाती।

ढोल पीटने वालों की अगली कतार में उनके एक भूतपूर्व 'पूंजीवादी दुश्मन' के० के० बिड़ला भी थे। बिड़ला के दलाल गृह-मंत्री को अपने अनुकूल बनाने के लिए हर रोज कई-कई घंटे उनकी बैठक में गुजारते थे। बिड़ला के अखबार हिन्दुस्तान टाइम्स ने, जिसने निरंतर संजय गांधी और इन्दिरा गांधी का गुणगान किया था, अगले दिन सवेरे अपने पहले पेज पर 'किसान रैली' की छह कालम की तसवीर छापी और गृह मंत्री की तारीफ के पुल बांधते हुए दो-दो खबरें छापीं—एक में उसे संतोष नहीं हुआ था। लेकिन चरणसिंह को मनाना लोहे के चने चबाना जैसा है।

चरणसिंह की यह धारणा रही है, जिसका वह बार-बार उल्लेख करते हैं, कि 'यू० पी० पर जिसका नियंत्रण है, समूचे भारत पर उसी का नियंत्रण होगा।' वह जब दिल्ली आ गये, पर यू० पी० पर अपना नियंत्रण दूर से ही नाते रिश्तेदारों की मदद से बनाये हुए हैं। उत्तर प्रदेश की एक प्रचलित कहावत है कि जिसने राज्य के चीनी-उद्योग पर कब्जा कर लिया वही उत्तर प्रदेश की राजसत्ता पर कब्जा कर सकता है।

गृह मंत्री के दामाद के लिए, जो शादी से पहले एक मामूली क्लर्क था, एक विशेष पद तैयार किया गया और उसे डिप्टी-केन-कमिश्नर बना दिया गया। केन-कमिश्नर कहने के लिए बड़ा बना रहा। खुशी की बात यह है कि गन्ना और उद्योग मंत्री हैं चन्द्रावती जो चरणसिंह की रिश्तेदार हैं और एक बार राज्य विधान-परिषद की सीट के लिए रो पड़ी थीं। मजे की बात यह है कि गन्ना और उद्योग उपमंत्री के पद पर भी एक वफादार जाट है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति तो है डिप्टी केन-कमिश्नर, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह चीनी उद्योगपतियों की वकालत करने वालों तथा मंत्रिमंडल के दरमियान बिचौलिया है।

गृह मंत्री के ज्येष्ठ दामाद को जो जनता पार्टी का एक विधायक भी है, वेयर-हाउसिंग कॉरपोरेशन का अध्यक्ष बनाया गया है। इस पद के लिए काफी मोटी तनख्वाह मिलती है तथा वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हैं जो कोई भी केबिनेट स्तर का मंत्री पाता है।

डिप्टी केन कमिश्नर की पत्नी सरोज वर्मा चरणसिंह की प्रिय पुत्री हैं। उनकी अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ हैं। उन्हें राज्य कल्याण परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया लेकिन उन्हें अचानक लगा कि उनको तो उपाध्यक्ष होना चाहिए। बोर्ड के पास लगभग 2 करोड़ का बजट होता है और उपाध्यक्ष

राज्य-भर म काफी लोगो को सरक्षण देने की हैसियत मे होता है। इस युवती के कहने भर की देर थी कि इस उपाध्यक्ष बना दिया जाता। रास्ते म एक बहुत बड़ी अड़चन आ गयी—कमला बहुगुणा, जनता पार्टी की ससद सदस्या और हेमवतीनदन बहुगुणा की पत्नी। वह केंद्रीय कल्याण बोर्ड की ओर स मनोनीत थी। राज्य बोर्ड की पहली बैठक म, जिसम उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष का चुनाव होना था, भाग लेने के लिए वह आ गयी।

सरोज वर्मा का नाम प्रस्तावित होने पर कमला बहुगुणा ने एतराज़ किया और कहा कि सरोज वर्मा इस महत्वपूर्ण पद के लिए एकदम अनुभवहीन और कम-उम्र है। कमला बहुगुणा ने इस पद के लिए एक भूतपूर्व विधायिका कमला गोयदी का नाम रखा जो कस्तूरबा ट्रस्ट स काफी दिन से सम्बद्ध है और राज्य म काफी जानी मानी है इमरजेंसी के दौरान जेल भी गयी थी।

इस प्रस्ताव पर बोर्ड क सदस्यो म बडी खलबली मच गयी काफी हगामा हो गया। अतत दो या तीन सदस्य कमला बहुगुणा के प्रस्ताव के पक्ष म हो गय। बौखलायी हुई सरोज वर्मा खुद ही अपने लिए दलील देने खडी हुइ, 'उपाध्यक्ष बनने के लिए मैं पूरी तरह योग्य हूँ। देखती हूँ कि मुझे कौन रोकता है?" वह गुस्से स लाल-पीली हो रही थी और बौखलाहट म मेज़ पर हाथ पटक रही थी। 'ऐसा कोई काम नही है जिसे मैं नही कर सकती," वह युवती चीखते हुए बोली और साथ म उसके समर्थको ने भी शोरगुल किया। 'उपाध्यक्ष पद के अलावा और किसी पद को मैं नही स्वीकार करूँगी ।"

आखिरकार बड़ कमन से वह कोषाध्यक्ष बनने के लिए राजी हो गयी, लेकिन गुस्से स कहती रही कि आज नही तो कल जरूर उपाध्यक्ष बनूगी।

एक घटे की इस गर्मागर्म झड़प म एक सदस्य अपने साथी से कहता हुआ सुना गया— 'यह नया सजयवाद है।'

टिप्पणियाँ

1 धमयुग म प्रकाशित चरणसिह की भेट वार्ता, 8 मई 1977
2 नेशनल हेराल्ड लखनऊ 8 अक्तूबर 1977
3 सुब्रतकुमार मित्रा का एक अप्रकाशित निबध।
4 लिंक 9 अप्रल 1967
5 पाल आर० ब्रास फक्शनल पालिटिक्स इन ऐन इडियन स्टेट, पृ० 139
6 वही पृ० 141
7 चरणसिह एग्रेरियन रिवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश
8 रामगोपाल एम० एल० सी० की लेखक से बातचीत।
9 पेट्रियट 5 अगस्त 1970
10 द स्टेटसमन 18 अगस्त 1970
11 नेशनल हेराल्ड लखनऊ म आर० के० गग का कथन, 12 अगस्त 1970
12 सनडे अक्तूबर 1977
13 फ्रैंक मोरेस इडियन एक्सप्रेस, 28 सितम्बर 1970

4

जगजीवनराम—एक बम का गोला जो समय आने पर ही फटता है

इमरजेंसी के दौरान कोई केंद्रीय मंत्री इतना डरा हुआ नही था जितना जगजीवन-राम। देश मे फैली अफवाहों मे एक यह भी थी कि जगजीवनराम को नजरबंद कर लिया गया है। वैसे तो यह अफवाह गलत थी। वह बराबर मंत्री बने रहे और अपना सारा काम काज बदस्तूर करते रहे। कभी-कभार वह जलसो मे भी चले जाते थे। लेकिन हर समय वह बेहद डरे डरे रहते थे—अपनी परछाईं से भी उन्हे डर लगता था।

कोई उनसे मिलने आता तो वह सजग हो जाते। अधिकतर आगंतुको को कोई न कोई बहाना करके लौटा दिया जाता था। फिर भी कुछ लोग थे जिनसे मुलाकात टालना मुश्किल होता था। इमरजेंसी के शुरू के दिनो मे उनके सूबे के एक पुराने राजनीतिक साथी मिलने आये। दोनो ने काफी अर्से तक दुख सुख के दिन एक साथ काटे थे। उनसे मिलने से वह बच नही सकते थे। जब वह उनके कमरे मे पहुँचे तो इन्दिरा गाधी व इमरजेंसी के बारे मे खरी-खरी सुनाने लगे और बोले—'तुम यह सब कैसे बर्दाश्त कर लेते हो?' जगजीवनराम के काटो तो खून नही। कापते शरीर के सोफे से उठे और सहमी निगाहो से इधर उधर दरवाजे के बाहर झाकते हुए देखने लगे। सारा बदन पसीने मे सराबोर। उन्होने कहा 'आओ, बाहर लान म चलें।'' बाहर जाकर अपने मित्र से बोले— ऐसी बातें वहाँ नही कहनी चाहिए थी। मकान के एक एक-कोने मे जासूसी उपकरण लगे है, देवीजी ने घर मे भी जासूस लगा रखे हैं।''

इमरजेंसी लगने के बाद जगजीवनराम ने सबसे पहला काम यह किया कि अपनी चमचमाती हीरे की अँगूठियाँ निकालकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दी। उन्होंने अपनी पत्नी की हीरे की नाक की लौंग भी निकालकर कही भिजवा दी। अपने कमरे की पूरी तरह तलाशी लेकर हर ऐसे सामान को हटा दिया जिस पर कोई एतराज कर सके। लेकिन इस तरह की एहतियात तो उन दिनो वह सभी

राजनीतिज्ञ बरत रहे थे जिनसे देवीजी खुश नही थी। जगजीवनराम को जिस भय ने जकड रखा था वह बेशकीमती हीरे-जवाहरात और ज़ेवरो का नही था।

फिर डर किस बात का था? वह कौन सी चीज थी जिससे उनके होश फाख्ता हो रहे थे? जो लोग उनको काफी नज़दीक से जानते थे, उ हे यह देखकर हैरानी हुई कि सजय गाधी तक की झिडकी को वह चुपचाप पी गये। उ होने इमरजेंसी लगाये जाने के विरोध म इस्तीफा नही दिया लेकिन इस्तीफा तो उनके कई अ य साथियो ने भी नही दिया था हालाकि वे इ दरा गाधी और उनके लडके की चाल-ढाल के उतने ही आलोचक थे जितने कि जगजीवनराम। सवाल यह उठता है कि आखिर जगजीवनराम से ही क्यो इमरजेंसी से सबधित बिल पार्लियामेंट म पेश कराया गया? अगर इमरजेंसी उनकी अतरात्मा के खिलाफ थी तो क्यो नही वह बिल पेश करने से इकार कर सके? यह आम धारणा है कि जगजीवनराम को ब्लैकमेल किया गया और देवीजी के हाथ इनकी ऐसी कमजोर नस लग गयी थी कि वह झुकने पर मजबूर हो गये। किसी को यह नही पता कि वह कमजोर नस कौन सी थी।

जगजीवनराम के बारे म मशहूर है कि वह केंद्रीय सरकार के सबसे अच्छे प्रशासको म है। लेकिन उनकी राजनीतिक और न व्यक्तिगत तसवीर ही इतनी अच्छी नही है कि किसी को उनसे रश्क हो। वह बहुत लबे अर्से से मत्री है और इस दौरान कई बार किसी-न किसी घोटाले म उनका नाम लिया गया है। लेकिन वह एक ही घाघ है और बडे होशियार रहते है कि कही कोई बेवकूफी न हो जाय कोई अता पता न रह जाये। और फिर राजनीतिज्ञो के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप तो आजकल आये दिन लगाये जाते रहते है। दो चार आरोप लग न लगें इससे क्या फर्क पडता है। ज्यादा स-ज्यादा मत्रिमडल स निकाल दिये जाते कोई जाँच आयोग बैठा दिया जाता। क्या होता? इससे राजनीति का कोई मँजा खिलाडी और फिर इतना पुराना ऐसे नही डरता जैसे कि वह डरे हुए थे। उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे मे भी उनके इकलौते लडके ने जितनी बातें उडा रखी है उनसे ज्यादा कोई और क्या कहेगा? कुछ वर्ष पहले सुरेशराम अपने पिता के खिलाफ ऐसे व्यक्तिगत आरोप लगाते घूमते थे, जिन पर विश्वास नही होता था। कई बार उ होने जवाहरलाल नेहरू मोरारजी देसाई तथा अपने पिता के अ य सहयोगी मत्रियो से जाकर शिकायते की। उन आरोपो से भी गन्दे आरोप अब कोई क्या लगायेगा? इसके अलावा दस साल तक इनकम टैक्स न जमा करने का आरोप उन पर पहले ही लग चुका था और उसका वह जुर्माना भी भर चुके थे। इन सारी मुसीबतो को वह खुशी खुशी झेल चुके थे। ज़ाहिर है कि कोई इनसे भी गभीर भय था जो जगजीवनराम को खाये जा रहा था।

इसका ताल्लुक शायद अमेरिकी पत्रो म बागला देश युद्ध के दौरान निक्सन किसजर मडली के कारनामो के सबध म छपी खबरो स हो सकता है। कुछ अमेरिकी पत्रकार हर तरह की काली करतूतो का पर्दाफाश करने म लगे रहते हैं और वे भारत के प्रति निक्सन किसजर मडली की दो मुही नीति को भी बेनकाब कर रहे थे। इसी सिलसिले म जैक एडसन व अ य पत्रकारो ने भारत सरकार के अदर 'रेंगते कीडो' पर भी प्रकाश डाला।

जैक एडसन ने लिखा— सच्चाई यह है कि भारत सरकार म हर स्तर पर सी० आई० ए० की घुसपैठ हो चुकी है और इन 'स्वतत्र स्रोतो' ने सेना की गति

विधिया, हथियारो, रणनीति और यहाँ तक कि प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी की गुप्त बातचीत से सबधित खबरो को बडे नियमित ढग से वाशिगटन पहुँचा दिया है।''[1]

सी० आई० ए० के लोग सरकारी अफसरो को घूस देकर पेशेवर ढग से तरह तरह की सूचनाएँ एकत्र कर रहे थे। इन लोगो ने खबर देने वाले अपने कुछ स्रोतो को 'पुराने और विश्वसनीय स्रोत'' बताया था।

8 दिसबर 1971 को जब सकट चरम सीमा पर था, सी० आई० ए० ने ''श्रीमती गाधी के निकट स्रोतो'' के हवाले से कुछ खबरें पता लगायी। यकीन के साथ कानाफूसी होने लगी थी कि भारत शायद पश्चिमी पाकिस्तान पर बडे पैमाने पर हमला करे।

सी० आई० ए० की एक रिपोट मे कहा गया था कि एक सूत्र के अनुसार जिसकी पहुँच इन्दिरा गाधी के कार्यालय की गतिविधियो तक है, जसे ही पूर्वी पाकिस्तान मे स्थिति 'ठिकाने लग जायेगी' भारतीय सेना पश्चिमी पाकिस्तान पर जबदस्त हमला बाल दगी।'' इस रिपोट मे आगे कहा गया था—'भारत सरकार को आशा है कि दिसबर 1971 के अत तक लडाई समाप्त हो जायेगी।''

एडमन ने भारतीय मत्रिमडल म सी० आई० ए० के सूत्रो'' के बारे मे भी धुधला सकेत दिया था। कभी-कभी सी० आई० ए० अपनी रिपोर्टो मे 'उच्च भारतीय अधिकारियो'' का हवाला देता था, लेकिन यह सभी जानते हैं कि अमेरिकी बोलचाल की शैली म मत्रियो तक को 'उच्च अधिकारी' कहा जाता है। सी० आई० ए० कुशल आधुनिकतम इलेक्ट्रानिक उपकरणो के साथ-साथ घूस के पुराने तरीके'' का भी इस्तेमाल करता था और कभी-कभी तो वे वाशिगटन स्थित अपने मुख्यालय को जो सूचनाएँ भेजते थे उनमे वही बातें होती थी जो अमेरिकी पत्रकारो द्वारा अपने अखबारो को भेजी गयी खबरो म होती थी। उनम से कुछ खास खबरें भी होती थीं जिनके बारे मे लगता था कि ये किसी उच्च भारतीय सूत्र से मिली हैं।

सी० आई० ए० की एक रिपोट मे कहा गया था— हम इस तरह की कई खबरें मिलती रही हैं कि भारत आज केवल पूर्वी बगाल को ही मुक्त कराना नही चाहता बल्कि वह कश्मीर की अपनी सीमा-समस्या भी सुलझा लेना चाहता है और पश्चिमी पाकिस्तान की वायु सेना तथा बख्तरबद सेना को भी तहस-नहस कर देना चाहता है। इस काम को पूरा करने के लिए वह पूर्व मे अपना नियत्रण कायम होते ही अपनी सेना के चार से पाँच डिवीजनो को पश्चिम मे भेज देगा इन सेनाओ को भेजने का प्रारभिक काम शुरू भी हो गया है ।''

एडमन ने लिखा कि 13 दिसबर को ''उच्च भारतीय अधिकारियो ने सातवे बेडे से सबधित अपनी आशकाओ के बारे म सोवियत राजदूत पेगोव से बातचीत की। उन्होने कहा कि घबराने की कोई बात नही है। भारतीयो के साथ रूसियो की गुप्त बातचीत का पूरा ब्योरा सी० आई० ए० को मिल गया है।''

जगजीवनराम शायद इसे मानने को तयार न हो पर अतिम दिनो तक उन्हे सबसे बडा डर यही था कि इन्दिरा गाधी उन पर यह आरोप लगाने मे भी नही हिचकिचायेंगी कि बागला देश वाले युद्ध के कठिन दिनो म रक्षा-मत्री के पद पर काम करते हुए जगजीवनराम सी० आई० ए० के सबसे बडे सूत्र थे। यह अविश्वसनीय है कि जगजीवनराम जैसे देशभक्त का इस तरह की बातो से कोई सरोकार होगा। पर वह खुद जानते थे कि अगर एक बार देवीजी ने उन पर हाथ उठाना तय कर लिया तो कोई उनको रोक नही सकता। अगर ऐसा हुआ तो उन्हे और

की तरह केवल जेल मे ही नही डाला जायेगा, वह उन पर 'देशद्रोह' का मुकदमा भी चला सकती है। शायद यह मुकदमा भी गुप्त रूप स चलाया जाये और फिर उनका सफाया कर दिया जाये।

अमेरिकी पत्रकारो द्वारा अदरूनी बातें प्रकाशित कर देन के बाद इं[दिरा] गाधी के जासूस सी० आई० ए० के सभावित सूत्रो का पता लगान म व्यस्त हो ग[ये] थे। उन्होने अनेक व्यक्तियो के खिलाफ ढेर सारे 'परिस्थितिगत प्रमाण' एकत्र कर लिय थे—और ये इतने ज्यादा थे कि वह जिसको चाहती फंसा सकती थी।

जितने दिन बागला देश का सकट चलता रहा विदेशी सवाददाताओ की राजधानी म भीड लगी रही। जाहिर है कि प्रधानमत्री के बाद उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण सूत्र रक्षा मत्री ही थे। वे रोजाना जगजीवनराम के चारो तरफ मडराते रहते थे। उस भीड म यह बताना मुश्किल था कि कौन क्या है और हर आदमी के काम का तरीका क्या है?

जगजीवनराम को यदि किसी काम म सचमुच मजा आता है तो वह है समाचार साधनो को प्रभावित करना। वह अपनी बात कहना पसद करते है और वाहवाही लूटकर खुश होते है। इस काम म वह इन्दिरा गाधी जैसे ही है। हालांकि वह नपी-तुली बात कहने के लिए मशहूर है, फिर भी व्यक्तिगत बातचीत म खास तौर से ऐसे समय जब उन्हे किसी को प्रभावित करना हो वह बात बढ़ाकर भी कह लेते है। हमारे नेताओ को गोरी चमडी के लोगो को प्रभावित करके बेहद खुशी मिलती है। जब भी जगजीवनराम कोई तेज़ तर्रार टिप्पणी करते है तो वह चारो तरफ देखते है कि कोई उन्हे दाद दे रहा है या नही। उनकी बात कितनी असरदार साबित हो रही है—इसका वह बराबर खयाल रखते है।

लेकिन इमरजेंसी के दिनो म उनका सारा जोश और उनकी सारी हाजिर जवाबी गायब हो चुकी थी। हमेशा वह किसी अज्ञात भय से परेशान दिखायी देते थे। वह बहुत कुशल वक्ता रहे है और खास तौर से हिन्दी मे दिये गये उनके भाषणो का तो कोई जवाब ही नही है। पर इमरजेंसी के दिनो के उनके भाष[णो] म उनका खास अदाज नदारद था। इन भाषणो म न तो कोई व्यग्य होता था पुराना ओज और न कल्पना की उडान ही मिलती थी। मरा मरा सा चेहरा और मरा मरा सा भाषण। पार्लियामेट म उन्होने 20 सूत्री कार्यक्रम के समर्थन म जो कुछ कहा उसमे आत्मविश्वास की तनिक भी झलक नही मिलती थी। इंदिरा गाधी के बारे म दिये गये उनके भाषणो म भी खोखलापन ही नज़र आता था। लगता था कि वह जो कुछ कह रहे है उसके पीछे किसी का आदेश काम कर रहा है और जिन लोगो को उनके व्यक्तिगत विचारो का थोडा आभास था वह आसानी से समझ सकते थे कि अब वह अपनी मर्जी के मालिक नही रह गये थे।

मार्टिन वुलकाट ने 2 फरवरी 1977 को गार्डियन म लिखा था कि 'भारत म जनतत्र एक धमाके के साथ वापस आ गया है।' लेकिन जगजीवनराम को तो मानो फांसी घर से वापसी हुई हो। लेकिन इनकी आशकाओ का यह अत नही था। अतिम क्षण तक उन्होने सतर्कता बरती थी कि किसी को पता न चले वह क्या सोच रहे है।

1 फरवरी 1977 को तीसरे पहर वह इन्दिरा गाधी से मिलने गये। उन्होने [थो]ड़ा ही समय मांगा था। वह ठीक 4 बजकर 45 मिनट पर पहुंचे थे और इन्दिरा [ग]ाधी के शब्दो म वह तो अपनी कार से निकल कर आने म और फिर वापस

ये नये हुक्मरान !

वार तक जाने में उनको ठीक ठीक 5 मिनट लगे।" बैठते ही उन्होंने इंदिरा गांधी से कहा था— यदि आप इमरजेंसी हटा लें तो इससे आपकी प्रतिष्ठा बढ़ जायेगी।"

इंदिरा गांधी ने जवाब दिया "इस विषय पर गृह मंत्रालय ने विचार किया है और इमरजेंसी के कई नियमों में ढील दी जा चुकी है। पूरी तरह इमरजेंसी हटाने का अभी समय नहीं आया है।"

इस पर जगजीवनराम ने कहा "आप अपने सामान्य अधिकारों से ही हर तरह की स्थिति का सामना करने में समर्थ हैं।"

इंदिरा गांधी का जवाब था, "मैं इस विषय में गृह मंत्री से बात करूँगी।"

बस, बात खत्म हो गयी। अगले क्षण जगजीवनराम जा चुके थे। उन्होंने इंदिरा गांधी को यह एहसास नहीं होने दिया कि इस मामले पर वह 'बड़ी शिद्दत से सोच रहे हैं।"

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि इंदिरा से मिलने के लिए समय मांगने से पहले ही जगजीवनराम ने मन ही मन फैसला कर लिया था। पाँच मिनट की इस दौड़ धूप का मकसद यही था कि देवीजी को किसी तरह का शक न हो। वह उन्हें एक भी मौका नहीं देना चाहते थे।

घर लौटने पर उन्होंने अपने साथियों—हेमवतीनंदन बहुगुणा, नंदिनी सतपथी तथा अन्य लोगों के प्रति बड़ा उदासीन रवैया अपनाया। इनसे राजनीति पर कुछ बातचीत करने की बजाय बस यही कहा "मैं बहुत थक गया हूँ— अब आराम करूँगा।"

उनके मित्र इस विचित्र व्यवहार से क्षुब्ध होकर चले गये। उनको ऐसा लगा कि कहीं उन्होंने देवीजी से कोई साँठ-गाँठ न कर ली हो।

अगले दिन एकदम सवेरे उनके राजनीतिक साथियों और दिल्ली स्थित प्रेस-संवाददाताओं के टेलीफोनों की घंटियाँ बजने लगीं। उन्हें कृष्ण मेनन मार्ग पर बुलाया गया था। जगजीवनराम ने यह एहतियात बरतना चाहा था कि अपने मित्रों और पत्रकारों की मौजूदगी में इस्तीफा देने राष्ट्रपति भवन के लिए रवाना हों, ताकि अंतिम क्षण में अगर कुछ गड़बड़ हो भी तो सबको जानकारी रहे।

बाद में उन्होंने दोस्तों को पिछली शाम के अपने व्यवहार के बारे में सफाई दी— "मुझे पूरा विश्वास था कि आप लोग सारी बातें अपने तक ही रखते पर कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। दीवारों तक के कान होते हैं। कोई खतरा मोल लेने से अच्छा यही था कि आप लोगों को अँधेरे में रखा जाये।"

कई महीने पहले से ही छिपे तौर पर दाव-पेंच शुरू हो गये थे। जगजीवनराम की तरह सोचने वाले बहुगुणा और नंदिनी सतपथी जैसे लोग इंदिरा गांधी की हरकतों से और खास तौर से सत्ता की ओर बढ़ रहे उनके लड़के की गतिविधियों से काफी चिंतित थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि अब कुछ करने का समय आ गया है। अन्य लोग भी जगजीवनराम से मिलने जुलने लगे थे। उन्होंने हमेशा सहानुभूतिपूर्ण रवैया तो अपनाया पर किसी से कोई निश्चित बात नहीं की। "यह जनता का काम है कि वह देखे और समझे कि क्या हो रहा है। आपको जो ठीक लगे आप वह करिये।" इससे ज्यादा वह शायद ही कभी कहते थे।

गोहाटी कांग्रेस अधिवेशन होने तक बात काफी आगे बढ़ चुकी थी। इंदिरा गांधी ने संजय को एक तरह से अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। कम्युनिस्टों पर उनका प्रहार तेज हो गया था। सभी विरोधी बेचैन थे लेकिन

उनमे इतना साहस नही था कि कोई प्रत्यक्ष कदम उठा सकें।

लोक सभा के चुनाव की घोषणा हुई तो ऐसा लगा, मानो बाढ ने बाँध तोड दिया हो। काग्रेस के संसद सदस्य रामधन, जिन्हे चन्द्रशेखर के साथ ही गिरफ्तार किया गया था व पार्टी से निकाला गया था, जेल से छूटकर आये। वह जगजीवन राम के बहुत नजदीक थे, और वह बाहर आते ही जगजीवनराम व विरोधी दल के उन नेताओ के बीच, जिन्होने बाद मे जनता पार्टी के उदय की घोषणा की, एक सक्रिय कडी बन गये।

गौहाटी काग्रेस अधिवेशन के दिनो मे ही जगजीवनराम से पश्चिम बगाल के उनके कुछ साथियो के जरिये सम्पर्क कायम कर लिया गया था। आमतौर से उनके पुत्र सुरेशराम के जरिये ही सम्पर्क होता था। सुरेशराम बिहार मे विधायक थे और राजनीति मे भी कुछ दखल रखते थे। उडीसा मे नदिनी सतपथी के निकाले जाने के बाद गुप्त दाव-पेंचो का सिलसिला और तेज हो गया था। सबसे ज्यादा सक्रिय थे हेमवतीनन्दन बहुगुणा, जिन्हे उत्तर प्रदेश मे मुख्यमत्री पद से अलग होने के लिए मजबूर किया गया था। इन लोगो ने विभिन्न राज्यो मे अपनी विचारधारा से मेल खाने वाले काग्रेस-जनो की तलाश शुरू कर दी थी।

लोक सभा के चुनाव की घोषणा के बाद काग्रेस पार्टी के अदर जो तूफान उठ खडा हुआ उससे काफी मदद मिली। हर राज्य मे काग्रेसियो मे जबरदस्त मतभेद थे और हर जगह लडते हुए बच्चो की तरह उन्होने अपने भाग्य दिल्ली मे बैठी उदार मा की मर्जी पर छोड दिये थे। लेकिन वह उदार मा' सब कुछ अपने प्रिय पुत्र को देना चाहती थी, जिसने योजना बनायी थी कि लोक-सभा मे कम से कम दो सौ सीटो पर कब्जा किया जाये ताकि निर्विवाद रूप से दिल्ली की गद्दी उसे मिल सके।

बहुगुणा, सतपथी तथा अन्य लोगो ने महसूस किया कि देवीजी से बदला लेने का शायद यह आखिरी मौका है। उन्होने विभिन्न राज्यो मे काग्रेस वालो को हर तरह से समझाया कि वार करने का समय यही है। अभी हमला नही किया तो कभी नही होगा। तय हुआ कि 23 जनवरी को कुछ किया जाय। लेकिन तारीख आयी और चली गयी और कुछ भी नही हुआ। कुछ लोग डर गये।

कुछ विरोधी नेता भी जगजीवनराम की ओर मुखातिब हुए। बहुगुणा पहले से ही उन्हे तैयार करने मे लगे थे। बीजू पटनायक सोशलिस्ट-नेता सुरेन्द्रमोहन, रामधन, चन्द्रशेखर तथा कई अन्य नेता जगजीवनराम से अनुरोध करने लगे कि वह उनका नेतृत्व करें।

चालाक और सतर्क जगजीवनराम यह आश्वासन पाना चाहते थे कि उन्हे किस तरह का समर्थन मिलेगा। उनके पास जो भी आता था उससे वह यही सवाल करते थे— "मुझे कौन समर्थन देगा ?" बीजू पटनायक, रामधन और चन्द्रशेखर ने जनता पार्टी की ओर से उन्हे आश्वासन दिया। उन्होने जन सघ के नेता नानाजी देशमुख से भी इसी तरह का आश्वासन प्राप्त कर लिया। नदिनी सतपथी और के० आर० गणेश दौड दौडे अजय भवन गये और लौटकर बताया कि कम्युनिस्ट भी आपका समर्थन करेंगे। लेकिन वह फिर भी विचार के लिए समय चाहते थे। वह जल्दबाजी मे किसी तरह का फैसला नही करना चाहते थे।

उन्हे खबर मिली कि बिहार तथा अन्य राज्यो मे तकरीबन उनके सभी आदमियो को टिकट देने से इकार किया जा रहा है। खुद अपने बारे मे भी उन्हे पक्का यकीन नही था कि टिकट मिलेगा या नही। 24 जनवरी 1977 को सुबह

जाशी जगजीवनराम से मिलने गयी। वह इंदिरा गाधी की बहुत पुरानी सहयोगी थी, लेकिन अब उनसे सम्बन्ध खराब हो चुके थे। सुभद्रा जोशी ने जगजीवनराम से अनुरोध किया कि अब उन्हे कुछ करना चाहिए। "लेकिन क्या किया जा सकता है?" जगजीवनराम ने सवाल किया और इंदिरा गाधी पर सामूहिक दबाव डालने की सभावनाओ के बारे में दोनो लोग बात करने लगे। जगजीवनराम ने कोई निश्चित बात नही की।

इस 'टाइम-बम' के विस्फोट के लिए 2 फरवरी 1977 का दिन निश्चित किया गया। विस्फोट ता हुआ, लेकिन जगजीवनराम, बहुगुणा तथा अन्य लोगो की घनघोर तैयारी के बावजूद प्रधानमत्री-पद हाथ से निकल गया।

जगजीवनराम ने अपने राजनीतिक मित्रो से एक दिन कहा था, "इस कम्बख्त मुल्क म चमार कभी प्राइम मिनिस्टर नही हो सकता है।"

बात 1974 की है, जब उत्तर प्रदेश म चुनाव चल रहे थे और काग्रेस को विरोधी दलो की जबदस्त चुनौती का सामना करना पड रहा था। कुछ काग्रेसियो का यह कहना था कि इंदिरा गाधी नही चाहती कि जगजीवनराम उत्तर प्रदेश म चुनाव प्रचार के लिए जायें। लेकिन जिन लोगो ने राज्य का दौरा किया था, वे कहते थे कि जगजीवनराम के जाने से काग्रेस को काफी वोट मिलेंगे खास तौर से हरिजनो का भारी समथन प्राप्त होगा। सुभद्रा जोशी और उनके सहयोगी डी० आर० गोयल ने जगजीवनराम से भेंट की और चुनाव प्रचार के लिए उत्तर प्रदेश जाने का उनसे अनुरोध किया।

जगजीवनराम ने चिढकर जवाब दिया, "कोई नही चाहता कि मैं वहाँ जाऊँ।" यह पूछने की जरूरत नही थी कि 'कोई नही' से उनका क्या मतलब है। उनके और इंदिरा गाधी के बीच भीतर-ही भीतर जो तनाव चल रहा था वह किसी से छिपा नही था।

फिर भी जब सुभद्रा जोशी और गोयल चुनाव प्रचार के लिए उत्तर प्रदेश गये तो उन्होने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी से विधिवत माँग की कि कुछ दिन के लिए जगजीवनराम को भेजा जाये। इंदिरा गाधी को थोडी खीझ ता हुई लेकिन वह इकार नही कर सकी, और जगजीवनराम चुनाव प्रचार के लिए उत्तर प्रदेश गये।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाका की यात्रा के दौरान वह एक रात गोडा के डाक बँगले म रुके। सुभद्रा जाशी ने जो काफी दिन से इंदिरा गाधी और जगजीवनराम के मतभेद दूर कराने म लगी थी, सोचा कि बातचीत करने का अच्छा मौका है। वह गायल के साथ उनस मिलने गयी तो इस विषय पर बात करते हुए उन्होने जगजीवनराम व इंदिरा गाधी के बीच पैदा तनाव पर चिंता व्यक्त की।

जगजीवनराम ने कहा "कौन कहता है कि कोई तनाव है। केवल इंदिराजी ही यह महसूस करती है कि हमारे बीच तनाव है। मेरी बात तो बहुत साफ है। सरकार म जो व्यक्ति भी है उसे प्रधानमत्री बनने की आकाक्षा रखने का अधिकार है।" फिर उनका असताप फूट पडा और वह बोले, "इस कम्बख्त मुल्क मे चमार कभी ।"

जगजीवनराम जिंदगी म कहा से कहाँ पहुँच गय हैं! बिहार के एक गाँव की अँधेरी चमारटोली से चलकर केन्द्रीय नेताओ की पहली कतार मे पहुँचने म उन्होने उल्लेखनीय यात्रा पूरी की है और इस यात्रा के लिए उन्ह धैर्य, सकल्प, प्रतिभा

और सबसे अधिक दूसरो के सहारे व किस्मत की जरूरत थी—और ये सभी उनके पास प्रचुर मात्रा मे थे। वह केन्द्र म अपने समकालीनो म सबसे अधिक दिन से है, लेकिन उनका लक्ष्य और ऊँचा उठना है।

बीस वष स भी अधिक समय से प्रधानमत्री की कुर्सी पर उनकी नजर लगी हुई है। जब कभी जवाहरलाल नेहरू अपना पद छोडने की बात करते, जगजीवन राम के दिल म उम्मीद की एक नयी लहर दौड जाती। एक महान प्रधानमत्री बनने के लिए अपनी योग्यता पर जितना विश्वास जगजीवनराम को है उतना किसी दूसरे नेता को नही है। नेहरू ने 1954 मे, 1958 म या जब कभी अवकाश ग्रहण करने की बात उठायी तो उनका मकसद था पार्टी और सरकार पर अपना नियत्रण और भी मजबूत करना। ऐसे मौका पर जगजीवनराम अपनी अदम्य महत्त्वाकाक्षा छुपा न सके, जिससे नेहरू-परिवार मे और खास तौर से नेहरू की बेटी के अदर जगजीवनराम के बारे म सदेह मजबूत होते गये। एक बार जब जवाहरलाल नेहरू मोरारजी देसाई को काग्रेस ससदीय दल का उप नेता बनने स रोकने के लिए चिंतित थे उन्होने जगजीवनराम को दावेदार के रूप मे खडा कर दिया। नेहरू को उम्मीद थी कि उनका नाम आने पर देसाई खुद ही बैठ जायगे। लेकिन जब देसाई ने चुनाव लडने का फैसला कर लिया तो नेहरू ने भट से चाल बदल दी और देसाई तथा जगजीवनराम दोना से उप-नेता बनने का मुअवसर छीन लिया। जगजीवनराम ने इस पर उतना ही असतोष व्यक्त किया जितना देसाई ने, और नेहरू को यह समझने म तनिक भी दिक्कत नही हुई कि जगजीवन राम देसाई से कम महत्त्वाकाक्षी नहीं है। कामराज-योजना के अतगत दानो ही मत्रिमडल से बाहर निकाल दिये गये—यह नेहरू की तरफ से इन्दिरा के रास्ते म आने वाली रुकावटो को हटाने के लिए पहली सजीदा कोशिश थी।

लेकिन बदली हुई परिस्थितियो के अनुरूप अपने को ढालने म और हवा के रुख के साथ बहन म जगजीवनराम जितने निपुण है उतना शायद ही दूसरा कोइ राजनीतिज्ञ हो। इन्दिरा गाधी की तरह वह भी सिद्धातो और विचारधाराओं के चक्कर म ज्यादा नही पडते। लालबहादुर शास्त्री की मत्यु के बाद एक बार ता जगजीवनराम खुद भी प्रधानमत्री पद के उम्मीदवार हो गये थे, लेकिन जब उन्हाने देखा कि उनकी दाल नही गलने वाली है तो वे देसाई के खेमे म शामिल हो गये। लेकिन उन्होने तुरत ही भाँप लिया कि उनसे गलती हो गयी। जब उन्होने देखा कि हवा का रुख इन्दिरा गाधी के पक्ष म है और उन्ह पक्का यकीन हो गया कि इन्दिरा गाधी प्रधानमत्री बनने जा रही है तो वह भी इन्दिरा के खेमे म शामिल हो गये।

1967 के आम चुनावो के बाद एक खबर फली कि जगजीवनराम अपने पचास समर्थको के साथ काग्रेस से अलग हो जायेगे। साथ ही यह भी अफवाह थी कि विरोधी दलो ने उन्ह प्रधानमत्री बनाने को कहा है। लेकिन जगजीवनराम ने ताड लिया कि यह बहुत खतरनाक कदम होगा और कहीं मत्री की कुर्सी से भी हाथ न धोने पडें। इन्दिरा गाधी के साथ बने रहने पर कम से कम कुर्सी तो सुरक्षित है। वह विरोधी दला को झाँसा द गये।

जब एक सवाददाता ने उनसे सीधा सवाल किया कि क्या वे काग्रेस से अलग होने जा रहे है तो उनका जवाब था 'मैं क्या काग्रेस छोडूगा? मुझे काग्रेस म ही अपना भविष्य बेहतर नजर आ रहा है।"

1969 मे जगजीवनराम इन्दिरा के जबदस्त समथक बन गये और सिडीकेट

काग्रेस के दिग्गज नताओ पर करारे वार करन मे वह सबसे आगे थे। जगजीवन-राम और फखरुद्दीन अली अहमद इन्दिरा गाधी के उस रथ के दो सारथी थे, जिस पर बैठकर वह मल्का ए हिन्दुस्तान बनने चली थी। 1969 के उत्तेजनात्मक दिनो मे जगजीवनराम और फखरुद्दीन अली अहमद का जगी नारा था—"हमारी काग्रेस ही सच्ची काग्रेस है और केवल हम ही सच्चे काग्रेसी हैं।" कई दिन तक वे लगातार तत्कालीन काग्रेस-अध्यक्ष एस० निजलिगप्पा पर पत्रो से प्रहार करते रहे और लोग उन्हे 'इन्दिरा के मजबूत स्तम्भ' के रूप मे जानने लगे।

जगजीवनराम को ही इस बात का श्रेय है कि उन्होने 'अतरात्मा की आवाज के अनुसार वोट" देने का आह्वान किया जिसस अतत पार्टी का विभाजन हो गया।

उन नाजुक दिनो मे भी, जब जगजीवनराम इन्दिरा गाधी की तरफ से लड रहे थे, इन्दिरा गाधी के मन मे अपने इस नये समथक के इरादा के बारे म सदह बना रहा। हरिजनो का समथन बनाये रखते हुए जगजीवनराम को अपने रास्ते से हटाने के लिए इन्दिरा गाधी ने राष्ट्रपति-पद के लिए उनका नाम रखा, लेकिन काग्रेस ससदीय दल ने दो के मुकाबले चारमतो से उसे नामजूर कर दिया। जगजीवनराम के खिलाफ वोट देने वालो मे मोरारजी देसाई भी थे। उन्होन इन्दिरा गाधी से कहा कि यदि इतने ऊँचे पद के लिए किसी हरिजन का चयन करना हो तो हमारे सामने केवल दो नाम हैं—जगजीवनराम और डी० सजीवैया। लेकिन देसाई ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इनकम टैक्स और वेल्थ टैक्स को लेकर जो घपले हुए है उनकी वजह से वह जगजीवनराम का समथन नही कर सकते। देश का राष्ट्रपति एक ऐसा व्यक्ति बने जिसने दस साल तक इनकमटक्स ही नही दिया हो तो लोग क्या कहेगे! देसाई न लिखा है, मेरी यह स्पष्ट राय थी कि उन्हे (जगजीवनराम को) मत्रिमडल म भी नही रहने देना चाहिए और मैंन उस समय प्रधानमत्री से बातचीत के दौरान इसका सकेत भी द दिया था।"

जब इन्दिरा गाधी का प्रस्ताव विफल हो गया तो उन्हाने चिढकर अपने सह-योगियो से कह दिया, "आपको इसके नतीजे भुगतन होग।'

काग्रेस के टुकडे होने के बाद जगजीवनराम नयी काग्रेस के अध्यक्ष बनाये गय और दिसम्बर 1969 मे बबई अधिवेशन मे इन्दिरा गाधी के समथन म उन्होने जोरदार भाषण दिया "मुझे तनिक भी सदेह नहीं कि जब यह सारा विवाद शात हो जायेगा तो वतमान और भावी पीढी प्रधानमत्री को स्वस्थ जनतात्रिक परपराओ के प्रवतक के रूप मे याद करेगी ।"

कुछ ही दिन मे जगजीवनराम को पता चलने लगा कि मामला क्या है। इन्दिरा गाधी अपने अलावा किसी और के पास कोई ताकत नही रहन देना चाहती थी। जगजीवनराम भी काग्रेस के अध्यक्ष होकर किसी के ताबेदार बने रहना नही चाहते थे। धीरे धीरे अपने शक्तिशाली सचिव पी० एन० हक्सर की मदद से देवीजी दिनोदिन मजबूत होती चली गयी। इसमे उनका अपने नये साथियो अर्थात कम्युनिस्टो और कम्युनिस्टो के सहयात्रियो द्वारा लगाय गये प्रगतिशील नारो से काफी मदद मिली। उनके इद गिद जमा हो गये उग्रवादी तत्व लगातार इस कोशिश मे थे कि तथाकथित समाजवादी ताकतो के साथ काग्रेस का गहरा तादात्म्य स्थापित हो जाये। लेकिन जगजीवनराम पार्टी के अदर अपनी ताकत मजबूत बनाने म लगे थे और वामपथी गुटो के साथ प्रोग्राम पर आधारित समझौता करने या चुनाव के लिए गठजोड करने के रास्ते मे अडगा साबित हो

रहे थे। वामपथियो की ओर से इदिरा गाधी पर दबाव डाला जा रहा था कि वह स्वय काग्रेस की अध्यक्षता ले लें। खुद वह भी चाहती थी कि जगजीवनराम को उनकी औकात बता दें और वह अपने सिपहसालार ललितनारायण मिश्र को उनके कार्य-क्षेत्र बिहार में ही उनकी स्थिति कमजोर करने के लिए इस्तेमाल कर रही थी।

उन्होंने तथाकथित युवा तुर्कों के एक सदस्य मोहन धारिया को भी जगजीवनराम के खिलाफ इस्तेमाल किया। मोहन धारिया ने माग की कि जब तक जगजीवनराम काग्रेस अध्यक्ष पद पर काम कर रहे हैं, उन्हें तब तक के लिए मन्त्रिमडल से इस्तीफा दे देना चाहिए। मोहन धारिया ने जगजीवनराम और काग्रेस कार्य-समिति के सदस्यो को पत्र लिखकर कहा कि "आज की ऐतिहासिक आवश्यकता यह है कि काग्रेस-अध्यक्ष व अन्य काग्रेस पदाधिकारी पार्टी के काम के प्रति पूरी तरह निष्ठावान हो और इसमें पूरा समय लगाये।" यह साबित करने के लिए कि एक ही व्यक्ति को काग्रेस अध्यक्ष और मन्त्रिमडल का सदस्य नही रहना चाहिए उन्होंने कुछ बुनियादी तर्क पेश किये। उनकी दलील थी कि "ऐसा अध्यक्ष जो केन्द्रीय मन्त्रिमडल में मातहत की स्थिति में हो अपनी भूमिका कारगर ढग से नही निभा सकेगा।" काग्रेस ससदीय दल की खास तौर से बुलायी बैठक में भी धारिया ने जगजीवनराम के खिलाफ दो पदो पर बने रहने के लिए अपना हमला जारी रखा। कई सदस्यो ने धारिया के इस आचरण पर नापसदगी जाहिर की। पर इदिरा गाधी ने अपनी कोई राय नही दी, जिससे साफ पता चल गया कि धारिया उनकी इजाजत से बोल रहे हैं।

लेकिन जगजीवनराम किसी भी पद से हटने को तैयार नही थे। वह धीरे धीरे एक हमलावर रवैया अख्तियार कर रहे थे हालाकि यह सीधे-सीधे इदिरा गाधी पर वार नही कर रहे थे। उन्होंने एक बयान दिया कि काग्रेस को 'मध्य मार्ग' अपनाना चाहिए। इस बयान का यह मतलब लगाया गया कि वह उग्र विचारो के प्रति इदिरा गाधी के बढते हुए झुकाव को नापसद करते हैं।

1971 के लोक सभा चुनावो के समय यह तनाव खुले रूप में आ गया। सी० पी० आई० की बिहार यूनिट ने जगजीवनराम पर आरोप लगाया कि पार्टी व काग्रेस में हुए चुनाव समझौते की उन्होंने अवहेलना की। जगजीवनराम ने पलट कर जवाब दिया कि सी० पी० आई० के साथ उन्होंने कभी कोई समझौता नही किया प्रधानमत्री ने किसी और के जरिये से किया था। एक सवाददाता-सम्मेलन में उन्होंने कहा, 'अध्यक्ष के अलावा काग्रेस में किसी को इस तरह के समझौते करने का अधिकार नही है।' उन्होंने आगे कहा, 'मैं कोई सोता हुआ अध्यक्ष नही हूँ।'

जब उनका ध्यान एक अखबार में छपी इस खबर की ओर दिलाया गया कि चुनावो के बाद काग्रेस ससदीय दल के नेता का विधिवत चुनाव नही होगा तो उन्होंने एक रहस्यमय ढग से जवाब दिया, 'अखबार कुछ भी कह सकते हैं।' इसका व्यापक तौर पर यह अर्थ लगाया गया कि नेतृत्व का मसला अभी बना हुआ है। जिन लोगो ने चुनाव प्रचार के दौरान उनके भाषणो को लगातार सुना था उनको जगजीवनराम के बयानो से कोई आश्चर्य नही होता था।

भोपाल में एक भाषण में जगजीवनराम ने इस पर खेद प्रकट किया था कि भग लोक सभा में अपने विरुद्ध आये अविश्वास प्रस्ताव से अपना बचाव करने के लिए काग्रेस को सी० पी० आई० का सहारा लेना पड़ा था। उन्होंने साफ शब्दो

मे कहा कि वह सी० पी० आई० का सहयोग नही चाहते है।

यह उसका बिलकुल उलटा था जो इन्दिरा गाधी अपने चुनाव भाषणो म कह रही थी।

सी० पी० आई० विरोधी भाषणो ने जगजीवनराम को अचानक अपने पुराने विरोधियो के करीब ला दिया। सगठन काग्रेस के अध्यक्ष निजलिगप्पा ने कहा, "कम्युनिज्म के बारे मे उनकी बातो से मैं सहमत हूँ। मैं इससे भी सहमत हूँ कि वह सोते हुए अध्यक्ष नही हैं।" लखनऊ म चौधरी चरणसिंह ने जो तब भी बी० के० डी० के अध्यक्ष थे, जगजीवनराम को बधाई दी।

राजनीतिक प्रेक्षको से यह छिपा नही रहा कि जगजीवनराम के इन भाषणो का मकसद क्या है। दरअसल वह इन्दिरा गाधी को बता देना चाहते थ कि पार्टी-अध्यक्ष-पद से हटने का उनका कोई इरादा नही है। और वह उनके (इन्दिरा गाधी के) नेतृत्व को चुनौती देंगे।

1971 के लोक सभा-चुनावा से पहले बहुत कम लोगो को आशा थी कि इन्दिरा गाधी की इतनी भारी जीत होगी। यहा तक कि कुछ वरिष्ठ काग्रेसी नेताओ ने भी यही सोचा था कि काग्रेस को बहुमत नही मिल सकेगा और वे चुनाव-बाद की अपनी रणनीति पर विचार विमश करने लगे थे।

चुनाव से कुछ दिन पहले जगजीवनराम के निवास स्थान पर एक गुप्त बैठक हुई। उसमे डी० पी० मिश्रा, काग्रेस के तत्कालीन महामत्री हेमवतीनदन बहुगुणा और उमाशकर दीक्षित ने भाग लिया। उन्होने सी० पी० आई० की मदद से इन्दिरा गाधी द्वारा सरकार बनाने के 'खतरे पर' विचार किया और फैसला किया कि ऐसी हालत मे उन्हे इन्दिरा गाधी को छोडकर सगठन काग्रेस के साथ सरकार बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसलिए जहां तक सभव हो उन लोगो को टिकट दिये जाय जो काग्रेस पार्टी के प्रति निष्ठावान हो न कि इन्दिरा गाधी के प्रति।

उनके सारे अनुमान बेबुनियाद साबित हो गये। इन्दिरा गाधी पहले ही यह कह चुकी थी कि उनके खिलाफ एक और 'महागँठबधन' तैयार हा रहा है। अब अपनी भारी जीत के बाद उन्होने तय कर लिया कि किस किसको निशाना बनाना है।

जगजीवनराम से पार्टी की अध्यक्षता ले ली गयी। इन्दिरा गाधी ने इसके लिए काय समिति की मजूरी लेना भी जरूरी नही समझा। इनकम-टैक्स वाले मामले मे उन पर जुर्माना हो चुका था। यह तो उनकी मेहरबानी थी जो फिर भी उन्हे मन्त्रिमडल मे शामिल कर लिया गया था। इन्दिरा गाधी जगजीवनराम को खूब अच्छी तरह जानती थी और उन्हें पक्का यकीन था कि हर तरह के अपमान के बावजूद वह मन्त्री पद स्वीकार कर लेंगे।

जगजीवनराम के आत्मसम्मान को सबसे ज्यादा चोट आम लोगा के इस विश्वास से लगती है कि हरिजन नेता होने की वजह से ही वह केन्द्रीय मन्त्रिमडल के एक स्थायी सदस्य माने जाने लगे हैं। यह धारणा उनके अन्दर किसी नाजुक रग म कसक पैदा करती रहती है।

बचपन मे जगजीवनराम को बडे अपमान झेलने पडे थे महज इसलिए कि उनका जन्म हरिजन परिवार मे हुआ था। स्कूल मे पानी पीने के लिए एक कोने मे दो घडे रखे रहत थे—एक हिन्दुआ के लिए और दूसरा मुसलमानो के लिए। जब कुछ हिन्दू लडको ने जगजीवनराम को अपने घडे से पानी लेते देखा तो विरोध

किया और हेडमास्टर से शिकायत की। तब से अछूतों के लिए अलग घड़ा रखा जाने लगा। इस अपमान जनक भेदभाव से क्षुब्ध होकर जगजीवनराम ने स्वयं उस घड़े को फोड़ दिया जो उनके लिए रखा गया था और फिर हेडमास्टर से शिकायत की कि हिन्दू लड़कों ने दुश्मनी के कारण उनका घड़ा फोड़ दिया है। नया घड़ा मँगाया गया, पर जगजीवनराम ने इसे भी फोड़ दिया। हेडमास्टर ने समझा कि फिर हिन्दू लड़कों ने बदमाशी की है। इससे नाराज होकर हेडमास्टर ने आदेश दिया कि अब जगजीवनराम हिन्दुओं के लिए रखे घड़े से ही पानी पियेंगे जिनको एतराज़ हो वे अपने लिए अलग इंतज़ाम कर लें। जगजीवनराम की जीत हो गयी पर वह खुश नहीं थे। उन्होंने महसूस किया कि वह अब भी हिन्दू लड़कों के लिए पहले ही की तरह स्वीकार्य नहीं हैं।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उन्होंने अपने प्रति छिपे विद्वेष को और भी गहराई से महसूस किया। अक्सर उन्हें लगता था कि हिन्दू लड़के उन्हें इस तरह देख रहे हैं गोया वह कोई तरस खाने वाली चीज़ हों। वैसे तो कोई उनकी उपेक्षा नहीं करता था फिर भी वह महसूस करते थे कि कोई उन्हें स्वीकार नहीं करता है। होस्टल का वातावरण उन्हें इतना घुटन भरा लगता था कि उन्होंने बाहर रहने का फैसला ले लिया। और फिर एक दिन उस नाई ने जो काफी दिन से उनके बाल बनाता था अचानक यह जानने पर कि वह 'अछूत' हैं उनकी हजामत बनाने से इनकार कर दिया।

आश्चर्य की बात है कि खुद उनके गांव में हरिजनों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता था। गाँव की पाठशाला, जहाँ उन्होंने अक्षर ज्ञान प्राप्त कि था, कपिल मुनि तिवारी नामक एक ब्राह्मण गुरु के बरामदे में लगती थी अं तिवारीजी का व्यवहार हर छात्र के साथ एक जैसा था—चाहे वह ब्राह्मण हो य अछूत। तिवारीजी जगजीवनराम को विशेष रूप से पसन्द करते थे। 1923 में जब भीषण बाढ़ में जगजीवनराम का पुश्तैनी मकान ढह गया तो उनके समूचे परिवार को तिवारीजी ने अपने घर में जगह दी और जब तक मकान दुबारा नहीं बन गया वे लोग वहीं रहे।

जगजीवनराम के पिता अपने एक रिश्तेदार के साथ पेशावर चले गये थे। उन्होंने हिंदी के अलावा टूटी फूटी गोराशाही अंग्रेजी बोलना भी सीख लिया था जिससे 12 साल की उम्र में उनको सैनिक अस्पताल में चपरासी की नौकरी मिल गयी। वह पेशावर व रावलपिण्डी के अस्पतालों में रहे। मुलतान में वह शिवनारायण संत सम्प्रदाय के सम्पर्क में आये और बाद में स्वयं संत बन गये थे।

जगजीवनराम पाँच वर्ष के थे जब उनके पिता की मृत्यु हो गयी। पर उन्हें अपने संत जैसे पिता' की धुंधली याद आज भी है। बाद के जीवन में शोभीराम बेहद धार्मिक व्यक्ति हो गये थे और उनको अपनी शारीरिक सफाई का बड़ा ध्यान रहता था। बिना नहाये और बिना हवन पूजा किये वह खाना नहीं छूते थे और शाम को सन्ध्या करना जरूरी समझते थे। पूजा करने के बाद वह अपना एकतारा लेकर बैठ जाते और तुलसीदास संत शिवनारायण तथा कबीर के भजन गाते रहते।

चाहे अपने अत्यंत धार्मिक पिता का असर रहा हो या कपिल मुनि तिवारी के घर का, जगजीवनराम को जीवन भर 'ब्राह्मण बनने की धुन रही है। आज भी उनका घर पूजा पाठ की सामग्री से वैसा ही भरा रहता है जैसे किसी ब्राह्मण का। सच कहें तो वह ब्राह्मण के घर का बढ़ा चढ़ा रूप लगता है—शायद ब्राह्मण।

से भी अच्छा दिखायी देने की कोशिश की जाती है। जगजीवनराम को उस समय बेहद खुशी होती है जब कोई ब्राह्मण उनके पैर छूता है। उन्हें ऐसा लगता है कि गोया अब उन्हें स्वीकार कर लिया गया। फिर भी उन्हें शांति नहीं मिलती। उनके अंदर कहीं गहराई में एक ग्रंथि बन चुकी है जिसे वह निकाल नहीं पाते।

महात्मा गांधी ने जब अछूतों को हरिजन कहना शुरू किया तो जगजीवनराम ने इसका तीव्र विरोध किया। उन्हें लगा कि इससे खाई पटने की बजाय और चौड़ी होगी और अलगाव बढ़ेगा, उसे बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने सवर्ण हिंदुओं के तथाकथित लोकोपकारवाद की कड़ी आलोचना की, और कहा, "वे हमारे सुधार का नाटक करते हैं ताकि उनके अपने हितों पर कोई आंच न आये।" एक बार जगजीवनराम ने दलित-वर्ग के जोरदार प्रवक्ता डॉक्टर अम्बेडकर की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन दिनों डाक्टर अम्बेडकर राष्ट्रीय आंदोलन के विरोधी थे।

गांधीजी ने डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद को लिखा कि वह जगजीवनराम से स्पष्टीकरण मांगें। राजेन्द्रप्रसाद ने जगजीवनराम से कहा कि उनका सवर्ण हिंदुओं की निंदा करना 'हरिजन' शब्द पर आपत्ति करना और अम्बेडकर की तारीफ करना 'बहुत ही आपत्तिजनक' है। राजेन्द्रप्रसाद ने आगे कहा कि लगता है उन्होंने अपना भाषण बहुत जल्दबाजी में तैयार किया था। जगजीवनराम ने स्वीकार किया कि वह वक्तव्य उन्होंने जल्दबाजी में तैयार किया था और वह सवर्ण हिंदुओं के बारे में की गयी टिप्पणी में सुधार करने के लिए तैयार हैं। पर वह वक्तव्य के बाकी हिस्सों को बदलने के लिए तैयार नहीं थे।

1930 वाले दशक के प्रारंभिक वर्षों में गांधीजी, राजेन्द्रप्रसाद तथा अन्य लोग जगजीवनराम को 'अम्बेडकर का कांग्रेसी जवाब' के रूप में सामने लाये। उस समय यह भावना काफी फैल रही थी कि कांग्रेस मुसलमानों से अलग पड़ती जा रही है और दलित वर्ग के लोग दूसरे खेमों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। कांग्रेस यह दिखाने के लिए बेचैन थी कि वह देश के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें दलित वर्ग, मुसलमान, सिख तथा शेष सभी शामिल हैं। कांग्रेस जगजीवनराम को अपने मंच पर दलित वर्गों के प्रवक्ता के रूप में लाना चाहती थी।

जब कांग्रेस ने जगजीवनराम को आगे बढ़ाने का फैसला किया तो सवाल पैदा हुआ कि उनके भरण पोषण की क्या व्यवस्था हो? बिड़ला हाउस से कहा गया कि वह जगजीवनराम को एक मासिक भत्ता दे। तब से आज तक जगजीवनराम कभी भी बिड़ला-परिवार के प्रति 'बेवफा' नहीं साबित हुए।

लेकिन जिस क्षण से उन्हें इस काम के लिए चुना गया और सहारा दिया गया, उनके अंदर की आग बुझने लगी। सत्ता और सम्पत्ति उनके पास बहुत आसानी से आ गयी। वह जल्दी ही सत्ता की चकाचौंध में डूब गये। इसका शिकंजा उन पर और उनके परिवार पर ऐसा कसा कि वह कभी इससे अपने को मुक्त नहीं कर सके यहां तक कि उस समय भी वे उसकी पकड़ में जकड़े रहे जब वह सत्ता से बाहर थे केवल उसकी चकाचौंध बाकी थी।

1946 में केन्द्र की अंतरिम सरकार में मंत्री बनने के बाद वह अपने परिवार को लाने पटना गये। उनकी पत्नी इन्द्राणी देवी उन दिनों के उत्साह का वर्णन इस प्रकार करती हैं— उन्होंने (जगजीवनराम ने) मुझे बताया कि दिल्ली का बंगला बहुत बड़ा है। उसमें एक बड़ा सा लॉन है। मैंने पूछा—क्या बख्शी साहब के मकान जैसा बड़ा लॉन है? उन्होंने जवाब दिया—नहीं, उससे भी बड़ा लान है।

मैं हैरान थी कि इतना बडा मकान और इतना बडा लॉन हम लोग क्या करेंगे। लेकिन मन ही मन मैं बहुत खुश थी आखिरकार चलने का समय भी आ गया अटेंशन की मुद्रा म पुलिस वाले खडे थे। मुझे देखते हुए बडा अजीब सा लग रहा था उ्हान सैल्यूट लिया स्टेशन पर भी चारो तरफ पुलिस तैनात थी। लोगो की भीड जमा थी और वे समझ नही पा रहे थे कि इतनी पुलिस क्यो तनात है। लोग आपस म फुसफुसा रहे थे कि पुलिस के लोग मेरे पति को गाड आफ आनर देने आये हैं। फूल मालाओ से लदे हुए हम लोग डिब्बे म अ दर पहुचे। मुझे बताया गया कि इसे सैलून कहते हैं। यह मिनिस्टरो के सफर करने के लिए बनाया गया था। इसम दो-तीन सोने के कमरे एक ड्राइग रूम, गुसलखाना और रसोईघर भी था जिसम हमारा खाना बन रहा था। अचानक मुझ याद आया कि कुछ दिन पहले मैंने यात्रियो से ठसाठस भर थड क्लास के डिब्बे म रात भर गठरी बनी बैठे रहकर कानपुर से पटना तक का सफर किया था। मेरी गोद म सुरेश (उनका पुत्र) था, जो बीमार था और मुझे पैर फैलाने की भी जगह नही मिल पा रही थी। और आज सारा नक्शा ही बदला हुआ है। मैं हैरान थी—ईश्वर की भी माया कितनी अपरपार है ।"

उस दिन के बाद से आज तक उ होने कभी पीछे मुडकर नही देखा। व अछूतो के हितो के लिए लडने वाल योद्धा' थे लेकिन अस्पृश्यता एक ऐसा अभिशाप था जिसे व काफी पीछे छोड आये थे। जगजीवनराम सामाजिक अ्याय के विरुद्ध भाषण देकर अपना काम चला लेते हैं। कभी-कभी वे हरिजनो पर हो रहे निरतर अत्याचारो तथा अपमानो के विरुद्ध ज़ोरदार शब्दा म विरोध भी प्रकट कर दते है। लकिन ख द उनके अदर सवर्णों की सारी रूढियाँ मौजूद हैं। चदवा गाँव की चमारटोली के एक बूढे नागरिक ने ठीक ही कहा है कि वह 'अछूतो क बीच एक ब्राह्मण है।

जगजीवनराम का गाँव देख तो आँखें खुली रह जाती है। जजर झोपडो और टूटे फूटे मकानो वाली इस ठेठ हरिजन-बस्ती के बीच उनकी कोठी खडी है—यह समाज के दलित लोगो को दिये गये उनके महान नेतत्व का प्रतीक है। लगता है, इसे नयी दिल्ली के गोल्फ लिक्स या महारानी बाग जसे किसी समद्ध इलाक स उठाकर यहाँ ला खडा किया गया है। इस कोठी के अदर एक बार पहुँच जान पर बाहर की दुनिया से नाता टूट जाता है यह खबर नही रहती कि बाहर क्या हो रहा है बाहर के रेंगते कीडो का डर नही रहता। खिडकियो से बाहर देखने पर ही—जिसकी आम तौर स कोई ज़रूरत नही होती—यह पता चलता है कि दुनिया कितनी अजीब है। बारह कमरो के इस बँगले के चारो ओर है चमारो की अधरी दुनिया उन चमारो की जि ह गाधी ने 'हरिजन नाम दिया था और जो अभी भी धरती के अभागो की कोटि म हैं।

इस कोठी का निर्माण भी गाँव के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी। समय समय पर अपन औज़ारो और उपकरणो के साथ भवन निर्माताओ के दल पहुचत रहे। सर्वेक्षको भवन विशेषज्ञो कारीगरो बढईया और इलैक्ट्रिशियनो की भीड लगी रहती थी। इनम स अधिकांश लोग दूर 'राजधानी' से आते थे। इन लोगा ने उसी स्थान पर एक आधुनिक भवन का निर्माण किया, जहाँ किसी जमाने म जगजीवनराम का मिट्टी का मकान था। इस इमारत के बाहर सगमरमर की एक शिला लगायी गयी जिस पर लिखा है

गुरु सत पति
सत शोभी राम
माँ बसती देवी
स्मृति सदन

9 मार्च, 1976
चंदवा, आरा

इस महान नेता के एक गरीब पडोसी ने बताया, 'बाबूजी जब आते है तो यहा मेला लग जाता है। लोग इस गली मे लाइन म लग रहते है और उनसे मिलने के लिए अपनी बारी का इतजार करते है।" यह बात गाव के लोग इस तरह बतात हैं जसे वह मकान कोई मदिर हो, जिसका देवता कभी कभी कृपापूर्वक उन लोगो को अपने दशन देने आ जाता हो। और जब वह मौका आता है तो समूचा गाव दशन के लिए उमड पडता है।

आरा कस्बे से थोडी दूर बसे चंदवा गाव के गरीब लोगो को जगजीवनराम की सफलता पर कोई नाराजगी नही है—या कम से-कम वे किसी तरह की नाराजगी प्रकट नही करते। वे आपस बतायगे कि अपने बीच इतने महान नेता को देखकर उन्हे कितना गव होता है।

गाँव की एक बूढी हरिजन महिला ने बताया, जिस दिन जगजीवन बाबू राजा नहीं बन सके, गाँव म किसी घर म चिराग नही जला।' उस महिला का मतलब उस दिन अर्थात 24 मार्च 1977 से था जिस दिन वह प्रधानमंत्री का पद नही पा सके थे। बूढी महिला ने यह भी बताया कि 'कई घरो म उस दिन खाना भी नही पका।"

जगजीवनराम का गुणगान वे करते तो है और उन पर उन्हे गव भी है, लेकिन कभी-कभी उनके व्यथित मन की चीत्कार भी सुनायी दे जाती है।

'हम गरीब कैसे रहते हैं, इसकी किसे फिक्र है बाबू! जब बाढ आती है तो हम एक चना भी नसीब नहीं होता।"

यह बात कही गाँव के बीच की कीचड भरी गली के किनारे बैठे एक बूढे चमार ने।

उससे पूछा गया कि उसकी टूटी झोपडी के बराबर बने इस महल के बारे म उसकी क्या राय है।

उसने कोई जवाब नही दिया। लेकिन दुमजिली इमारत के शानदार बरामदे की ओर वह जिस तरह देख रहा था और उसके बाद उसने जिस मुद्रा म अपनी थकी माँदी आखो को फेर लिया था उसके बाद उसे कुछ कहने की जरूरत ही नही रही। उसकी निगाह कह रही थी कि यह गरीबो का अपमान है।'

चंदवा या बेलची या देश के किसी भी हिस्से म जो कुछ हो रहा है वह राजनीति की दुनिया के लिए एकदम बेमानी है। राजनीति की दुनिया के लिए इस बात का भी कोई अर्थ नही है कि किसी नेता का पुत्र अपने पिता के विरुद्ध कैसे अवर्णनीय आरोप लगाता घूमता है। इसका भी कोई अर्थ नही है कि एक नेता अपनी बुद्धि के जोर से बिना किसी तरह का सुराग छोडे घिनौने ढग से धनवान बनता जाता है।

राजनीति म बहुत दिन तक सफलतापूर्वक बने रहने के लिए जरूरी है—

थोडी-सी मुलायमियत पाखण्ड रचने की क्षमता और दोमुही बातें करने की सलाहियत तथा परोपकार का मुखौटा पहने रहना।

यदि इदिरा गाधी के पास एक सजय था, बसीलाल के पास एक सुरेद्रसिंह और मोरारजी देसाई के पास एक कातिलाल, तो जगजीवनराम के पास भी एक मुरेशराम है। पिता क अदर कुछ ऐसी ग्रथियाँ बनी हुई हैं जिन्ह वह कई दशको तक आराम-तलबी से भरी जिंदगी विताने के बाद भी नही दूर कर सके, पर बटे क कधो पर अतीत का ऐसा कोई बोझ नही है। बेशक यह नही कहा जा सकता कि सुरेशराम सोने के पालने म पैदा हुए थे लेकिन उन्ह जल्दी ही वह मिल गया। वर्षो तक वह जगली हिरन की तरह जिधर सीग समाये घूमते रहे, और उन्ह अपने घर की गदी कहानियो को प्रसारित करने म कोई सकोच नही हुआ। एक समय ऐसा भी आया जब सुरेशराम अपने पिता के लिए एक सडे हुए घाव की तरह हो गये थे।

राजनीति की माया से प्रभावित होने से काफी पहले उन्हे पैस की माया ने जकड लिया था। अपनी पजाबी पत्नी के साथ मिलकर बिहार म एक आटो मोबाइल एजसी और महाराष्ट्र म एक बेनामी एजेंसी उनको व्यस्त भी रखती थी और अच्छा खासा मुनाफा भी देती थी। जगजीवनराम के मकान म सुरशराम क माल और सालियो की बडी इज्जत है। कहा जाता है कि जिन दिनो निजी तौर पर ग्तरप्रदेशीय व्यापार पर प्रतिबध था उनक साले को अनाज का अतर्राज्यीय व्यापार करने का लाइसेंस मिला हुआ था। हो सकता है कि यह एक इत्तफाक ही हा कि उस समय जगजीवनराम कृषि मत्री थे।

सुरेशराम ने जब राजनीति के मैदान मे आने का फैसला किया तो बिहार विधान-सभा की एक सीट पाने म उन्ह कोई समस्या नही हुई। हा कुछ लोगो ने नाक-भौं सिकोडी और कुछ न टिप्पणिया की, लेकिन ये बातें बहुत नगण्य हैं। सुरेश की प्रतिभा के फलने फूलने के लिए बिहार सही स्थान नही था। वह जरूरत स ज्यादा छोटी जगह है और वहाँ काम धीरे धीरे होता है।

जनता सरकार के गठन के कुछ महीने बाद जब एक सवाददाता सुरशराम से मिलने गया तो उसने दखा कि वह मुख्य मत्रियो और मत्रियो से घिरे हुए है। व सब किसी-न किसी रूप म उनकी कृपा चाहते थे लकिन सुरेशराम ने उस सवाददाता को बताया कि उनका अब राजनीति स कोई सरोकार नही है सिवाय इस बात क कि वह उस मकान म रह रहे है।

'यह मत भूलिय कि जगजीवनराम बहुत चालाक राजनीतिज्ञ हैं।' यह टिप्पणी एक पुराने काग्रेसी नेता ने की, जो उन्ह तब से लगातार देख रहा है जब 1946 म 38 वष की उम्र म वह अतरिम सरकार के केद्रीय मत्रिमडल म लिय गय थ। "मत्रिमडल म सबसे कम उम्र के मत्री यही थे। उस समय उनकी एक मात्र ताकत यह थी कि वे हरिजनो के नेता थे। लेकिन धीरे धीरे उन्होने अपना सिक्का जमा लिया। अब वह किसी भी रूप म हरिजन नही हैं। यह बात और है कि उनके द्वारा छुयी गयी मूर्ति को आज भी कोई बेवकूफ गगा-जल स धोने की गलती कर बैठता है।"

केद्रीय मत्रिमडल म उनके वर्षो के जीवन म जगजीवनराम क पास एस मत्रालय रहे है जिनम निचोडने को काफी रस रहता है। मसलन—रेल रक्षा, कृषि तथा कई अय। आपको नही पता कि ये मत्रालय सोने की खान है। रेल मत्रालय म नोट क रद्दी सामान की नीलामी होती है। देश के विभिन्न हिस्सो म

इनके ढेर लगे होते है, लेकिन नीलामी एक ही स्थान पर होती है, और तीन करोड तक कभी-कभी चार करोड तक की बोली लगती है। यदि ठेकेदार इसम से 25 लाख रुपया दे भी दे ता भी उस सौ फीसदी मुनाफा हो सकता है। ठेकेदार भी खुश और लेने वाला भी खुश। यह तो एक बहुत छोटा उदाहरण है। कृषि-मत्रालय को ही देखिये। यहाँ हर साल लाखो टन अनाज का आयात होता है। देश क विभिन्न हिस्सो म इस अनाज को पहुँचाने क लिए ठेका दकर कई लाख रुपये पाये जा सकत है। रक्षा मत्रालय मे यदि केवल छोटी मोटी चीजो पर ही ध्यान दें, तो बडी सभावनाएँ नज़र आती है। यह मत्रालय पाच लाख रुपये की तो हल्दी ही एक बार मे खरीद लेता है। अब इसम अगर डेढ लाख आपने ल भी लिया ता ठेकेदार को कोई नुकसान नही है।"

उस बूढे आदमी ने बताया, "जगजीवनराम बहुत व्यावहारिक राजनीतिज्ञ हैं। 1971 के चुनाव मे कुछ राजपूतो ने उन्हे हराने का फैसला कर लिया। बताया जाता है कि जगजीवनराम ने लाखो रुपय खच करके सैकडो गुडे इकटठे किये और उनको जीपा म भर कर भेज दिया। इन गुडा न राजपूता की गर्मी शात कर दी।"

जगजीवनराम बहुत चालाक और घाघ राजनीतिज्ञ है। सबसे बडी बात यह है कि वह जानत है कि विस्फोट करने का सही समय कौन-सा है।

टिप्पणियाँ

1 जैक एडर्सन, एडर्सन पेपस।
2 मोरारजी देसाई द स्टोरी आफ माइ लाइफ।

5

हेमवतीनंदन बहुगुणा—एक बदमाश जिस पर प्यार आता है

सी० बी० गुप्ता कहत ह— बहुगुणा के नाम से उसकी असलियत मालूम हो जाती है। गुप्ता खुद ही तिकड़मो म माहिर है, लेकिन बहुगुणा उनस भी एक कदम आगे हैं। बहुगुणा बहुत दिन तक उनके लिए सिर का दद बने हुए थे। सी० बी० गुप्ता को 1974 के चुनाव म जमानत जब्त होन पर, और वह भी लखनऊ शहर म जिसे वह अपनी व्यक्तिगत जागीर समझते थे, अपनी जिंदगी म सबसे बडा सदमा पहुँचा। उन्ह पक्का यकीन है कि बहुगुणा ने जरूर कोई न कोई हरकत की थी।

1977 के लोक सभा के चुनाव क दौरान बहुगुणा गुप्ता स मिलने गये। राजनीति के चक्कर ने दोनो को एक मुकाम पर लाकर खडा कर दिया था और अब वे इन्दिरा गाधी के खिलाफ एक-साथ लडाई लड रहे थे। बहुगुणा से मिलत ही उन्होने कहा, 'बहुगुणा अब तो साफ-साफ बता दो कि 1974 म क्या किया था ?'

बात तो मजाक के लहजे म कही गयी थी, लेकिन बहुगुणा झेप गये।

"अरे बोलो नटवरलाल अब तो बोलो क्या किया था ?" गुप्ता ने कहा। वह बहुगुणा को राजनीति का नटवरलाल कहते थे। नटवरलाल ऐसा धोखेबाज था कि सालो पुलिस को चकमा देता रहा।

'छोडिये बाबूजी इन बातो को।' बहुगुणा ने कहा और विषय बदल दिया।

1977 म जब मतदान का काम पूरा हो गया और मतपेटियो को सुरक्षित स्थान पर रखा जाने लगा तो बहुगुणा ने इस बात की विशेष रूप स एहतियात बरती कि उस कमरे के रोशनदान अच्छी तरह से बद हो। यह देखकर सी० बी० गुप्ता ने चुटकी ली 'अब मैं समझा कि मेरी जमानत किधर से जब्त हुई थी।'

बहुगुणा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एक उद्दण्ड छात्र-नेता के रूप म अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। कुछ वष मजदूर सभाओ का नेतत्व किया और फिर गुप्ता जैसे तिकडमी राजनीतिज्ञो की भीड के बीच राजनीति क

मैदान मे अपने लिए जगह बनाते रहे। इसी सिलसिले मे उन्होने गुप्ता की कला म भी महारत हासिल कर ली।

बहुगुणा निडर और दुस्साहसी राजनीतिज्ञ हैं। वह यह मानकर चलते है कि बिना खतरा उठाये फायदा नही हो सकता। चुनौतिया स्वीकार करना उन्हे अच्छा लगता है। जब उन्हे उत्तर प्रदेश का मुख्यमत्री बनाकर भेजा गया तो 1974 के विधान-सभा-चुनाव के लिए महज तीन महीने बाकी थे। यह चुनाव बहुत निर्णायक साबित होने वाला था। उन्होने इन्दिरा गाधी से वायदा किया कि वह काग्रेस का जरूर जितायेंगे। उत्तर प्रदेश मे काग्रेस विरोधी माहौल था और हेमवतीनदन बहुगुणा को छोडकर किसी को भी वह उम्मीद नही थी कि काग्रेस फिर सत्तारूढ होगी।

बहुगुणा लखनऊ पहुँचे तो उनका ऐसा स्वागत हुआ, मानो बहुत बडे नेता हो। उन्होंने विरोधी पार्टियो के साथ युद्ध का सचालन करने के लिए स्टेट गेस्ट हाउस को अपना मुख्यालय बनाया। उनके साथ उनके दो व्यक्तिगत सहयोगी थे, जिनम मे "एक नौकर और दूसरा जोकर जैसा दिखायी देता था।'

बहुगुणा ने एक हैलीकाप्टर लेकर खुद ही समूचे राज्य का दौरा किया और हर तरह की कठिन स्थितियो मे रहने की क्षमता का परिचय दिया। हर रोज वह दूर-दूर तक के इलाको मे जाते थे और दजनो सभाओ म भाषण देते थे। वह एक बहुत अच्छे वक्ता साबित हुए और दोस्ता का वश मे करन तथा दूसरा को प्रभावित करने के लिए डेल कार्नेगी के बताये नुस्खे उन्होने पूरी तरह पचा लिये थे। अपन राजनीतिक जीवन के शुरू के दिनो से ही वह नेहरू की नकल करने लग थे। नेहरू की तरह ही वह बच्चा पर अपनी फूल मालाएँ फेंक देते और गरीबो के कधो पर हाथ रखकर फोटो खिचवाते। बहुगुणा जहाँ कही भी जाते थे वहा के डिप्टी-कमिश्नरो और पुलिस सुपरिंटेंडेंटा को गले से लगा लेते और तरह-तरह से प्यार जताकर उनकी व्यक्तिगत वफादारी हासिल कर लेते थे। अपनी चतुराई, शासन-कला और पैसे के जोर का इस्तेमाल करके उन्होने विधान सभा की 425 सीटो मे से 213 सीटो पर काग्रेस को सफलता दिला दी, अन्य तीन सीटें लाठी-चाज और वोटो की बार-बार गिनती कराके हासिल कर लीं, और बाद मे दलबदलुओं की कृपा से सख्या और बढा ली।

बहुगुणा को कुछ लोग मशहूर जादूगर गोगिया पाशा के नाम से पुकारते है और कुछ कहत हैं कि वह "ऐसा बदमाश है जिस पर प्यार आता है।" यहाँ तक कि मुख्यमत्री पद स हटने के बाद भी वह जब कभी विधान सभा मे आते तो लोगो को उनकी मौजूदगी का एहसास हो जाता। वह हाथ हिलाते हुए हर रोज प्रेस-गैलरी की तरफ से आते। सफेद बुर्राक, चूडीदार पायजामा और कुर्ता पहने, सर पर तिरछी टोपी लगाये जिसमे से जान-बूझकर दो-चार बाल बाहर निकले रहते थे, वह कुछ लोगा को तबलची जैसे लगते और कुछ लोग उनकी तुलना फिल्मी हीरो से करते। मुसकराते हुए वह सरकारी बैंचो की तरफ बढते तो विधायक उनकी तरफ दौड पडत। उनके कुछ शागिर्द पैर छूने के लिए झुकते, लेकिन वह उन्हें बीच से ही उठाकर सीने से चिपटा लेते और पीठ थपथपाने लगते। कुछ मिनट वहाँ रहकर वह तो गवनर के आने वाले रास्ते से बाहर चले जाते, लेकिन वहाँ सारे दिन उनकी ही चर्चा होती रहती।

उनके राजनीतिक दुश्मन भी यह मानत थे कि बहुगुणा ने मुख्यमत्री-पद को एक नयी गरिमा दी। अपने काम के दौरान वह एक मशीन की तरह सक्रिय रहते,

गलती करने वाले अफसरो और राजनीतिज्ञो को डाँटते तथा अपनी मर्जी के मुताबिक काम करने वालो की पीठ थपथपाते हुए वह अपना प्रशासन मजबूती से चलात थे।

बहुगुणा नफासत पसद आदमी है। हैलीकॉप्टर का इस्तेमाल वह ऐसे ही करत थे जैसे आम आदमी साइकिल का। एक बार उनकी पत्नी पूर्वी यूरोप के देशो की यात्रा से वापस लौट रही थी। रात मे दो बजे जब उनका जहाज पालम पर उतरा तो उन्ह देखकर बडी खुशी हुई और हैरानी भी कि उनके पति ने सरकारी हैलीकाप्टर के साथ अपने लडके विजय को उन्हे तुरत लखनऊ ले जाने के लिए भज दिया है। उनके स्वागत के लिए उत्तर प्रदेश के रजिडेंट कमिश्नर तथा अन्य उच्च अधिकारी भी मौजूद थ।

बहुगुणा अब इतने महत्वपूण हो चुके थ कि इन्दिरा गाधी की आंखे खटकने लगे।

इन्दिरा गाधी न जब बहुगुणा स मुख्यमत्री बनकर उत्तर प्रदेश जाने के लिए कहा तो वह बोल 'मुझे यू० पी० मत भेजिये। वह बहुत बडा राज्य है। अगर मैं सफल रहा तो अपन से बहुत बडा नजर आने लगूंगा और अगर असफल रहा तो जरूरत स ज्यादा छोटा दिखायी दूंगा।'

दरअसल इन्दिरा गाधी ने बहुगुणा को बडे बेमन स मुख्यमत्री बनाया था। दोनो लोगो के बीच कटुता के बीज काफी पहल ही पड चुके थे। शुरुआत सजय गाधी के कुख्यात 'जीप स्कैंडिल' स हुई थी। यह 1971 के लोक-सभा चुनाव के कुछ महीन पहले की बात है। सजय गाधी ने उन दिनो राजनीति म दिलचस्पी लना शुरू कर दिया था और चुनाव प्रचार के लिए बहुत-सी नयी जीपो को जुटा लिया था। ये सारी जीप धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के योग सस्थान के अहात म खडी रहती थी। एक प्रेस-फोटोग्राफर ने इन जीपो का फोटो लेना चाहा तो सजय गाधी ने उसे थप्पड मार दिया और दिल्ली के एक अखबार ने विस्तार से खबर छाप दी। बहुगुणा उन दिनो अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के महासचिव थ। उन्होने सजय गाधी को सुझाया कि यह कह द कि ये जीपे काग्रेस पार्टी की हैं तो किसी पचडे म नही पड़ना पडेगा। लकिन शाहजादे को लगा कि बहुगुणा उसके काम म दखल दे रहे है। उसन उनसे कह दिया कि आपसे कोई मतलब नही आप अपना काम दखिये।

जब बहुगुणा सचार राज्य मत्री हुए तो उन्होने मत्रालय म तबादलो और नियुक्तियो के लिए एक नयी पद्धति निकाली। इस पद्धति के अतगत काफी अधिकारियो क तबादले हुए। इनम स एक असिस्टेंट इजीनियर भी था जिसकी सजय स बडी घनिष्ठता थी। बहुगुणा से उसका तबादला रद्द करने के लिए कहा गया। उन्हान इन्कार कर दिया और तबादलो की नयी पद्धति समझाने के लिए अपने निजी सचिव को सजय गाधी के पास भेजा। सजय गाधी न इसकी कोई परवाह नही की और फिर तबादला रद्द करने के लिए कहा। जब बहुगुणा न दोबारा इन्कार किया तो सजय आपे स बाहर हो गये।

बहुगुणा न तय किया कि वह खुद जाकर सजय गाधी को सारी बातें समझा द। लकिन सजय गाधी बिगड पडे 'मुझे इससे कोई मतलब नही कि आपने क्या नियम बनाये है। मैं यही जानता हूँ कि यह फसला गलत है और यह तबादला रुकना चाहिए।'

बहुगुणा से बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने कहा, "देखो संजय, अगर मैंने कोई गलती की है तो मैं इस्तीफा दे दूंगा।"

अपनी माँ पर संजय के प्रभाव के बारे में उन दिनों बहुत कम लोगों को मालूम था लेकिन बहुगुणा को यह समझते देर नहीं लगी कि अचानक उनके प्रति इन्दिरा गांधी का रवैया क्या बदल गया है। उत्तर प्रदेश के उनके राजनीतिक दुश्मन चन्द्रजीत यादव, डी० पी० मौर्य तथा अन्य लोगों का इन्दिरा के दरबार में काफी रुतबा था। धीरे धीरे बहुगुणा को कांग्रेस पार्टी की लगभग सभी समितियों से अलग कर दिया गया—यहां तक कि पार्टी की पत्रिका सोशलिस्ट इंडिया की समिति से भी उनका नाम हटा दिया गया जिसके लिए बहुगुणा ने बहुत काम किया था। उनके दुश्मनों ने प्रधानमंत्री के कान भरने शुरू किये कि बहुगुणा इन्दिरा गांधी के खिलाफ हैं और जब कांग्रेस के महासचिव थे उन्होंने इन्दिरा गांधी को हटाने के लिए कांग्रेस-अध्यक्ष जगजीवनराम के साथ मिलकर एक षडयंत्र रचा था।

लेकिन जब इन्दिरा गांधी के सामने उत्तर प्रदेश की बेहद कठिन समस्या आयी तो बहुगुणा के अलावा उन्हें कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखायी दिया जो वहां की हालत सुधार सके। कमलापति त्रिपाठी के 'बहू राज' और पी० ए० सी०-विद्रोह ने उत्तर प्रदेश के प्रशासन को तहस नहस कर दिया था। चुनाव के दिन बहुत नजदीक थे। मुख्यमंत्री-पद के लिए जिन संभावित नामों पर विचार-विमर्श हुआ उनमें बहुगुणा से बहतर कोई नहीं लगा। 1971 के लोक सभा चुनाव में वही कांग्रेस के मुख्य संगठनकर्ता थे और इन्दिरा गांधी को पता था कि चुनाव के दांव-पेंच में बहुगुणा से ज्यादा माहिर दूसरा कोई नहीं है। इन्दिरा गांधी की खूबी है कि जब तक कोई आदमी उनके लिए उपयोगी रहता है वह उसका पूरा इस्तेमाल करती है। इसीलिए उन्होंने बहुगुणा को यू० पी० भेजने का फैसला कर लिया।

"क्या आपको विश्वास है कि मैं इस काम के लिए उपयुक्त हूं?" बहुगुणा ने इन्दिरा गांधी से पूछा।

इन्दिरा गांधी ने जवाब दिया, "यदि मुझे यकीन नहीं होता तो मैं आपको क्यों भेजती?" बहुगुणा ने उन 'आपत्तियों' की तरफ इशारा किया जो उनके प्रति इन्दिरा गांधी के मन में थीं लेकिन इन्दिरा गांधी ने कहा 'पुरानी बातों को भूल जाइये।"

लेकिन कुछ ही दिनों के अंदर इन्दिरा गांधी को अपने फैसले पर खेद होने लगा। लखनऊ में बहुगुणा का जो जबरदस्त स्वागत हुआ था उससे इन्दिरा गांधी को खुशी नहीं हुई। दिल्ली से लखनऊ तक के तीन सौ मील के इस सफर में हर स्टेशन पर हजारों की संख्या में प्रशंसकों की भीड़ के कारण बहुगुणा को रात भर जागते रहना पड़ा था। कई स्टेशनों पर भीड़ की वजह से ट्रेन को देर तक रुकना पड़ा। अगले दिन सवेरे चारबाग स्टेशन पर अदभुत दृश्य देखने को मिला। लोग भारी संख्या में स्वागत के लिए खड़े थे। और दो दिनों बाद जब उन्होंने मुख्यमंत्री का पद संभाला तो लगभग एक लाख लोग उनकी जय जयकार करने के लिए इकट्ठा हुए। उनमें से लगभग आधे राज्य के विभिन्न कोनों से आये थे। एक समाचार पत्र ने अपनी खबरों में लिखा कि कांग्रेसियों ने सैंकड़ा बसें किराये पर ली थीं जिनमें भरकर लगभग पचास हजार प्रदर्शनकारी बहुगुणा के स्वागत के लिए लखनऊ आये।

अगर यही सब इन्दिरा गांधी के लिए किया जाता तो कोई हर्ज नहीं था,

लेकिन उनको यह बर्दाश्त नही था कि किसी और का ऐसे स्वागत किया जाय। और फिर आग पर घी डालने के लिए लोग उनसे कहते कि बहुगुणा की महत्वाकांक्षाएँ बहुत ऊंची है। उन्हें बताया गया कि बहुगुणा ने अपने किसी राजनीतिक मित्र से कहा था कि "यदि बीजू पटनायक एक करोड रुपया इकट्ठा करके उडीसा के मुख्यमंत्री बन सकते है तो क्या मैं एक सौ करोड रुपये इकट्ठा करके भारत का प्रधानमंत्री नही बन सकता?"

कहा जाता है कि मुख्यमंत्री के रूप में बहुगुणा चंदा जुटाने में बडे माहिर साबित हुए। नेताओं के जन्म दिन पर थैलियां भेंट करने के मामले में उत्तर प्रदेश बहुत आगे है। सी० बी० गुप्ता ने शायद ही कभी बिना किसी थैली के जन्म दिन मनाया हो। जब इंदिरा गांधी के जन्म दिन पर थैली भेंट करने की बात आयी तो जाहिर है कि इसके लिए बहुत ज्यादा रकम जुटाने की जरूरत थी। कहा जाता है कि उत्तर प्रदेश के चीनी मिल मालिकों से ही 75 लाख रुपये इकट्ठे किये गये, लेकिन बताया गया कि केवल 45 लाख जमा हुए हैं जिसमे से राज्य भर में हुए जन्म दिवस समारोहों पर 25 लाख रुपये खर्च हो गये। इस प्रकार सफदरजंग रोड तक केवल 20 लाख रुपये ही पहुंचे।

इंदिरा गांधी के प्रमुख एजेंट यशपाल कपूर को ठीक ठीक पता था कि कितनी रकम जमा हुई है और उन्होंने इंदिरा गांधी को इसकी जानकारी दे दी। इंदिरा गांधी ने कपूर से कहा कि उत्तर प्रदेश की गतिविधियों पर "कडी निगाह" रखो।

अपने ही जैसे लोगों को दोस्त बनाने में कुशल यशपाल कपूर ने बहुगुणा के एक मुख्य कारीगर से जो उनका व्यक्तिगत सचिव था संबंध कायम कर लिया। यह सचिव आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के आफिस में उस समय क्लर्क था, जब बहुगुणा कांग्रेस महासचिव थे। इसने अपने आका का बहुत बडा उपकार किया था—जिस लडकी से कहा गया उसी से शादी कर ली। वह लडकी भी वहीं क्लर्क थी सुंदर मानी जाती थी और परेशानी में पड गयी थी। इस 'एहसान' के लिए उसे अच्छा खासा मुआवजा भी दिया गया। वह बहुगुणा का अत्यंत विश्वासपात्र बन गया था, जो दोनों के लिए फायदेमंद साबित हुआ। कुछ ही दिनों में उसने दिल्ली में एक बहुत बडी कोठी खडी कर ली। और उसके पास इतनी रकम हो गयी कि वह अपने ढंग से अपनी जिंदगी बसर कर सके। बाद में पता चल गया कि यशपाल कपूर के साथ उसके संबंध बन गये है।

कपूर ने बहुगुणा-सरकार का हिसाब किताब रखना शुरू कर दिया।

शारदा सहायक गोमती जलसेतु के लिए टेंडर तो चार करोड बीस लाख रुपया मंजूर किया गया, लेकिन 11 करोड रुपये पर तय हुआ। बाद में बढ़ाकर 14 करोड पर सौदा हुआ। नये टेंडरों को मँगाने की जरूरत नही समझी गयी।

बिड़ला पर बिजली की मद में चार करोड रुपये बकाया थे। सरकार ने पुराने आदेशों के अनुसार वसूली के लिए दबाव डालने के बजाय मामले को पंच फैसले के सुपुर्द कर दिया। पंच फैसले में ऐसा जोड-तोड बैठाया गया कि बिड़ला को वह डेढ करोड भी नहीं देना पड़ा जिसे देने के लिए वह पहले तैयार थे। मोदी और सिंघानिया जैसे अनेक उद्योगपतियों के कारखानों को दी जाने वाली बिजली में भारी कटौती कर दी गयी थी। वे बिजली की सप्लाई फिर से मनानुकूल कराने के लिए 'कुछ भी करने को' तैयार हो गये।

राज्य बिजली बोर्ड म लगातार हडतालो की वजह से बिजली सप्लाई की स्थिति बहुत खराब थी, और डीजल पपिंग सैटो की खरीद के लिए भगदड मची हुई थी। अचानक सरकार ने घोषणा की कि किसानो को उन फर्मों से ही आयल इजन खरीदने के लिए ऋण दिया जायेगा, जिनके पास सरकारी लाइसेंस है। उन फर्मो न, जिन्ह सरकारी लाइसेंस प्राप्त करने के लिए बहुत सतर्कता से चुना गया था," लगभग चालीस करोड रुपये म एक लाख से ज्यादा इजन बेचे। कहा जाता है कि इस काम मे काफी रकम की हरा फेरी हुई।

मुख्यमत्री के पुत्र विजय न तभी इलाहाबाद हाई-कोर्ट म वकालत शुरू की थी। उनको दजनो फर्मो न अपना वकील बना लिया। और इन फर्मो से विजय को नियमित रूप से बँधी हुई फीस मिलने लगी। जब तक उसके साथियो को पता चला उसके पास अपार सम्पत्ति जमा हो चुकी थी।

इलाहाबाद नगर निगम के तत्कालीन प्रशासक एक व्यक्तिगत झझट म पड गये, क्योकि उन्होने एक ऐसी विदेशी महिला से शादी कर ली जिसकी पहले ही निगम के एक डाक्टर से शादी हो चुकी थी। उसने नौजवान वकील के लिए एक काफी बडा मकान बनवा दिया और उसकी सारी मुसीबतें खत्म हो गयी। (कहा जाता है कि चौधरी चरणसिंह ने केन्द्रीय गृह मत्री बनने के बाद उस अधिकारी को भ्रष्टाचार के आरोप पर मुअत्तिल कर दिया।)

सरकार की "गतिशीलता" के पीछे लालच और भ्रष्टाचार की वही चिर-परिचित कहानियां हैं।

बहुगुणा को अपने बचपन के दिन बहुत अच्छी तरह याद ह। वह गढवाल मे थे और उनकी एक ही महत्वाकाक्षा थी कि आई० सी० एस० बन जायें। एक बार की बात है—वह टट्टू पर बैठकर पहाड पर जा रहे थे और उनके पटवारी पिता उनके साथ पैदल चल रहे थ कि तभी दूसरी तरफ स घोडे पर सवार एक गोरा अफसर आता हुआ दिखायी दिया। उस अफसर को देखकर डर के मारे पिता की हालत खराब हो गयी और उ होन लडके से कहा "जल्दी उतरो, टट्टू से जल्दी उतरो।" लेकिन दस साल की उम्र का वह बालक टट्टू से नही उतरा और अपने भयभीत पिता से साफ साफ कह दिया कि "वह मेरा साहब तो नही है।"

साहब के नजदीक आते ही बहुगुणा के पिता ने झुककर सलाम किया।

वह साहब आई० सी० एस० अफसर था और जिले का डिप्टी कमिश्नर। उसने लडके की तरफ देखते हुए पूछा "रेवतीनदन यह किसका लडका है?"

"हजूर, यह मेरा लडका है।" पिता ने जवाब दिया।

'तुम्हारा क्या नाम है लडके?" साहब ने पूछा।

'हेमवतीनदन बहुगुणा।" लडके ने तनिक भी डरे बिना जवाब दिया। उसके साहस को देखकर पिता हैरान रह गये। जब साहब काफी दूर चले गये तब कही जाकर पिता की जान मे जान आयी।

बहुगुणा ने अपने पिता को इतना डरा कभी नही देखा था और इसलिए उनके मन म यह बात बैठ गयी कि "आई० सी० एस० अफसर जरूर दुनिया का सबसे बडा आदमी होता होगा।"

उसी दिन से ही उनके मन म एक ललक पैदा हो गयी। स्कूल की अपनी सभी किताब-कापियो पर वह अपना नाम लिखा करते थे—'एच० एन० बहुगुणा, आई० सी० एस०।'

बहुगुणा परिवार कभी बगाल से यहाँ आया था। औरगजब के ज़माने म दो बद्योपाध्याय-भाई अपने अपने परिवार के साथ बद्री केदार की यात्रा पर बगाल से रवाना हुए। वापसी म बडे भाई की पचिश से मृत्यु हो गयी। शोकाकुल परिवार टेहरी-गढवाल राज्य की राजधानी श्रीनगर पौडी म रुक गया। वे एक धमशाला म ठहरे थे। एक दिन उन्हे मुनादी के ज़रिये यह सूचना दी जा रही है कि महाराजा का बेटा बुरी तरह बीमार है कोई उसका इलाज कर दे तो उसे काफी इनाम दिया जायेगा। बद्योपाध्याय-बधु ज्योतिषी और वैद्य थे। मृत भाई की पत्नी ने अपने देवर से कहा कि जाकर राजकुमार का इलाज करे। वह महाराजा के दरबार म गया और लडके की जन्म-पत्री देखकर उसने कुछ दवाएँ दी, जिससे राजकुमार की जान बच गयी। इलाज करने के बाद उस वैद्य ने घर लौटने की इच्छा व्यक्त की लेकिन महाराजा ने उन्हे जाने नही दिया और खुश होकर 'बहुगुणा (अनेक गुणो वाला व्यक्ति) की उपाधि दे दी। महाराजा ने उन्हे जोर देकर गढवाल म ही बसने के लिए विवश किया। बाद म राज्य-परिवार के इष्ट देवता की पूजा पाठ का काम भी उन्ह सौंप दिया और उन्ह 'राजगुरु धर्माधिकारी' बना दिया गया।

आजकल समूचे गढवाल क्षेत्र म लगभग छ सौ बहुगुणा-परिवार हैं। इन्ही म से एक परिवार म 1921 म हेमवतीनदन बहुगुणा का जन्म हुआ।

अपनी जीवन-कथा बताते हुए बहुगुणा कहते है "बचपन से ही मैं एक उडता पक्षी रहा हूँ। दर्जा चार तक मैंने अपने गाव बुगानी म शिक्षा ग्रहण की और फिर खिरसू नामक स्थान म चला गया। मैं पढने म बहुत तेज़ था और हमेशा प्रथम श्रेणी म पास होता था। खेलकूद म भी मैं काफी भाग लेता था, लेकिन जब मैं दर्जा छह म था तो फुटबाल खेलते समय मेरी गले की हड्डी टूट गयी। उसके बाद से मैंने खेलना बद कर दिया। खिरसू मे शिक्षा पूरी करने के बाद मैं डी० ए० वी० स्कूल पौडी गढवाल चला गया और वहाँ से देहरादून। आपने गौर किया कि मैं लगातार पहाडो से नीचे ही उतरता आ रहा था। मैं बराबर नये मैदान मारने की कोशिश करता रहा और मेरी निगाह दूर क्षितिज की ओर रहती। जगह-जगह की सैर करने के कारण हर इलाका मुझे अपना समझता है और हर इलाके पर मैं दावा करता हूँ। मेरे साथ पढे लोग समूचे उत्तर प्रदेश म फैले हुए है।"

उनकी सबस बडी महत्वाकाक्षा आई० सी० एस० बनने की थी। लेकिन अग्रेजी म वह बहुत कमज़ोर थे इसलिए उन्होने अपनी सारी ताकत अंग्रेज़ी की पढाई म ही लगा दी। जब वह छुट्टियो म घर जा रहे थे तो एक दोस्त ने उन्हे पट्टाभि सीतारमैया लिखित हिस्टरी आफ कांग्रेस की एक प्रति दी। कांग्रेस के बारे म कुछ पढने म उनकी रुचि नहीं थी। वह अपने दोस्तो से कहा करते थे कि 'जिसके पास कोई काम न हो वह कांग्रेसी बने।' लेकिन उनके दोस्त ने कहा कि इस पुस्तक की अंग्रेज़ी बहुत अच्छी है। बहुगुणा ने वह किताब रख ली।

मेरे अदर के आई० सी० एस० ने किताब पढनी शुरू की। लेकिन जब जलियाँवाला बाग वाला अध्याय पढा तो आँख खुल गयी। मुझे आज भी याद है कि उस दिन दशहरा था बडी बहन पूजा के लिए मेरा इतज़ार कर रही थी और मैं किताब म डूबा हुआ था। बाद म मैंने उस अध्याय को अपनी बहन को पढकर सुनाया तो वह रो पडी। उन आँसुओ को देखकर मैंने प्रण कर लिया कि अंग्रेज़ो को भारत से खदेडकर रहूँगा। मेरे अदर का आई० सी० एस० अब मर चुका था

और उसके स्थान पर एक विद्रोही रा ज म हा चुका था।"

इलाहाबाद आने पर उनका राजनीतिक जीवन शुरू हुआ। उनके कॉलज का प्रिंसिपल एक अँग्रेज़ था। उसने यनियन बनाने की इजाज़त नहो दी, लेकिन 'पार्लियामेंट' के गठन के लिए मजरी दे दी।

"हमने विजय वीर बाचू को स्पीकर चुना। मैं प्राइम मिनिटर था। हम अपनी पार्लियामेंट का किसी से उदघाटन कराना चाहते थे। बाचू न कहा कि वह अपने दादा से इसके लिए कह सकता है। मैंन पूछा कि उसके दादा का क्या नाम है। उसने बताया—जवाहरलाल नहरू। यह सुनकर मैं रोमाचित हो उठा। नेहरू हमेशा से मेरे आदश नायक रह हैं। मैंने उनके मुहावरो उनकी पोशाक और उनके विचारो की हमेशा नक्ल करनी चाही। मैं सारी उम्र उनका प्रशसक रहूँगा और उनको प्यार करूँगा जवाहरलालजी उस दिन इलाहाबाद म थे, हम उनके पास गये। उन्होंने कहा कि वह दौरे पर जा रह है उनके लिए आना मुश्किल ह लेकिन उन्हाने सुझाव दिया कि हम लोग रजोत पडित से चलने के लिए अनुरोध करें। हम उनके पास गय और वह हमारे पार्लियामेंट का उदघाटन करने के लिए तैयार हो गये।"

स्वराज भवन और आनद भवन के साथ बहुगुणा के सबध जुडने की यह शुरुआत थी। अपने फुरसत के समय वह स्वराज भवन चले जाते और वहाँ के छोटे मोटे कामो मे मसलन डाक खोलना पते लिखना आदि म, हाथ बँटाने लगे।

1941 मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी का अधिवेशन इलाहाबाद म हुआ। बहुगुणा को 'मौलाना आजाद स्वयसवक दल का इचाज' बनाया गया। बहुगुणा के पिता ने इस अधिवेशन मे उनको देखा तो उन्ह पहली बार पता चला कि उनका बेटा क्या कर रहा है। बहुगुणा ने खद्दर पहनना शुरू कर दिया था। लेकिन गाँव जाने के लिए वह दूसरी तरह के कपडे रखते थे।

विश्वविद्यालय म दाखला लने के बाद उन्हाने यूनियन के अध्यक्ष-पद के लिए चुनाव लडा लेकिन हार गये। उनका कहना है कि 'मैंने असफलता से शुरुआत की और फिर मैं दादा बन गया।" दादा से उनका तात्पय दबग व्यक्ति से है। 1942 के आदोलन म वह विश्वविद्यालय के दूसरे डिक्टेटर बनाये गय भूमिगत हो गये और दिल्ली आकर इडिया गेट पर जॉर्ज पचम की मूर्ति की नाक उन्होने तोड दी। उन्ह जिन्दा या मुर्दा पकडने के लिए पाच हजार रुपय का इनाम घोषित हुआ। फरवरी 1943 म वह गिरफ्तार हुए और जेल मे ही उन्ह प्लूरेसी हो गयी। 1945 मे जब वह रिहा हुए तो शरीर पर केवल हड्डियाँ बची थी और चेहरे पर एक लम्बी दाढी लहरा रही थी।

1950 तक जिला काग्रेस कमेटी के दरवाज़े उनके लिए बन्द थे। इलाहाबाद मे जिला कांग्रेस पर मुजफ्फर हसन, मगलाप्रसाद और मसुरिया दीन का कब्जा था। ये सभी सी० बी० गुप्ता के आदमी थे जो बहुगुणा को अदर नही आने दे रहे थे। मगलाप्रसाद ने तत्कालीन मुख्यमत्री गोविन्दवल्लभ पत के पास शिकायत की कि बहुगुणा कम्युनिस्ट हैं, और उन्हे गिरफ्तार कराने की भी कोशिश की गयी। बहुगुणा ने मजदूर-मोर्चे पर काम शुरू कर दिया था और इलाहाबाद की लगभग सभी ट्रेड यूनियनो का सगठन कर लिया था।

बहुगुणा ने हावभाव के साथ बताया कि काग्रेस-नेतत्व के भीतरी व्यूह म वह किस तरह घुमे। '1951 म जवाहरलाल नहरू काग्रेस अध्यक्ष बने। सोशलिस्ट

काग्रेस से अलग हो चुके थे । काग्रेस का सगठन तहस-नहस हो गया था । काग्रेस वाले कोई सावजनिक सभा करने मे भी डरते थे । उन्ही दिनो लालबहादुर शास्त्री इलाहाबाद आये और उन्होने मुझे कहलवाया कि उनसे मिलू । जब मैं मिला तो उन्होने पूछा कि क्या मैं शहर म कोई सभा आयोजित कर सकता हूँ । मैंने अपनी सहमति दे दी और इतनी बडी सभा का आयोजन किया जा इलाहाबाद म वर्षों से नही देखी गयी थी । मैंन अपनी सभी ट्रेड यूनियनो से भाग लेने को कहा । टडन पाक म लोगो की भीड उमड पडी । यह बहुत बडी सभा थी, लेकिन उन लोगो ने मच पर मुझे नही जाने दिया । मैं भीड स काफी दूर खडा होकर चाट खाने लगा । उन दिनो आम तौर से मेरे पास इतने ही पैसे होते थ । अचानक चारो तरफ अँधेरा छा गया । बिजली चली गयी थी । मीटिंग मे जबदस्त हो होल्ला मच गया । भीड ने 'बहुगुणा जिदाबाद' के नारे लगाये । हर आदमी मुझ बुला रहा था । किसी को यह नही पता था कि जनता को कैसे काबू म करे । मैं तेजी से मच की ओर बढा । तभी बिजली वापस आ गयी । लोग चिल्ला रहे थ—बहुगुणा जिदाबाद ।''

उनके आलोचको न कहा कि बिजली जाने और आने की सारी योजना बहुगुणा ने पहले से बनायी थी । उन दिनो बहुगुणा को लोग बुनियादी तौर पर ऐसा दबग आदमी' समझते थे, जिसका अपराधियो से भी मेल जोल'' था । इलाहाबाद के एक बूढे नागरिक के अनुसार 'बहुगुणा के पास रिक्शा थे जिन्हे वह किराय पर देते थे और कभी-कभी तो खुद ही चला लेते थे ।'' लेकिन ईर्ष्या स भरे आलोचक कही-न-कही गलती निकाल ही लेते है । सच्चाई यह है कि उस शाम की घटना ने स्थानीय राजनीति म बहुगुणा का एक विशेष स्थान बना दिया । लालबहादुर शास्त्री इस नौजवान की सक्रियता से बेहद प्रभावित हुए । बहुगुणा उत्तर प्रदेश काग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष अलगुराय शास्त्री के भी चहेते बन गये ।

कुछ ही दिनो बाद बहुगुणा को राजकुमारी अमृतकौर का पत्र मिला, जिसम कहा गया था कि लालबहादुर शास्त्री चाहते है कि बहुगुणा हिमाचल प्रदेश जायें और वहाँ के चुनाव का सगठन करे ।

बहुगुणा बडे गव से यह कहते है 'परमार साहब (हिमाचल प्रदेश के भूत पूव मुख्यमत्री) मेरी खोज है ।'

सगठन की उनकी क्षमता से प्रभावित हाकर जवाहरलाल नेहरू ने 1952 के चुनाव मे उन्हे विधान सभा का टिकट दे दिया ।

इन सघर्षों के बीच रोमास भी चलता रहा । जेल जाने से पहले बहुगुणा को कमला स प्रेम हो गया था । वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आर० पी० त्रिपाठी की लडकी थी । पुलिस स बचने के लिए उन दिनो व कभी-कभी कमला के यहाँ रहा करते थे । 1946 म दोनो की शादी हो गयी ।

बहुगुणा गढवाल म एक पत्नी छोड आय थ । उस पत्नी स उनकी शादी तब हुई थी जब वह बहुत छोटे थ । कहा जाता है कि मुख्यमत्री बनने के बाद एक दिन वह हैलीकाप्टर से अपने गाँव गये, लकिन उनकी पत्नी उस समय घास काटने गयी थी और उसने बहुगुणा स मिलने से इकार कर दिया ।

दिल्ली व लखनऊ के ड्राइग-रूमो म और दफ्तरो म तरह-तरह की रगीन कहानियाँ सुनायी देती है । इतनी स्त्रियों के नाम लिये जाते है कि लोगो के दिमागों के उप-

जीकपन की दाद देनी पडेगी। या फिर हो सकता है कि सत्ता म आने पर अपनी हर इच्छा पूरी करने के लिए सचमुच ही मौका मिल जाता हो। कोई दफ्तरो मे काम करने वाली किसी सुदर लडकी का जिक्र करता है तो कोई नैनीताल के डाक-बँगले मे महिला-अध्यापको से इटरव्यू' का। हजरतगज म कुछ व्यापारी हर प्रकार की सुविधा की व्यवस्था कर देते है और लोग ऐसी जगहो पर आने जाने का भी जिक्र करत है। विधान-सभा मे एक नयी सदस्या आ गयी जिसको सिफ इसलिए चुना गया था कि उन्होने किसी पर बडी कृपा' का थी। इस तरह की कीचड बराबर उछाली जाती है।

इन प्रसगो के बीच हलद्वानी की एक महिला अध्यापिका का जिक्र अक्सर आ जाता है। थोडे ही समय के अदर उस महिला के लिए एक काफी बडा मकान तैयार हो गया और उसका क्लक पति एक ट्रक एक बस तथा जमीन के एक विशाल प्लाट के अलावा एक उद्योग का मालिक बन बैठा। उस औरत को अचानक एम० एल० सी० बना दिया गया और सर के लिए श्रीलका भेज दिया गया। और फिर अचानक 1977 मे वह सी० एफ० डी० की ओर से विधान-सभा के लिए उम्मीदवार बनकर चुनाव के मैदान मे आ गयी। सी० एफ० डी० के नेताओ ने अपनी बदनामी की परवाह न कर उसे जिताने के लिए एडी-चोटी का पसीना एक कर दिया।

जनता लहर के बावजूद वह चुनाव हार गयी।

बहुगुणा के चहेते लोगो मे उनके शिक्षा मत्री अम्मार रिज़वी थे। एक बार एक विधायक ने स्पीकर से कहा कि वह सदन मे एक टप सुनाना चाहता है, जिसमे कुछ ऐसी आवाजे हैं जो बहुत से राज खोल देंगी। स्पीकर ने वायदा किया कि वह अगले दिन इसकी अनुमति देंगे। लेकिन कहा जाता है कि इस बीच अम्मार रिजवी ने मुख्यमत्री को धमकी दी कि यदि टेप सुनाने की अनुमति दी गयी तो वह भी पर्दाफाश कर देंगे। वह टेप कभी नही सुनाया जा सका।

ये सारी बातें सभवत नेहरू की परपराओ के अनुरूप ही है—यह बात और है कि इनका रूप विकृत हो गया है।

'जब तक मैं बहुगुणा को निकाल बाहर नही करूँगा तब तक लखनऊ मे अपना चेहरा नही दिखाऊगा।" यशपाल कपूर कालटन होटल मे बौखलाये हुए टहल रहे थे। उनके उम्मीदवार के० के० बिडला को राज्य सभा के चुनाव मे जबदस्त हार मिली थी। कपूर बर्दाश्त नही कर पा रहे थे कि जिस खल मे उनको महारत हासिल है उसमे बहुगुणा बाज़ी मार ले जाये।

माच 1974 मे यशपाल कपूर ने लखनऊ पहुँचते ही मुख्यमत्री बहुगुणा के सरकारी निवास म अपना डेरा डाल दिया था। वहा विधायको को खरीदने का पुराना खेल चलने लगा। बिडला निर्दलीय उम्मीदवार थे लेकिन उन्हे इन्दिरा गाधी का आशीर्वाद प्राप्त था। चूकि मुख्यमत्री के निवास से ही सारा काम हो रहा था लोगो को लगा कि बहुगुणा भी इस उद्योगपति का समथन कर रहे है। उस समय बहुगुणा दिल्ली मे थे। जब वह वापस लखनऊ पहुँचे तो उनके सचिवो ने बताया कि उनकी गैर हाजिरी मे यहा क्या होता रहा है—दिन भर राजनीतिक दाँव-पेंच चलते हैं और रात मे अय्याशी। बहुगुणा को एक अजनबी औरत के बारे मे भी बताया गया जो उनके मकान मे इस बीच आती जाती देखी गयी थी। बहुगुणा आग-बबूला हो उठे। अतीत म यशपाल कपूर के साथ कई मामलो मे

उनकी हिस्सेदारी रही है तो क्या हुआ। अब तो वह मुख्यमंत्री थे, उनके अपने कुछ अधिकार थे। उन्हें मुख्यमंत्री निवास की 'पवित्रता' की रक्षा करनी थी।
उन्होंने यशपाल कपूर का सामान घर से बाहर फेंक देने का आदेश दिया। कपूर वहाँ से क्लार्क्स अवध होटल चले गये। तब तक उनके संरक्षक के० के० बिडला भी अपने दलबल-सहित कार्लटन होटल पहुँच चुके थे, जहाँ राजनारायण के समर्थकों ने उनका घेराव कर दिया था। राजनारायण भी राज्य-सभा की सीट के उम्मीदवार थे।

यशपाल कपूर ने बिडला के लिए बहुगुणा की मदद चाही और उन्होंने कहा 'इन्दिराजी चाहती हैं कि बिडला जीत जायें।' बिगड़कर बहुगुणा ने कहा, 'इन्दिराजी खुद मुझसे कहें तो जानूँ।'' मतदान से तीन दिन पूर्व कांग्रेस के 51 संसद सदस्यों ने दिल्ली से एक वक्तव्य जारी कर इस बात पर खेद प्रकट किया कि काले धन की मदद से राजनीति को नियन्त्रित करने की कोशिश की जा रही है। अपने वक्तव्य में उन्होंने बिडला को 'करारी हार' देने की माँग की। यशपाल कपूर को इसमें तनिक भी सन्देह नहीं था कि यह वक्तव्य बहुगुणा ने दिलवाया था क्योंकि वह उन दिनों दिल्ली में ही थे। वक्तव्य जारी होने के दूसरे दिन उत्तर प्रदेश विधान सभा में चौधरी चरणसिंह की बी० के० डी० के दो सदस्यों द्वारा पेश किये गये विशेषाधिकार प्रस्ताव पर बहस के दौरान हस्तक्षेप करते हुए मुख्य मंत्री बहुगुणा ने सदन को बताया कि के० के० बिडला की उम्मीदवारी से उनकी पार्टी को कुछ लेना देना नहीं है। उन्होंने यह भी उम्मीद ज़ाहिर की कि इस उद्योगपति को एक धक्का लगेगा।

यशपाल कपूर ने गुस्से में कहा "बहुगुणा को सत्ता का नशा चढ़ गया है।" तीनमूर्ति भवन के इस भूतपूर्व हिन्दी टाइपिस्ट ने अनेक राज्यों में मुख्यमंत्रियों को बनाया और बिगाड़ा है। बहुगुणा की यह हरकत बर्दाश्त के बाहर थी। लेकिन प्रधानमंत्री से अपने सम्बन्धों के बारे में बहुगुणा की कुछ और ही राय थी। बाद में उन्होंने कहा "जो कुछ हो रहा था मुझे उस पर बुनियादी एतराज था। मैंने इन्दिराजी के साथ ताश खेले हैं और आज अचानक उनके अर्दलियों और क्लर्कों की यह हिम्मत कि मुझ पर रौब डालें। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं उनकी शराब औरत और विलासिता का विरोधी था।"

लेकिन इन्दिरा को अपने 'अर्दलियों और क्लर्कों' पर ज्यादा यकीन था। बहुगुणा को मुख्यमंत्री बनाकर भेजते ही उन्होंने चेन्ना रेड्डी को उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया, हालाँकि राज्यपाल अकबर अली खाँ का कार्यकाल अभी समाप्त भी नहीं हुआ था। बहुगुणा को पूरा यकीन था कि यह इसलिए किया गया कि अकबर अली से उनके सम्बन्ध अच्छे थे। इन्दिरा गांधी राज्य में कोई अपना आदमी रखना चाहती थीं। एक राजनीतिक प्रेक्षक ने ठीक ही कहा कि उन्होंने एक चालबाज़ पर जासूसी करने के लिए दूसरे चालबाज़ को तैनात कर दिया। तेलंगाना पृथकतावादी आंदोलन के भूतपूर्व नेता चेन्ना रेड्डी सत्ता का केन्द्र बिन्दु बनने लगे। उन्होंने राज्य के और केन्द्र के खुफिया विभाग के अफसरों को आदेश दिया कि वे उनके पास अपनी रिपोर्टें भेजा करें। यहाँ तक कि उन्होंने कुछ राज्य अधिकारियों को भी आदेश देने शुरू कर दिये।

लखनऊ पहुँचने के कुछ ही दिन बाद चेन्ना रेड्डी ने अखबारों के ज़रिये यह घोषणा की कि राजभवन के अहाते में वह एक गणेश मन्दिर बनवायेंगे। मन्दिर की नींव वैदिक मंत्रों के पाठ के बाद रखी जानी थी। बहुगुणा ने इस प्रस्ताव का विरोध

किया और राज्यपाल से कहा कि इससे एक 'गलत मिसाल' कायम होगी, क्योंकि कल का अगर कोई मुसलमान राज्यपाल आयेगा तो वह राजभवन के अदर मस्जिद बनवायेगा और अगर कोई ईसाई राज्यपाल आया तो गिरजाघर बनवाने लगेगा।

मदिर की योजना धूल मे मिल गयी और चेन्ना रेड्डी बिफर गये। वह खुले आम बहुगुणा विरोधी हो गये और उनसे मिलने विधायक जाते तो वह कहते, "मुझे पता है, आप बहुगुणा के आदमी है।" उन्होंने मुख्यमत्री के प्रति अपने रवैये को छिपाने की कोई जरूरत नही समझी।

राज्यपाल ने अपने मुलाकातियो से एक बार कहा, मुझे पता है कि बहुगुणा राज्य म अपना व्यक्तिगत साम्राज्य बनाना चाहता है।'

प्रदेश काग्रेस कमेटी को बहुगुणा के खिलाफ बनाने के भी प्रयास किये जाने लगे। सबसे पहले बी० एन० कुरील को प्रदेश काग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया लेकिन वह बहुगुणा से नही लडे तो उन्ह हटाकर एक 'लडाकू आदमी यानी लक्ष्मीशकर यादव को बनाया गया। फिर उन्हे भी हटा दिया गया और मोहसिना किदवई को काग्रेस-अध्यक्षा बनाया गया। लखनऊ मे आये दिन बहुगुणा विरोधी चाय पार्टिया होने लगी। इस तरह की पार्टिया कभी लक्ष्मीशकर यादव दते तो कभी भूतपूव 'तिलक-धारी' मुख्यमत्री के पुत्र लोकपति त्रिपाठी। इन पार्टियो मे यशपाल कपूर भी मौजूद होते, जिन्होंने बहुगुणा को निकाल बाहर करने की कसम खायी थी।

लेकिन इन विरोधिया को एक झटका तब लगा जब इन्दिरा गाधी ने बहुगुणा-दम्पत्ति को पारिवारिक मेलजोल के लिए आनद-भवन म निमन्त्रित किया। कुछ लोगो ने समझा कि इन्दिरा गाधी अब बहुगुणा से मेल करने की कोशिश म हैं लकिन औरो का कहना था कि इन्दिरा गाधी इस तरह की हरकतें करके ही अपनी अगली चाल के बारे मे लोगो को असमजस मे रखती है।

इन्दिरा गाधी के खिलाफ इलाहाबाद हाई-कोट के फैसले से बहुगुणा विरोधियो को अपनी योजनाओ के लिए बहुत बडा मौका मिला। उन्होने कहा कि यह आदमी गद्दार है। इसने जज के साथ साठ गाठ कर ली है। कहा गया कि बहुगुणा ने 12 जून 1975 के फैसले के महज़ एक हफ्ते पूव एक पार्टी मे कहा था, "अरे, वह तो अब छह साल के लिए जा रही है। कपूर मुझे यह कहकर बदनाम कर रहा है कि जज से मिलकर मैंने इन्दिराजी को खत्म किया है—कपूर का तो मैं खत्म करूँगा।'

उस समय तक बहुगुणा ने सोच लिया था कि वह अपने आप म इतने मजबूत हो चुके है कि कोई उन्ह हिला नही सकता। उन्होने सोचा था कि उत्तर प्रदेश म उन्होने बहुत मजबूत आधार तैयार कर लिया है। नवाबो बेगमो से लेकर सबसे निचले तबके के मुसलमाना तक के बीच वह बहुत लोकप्रिय थे। उर्दू बोलने म उन्हे महारत हासिल थी और मुस्लिम श्रोताओ के बीच भाषण करते समय बीच बीच मे वह शेरोशायरी भी करते रहते थे। उनके आलोचको का कहना है कि बहुगुणा अपने जन-सपक विभाग के मुसलमान अफसरो म उर्दू म भाषण लिखवाते थे। बहुगुणा के एक भूतपूव अधिकारी ने बताया कि वह उन भाषणो का देवनागरी लिपि मे रूपातरण करते थे और फिर उसे रट लेते थे।" इसम कोई शक नही कि इस तरह की मेहनत बहुगुणा कर सकते थे। जिन दिनो वह आई० सी० एस० अफसर बनने के लिए अपनी अँग्रेजी सुधारने मे लगे थे उन्होने पट्टाभि

सीतारमैया की उस मोटी पुस्तक हिस्टरी आफ कांग्रेस का हिन्दी मे अनुवाद किया और उस हिन्दी का फिर अंग्रेजी मे अनुवाद किया। उसके बाद उन्होने मूल पुस्तक से अपना अनुवाद मिलाया।

चाहे रटकर बोलते हो या बिना रटे उनकी सुमधुर उर्दू से मुसलमानों के बीच उनके कई प्रशसक पैदा हो गये। जन-सपक मे माहिर बहुगुणा मुसलमानों के मकानो मे जाते उनके साथ बैठकर खाना खाते और उनके जलसो आदि म भाग लेना कभी न भूलते।

मुसलमानो के बीच वह इस हद तक पसद किये जाने लगे कि उत्तर प्रदेश की एक खबसूरत बेगम ने उन्हे बहुमूल्य अँगूठी भेंट की और एक बार जब वे बीमार पड गये तो उनके स्वास्थ्य की कामना करते हुए उस बेगम ने काफी रकम दान मे दे दी।

उनके मुख्यमत्री-काल की एक विशिष्ट घटना मुस्लिम शिक्षा के बारे म अतराष्ट्रीय सम्मेलन को दिया गया जबदस्त समर्थन है। यह सम्मेलन मुस्लिम उलेमा को प्रशिक्षण देने वाले विख्यात केन्द्र नदवा द्वारा आयोजित किया गया था। इसमे मुस्लिम-जगत की बहुत बडी बडी शैक्षणिक और धार्मिक हस्तियों ने भाग लिया। इनमे काहिरा के अल अजहर विश्वविद्यालय के मशहूर रेक्टर भी शामिल थे। इस समारोह में बहुगुणा छाये रहे और वह जिससे मिलते उस पर फौरन ही अपना प्रभाव डाल देते। फिलिस्तीनी मुक्ति सगठन के एक भूतपूर्व डाइरेक्टर ने लखनऊ के एक पत्रकार को बताया कि यह सम्मेलन पहले ताईवान मे सी० आई० ए० से सम्बद्ध कुछ एजेंसियो द्वारा आयोजित किया गया था।

बहुगुणा बाहर की दुनिया के लोगो से सम्बन्ध कायम करना नहीं भूले। सोवियत रूस के साथ सीधे सम्बन्ध के महत्व को समझते हुए उन्होंने दिल्ली स्थित रूसी राजदूत को आग्रह करके लखनऊ बुलाया और एक शानदार दावत दी। रूसी राजदूत ने भारतीय जनता का महान नेता कहकर बहुगुणा का अभिवादन किया और रूसियो को यह कहते सुना जाने लगा कि बहुगुणा 'भारत के भावी प्रधानमत्री है।"

रूसी राजदूत के इस 'सर्टिफिकेट' की वजह से और भारत-सोवियत सास्कृतिक समिति के जमावड म उत्साह के साथ शामिल होने की वजह से, बहुगुणा को उत्तर प्रदेश तथा अन्य स्थाना की सी० पी० आई० का भी समथन मिल गया।

लेकिन बुद्धिमान लोग सारे अडे एक ही डोलची म नही रखत। उन्होने अमेरिकियो के साथ भी सबध बनाये रखे।

'राजनीतिक कारीगर" के रूप मे उनकी ख्याति बढने से उनके प्रति इन्दिरा गाधी का सदेह और भी बढ गया। जब बहुगुणा को विश्वास हो गया कि उन पर हमला किया जायेगा तो वह परेशान हो गये और उन सबस मिलत रह, जिनके बारे म उन्हे पता था कि व इन्दिरा गाधी को समझा-बुझाकर मना लेंगे। उन्होंने रजनी पटेल और मोहम्मद युनुस स भी मुलाकात की लेकिन वे किसी तरह की मदद देने म असमथ थे। निराश होकर बहुगुणा न अपने आत्म-सम्मान को भी किनारे फेंक दिया और सजय गाधी से मिलने मारुति कारखाने तक गय। उस समय तक सजय की ताकत का एहसास उन्हे हो चुका था। लेकिन सजय ने मिलने से इकार कर दिया और निराश होकर वह वापस चले आये।

बहुगुणा अपने पद से बडी इज्जत के साथ हट गये। कुछ ही घटा के अदर वह मुख्यमत्री निवास से अपना सामान लेकर विधायका क लिए बने दो कमर वाल

फ्लैट मे आ गये। लेकिन इसके बाद जो उनको बेइज्जत करने का सिलसिला शुरू हुआ है तो इतहा नही रही। दिल्ली के सत्ताधारियो को पता था कि लखनऊ के अखबारो को बहुगुणा का काफी सरक्षण मिलता रहा है। फौरन ही अखबारो को यह निर्देश दिया गया कि "बहुगुणा के बारे मे हर समाचार को पहले सेंसर किया जाना चाहिए। केवल तथ्यपरक खबरो को ही प्रकाशित करने की ज़रूरत है।" समाचार-जगत के लिए इतना इशारा काफी था। अखबारो से बहुगुणा का नाम एकदम गायब हो गया।

इलाहाबाद ज़िला काग्रेस कमेटी को भग कर दिया गया—इसकी अध्यक्षा कमला बहुगुणा थी। स्वय बहुगुणा को उत्तर प्रदेश काग्रेस कार्यकारिणी और काग्रेस ससदीय बोर्ड से हटा दिया गया।

जब उनकी इकलौती बेटी की शादी हुई तो अधिकाश काग्रेसियो ने कोई न-कोई बहाना करके अपने को समारोह से अलग रखना ही मुनासिब समझा। उन्हे डर था कि अगर शादी के समारोह मे उन लोगो ने भाग लिया तो सजय गाधी व उनके साथी नाराज़ हो जायेंगे। कुछ लोगो को उस समारोह की भी याद आ रही थी जब बहुगुणा के बेटे की इलाहाबाद म शादी थी और बहुत शानदार इतजाम किया गया था। उन दिनो बहुगणा सत्ता मे थे। इन्दिरा गाधी तथा सरकार के सभी वरिष्ठ लोग इस समारोह मे शामिल हुए थे। शादी के इतज़ाम की देखभाल के लिए बडे-बडे उद्योगपतिया और उत्तर प्रदेश के चीनी मिल-मालिकों ने अपने बडे अफसरो को तैनात कर रखा था। बताया जाता है कि हीरो के नेकलेस सहित बेशकीमती उपहार मिले थे। यह एक अविस्मरणीय शादी थी, लेकिन अब हालत एकदम दूसरी थी। लडकी की शादी का समारोह बिलकुल फीका रहा।

कुभ-मेले के अवसर पर इन्दिरा गाधी इलाहाबाद गयी थीं। हवाई अड्डे पर स्वागत के लिए बहुगुणा अपनी पत्नी के साथ गय, लेकिन इन्दिरा गाधी ने उनकी तरफ इस तरह देखा, गोया पहचान भी न पा रही हो और आगे बढ गयी। वहाँ मौजूद सबने महसूस किया कि बहुगुणा परिवार को जान-बूझकर बेइज्जत किया गया है।

दिसम्बर 1976 मे बहुगुणा के जिगरी दोस्त और समर्थक बच्चा पाडे को बिना किसी उचित कारण के मीसा के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय बहुगुणा दिल्ली मे थे। अपने दोस्त की गिरफ्तारी की खबर सुनकर वह रो पडे लेकिन वह एकदम लाचार थे। उनके बस म कुछ भी नही था। फिर भी लखनऊ वापस पहुँचने पर उन्होने अपने उत्तराधिकारी नारायणदत्त तिवारी से भेंट की और अपने दोस्त की रिहाई के लिए अनुरोध किया। लेकिन तिवारी ने बडी विनम्रता के साथ इकार कर दिया।

इन सारे अपमानो के बावजूद जब इन्दिरा गाधी ने लोक-सभा के चुनाव की घोषणा की तो बहुगुणा ने एक बधाई का तार भेजा और अपनी सेवाएँ पेश की।

20 जनवरी 1977 का बहुगुणा दिल्ली पहुँचे और एक सप्ताह तक उन्होने इन्दिरा गाधी से मिलने की "26 बार" कोशिश की लेकिन असफल रहे। आखिरकार उन्होने अपनी पत्नी कमला बहुगुणा को प्रधानमत्री से मिलने भेजा। बडी मुश्किल से इन्दिरा गाधी से कमला की मुलाकात हुई लेकिन इस मुलाकात मे इन्दिरा गाधी ने बस यही कहा "मैं बहुगुणा का चेहरा दोबारा कभी नही देखना चाहती।"

बहुगुणा के सामने अब कोई रास्ता नही था। उन्होंने अतिम तौर पर फैसला कर लिया कि उनके और इन्दिरा गाधी के बीच किसी तरह की बातचीत नही हो सकती। फिर उन्होने जगजीवनराम को काग्रेस से अलग करने की अपनी कोशिशें शुरू की। वह जानते थे कि इस काम को बहुत ही गुप्त ढग से करने की जरूरत है। बडी कुशलता से उन्होने यह खबर फैला दी कि वह यू० पी० निवास म बीमार होकर पडे हैं। अनेक डॉक्टर आये और गय जिससे लोगो को लगा कि बहुगुणा बहुत बुरी तरह बीमार है। रात मे वह मैले धोती कुर्ता पहनकर और कम्बल ओढकर गुप्त रूप से जगजीवनराम के निवास स्थान, 6 कृष्ण मेनन माग पर पहुँचते। यह सिलसिला कई दिनो तक जारी रहा। कभी वह जगजीवनराम से मिलते तो कभी उनकी पत्नी से और कभी उनके लडके सुरेशराम स। अपने उसी भेष मे वह इमाम से मिलने जामा मस्जिद जाते। सी० एफ० डी० जनता की ओर से मुस्लिमो के वोट पाने मे इमाम की महत्वपूर्ण भूमिका से आज सभी परिचित है।

जगजीवनराम और बहुगुणा का गुट अतत सामने आ ही गया—इन्दिरा गाधी को बहुत पहले से जगजीवनराम बहुगुणा गँठजोड की आशका थी। लेकिन जगजीवनराम, बहुगुणा और उनके अ य सहयोगी खुद को जनता पार्टी म झोकना नही चाहते थे, क्योकि वे इसे विभिन्न दलो का एक ऐसा सगम मानत थे जो अधिक समय तक नही चल सकता। 2 फरवरी 1977 को बहुगुणा ने ज़ोर देकर कहा 'हमारी काग्रेस ही असली काग्रेस है।" काग्रेस फॉर डेमोक्रेसी के पहले बयान का मसौदा उन्होने ही तैयार किया था। इसमे कहा गया था, 'हमारा उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की सर्वोच्च परपराओ की रक्षा करना है।"

1 मई 1977 तक जब जगजीवनराम ने सी० एफ० डी० को जनता पार्टी के साथ मिलने का एकतरफा" फसला किया, बहुगुणा लगातार यह कहते रह थे कि सी० एफ० डी० को अपना अस्तित्व अलग बनाये रखना चाहिए। पार्टी की यू० पी० यूनिट न जो निश्चय ही बहुगुणा के विचारा का प्रतिनिधित्व करती है इस विलय के विरुद्ध सवसम्मति स एक प्रस्ताव भी पास कर दिया।

जगजीवनराम के फैसले से बहुगुणा को बहुत क्षोभ हुआ। लेकिन चो चपड करने के बाद उन्होन उस फैसले का स्वीकार किया। उनके लिए यह एक अस्थायी गँठजोड है—उनकी वहाँ जगह नही है।

टिप्पणियाँ

1 लेखक के साथ हेमवतीनदन बहुगुणा की बातचीत।
2 उमा वासुदेव की पुस्तक टू फेसेज आफ इन्दिरा गाधी मे उद्धृत।

6

राजनारायण—"अखाडा राजनीति"

चौधरी चरणसिंह फोन को पाकर हैरान भी थे और खुश भी। फोन ऐसे आदमी ने किया था जिसकी आवाज सुनने की उन्हें उम्मीद नहीं थी। उन दिनों यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि राजनारायण उनको फोन करेंगे। इससे भी बड़ी बात यह थी कि उनकी आवाज काफी बदली हुई लग रही थी, बहुत मुलायम और खुशामदाना।

'आप कब से मेरे खादिम हो गये ?" चरणसिंह ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, "हाँ मिलना चाहते हैं तो जरूर आइये आपको कौन रोक सकता है ?"

चरणसिंह और उनके साथ बैठे उनकी पार्टी के एक सदस्य के लिए यह बड़े आश्चर्य का विषय था। राजनारायण अपने आपको चरणसिंह का खादिम कहें ! यह अपने-आप में एक खबर थी। वर्षों से राजनारायण चरणसिंह की निंदा करते आ रहे थे। सबसे पहले उन्होंने ही बी० के० डी० के इस नेता को 'चेयर सिंह' कहा था और उनका मजाक उड़ाया था। सी० बी० गुप्ता के इस ढोलकिये ने अचानक कैसे रंग बदल लिया ? उन लोगों ने गौर किया कि फोन करने के पीछे राजनारायण का क्या मकसद हो सकता है। राज्य सभा के चुनाव (1974) नजदीक थे और एक उद्योगपति के० के० बिड़ला के खिलाफ राजनारायण चुनाव लड़ रहे थे। बिड़ला को इंदिरा गांधी का आशीर्वाद प्राप्त था और विधायकों को खरीदने के लिए उनके पास अपार धन था। इसके अलावा यशपाल कपूर जैसा व्यक्ति उनके चुनाव का संचालन कर रहा था। चरणसिंह ने सोचा कि फोन करने की यही वजह होगी।

और सचमुच यही वजह थी। दो वर्ष पूर्व राजनारायण को अपमानित करके सोशलिस्ट पार्टी से निकाला गया था और उनके गुट में जो लोग बच रहे थे उनका महत्व इतना ही रह गया था कि कुछ गुलगपाड़ा कर सकते थे। हमेशा से राजनारायण के दो ही आदर्श रहे हैं—हनुमान और लक्ष्मण। दोनों सेवक थे। वह खुद नेता बनने में यकीन नहीं रखते थे। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत लोहिया के सबसे बड़े सेवक के रूप में शुरू की थी। लोहिया की मृत्यु के

वाद राजनारायण सी० बी० गुप्ता के सेवक हो गये, जो लोहिया से सबसे ज्यादा नफरत करते थे। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि राजनारायण ने अपने गुरु के जीवन-काल में ही सी० बी० गुप्ता के साथ चुपके चुपके संबंध बना लिया था। लेकिन गुप्ता को खुद ही 1974 के विधान सभा चुनाव में पराजय का सामना करना पड़ा था। और अब नाटे कद का वह राजनीतिज्ञ पान दरीबा स्थित अपने मकान में बैठकर घावों को सहला रहा था और हैरान हो रहा था कि धूर्त बहुगुणा ने उसके साथ कौन-सी चाल चली थी। सी० बी० गुप्ता अब राजनीति में हिस्सा लेने के मूड में नहीं थे—कम से-कम फिलहाल वह राजनीति से अपने को अलग रखना चाहते थे। अब वह राजनारायण पर भी पैसा खर्च करने के मूड में नहीं थे। बहुत हो चुका। बेचारा राजनारायण बुरी तरह से किसी नये गुरु की तलाश में था और वह किसी ऐसे आदमी को ढूंढ रहा था जो गुप्ता से नफरत करता हो। चरणसिंह अगर धनी किसानों के नेता हैं तो क्या फर्क पड़ता है! क्या राजनारायण उनसे भिन्न हैं? वह बनारस राज्य के संस्थापक बलवंतसिंह के साथ अपनी वंशावली जोड़ते हैं और जहाँ तक समाजवाद का प्रश्न है वह तो लोहिया के साथ ही आया और चला गया। अक्सर उनके दोस्त उनसे पूछ बैठते हैं, 'आपका समाजवाद हनुमान चालीसा' में से कैसे निकला?" बचपन से ही वह अपनी दादी के परम भक्त रहे हैं, जिन्होंने उन्हें उस उम्र में ही 'रामायण' के दोहे रटा दिये थे। तब उन दोहों का अर्थ भी उन्हें नहीं मालूम था। बाद में राममनोहर लोहिया के चरणों में पड़े-पड़े उन्होंने अपने गुरु के सारे नेहरू-विरोधी और राजवंश विरोधी नारों को तोते की तरह रट लिया। इन नारों से उन्हें उस समय अपने आपको छिपाने में बड़ी मदद मिलती थी जब वे जयपुरिया और मोदी तथा मोहननगर के शराब-व्यापारियों के साथ छिपे तौर पर लेन देन कर रहे होते थे। अंतत राजनारायण ने सही गुरु की तलाश कर ली—इस गुरु के पास पृथ्वीनाथ सेठ और मोहनसिंह ओबेराय-जैसे लोग थे। राजनारायण के लिए वही बिलकुल ठीक जगह थी।

फिर भी चरणसिंह हिचकिचाहट में पड़े रहे। वह भूल नहीं पाते थे कि राजनारायण की ही वजह से पहली बार मुख्यमंत्री पद उनके हाथ से निकल गया। वह यह भी नहीं भूल पाते थे कि राजनारायण दिन रात उनके खिलाफ जहर उगलने में लगे थे। 1969 के मध्यावधि चुनाव के अवसर पर राजनारायण ने एक पुस्तिका में लिखा— श्री चरणसिंह का कांग्रेस की नीति से कोई मतभेद नहीं था। जो भी मतभेद थे वे व्यक्तिगत थे हम लोग बराबर चरणसिंह से यह कहते थे कि कांग्रेस-रूपी रावण को खत्म करने के लिए उन्हें विभीषण की भूमिका निभानी चाहिए वह अपने प्रतिक्रियावादी विचारों और कार्यों को नहीं छोड़ सके क्योंकि लगभग बीस वर्ष तक वह कांग्रेस सरकार में मंत्री रह चुके थे। उन्होंने संविद सरकार में शामिल विभिन्न घटकों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने की नापाक कोशिशें कीं। चरणसिंह ने चंदे के रूप में काफी बड़ी रकम भी जुटानी शुरू कर दी।"

तभी राजनारायण के मित्र अर्जुनसिंह भदौरिया और रामनरेश कुशवाहा ने भी—जो उस समय ससोपा के क्रमश अध्यक्ष और महामंत्री थे—चरणसिंह पर सीधा प्रहार किया—'हमने चौधरी चरणसिंह को इसलिए मुख्यमंत्री नहीं बनाया कि वह एक कुशल प्रशासक और ईमानदार आदमी थे। चरणसिंह की बजाय कोई भी आदमी अगर कांग्रेस से सोलह विधायकों को बाहर लाकर संविद में

शामिल हो जाता तो हम उसको मुख्यमंत्री बना देते कांग्रेस से अलग होने के बाद चौधरी साहब ने एलान किया कि कांग्रेस बेईमान लोगों का एक ग्रुप है लेकिन चौधरी साहब का चरित्र उनके कार्यों में ही सामने आ जाता है। उन्होंने मोदीनगर के एक करोड़पति पूंजीपति को 'पदमश्री' दिलायी वह गांधीजी के नाम पर नशाबंदी का बहुत ढोल पीटते हैं, लेकिन इन्हीं चौधरी साहब ने अपने मुख्यमंत्री के कार्यकाल में शराब कारखानों के मालिकों को बढ़ावा दिया। जिन दिनों वह मुख्यमंत्री थे, उन्होंने अपनी पार्टी के लिए लाखों रुपये इकट्ठे किये, लेकिन यह सारा पैसा पार्टी-कोष में नहीं जमा किया गया चौधरी साहब किसी भी कांग्रेसी से कम नहीं हैं ।"

चरणसिंह अपने खिलाफ किये गये इन हमलों को भूल नहीं पाते हैं, लेकिन उन्होंने सोचा कि राजनारायण सी० बी० गुप्ता के हाथ का एक खिलौना-भर है और जब वह उनके सामने दण्डवत करने के लिए तैयार है तो क्यों न उसका इस्तेमाल किया जाये ? इंदिरा गांधी और कांग्रेस इस समय ज्यादा बड़े दुश्मन हैं और उनसे पहले निपटना ज्यादा जरूरी है। के० के० बिडला की हार इंदिरा गांधी की हार होगी। यह सोचकर चरणसिंह खुश हो रहे थे और उनको यह आशा भी हुई कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में वापस आने का उनका सपना पूरा हो सकता है। उन्होंने अपनी पार्टी को निर्देश दिया कि राज्य-सभा के चुनाव में वह राजनारायण का समर्थन करे। इस प्रकार उन्हें एक सेवक मिल गया।

कुछ लोग जन्म से ही राजनीतिज्ञ होते हैं, कुछ राजनीतिज्ञ बनते हैं और कुछ के ऊपर राजनीति थोप दी जाती है। राजनारायण अंतिम किस्म के लोगों में से हैं। बनारस में अपने अखाड़े पर उन्हें बहुत गर्व था और आज भी वह डींग हाँकते नहीं थकते कि अगर उन्होंने कुश्ती नहीं छोड़ी होती तो आज एक "बहुत बड़े पहलवान" होते। 1930 वाले दशक के बाद के वर्षों में बनारस छात्र आंदोलन का केन्द्र हो गया था और कम्युनिस्ट एक मजबूत ताकत के रूप में उभर कर आ गये थे। कम्युनिस्ट विरोधी कांग्रेसी नेता किसी ऐसे 'दबंग छात्र' की तलाश में थे जो पहलवान भी हो। उनके लिए अखाड़ेबाज राजनारायण वरदान साबित हुए। उन्हें नेता बना दिया गया, लेकिन राजनीति को उन्होंने अपने अखाड़े के मैदान से ज्यादा नहीं समझा। चाहे यह मजदूर आंदोलन हो या किसान-आंदोलन उनकी शैली और तरीका हमेशा अखाड़े वाला ही तरीका रहा— दांव पेंच, लगी मुक्का।"[2]

जून 1970 में राजनारायण सोनपुर (बिहार) में ससोपा के अधिवेशन में गये और साथ में गुंडों का एक गिरोह लेते गये। इसके नेता थे लखनऊ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्र-नेता सत्यदेव त्रिपाठी, जो आजकल उत्तर प्रदेश में मंत्री हैं। कानपुर के एक तथाकथित मजदूर नेता भी हैं जिनका संपर्क बदमाशों और सी० आई० ए० दोनों से है। वह भी एक बस में हट्टे कट्टे लोगों को भरकर सोनपुर ले गये, ताकि जरूरत पड़ने पर शारीरिक बल का प्रयोग किया जा सके। उन दिनों पार्टी में अपने साथियों से राजनारायण की लड़ाई चल रही थी और यह सारी तैयारी राजनारायण का सिक्का जमाने के लिए की गयी थी। कांग्रेस संगठन के हाथों बल्कि सी० बी० गुप्ता के हाथों समाजवादियों को बेच देने के काम में राजनारायण ने कुछ उठा नहीं रखा। सम्मेलन में जैसे ही उनकी पार्टी के कुछ सदस्यों ने उन पर गुप्ता का 'एजेंट' होने का आरोप लगाया, उत्तर प्रदेश से वहाँ

पहुँची भीड ने जोर शोर से नारे लगाने शुरू कर दिये—"जो राजनारायण से टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।" सम्मेलन के मुख्य संयोजक खुद ही बिहार के मिनी राजनारायण थे। इनका नाम था भोलाप्रसाद सिंह, जिनके नाम के साथ कई काड जुडे हुए है। सम्मेलन मे भाग लेने वालो के मेजबान थे भूतपूर्व जमीदार, जो अब ठेकेदारी करते थे और पास म ही एक होटल चलाते थ। इस होटल के साथ भी अजीबोगरीब किस्से जुडे हुए है। 'समाजवादी आदोलन' के शुभचितको को बडे भोलेपन से यह कहते सुना जा सकता था, "इन सोशलिस्टो को क्या हो गया है!"

कुछ महीना बाद एक अनोखा दृश्य देखने को मिला। 1970 मे उत्तर प्रदेश विधान सभा के शीतकालीन अधिवेशन मे ससोपा, सिंडीकेट काग्रेस और जन सघ के सदस्य जो इससे पहले के अधिवेशन मे विपक्ष की बेंच पर बैठते थे अब बी० के० डी० के साथ ट्रेजरी बेंच पर बैठे हुए थे। सिंडीकेट काग्रेस के सदस्य कृष्णानद राय, जिन्होने चरणसिंह को कभी "बेईमान और झूठा आदमी' के सिवा कुछ नहा कहा, और ससोपा के अनतराम जायसवाल जो हमेशा चौधरी को "जनतत्र का दुश्मन" कहते थे आज बी० के० डी० के अध्यक्ष से सटकर बैठे हुए थे। चरणसिंह और सी० बी० गुप्ता को बगलगीर देखकर ऐसा लगता था जैसे इनकी बडी पुरानी दोस्ती है।

सत्ता के ये नये हिस्सेदार सदन मे उन्ही कानूनो की दुहाई दे रहे थ, जिनको यह पहले "गैर जनतात्रिक और तानाशाहीपूर्ण" कहा करते थे। और 'लोकप्रिय जनतात्रिक आदोलनो के महारथी" राजनारायण समाजवादी युव जन सभा के अपने साथियो को डाँटने म लगे थे, क्योकि वे लोग उसी विश्वविद्यालय (सशोधन) अध्यादेश के खिलाफ आदोलन की कोशिश कर रहे थे, जिसे कभी राजनारायण ने 'काला कानून' कहा था। युव जन सभा के नेता सत्यदेव त्रिपाठी मुख्तार अनीस जितेन्द्र अग्निहोत्री तथा अन्य लोगो पर गरजते हुए राजनारायण बोले, "तुम लोग इदिरा गाधी के एजेंट हो।"

एक नौजवान ने पलट कर जवाब दिया "तुम सी० बी० गुप्ता के एजेंट हो।"

राजनारायण के समाजवादी चोले को हटाकर अगर कोई देखने की कोशिश करे तो उसे असलियत का पता चल सकता है। हवाई जहाज से उनके आन-जाने का खर्च, टेलीफोन के प्रति उनका अतिरिक्त लगाव और दारुलशफा (लखनऊ म विधायको का निवास-स्थान) मे उनके जिगरी दोस्तो का खर्च—इन सब पर मिलाकर उन दिनो राजनारायण कम स कम दस हजार रुपया महीना खर्च करते थे। सबको पता था कि जिस फिएट कार म वह दिन रात घूमते रहते हैं सी० बी० गुप्ता ने दी है। सिंडीकेट के इस नेता ने राजनारायण के अखबार जनमुख को भी कई लाख रुपये देने का वायदा किया था। इसके अलावा उद्योगपतियो और शराब-व्यापारियो तथा राजनीतिक समर्थको के लिए शराब के लाइसेंस और कोल्डस्टोरेज बनवाने के परमिट का इतजाम करने म भी फायदा ही फायदा था। 'दारुलशफा म उनके व्यक्तिगत स्टाफ म एक रसोइया कुछ नौकर मालिश करने के लिए एक तगडा आदमी एक हिन्दी टाइपिस्ट एक हिन्दी शॉर्टहैंड एक अँग्रेजी टाइपिस्ट (जी हाँ, अँग्रेजी टाइपिस्ट) और नियमित आने-जाने वाले गुण्डे लोग शामिल थे। इसके अलावा महीने म कम स-कम दस बार वह हवाई जहाज से सफर करते थ। चार सौ से पाँच सौ लिटर पेट्रोल खर्च करते थ, टेलीफोन एव

हजार फोन आते-जाते थे और कम-से-कम पचास टककाल महीने मे किया करते थे। इन सबको अगर एक साथ देखे तो उनके औसत खच का अदाजा लग जायेगा ।"

समाजवादी युव-जन सभा के आदोलनकारियो के विरोधी रवैये को देखकर राजनारायण ने नये दाव-पेंच का सहारा लिया। उ हाने एक लडके को छाँट लिया और उससे वायदा किया कि यदि प्रदशन के सयोजको को मात देन के लिए वह भारी सख्या म युवको की भीड इकट्ठी कर सके तो उसे समाजवादी युव जन सभा की राज्य शाखा का अध्यक्ष बना दिया जायेगा। वह लडका जाल म फँस गया, लेकिन कुछ कर नही सका। राजनारायण को डर था कि अगर प्रदशनकारियो ने पुलिस का घेरा तोड दिया और लाठी चाज हो गया तो उनकी बडी बदनामी होगी। असल मे उन्होने ही सरकार मे ससोपा को शामिल होन के लिए मजबूर किया था। सरकार म शामिल होने के पक्ष म दी गयी सारी दलीलो की छीछालेदर होने का खतरा पैदा हो गया था।

वह दौडते हुए दारुलशफा के उस फाटक की तरफ बढे जो विधान सभा माग की ओर खुलता था। जैसे ही प्रदशनकारी वहा पहुँचे राजनारायण ने उन्हे रोक दिया और कहा, "तुम लोग जीत गये। तुम्हारा मकसद पूरा हो गया। अब पुलिस की गाडी मे तुम लोग बैठ जाओ।' वह ड्यूटी पर तैनात पुलिस अफसर की तरफ बढे और उनसे अनुरोध किया कि ऐसी कोई कारवाई न की जाये जिससे लडके भडक जायें। उन्होने कहा कि 'वे आपकी गाडी मे खुद ही बैठ जायेंगे।" वह चुपचाप खडे गिरफ्तारी देखते रह। प्रदशनकारियो मे मौजूद जनेश्वर मिश्र को यह सब बहुत नाटकीय लगा और वह चीख पडे, "यह डिमास्ट्रेशन है या नौटकी ?" वह इसे असली राजनारायण-छाप तमाशा बनाना चाहते थे और सडक पर चित्त लेट गये ताकि पुलिस उन्हे अपनी गाडी म न ले जाये। फिर उन्हे जबदस्ती टाग कर पुलिस वाला ने उठाया। राजनारायण बहुत खुश होकर यह सब देखते रहे। उ ह खुशी थी कि उनकी पार्टी जिस सरकार मे शामिल है उस सरकार ने एक शातिपूण प्रदशन की अनुमति दे दी।

1971 के लोक सभा चुनाव मे ससोपा को करारी हार मिली जिससे पार्टी की हालत खराब हो गयी। अपनी नुमायशी मुद्राओ और उलट फेर के बावजूद लोहिया तथ्यो और आकडो का एक ऐसा तानावाना बुन सकते थे जिसस यह भ्रम होता था कि कोई बहुत गहराई म जाकर नीति तैयार कर रहे हैं, लेकिन उनकी मत्यु के बाद यह भाड राजनारायण सामने आये, जो एक स्टटबाज के अलावा और कुछ नही हैं। इनकी पार्टी ने 1971 मे 17 राज्यो म 93 सीटा पर चुनाव लडा था जिसमे से केवल तीन सीटा पर उसे कामयाबी मिली साठ उम्मीदवारा की जमानतें जब्त हो गयी। 1967 मे पार्टी को कुल 72 लाख वोट मिल थे, 1971 मे यह सख्या घटकर 45 लाख हो गयी और इसी प्रकार कुल वोट 4 92 प्रतिशत स घटकर 3 42 रह गये। बिहार मे ससोपा समर्थित मयुक्त मोर्चा सरकार के होने के बावजूद पार्टी के वोट 18 प्रतिशत से घटकर 7 प्रतिशत रह गये थे और खुद राजनारायण के राज्य मे यह 10 27 प्रतिशत से घटकर 3 7 रह गये थे।

पार्टी के महासचिव जाज फर्नाडीज ने राजनारायण को एक पत्र लिखा कि वह उत्तर प्रदेश म सविद सरकार से ससोपा को बाहर निकाल लें। लेकिन राजनारायण तैयार नही हुए। बिहार मे कर्पूरी ठाकुर मुख्यमत्री पद की कुर्सी से चिपक कर बैठे रह।

अप्रैल मे पटना मे पार्टी का अधिवेशन हुआ, जिसने दगल का रूप ले लिया। गरमागरम बहस के दौरान फर्नांडीज पत्रकारो को लेकर बगल के कमरे म चल गये और उन्होने आरोप लगाया कि "धोखाधडी, पैसा, षडयत्र और दाव पेंच" के जरिये राजनारायण और रामसेवक यादव का गुट पार्टी पर कब्जा करना चाहता है।

राजनारायण के बडे करीबी दोस्त यादव को हावडा स्टेशन पर आबकारी विभाग के अधिकारियो ने अवैध रूप से नशीली दवाएँ ले जाने के आरोप म एक फस्ट क्लास के डिब्बे से पकड लिया था। राजनारायण के अनेक घनिष्ठ मित्र और रिश्तेदार भारत-नेपाल-सीमा पर चालू लोगो की सूची म हैं। इनम से एक सदिग्ध व्यक्ति, जो गोरखपुर मे ससोपा के कार्यकर्ता थे आज यू० पी० म मत्री है। राजनारायण का एक भाई जो बनारस का एक कुख्यात बदमाश है, अक्सर बिहार-यू० पी०-सीमाचौकी पर देखा जाता रहा है। इसी चौकी स होकर सारी तस्करी होती है और अवैध चीजें आती जाती है। आबकारी विभाग का एक इस्पेक्टर गाजे की तस्करी के आरोप मे मुअत्तिल किया गया और आश्चय की बात है कि उसके राजनारायण से बडे घनिष्ठ सबध थे। शायद ऐसे लोगो के साथ उनके सबधो की वजह से ही पार्टी के उनके अन्य मित्रो ने बार-बार यह आरोप लगाया है कि वह "गाजे के तस्करो के प्रति उदार हैं।" एक लोहिया भक्त पर यह आरोप लगाया जाना कैसा हास्यास्पद है!

पटना अधिवेशन मे राजनारायण के विरोधियो ने जितनी उनको दबाने की कोशिश की वह उतने ही दगल के चैंपियन बनकर सामने आ गये। 'साधन और भीड जुटान" म माहिर राजनारायण के खिलाफ उनके विरोधियो की दाल नही गल सकी।

अपन एक समय के आका लोहिया से उन्होने बस एक ही गुरुमन्त्र प्राप्त किया था— "विरोध और आदोलन।" उनका जीवन लिखन के बार म उत्सुक एक अनुयायी का राजनारायण न लिखाया था—' राजनारायण कभी छुट्टी नही मनात। गर्मी हो या सर्दी वह हमेशा चलत रहत है। उनकी जिंदगी घटनाओ के इर्द गिर्द चक्कर लगाती है। वह खुद ही घटनाएँ पैदा करत है कही कुछ हो गया तो फौरन वहाँ के लिए रवाना हो जात है और प्रत्येक घटना म से वह कोई और घटना पैदा करने की कोशिश करत हैं ।'

राजनारायण कहीं जान के लिए तभी राजी होते है जब उन्ह यह यकीन हो जाय कि उनके पहुँचन पर एक तूफान खडा हो जायगा। उनके लिए विधान मडल और ससद कुश्ती के अखाडा से ज्यादा महत्त्व नही रखत। 1953 म जब वह पहली बार उत्तर प्रदेश विधान-सभा म पहुँचे तो बहस के दौरान वह एक मुद्दे पर अड गय और उन्होन ऐसा उपद्रव मचाया कि उनका घसीट कर बाहर निकालने के लिए मार्शल को बुलाना पडा। इस घटना क बारे म अखबारो म चर्चा हुई जिसस उन्हे भविष्य क लिए भी इसी शैली को अपनान क लिए प्रोत्साहन मिला। विधान-सभा म अपन पहले दिन के नाटक के बार म वह बताते हैं वह एक एतिहासिक दिन था 4 मार्च 1953। उसी दिन रूस का खूख्वार तानाशाह स्तालिन मरा था।" यदि किसी के पास धीरज हो तो वह अपने महान कार्यों की ऐति हासिक तारीखो को गिनाते जायेंगे, जिनमे वह दिन और समय भी शामिल होगा जब उन्होने सी० बी० गुप्ता क सर पर स गाधी टोपी उतार ली थी। कहा जाता

है कि उस टोपी को अपनी बहादुरी की यादगार के रूप मे वह आज भी रखे हुए है।

उनके जीवन का एक महान क्षण सितम्बर 1958 मे आया, जब वह और उनके कुछ सोशलिस्ट दोस्तो ने उत्तर प्रदेश विधान सभा मे एक तरह से दगा मचा दिया और इन लोगो को सदन से बाहर निकालने के लिए लौह टोपधारी पुलिस की मदद लेनी पडी। उ होने साढे तीन मन वजन के अपने शरीर को फश पर डाल दिया और लोगो को धक्का देन और खीचने के लिए छोड दिया। लगभग आधा दजन पुलिस के जवानो ने मिलकर उ्हे खीचना शुरू किया और तब कही उन्हे बाहर निकाला जा सका। इस खीचतान म सबसे पहले उनका कुर्ता फटकर तार तार हो गया और जब तक उन्हे बाहर सडक तक पहुँचाया गया, उनके शरीर पर केवल एक लँगोटा रह गया था। वहा खडे दशको को ऐसा लगा जैसे वह अखाडे म चित्त पडे किसी पहलवान को देख रहे हो।

जे० पी० ने जब बिहार मे अपना आदोलन छेडा तो राजनारायण अपने नये मालिक चरणसिंह का पगहा तुडा कर पटना की ओर भागे। अपने साथियो के बीच ठहाके लगाते हुए और शोरगुल मचाते हुए वह पजाब मेल से एक छोटे मोटे बवडर की तरह बाहर निकले। लेकिन इसके साथ ही उनकी तीखी निगाह गभीर और खिन्न चेहरा लिये किनारे खडे पुलिस अफसरो और जवानो पर चली ही गयी। पुलिस की तरफ से वह तब तक बेखबर बने रहे जब तक एक अफसर ने आकर यह नही बताया कि उन्हे बिहार राज्य से बाहर निकाल देने का आदेश मिला है। राजनारायण तनिक भी घबराये नही। इस तरह की स्थितियाँ तो वह पसद ही करते है। उनकी आखो म एक नयी चमक आ गयी।

'कहाँ है वह आँडर ?" उन्होने झगडे की मुद्रा मे सवाल किया।

जब वह अफसर कोई लिखित आदेश नही दिखा सका तो राजनारायण ने उसे व उसके स्टाफ को किनारे कर दिया और प्लेटफार्म से बाहर निकलने वाले फाटक की तरफ अकडते हुए बढ चले। पीछे-पीछे उनके लँगोटिया यारो का हुजूम चल रहा था।

थोडी देर बाद पुलिस के अफसरो और जवानो ने उन्हे उनके मित्र भोलाप्रसादसिंह के घर पर पकड लिया। इस बार उनके पास लिखित आदेश था लेकिन वह सोचते रहे कि यह आदेश कैसे उन्हे दिया जाये। वे राजनारायण को नही जानते थे। लगभग आधी रात हो चुकी थी और भोलाप्रसादसिंह के ड्राइग रूम मे बैठा मजिस्ट्रेट लगातार इतजार करता रहा और बगल के कमरे मे राजनारायण अपने दोस्तो के साथ गप करने मे मशगूल थे। अत मे अपने कमरे से निकलने के बाद वह गरज पडे, 'कहाँ है वह आँडर ?"

पुलिस-अफसर न उन्हे आदेश दिखाया। चेहरे पर अजीब नाखुशी का भाव लिये राजनारायण उस आदेश का देखते रहे और फिर मजिस्ट्रेट को वापस लौटाते हुए उन्होने कहा, 'इस आडर स काम नही चलेगा।"

वह अफसर आश्चयचकित रह गया और विनम्रता से उसने पूछा, "क्यो, सर ?"

'क्यो ? क्योकि तुम्हारा आडर यह कह रहा है कि मुझे बिहार म घुसने की इजाजत नही है। ठीक है ? अब तुम देखो कि मैं बिहार की सीमा म इतनी दूर तक चला आया हूँ और मैं अपने दोस्त के घर तक पहुँच गया हूँ। तुम अब मुझे कैसे बिहार मे घुसने से रोक सकते हो ? इसलिए तुम्हारे इस आडर स काम नहीं

चलेगा।" आखिरकार राजनारायण ने भी तो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एल-एल० बी० किया था! इससे क्या फर्क पडता है कि उन्होंने महज एक-दो दिन ही वकील की पोशाक पहनी? "इस ऑर्डर से काम नहीं चलेगा—राजनारायण की इस बात को मान लो।" उन्होंने उस अफसर से फिर कहा और घबराहट में खडे पुलिस-अफसर को पीछे छोडते हुए राजनारायण खाना खाने के लिए कमरे के अंदर चले गये।

एक घंटे बाद जब वह ड्राइंग रूम में वापस पहुँचे तो उन्हें उस आर्डर में एक और खामी नजर आयी "यह ऑर्डर तो मेरे लिए है भी नहीं।" उन्होंने पुलिस अफसर से कहा और वह पहले से भी ज्यादा हैरान हो गया। 'राजनारायणजी, मैं आपकी बात समझ नहीं सका।" उसने हक्लाते हुए कहा।

'तुम खुद ही इस ऑर्डर को पढ लो। यह वाराणसी के राजनारायण' के लिए है। वाराणसी में सकडो राजनारायण होंगे। तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि यह मेरे ही लिए है?"

'मगर यह आप ही के लिए है।" मजिस्ट्रेट ने घबराकर कहा।

"कौन कहता है कि यह मेरे लिए है? मैं वाराणसी का राजनारायण नहीं हूँ बल्कि संसद-सदस्य राजनारायण हूँ ।"

पुलिस अफसर ने उस कागज को गौर से देखा और सचमुच उसमें उसे कोई ऐसी बात नहीं मिल सकी जिससे वह निश्चित रूप से साबित कर सके कि यह आदेश संसद सदस्य राजनारायण के लिए ही है।

वहाँ मौजूद एक पत्रकार ने पुलिस-अफसर की तरफ से बातचीत में हस्तक्षेप किया और कहा, बिहार के सारे अफसर केवल एक राजनारायण को जानते हैं, जिसका वजन साढे तीन मन है।"

ठहाकों के बीच राजनारायण ने "फिर से विचार करने के लिए" उस आदेश को अपने हाथ में ले लिया।

"लगाओ फोन चरणसिंह को।" उन्होंने अपने मेजबान से कहा।

जब कई बार नम्बर घुमाने पर भी चरणसिंह से बात नहीं हो सकी तो राजनारायण ने कहा, "गवर्नर को फोन लगाओ।"

उन लोगों ने राज भवन का नम्बर घुमाना शुरू किया, लेकिन उधर से कोई जवाब नहीं आया। रात का एक बज रहा था। दो बजने तक भी किसी से बात नहीं हो सकी तब उन्होंने गुस्से में कहा इंदिरा के गुलाम भी वैसे ही हैं।' थोडी देर रुककर उन्होंने फिर आदेश दिया, 'फिर लगाओ चीफ मिनिस्टर को।'

मुख्यमंत्री अब्दुल गफूर उतनी रात में भी जगे हुए थे और वे मिल गये।

"यह सब क्या तमाशा मचा रखा है?" राजनारायण फोन में चीख पडे और साथ ही अपने लँगोटिया यारों की तरफ आँख मारते हुए मुसकरा पडे। वहाँ मौजूद सारे लोग मजा ले रहे थे।

काफी देर तक अब्दुल गफूर से बहस होने के बाद राजनारायण ने कहा, 'ठीक है ठीक है, जो मन में आये करो। कृष्णवल्लभ सहाय (बिहार के एक भूतपूर्व मुख्यमंत्री) ने भी मुझे 1967 में राज्य से बाहर निकालने का आदेश दिया था और आप भूले नहीं होंगे कि उनके साथ क्या हुआ। आप भी ऐसे ही जाओगे।'

अपने खास लापरवाह अंदाज में अब्दुल गफूर ने कहा 'ठीक है एक दिन तो सबको जाना है।'

राजनारायण ने तपाक से जवाब दिया, 'आप सही फरमाते हैं लेकिन जल्दी जाने और देर मे जाने मे फर्क है।"

उन्होने फोन पटक दिया और चिल्लाते हुए तथा डीग मारते हुए कमरे मे चहल-कदमी करने लगे, लेकिन माहौल म किसी तरह का तनाव नही आया। आधी रात को भाण्डो-जैसे नाटक के दौरान राजनारायण को सबसे ज्यादा चिंता यह थी कि अगले दिन सवेरे अखबारो मे इस घटना की सही खबर आती है कि नही। उन्हे यकीन था कि वहा रुके तो एक मामूली सी सभा मे भाषण देना होगा, लेकिन बिहार से सवेरे निकाल दिये गये तो उनको बहुत ज्यादा फायदा होगा।

लखनऊ मे अपने एक आदोलन के दौरान राजनारायण ने पुलिस के साथ मिलकर पहले से यह इतजाम कर रखा था कि चार जवान उन्हे टागकर पुलिस की गाडी तक ले जायेंगे, ताकि प्रेस-फोटोग्राफरो को एक नाटकीय तस्वीर खीचने का मौका मिले। पुलिस के जवाना ने जब उन्हे उठाया तो पता चला कि वह तो बहुत भारी है। उन्होने राजनारायण को धप से जमीन पर पटक दिया। जब तीन बार उन्हे ऐसे ही उठा-उठा कर पटका गया तो वह गुस्से मे चीखते हुए उठ खडे हुए और बोले, "मैं खुद ही चला जाऊँगा।"

रायबरेली से विजयी होकर जब वह लौटे तो पहले से भी ज्यादा हास्यास्पद हो गये थे, उनकी चाल पहले से ज्यादा इतरायी हुई थी बातचीत मे पहले से ज्यादा मौजीपन था और उनके मजाको मे एक नया फूहडपन था। वह 'जायट किलर' थे—भीम मदक—और यह दावा कर सकते थे कि अकेले ही उन्होने भारतीय इतिहास की धारा को मोड दिया। वह पालम हवाई अड्डे के बाहर खडी कार के ऊपर चढ गये और फिर 'राजनारायणपन' की हरकतें शुरू कर दी। इस तरह की हरकतें अब तो इतनी ज्यादा हो चुकी है कि अब उनमे मजा नही आता है, पर आनद के उन दिना मे "मम्मी-मम्मी कार गयी कार गयी सरकार गयी" के नारो के बीच रायबरेली के उस महारथी के मुह से जो कुछ भी निकलता था लोग लपक्कर उसे रोक लेते थे। अपने ऊँचे मच से अपने अल्यूमीनियम के सोटे को हिलाते वह वेदो और कुरान के उद्धरण दे रहे थे लेकिन यह पता नही चल रहा था कि इन मत्रो व आयतो का मौका क्या है। वह कह रह थे 'इस्लाम के पैगम्बर का कहना है कि जिस दिन से तुमने इस्लाम को कबूल कर लिया तुम मुसलमान बन गये, पहले तुम चाहे जो रहे हो। *गीता का भी यही कहना है कि* ।" उनका मतलब शायद जनता पार्टी मे उन लोगो के शामिल होने से था। फिर वह कार से नीचे उतरना चाहते थे लेकिन भीड उन्हे उतरने ही नही द रही थी। भीडम खडे लोग उनसे बहुत कुछ सुनना चाहते थे और राजनारायण भी यह बताने के लिए बहुत बेताब थे कि किस तरह उन्होने 'इदिरा नेहरू-गाधी" का चुनाव म हरा दिया। वह तब तर्क बताते रहे जब तक बोलते बोलते हाफने नही लगे और उनका चेहरा पसीने से तर-बतर नही हो गया। उनकी लहराती हुई दाढी पसीने से गीली हो चुकी थी और चेहरे से पसीने की बूदें टपक रही थी। भीड को यह देखकर काफी मजा आ रहा था कि वह बार बार अपने बेहद लब कुर्ते के एक सिरे को उठाकर उससे चेहरा और सिर पोछ लेते थे।

अगले कुछ दिन तक वह अपने भूतपूर्व सरक्षक सी० बी० गुप्ता की देख-रख म राजनीतिक जोड-तोड मे लगे रहे। सी० बी० गुप्ता ने अब तक उनके लिए जो कुछ किया था उसकी पूरी कीमत लिये बिना राजनारायण को छोडा नही।

सी०वी० गुप्ता ने ही इन्दिरा गाधी के खिलाफ ऐतिहासिक मुकदमे म उनकी मदद की थी और पैसे दिये थे और उन्होने ही शातिभूषण से अनुरोध किया था कि वह राजनारायण की तरफ से मुकदमे मे पैरवी करें।

प्रधानमत्री का चुनाव होने के बाद राजनारायण सीधे आगरा के पास की गुफाओ मे बैठे अपने महान गुरु समई बाबा के पास गये। लोक-सभा के चुनाव प्रचार के दौरान जब वह आगरा के पास किसी सभा मे भाषण देने गये थे तो उनके एक मित्र ने उन्हे बाबा के दर्शन कराये थे। राजनारायण का कहना है "मैंने बाबा से आशीर्वाद चाहा था। बाबा ने थोडी देर के लिए अपनी आखें बद कर ली थी और अचानक गेंदे के फूल से बनी एक माला उठाकर कुछ मत्र पढते हुए उसम से दस फूल निकालकर मुझे दिये थे। बाबा ने उन फूलो को खा जाने का आदेश दिया और मैंने वे सारे फल खा लिये थे। बाबा ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुए कहा था—चुनाव लडो, तुम्हारी विजय होगी। मुझे अपनी जीत के कारणो का पता है। ये कारण हैं—भगवान शिव की भक्ति, जेल मे मेरी तपस्या और समई बाबा का आशीर्वाद।" राजनारायण फिर बाबा से सलाह और दीक्षा लेने जा रहे थे। "बाबा ने मुझसे कहा कि मत्रिमडल म मुझे शामिल हो जाना चाहिए और उन्होंने मुझे कुछ पेडे दिये।"

अगले दिन वह अपनी अकडी हुई चाल से राष्ट्रपति-भवन के अशोक हाल म पहुँचे। उनके साथ लगभग एक दजन उनके लँगोटिया यार थे। उन्होने गभीर मुद्रा मे बैठे मोरारजी देसाई के सामने झुककर उन्हे पेडा दिया। शिष्टाचार के आग्रही देसाई ने राजनारायण की तरफ इस तरह देखा जैसे वह मन ही मन कह रहे हो कि 'यह आदमी कभी नही बदल सकता,' और फिर वह मुसकरा पडे। इस बीच राजनारायण इस महत्वपूर्ण अवसर के उपयुक्त गभीरता से बैठे अपने अन्य साथियो की ओर बढ गये। यदि किसी व्यक्ति को देखकर यह कहा जा सकता था कि तीस वर्षीय काग्रेस शासन का अत हो चुका है तो वह राजनारायण ही थे। मच की तरफ शपथ-ग्रहण करने के लिए जाने से पूर्व उन्होने कार्यकारी राष्ट्रपति बी० डी० जत्ती के मुह म थोडा-सा पेडा ठूस दिया।

अब स्वास्थ्य मत्री राजनारायण का भाण्डपन शुरू हो गया था—"परिवार नियोजन ? मैं इस शब्द से नफरत करता हूँ। इससे नसबदी की बू आती है। यह बहुत अमानवीय काम है। आप मवेशियो को बधिया बनाइये आदमियो को नही। अब इसका नाम परिवार नियोजन से बदलकर परिवार कल्याण कर दिया जाय।" डॉक्टरो और अपने मत्रालय के अफसरो के साथ होने वाली बैठको म जो कुछ होता था वह किसी नाटक के लिए पर्याप्त मसाला है। मत्रालय मे एक क़िस्सा काफी प्रचलित है और अपने अमेरिकी पाठको के लिए वेद मेहता ने इसी किस्म का वर्णन इस प्रकार किया है—

राजनारायण ने अपने बडे-बडे अफसरो को बुलाया और पूछा, 'किस अधिकार से आप लोगो ने अपने भाईयो की नसबदी की ?'

"सर, आप जानते हैं कि किसने आदेश दिये थे।'

'कहाँ हैं वे आदेश ? मुझे दिखाओ। उन आदेशो के साथ के कागज कहाँ हैं ?"

'सर, वह आदेश कभी लिखित रूप म नही मिला।'

उन्होंने अपने हर एक अफसर को पत्थर पकडाया और अपने कमरे के कमरे के बीचोबीच खडा करते हुए कहा, 'इस कलक को आप लोग पत्थर मारो। मैं

आदेश देता हूँ मैं इस पर पत्थर मारने का आदेश दे रहा हूँ और आप लोगो मे कोई हरकत नही हो रही है, लेकिन जब उसने एक आदेश दिया था तब तो अपने भाईयो के लिए चाकू उठाने मे भी आप नही हिचकिचाय।"[4]

मत्री महोदय का मकान एक पागलखाना-जैसा लगता है। चाहे आप किसी भी समय क्यो न जायें, इस मकान पर आपको राजनारायण के कई छुटभये मिल जायेंगे। कोई सोफे पर पसरा होगा तो कोई फश पर, और कोई तख्तपोश पर खर्राटे ले रहा होगा। मन्त्री महोदय खुद फश पर चटाई बिछाकर उस पर बैठकर काम करना पसद करते है। उनके चारो तरफ दीवारो पर माला पहने देवताओ की तस्वीरें लगी होती है और इनके बीच मे लोहिया की एक तस्वीर होती है। मेज और अलमारी म दवाओ के ढेर दिखायी पडेंगे। कमर मे एक लुगी लपेटे वह मालिश कराते होगे और अटेंशन की मुद्रा मे डॉक्टर खडे मिलेगे। राजनारायण उनसे लगातार सवाल करते जायेंगे—इनमे ज्यादा सवाल डायबिटीज के बारे मे होग, क्योकि वह खुद भी इस रोग से पीडित है और इस बीमारी के कारण उनको खाने की आदतो पर रोक लगानी पडी है। कमर के बराबर म "कुआरे लोगो के अड्डे" के सदस्य-जैसे लोग आते-जाते नजर आयेंगे।

लेकिन 61 वर्षीय राजनारायण कुआरे नही है। कुआरा होना दूर रहा, उनका अपना एक बहुत बडा परिवार भी है। लेकिन वह उसके बारे मे बात करना पसद नही करते। अगर कोई उनकी पत्नी और बच्चो के बारे मे सवाल करता है तो वह ऐसी मुद्रा बनाते हैं कि उनसे किसी पिछले जन्म के बारे मे पूछा जा रहा हो। वह जवाब देते हैं, "मुझे कुछ नही पता। मैं काफी दिन से ब्रह्मचारी हूँ, लेकिन जहाँ तक मेरा खयाल है, मेरी पत्नी बनारस मे रहती है। मेरा खयाल है कि मेरा एक लडका खेती-बाडी का काम देखता है। मेरा एक लडका शायद कही सरकारी नौकरी मे है और एक लडका कही पढ रहा है।"[5]

किस्सा यह है कि मत्री बनने के बाद उनके कुछ समथक लोग गाव से जाकर उनकी पत्नी को ले आये। राजनारायण ने अपनी पत्नी को देखकर पूछा "यह कौन है ?"

उनके प्रशसको ने जब बताया कि वह उनकी पत्नी है तो उन्होने कहा, "अच्छा यही है ? मैंने वर्षों से नही देखा।" और अगले ही क्षण 'नेताजी' अपने और भी बडे 'परिवार' मे डूब गये ! अपने आस-पास के जमावडे मे तल्लीन हो गये।

उनके एक प्रशसक ने उनके बारे मे लिखा है 'कुछ लोगो के लिए राजनीति एक पेशा है लेकिन राजनारायण के लिए यही उनकी जिंदगी है।"

राजनारायण का पारिवारिक सबधो और पत्नी और बच्चो के प्रति सामान्य मानवीय सवेदनाओ से कुछ भी लेना देना नही है। कई वष पहले की बात है लखनऊ म ससोपा की एक बैठक मे वह भाग ले रह थे कि उन्हे पता चला कि बनारस से उनके नाम टक-काल आया है। वह उठकर बाहर गये और फोन से बातचीत करने के बाद लौट आये। बैठक पहले की तरह चलती रही लेकिन बीच म ही लोहिया ने उनसे पूछा कि फोन किसका था। राजनारायण ने उनसे बताया कि बनारस से एक सूचना थी कि उनके सबसे बडे लडके की मत्यु हो गयी है। जितने साधारण ढग से राजनारायण ने बताया उससे लोहिया सन्न रह गये। उन्होंने जल्दी-जल्दी एक शोक प्रस्ताव पास किया और बैठक स्थगित कर दी, लेकिन राजनारायण घर नही गये।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के बारे म राजनारायण के विचार वही से निकले हुए लगते हैं जहाँ उनके समाजवादी विचारो का जन्म हुआ है। गाँव की भीड म बोल रहे हो, या अतर्राष्ट्रीय समारोह म, उनका अदाज यही रहता है–' स्वास्थ्य ही देश के स्वास्थ्य की कुजी है।" अगला वाक्य होता है–"समझे ? कुछ नहीं समझे।" और इसके बाद वह राम, कृष्ण और मोहम्मद साहब का उदाहरण दे देकर यह साबित करने म जुट जाते हैं कि छोटा परिवार ही सर्वोत्तम परिवार है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण-मत्री बनने के फौरन बाद उन्होंने एलान किया कि सरकार हर उस व्यक्ति को पाँच हजार रुपये बतौर मुआवजा देगी जिसकी जबरदस्ती नसबदी की गयी है। जब उनसे बताया गया कि इस घोषणा का क्या असर पड सकता है तो उन्हो कहा, ' एकदम बकवास। अगर कोई धनी आत्मा विमान-दुर्घटना म मर जाता है तो उसे कानूनी तौर पर एक लाख रुपये मुआवजे के रूप म मिलते हैं और अगर मेरी जबरदस्ती नसबदी की गयी है तो क्या मुझे पाँच हजार भी नही मिल सकता ?"

अपने नये आका चरणसिंह के लिए राजनीतिक जोड-तोड करने और समई बाबा तथा अन्य योगियो, गुरुओ, तान्त्रिको के दर्शन करने के लिए की जाने वाली यात्राओ के बीच से राजनारायण इतना समय निकाल लेते हैं कि वह ' नगे-पैर डॉक्टरो" और ' लैंगिक सयम" की आवश्यकता के बारे मे अपने सिद्धातो को प्रतिपादित कर सकें। यहाँ तक कि उन्होंने लदन मे रहने वाले भारतीयो को भी जाकर बता दिया कि जनता पार्टी का मत्री कैसा होता है। उन्होने अंग्रेजी विरोधी के रूप म प्राप्त अपनी शोहरत को बनाये रखने की कोशिश की और वहाँ के भारतीयो के बीच बोलते हुए कहा, "मैंने शेक्सपीयर, हिल्टन मिल्टन आदि सबको पढा है, लेकिन मैं यह नही बर्दाश्त कर पाता हूँ कि अंग्रेज तो चले गये, पर अग्रेजी अभी चल रही है मैं यह नही समझ पाता हूँ कि क्यो अंग्रेजी रानी बनी रहे और तेलुगु दासी।"

अगर लदन के भारतीयो को राजनारायण के शब्दो से और व्यवहार से किसी शर्मिंदगी का सामना करना पडता है तो इसमे राजनारायण की कोई गलती नहीं है। अगर प्रवासी भारतीय नेहरू, मेनन और पहले आने वाले तमाम भारतीय मत्रियो को याद नही भूल पाते है तो इसमे राजनारायण का कोई कुसूर नही है। राजनारायण आज भी वही हैं जो पहले थे। समय या स्थान या श्रोताओ के स्वभाव से उनके अदर कोई फर्क नही पडता। बनावट के लिए वह अपनी शैली और तौर तरीको को नही छोड सकते। भारत मे जिस तरह ट्रेनो और हवाई जहाजो को देर कराने की आदत पड गयी है, उसी के अनुसार कुवैत मे एक अतर्राष्ट्रीय उडान पर जा रहे विमान को देर कराने का उन्हें कोई अफसोस नही था। वह बडे आराम से बैठे रहे और इस बीच उनका सहायक ड्यूटी फ्री शॉप से एक ट्राजिस्टर खरीद कर दौडता हुआ वापस पहुँच गया। जहाज के कप्तान ने अपनी लाग-बुक म इस विलब का कारण 'यातायात की भीड बतायी। कुवैत एयर इडिया ने इसके कारण वाले कालम मे लिखा— वी० वी० आई० पी०'।

देश और विदेश मे लगातार मनोरजन की सामग्री जुटाने वाले राजनारायण ने एक मत्री के रूप मे भारत के स्वास्थ्य के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान किया है—उन्होने शोध करने के लिए अपना मस्तिष्क दान मे दे दिया है!

टिप्पणियाँ

1 राजनारायण के एक पुराने साथी से लेखक की बातचीत।
2 दारुलशफा मे राजनारायण के एक पडोसी की लेखक से बातचीत।
3 लखनऊ के एक पुलिस-अफसर का विवरण।
4 वेद मेहता की राजनारायण से बातचीत, द न्यूयाकर, 17 अक्तूबर 1977
5 वही

7

चन्द्रशेखर—बलिया का उग्र सुधारवादी

जे० पी० का वस चलता और अपनी वात पर अडे रहने की उनम ताकत होती तो वह चन्द्रशेखर को ही जनता सरकार का पहला प्रधानमत्री बनाते।

मार्च 1977 मे जनता पार्टी की जीत के बाद जे० पी० ने कई वार कुछ नौ जवान करीबी लोगों से, जो चन्द्रशेखर के मित्र थे इस 'दिली ख्वाहिश' का इजहार किया था। जे० पी० इस सरकार को एक 'नया युवा रूप' देना चाहते थे—वह नही चाहते थे कि शुरू से ही यह सरकार बीते दिनो के बूढे दकियानूस लोगो का बोझ ढोती रहे।

मोरारजी देसाई के प्रति जे० पी० के मन म कभी कोई लगाव नही रहा। दोनो के भीतर एक-दूसरे के प्रति गाठें बनी हुई थी। ज्यादा दिन नही गुजरे हैं जब देसाई ने उन्हें 'एक ऐसा डोलता हुआ पेंडुलम" कहा था' जिस पर भरोसा नही होता।" उन्होने जोर दकर कहा था कि जे० पी० के घोर कम्युनिस्ट विरोध का कारण उनके 'विश्वास नही उनकी निराशा और असफलताएँ हैं।' [1] इन टिप्पणियो को जे० पी० आसानी से नही भुला सके।

चौधरी चरणसिंह के बारे मे तो जे० पी० ने इतना सोचा भी नही—उन्हें यकीन ही नहीं था कि चरणसिंह जाट-स्थान से आगे भी कुछ सोच सकते है। चरणसिंह ने जे० पी० के आदोलन का खुले आम विरोध किया था और सयुक्त विरोधी दल बनाने की उनकी योजनाओ का गुड गोवर किया था। प्रधानमत्री-पद पर चरणसिंह को बिठाने के लिए जे० पी० कभी राजी नही हो सकते थे।

जनता त्रिमूर्ति के तीसरे व्यक्ति जगजीवनराम के प्रति जे० पी० के मन म हमेशा स्नेह रहा है। जगजीवनराम इन्दिरा मन्त्रिमडल के एक वरिष्ठ मत्री थे जिन्होने बिहार-आदोलन के दौरान कभी जे० पी० पर व्यक्तिगत आक्षेप नही किये थे। वह जे० पी० के व्यक्तित्व की खुले आम प्रशसा करते थे, जिससे उनके बारे म इन्दिरा गाधी का शक और भी गहरा हो गया था। जब तक बिहार आदोलन चलता रहा जे० पी० को यह आशा बनी रही कि जगजीवनराम इन्दिरा गाधी का खुले आम विरोध करके उनकी तरफ आ जायेंगे। लेकिन जगजीवनराम

ने इन्दिरा गांधी का साथ देकर व देवीजी के प्रति अपनी चाटुकारिता का खुला प्रदर्शन कर जे० पी० को बहुत निराश कर दिया था।

इसीलिए जनता पार्टी के तीनो दिग्गजो मे से किसी के प्रति जे० पी० के मन म उत्साह नही था। लेकिन वह अपने विचारो को खुले आम व्यक्त नही कर सके। उन्होने बहुधा प्रसोपा के पुराने सदस्य चन्द्रशेखर की तारीफ की है—एक उग्र सुधारवादी के रूप मे चन्द्रशेखर चर्चित हो चुके थे। इससे भी बडी बात यह थी कि वह उन विरले कांग्रेसिया मे थे, जिन्होने इन्दिरा गाधी का विरोध किया था और अपनी पत्रिका **यग इडियन** मे अपने हस्ताक्षर से लिखी गयी सपादकीय टिप्पणियो मे इन्दिरा गाधी को चेतावनी दी थी कि सरकार की समूची ताकत भी जे० पी० को शिकस्त नही दे सकती, क्योकि जे० पी० का हथियार ही दूसरा है। चन्द्रशेखर को प्रलोभन दिया गया कि वह जे० पी० को समर्थन देना बद कर दे तो उन्हे इन्दिरा गाधी मत्री बना देंगी लेकिन उन्होने परवाह न की। चन्द्रशेखर विरोधी दल के नेताओ के साथ जेल म रहे। लोक-सभा-चुनाव की घोषणा के बाद इन्दिरा गाधी ने उनको अपनी तरफ मिलाने की कोशिश की लेकिन वह नही माने।

इस पृष्ठभूमि मे लगता था कि जे० पी० जैसा प्रधानमत्री चाहते हैं वैसे चन्द्रशेखर ही हैं। लेकिन जे० पी० अपने विचार कुछ ऐसे लोगो को छोडकर, जिनका कोई महत्व नही था किसी के सामने नही रख सके। जे० पी० और चन्द्रशेखर के चारो ओर मँडराने वाले कुछ नौजवानो की इच्छा थी कि भूतपूर्व "युवा-तुर्क" नेता के समर्थन मे जे० पी० खुले आम बोलें। जे० पी० की खामोशी पर उनको बहुत झल्लाहट हुई। जे० पी० के बारे म उनकी धारणा यह बन गयी कि "वह ऐसे बूढे व्यक्ति हैं जो अपना काम तो कराना चाहते हैं लेकिन ज़बान से कहने मे शर्माते है।"

शराफत की बात अलग रही जे० पी० जानते थे कि उन्होने चन्द्रशेखर का नाम लिया तो एक तूफान खडा हो जायेगा। बूढे नेता उन पर टूट पडेंगे और खिसियानी बिल्ली की तरह उन्हे नोचने लगेंगे। यह हुआ तो जनता पार्टी को टूटने से कोई रोक नही पायेगा। सर्वोदय आदोलन के अधिकतर सहयोगी मोरारजी देसाई को प्रधानमत्री बनाने के लिए दबाव डाल रहे थे। जे० पी० शारीरिक व मानसिक तौर से इस स्थिति म नही थे कि इन दबावो का विरोध कर सकें। इसीलिए उन्होने भी देसाई का ही समर्थन किया।

लेकिन वह इस बात के लिए बहुत उत्सुक थे कि चन्द्रशेखर को कम-से कम जनता पार्टी का अध्यक्ष तो बनाया ही जाये और इसके लिए ज़ोर देने म उन्हे कोई हिचकिचाहट नही हुई।

मई 1976 म जसलोक अस्पताल मे और बाद म समाचार-पत्रो के एक व्यवसायी आर० एन० गायनका के गेस्ट-हाउस म बीमारी की हालत म जब उनकी ज़िंदगी एक के बाद एक डायलेसिस पर चल रही थी, जे० पी० न पूरी ताकत लगाकर एक नयी पार्टी बनाने की कोशिश शुरू की थी। तब उनके कुछ नौजवान अनुयायियो ने सवाल किया कि "इस नयी पार्टी का अध्यक्ष कौन बनेगा?" जे० पी० ने कहा, "मैं चन्द्रशेखर को अध्यक्ष बनाना चाहता हूँ।"[2]

चन्द्रशेखर तब तक जेल से छूटे नही थे। उन लोगो ने सोचा कि बिना उनकी रज़ामदी के अध्यक्ष के रूप मे उनका नाम एलान करना ठीक नहीं होगा। दयानदसहाय को जेल मे चन्द्रशेखर से मिलने की इजाज़त पहले ही मिल गयी थी।

वह हरियाणा जाकर उनसे बातचीत करने के लिए राजी हो गये।

सहाय ने जब चन्द्रशेखर को जे० पी० का प्रस्ताव बताया तो चन्द्रशेखर बहुत गद्गद हुए लेकिन उन्होंने कहा कि विरोधी दलों में एकता होती नजर नहीं आती। चन्द्रशेखर की जेल डायरी में जगह-जगह पर विरोधी दलों के नेताओं के एक जगह इकट्ठा होने, या उनमें कभी एकता कायम हो पाने के बारे में संदेह व्यक्त किये गये हैं। 5 मई 1976 को उन्होंने अपनी डायरी में लिखा—'विरोधी दलों की एकता के जो प्रयास चल रहे हैं उनमें कुछ ज्यादा उम्मीद करना व्यर्थ है। कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत करने की बात तो दूर रही, उनके लिए साथ-साथ काम करना भी कठिन है। इतने अहंकारी लोग क्या कभी जनता की बात सुन सकेंगे ?"

दयानंदसहाय ने चन्द्रशेखर से कहा, "मैं आपसे 'हां' सुने बिना नहीं जाऊंगा। जे० पी० ने खास तौर से आपकी अनुमति लेने के लिए मुझे भेजा है। यह उनकी अंतिम इच्छा है ।"

"ठीक है, अगर यह जे० पी० की अंतिम इच्छा है तो किसी तरह की बहस का सवाल ही नहीं पैदा होता, मेरे सामने कोई दूसरा चारा नहीं है।" चन्द्रशेखर ने जवाब दिया।

दिल्ली वापस लौटने पर सहाय ने सोचा कि अशोक मेहता से मिला जाय और उनको जे० पी० के प्रस्ताव की जानकारी दे दी जाये। अशोक मेहता कुछ ही पहले जेल से छूटे थे। यह सुनते ही कि नयी पार्टी बनाने की योजना है और चन्द्रशेखर को अध्यक्ष बनाया जायेगा, वह बहुत अप्रसन्न दिखायी दिये। दयानंदसहाय से उन्होंने चिढ़कर कहा "एक नयी पार्टी का अध्यक्ष आप लोग तय करने जा रहे हैं ?"

सहाय ने बताया कि जे० पी० का ऐसा ही विचार है, लेकिन अशोक मेहता उखड़ पड़े और उन्होंने कहा, "दयानंद, इस बूढ़े आदमी पर तुम ठीक ढंग से नियंत्रण नहीं रख पाते। वह किस तरह की पार्टी बना सकते हैं ? जो आदमी हफ्ते में तीन दिन मरा रहता है बिहार और यू० पी० से परे कुछ देख ही नहीं सकता, जिसकी निगाह के दायरे में गिन-चुने सोशलिस्टों को छोड़कर और कोई आता ही नहीं वह किस बूते पर नयी पार्टी बनायेगा ?"[3]

अशोक मेहता की इस प्रक्रिया से दयानंद हक्के-बक्के रह गये। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में चन्द्रशेखर मेहता के पुराने सहयोगी थे। योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद पर मेहता की नियुक्ति से जो विवाद पैदा हुआ था उसको लेकर ही चन्द्रशेखर ने 1964 में प्रसोपा से इस्तीफा दिया था।

फिर दयानंदसहाय चन्द्रशेखर के एक पुराने साथी कृष्णकांत से मिलने गये। उनकी भी प्रतिक्रिया कम विचित्र नहीं थी। कृष्णकांत ने कहा कि चन्द्रशेखर अभी जेल में हैं उन्हें शायद सब लोग स्वीकार भी न करें। उन्होंने दयानंद से पूछा, "मुझे क्यों नहीं अध्यक्ष बना दिया जाता ?"

कृष्णकांत ने जाकर जे० पी० से भेंट की और उन्हें सलाह दी कि नयी पार्टी के गठन का विचार कम से-कम छह महीने तक के लिए स्थगित रखें। उन्होंने कहा सबसे पहले समर्थकों को तैयार करना जरूरी है। आप देश भर में बिखरे सर्वोदयी लोगों की सूची मुझे दें और छह महीने तक मैं सब जगहों का चक्कर लगाता हूँ। फिर हम नयी पार्टी बना सकते हैं। दयानंद और चन्द्रशेखर के अन्य साथियों को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने जे० पी० से कहा कि कृष्णकांत उनकी योजना को खत्म करना चाहते हैं। उन्हें लगा कि चन्द्रशेखर के मित्र भी चन्द्रशेखर

को आगे बढने देना नही चाहते।

जे० पी० की योजना चली नही। बी० एल० डी० के अध्यक्ष ने पहले ही उसे खत्म कर दिया था। 9 जून 1976 को चरणसिंह ने एक वक्तव्य के द्वारा अपनी पार्टी को निर्देश दिया कि वह सघष समिति के किसी भी आदोलन म भाग न ले। कुछ दिन बाद उन्होने नयी पार्टी के बारे मे जे० पी० की घोषणा की खुले आम आलोचना की।

जेल की काठरी मे बद इन घटनाओ का सिंहावलोकन करते हुए चन्द्रशेखर ने भी चरणसिंह की इस राय को सही माना कि नयी पार्टी का गठन करना और आदोलन की बात करना दो बातें है जो एक साथ नही चल सकती। उनका खयाल था कि देश मे अब शातिपूण अहिंसात्मक आदोलन की तनिक भी गुजाइश नहीं है।

अपनी डायरी म चन्द्रशेखर ने लिखा— "काका (चरणसिंह) ने बडा उत्तम किया। चू चू का मुरब्बा यदि न ही बन तो बडा भला है। अगर कही बनकर सड गया, जो होगा ही, तो एक मुसीबत होगी। हमारे-जैसे लोगो के लिए अलग बैठे रहना भी मुश्किल होगा, और इन सबका साथ निभा पाना तो असभव जान पडता है।"

जिस दुर्गति की उन्हे आशका थी उसी मे उन्ह बाद मे फँसना पडा।

1962 मे जब चन्द्रशेखर राज्य-सभा के सदस्य बनकर दिल्ली आये तो आदशवाद उनके दिल म हिलोरें ले रहा था। अधिकतर मन्त्रियो और ससद सदस्यो के रहन-सहन और उनकी जीवन शैली को देखकर उन्ह बहुत आश्चय हुआ। जब कभी वह दावतों या पार्टियो मे उनके घर जाते तो देखकर हैरान हो जाते कि देश की समस्याओ पर बातचीत करने की बजाय ये नेता अपने मकान के फर्नीचर-पर्दो ड्राइग रूम की सजावट व सचिवो और अफसरो से अपने सम्बधो के बारे मे ज्यादा दिलचस्पी लेते थे। चन्द्रशेखर को ऐसा लगा कि इन नताओ ने गाधीवादी मूल्यो को पूरी तरह भुला दिया है। खुद सादा जीवन बिताकर अपने अफसरो के रहन-सहन मे तबदीली लाने के बजाय राजनीतिज्ञो ने अफसरो की ही नकल शुरू कर दी है। एक तरफ तो वे त्याग और तपस्या का नाम लेते हैं, ससद-सदस्य या मन्त्री के रूप मे वे नाममात्र के लिए वेतन स्वीकार करते हैं और दूसरी तरफ रईसो की जिंदगी की नकल मे लग रहते हं। उन दिनो चन्द्रशेखर को लगा कि यह एक बहुत बडा पाखण्ड है।

उनके लिए यह एक तरह का सास्कृतिक सदमा था। जनता के जिस वग से वह आये थे वह एकदम भिन्न था उसकी आशाएँ एकदम भिन्न थी। आचाय नरेन्द्रदेव की विचारधारा से ओत प्रोत वह नेहरू के एकदम भिन्न ससार मे पहुँच गये थे जहाँ राजनीति भी अलग-अलग दर्जों और वेतनो वाली एक नौकरी की तरह थी।

इस धकापेल म शामिल होने का उनका इरादा नही था। राजनीति म वह इसलिए नही आये थे। इलाहाबाद से राजनीति विज्ञान मे एम० ए० करने के बाद उन्होने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय म शोध करना चाहा था और विषय भी तय कर लिया था— 'राजनीतिक आदोलन पर आर्थिक सिद्धातो का प्रभाव।" लेकिन उन्ही दिनो महान समाजवादी नेता आचाय नरेन्द्रदेव से उनका सपर्क हुआ और उन्होंने सलाह दी—"अगर देश बरबाद हो रहा हो तो रिसच करने से क्या

फायदा ? तुम शोध करके क्या करोगे ? यह तुम्हारे किस काम आयगा ?"

तब उनके जीवन की धारा ही बदल गयी। 1951 में वह प्रसोपा के होल टाइमर हो गये और लगभग एक वर्ष बाद जिला प्रसोपा के महामंत्री बनकर बलिया चले गये। पार्टी के टुकड़े होने के बाद उन्हें लखनऊ भेज दिया गया, जहाँ वे 1954 मे उत्तर प्रदेश प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के संयुक्त सचिव और 1957 में पार्टी के राज्य-सचिव बनाये गये।

जयप्रकाश नारायण से उनका पहला सम्पर्क 1951 मे हुआ। उन दिनों उन्होंने इलाहाबाद शहर सोशलिस्ट पार्टी के सचिव के रूप मे काम शुरू किया था। तब नौजवानो मे जे० पी० एक आदर्श नायक की तरह पूजे जाते थे। चन्द्रशेखर उनके व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित हुए लेकिन वह कभी उनके अंध भक्त नही बने। दरअसल जे० पी० जब सर्वोदय आदोलन मे शामिल हो गये तो इस फैसले की आलोचना करने वालों मे चन्द्रशेखर सबसे प्रमुख थे। इनकी आलोचना का स्वर भी बहुत तीखा था। उन्हे ऐसा लगा कि जे० पी० ने नौजवानो की उम्मीदो से छल किया है। 'भूमिगत शेर' और "भारत के लेनिन" के नाम से एक ज़माने मे विख्यात इस व्यक्ति ने अचानक अपने को राजनीति की मुख्यधारा से काट लिया। चन्द्रशेखर को लगा कि यह अपने से संबद्ध लोगो को दगा देना है और राजनीति की सच्चाईयो से मुह चुराना है।

1957 मे चन्द्रशेखर लोक-सभा का चुनाव लडे लेकिन हार गये। इसके पांच वर्ष बाद वह राज्य-सभा के लिए प्रसोपा की ओर से चुने गये। उन दिनो नेहरू कमजोर पडते जा रहे थे और उन्होंने सारे "अच्छे सोशलिस्टो' से अपील की थी कि वे काग्रेस के हाथ मजबूत करें। चन्द्रशेखर उन लोगो मे थे जिन्हे प्रसोपा के अदर एक अजीब-सी बेचैनी महसूस हो रही थी। समाजवादी आदोलन बुरी तरह टुकडे-टुकडे हो गया था और उसके नेताओ मे कोई जान नही रह गयी थी। पुराने ज़माने के दिग्गजो और वर्तमान के बौने लोगो के फर्क का असर कांग्रेसियो से भी पहले सोशलिस्टो पर पडा। चन्द्रशेखर को लगा कि ऐसी पार्टी मे बने रहने का कोई मकसद ही नही है, जिसकी देश का भविष्य बनाने मे कोई भूमिका न हो। उनके वरिष्ठ साथी अशोक मेहता पहले ही नेहरू-समर्थक हो चुके थे। चन्द्रशेखर अभी उस सीमा तक जाने के लिए तैयार नही थे और अक्सर अशोक मेहता की आलोचना किया करते थे। लेकिन जब योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद पर मेहता की नियुक्ति का सवाल सामने आया और पार्टी के सदस्यो ने इसका जबर्दस्त विरोध किया तो चन्द्रशेखर ने अशोक मेहता का पूरी तरह समर्थन किया। चन्द्रशेखर उन लोगो मे थे, जो यह सोचते थे कि देश की योजना बनाना सर्वदलीय काम होना चाहिए और प्रसोपा के किसी व्यक्ति को योजना आयोग का उपाध्यक्ष बनाया जाता है तो इसमें कोई हर्ज नही है।

प्रसोपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने जब आयोग का पद ग्रहण करने के अशोक मेहता के फैसले से अपने को अलग कर लिया और उनसे इस्तीफा देने को कहा तो चन्द्रशेखर ने भी पार्टी छोड दी।

जनवरी 1965 में वह कांग्रेस पार्टी मे शामिल हो गये। बहुतो का कहना है कि वह अशोक मेहता आई० के० गुजराल ओम मेहता, राजा दिनेशसिंह तथा अन्य लोगो के साथ "बैक बेंचर्स क्लब' के सदस्य बन गये। ये सभी समाजवाद की बातें करते थे पर उनका एकमात्र उद्देश्य देश की नेता के रूप में इंदिरा गांधी की तस्वीर को उभारना था। चन्द्रशेखर आज ज़ोरदार शब्दो में कहते हैं

कि वह कभी इस 'क्लब' के सदस्य नही थे।

उनका कहना है, 'दरअसल मैं इस गुट का कडा आलोचक था। मैं सोचता था कि यह फालतू लोगो का गुट है जो हवा मे बातें करते है। एक बार उनमे से कुछ ने यह कहना शुरू किया कि जनता को आदोलित करने के लिए गाधीजी की तरह सारे देश का भ्रमण करना चाहिए। मैंने छूटते ही सवाल किया कि तुमम से कौन गाधी है! वे खामोश हो गये।"

लालबहादुर शास्त्री की मत्यु से कुछ दिन पूव इस गुट की एक बैठक इन्दिरा गाधी के मकान पर हुई। चन्द्रशेखर के कुछ दोस्त इन्दिरा गाधी से मिलने के लिए उन पर दबाव डाल रहे थे। "आपको उनमे एक बार बातचीत करनी चाहिए—उनका कहना था। मैं इन्दिरा गाधी के घर गया और एक घटे तक उनसे अकेले म बातचीत की। मैंने उनसे साफ साफ कह दिया कि मैं पार्टी को समाजवादी नही मानता हूँ। मैं कोशिश करूँगा कि काग्रेस को या तो समाजवाद का साधन बना दू या उसे तोड दूँ। केवल काग्रेस के प्रति मेरे दिल म कोई प्यार नही है।"

जाहिर है चन्द्रशेखर अपने आदशवाद को बहुत महत्व देते थे शायद जरूरत से ज्यादा। काग्रेस पार्टी के लिए वह आदशवाद एक बोझ था, जिसके बिना भी उसका काम चल सकता था। पर धीरे धीरे पार्टी मे उनकी जगह बनती गयी। नेहरू-परिवार के दो चमचा—राजा दिनेशसिंह व ओम मेहता—से उनकी पहले ही गहरी छनने लगी थी। बलिया के यह उग्र सुधारवादी राजनीति को त्याग व तपस्या समझते थे, लेकिन दिल्ली के उच्च वग की चमक-दमक का उन पर भी असर होने लगा। वह समझने लगे कि उनकी उग्र सुधारवादी तस्वीर व उनका सादा जीवन उनके रास्ते म रुकावट भी है और उनकी पूजी भी। उनकी यह तस्वीर लोगो के मन को भाती थी, इसलिए उन्होने तय किया कि चाहे जो हो, इस तस्वीर को बनाये रखेंगे।

1967 मे वह सवसम्मति से काग्रेस ससदीय पार्टी के सचिव चुने गय तो सभी को आश्चय हुआ। प्रसोपा के उनके एक भूतपूव साथी ने कहा कि यह उग्र सुधारवादी अपना काम मजे म चला रहा है।

यह महज इत्तफाक की बात है कि वह काग्रेस पार्टी के एक "क्रुद्ध युवा" के रूप मे राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो गये। योजना आयोग की एक बैठक के दौरान जिसमे वह सावजनिक लेखा समिति के सदस्य की हैसियत से मौजूद थे उन्हे औद्योगिक लाइसेंसिंग के बारे मे हजारी रिपोट की चचा एक अधिकारी के मुह मे सुनने का मौका मिला। उन्होने रिपोट की एक प्रतिलिपि प्राप्त कर ली, जिसमे बिडला के उद्योग समूह के बारे मे विस्तत जानकारी दी गयी थी। उन्होने इस सबध मे प्रधानमत्री और काग्रेस ससदीय दल की कायकारिणी को कई ज्ञापन दिय, लेकिन कोई नतीजा नही निकला।

अचानक चन्द्रशेखर बिडला साम्राज्य के भयानक आलोचक बन गय थे। उन दिनो मोरारजी देसाई वित्त-मत्री थे और राज्य-सभा म उनके और चन्द्रशेखर के बीच कई बार मुठभेड हो गयी। अनेक लोग उन्हे "युवा-तुक" कहने लगे। उनके बारे मे कहा जाने लगा कि वह काग्रेस के अदर ऐसा आदोलन चला रहे हैं, जिसमे पुराने दक्षिणपथी नेता अलग पड जायें।"

चन्द्रशेखर का यह विश्वास होने लगा कि नौकरशाहा और बडे व्यापारियो के प्रभुत्व वाले इस समाज मे वह एक विद्रोही है। लेकिन कुछ ऐसे लोग भी थे जो कहते थे कि चन्द्रशेखर किसी दूसरे औद्योगिक सस्थान के लिए काम करते हैं और

यह औद्योगिक मस्थान विडला-समूह की अपेक्षा किसी सूरत मे ज्यादा अच्छा नही है। 1968 मे काग्रेस के फरीदाबाद अधिवेशन म अखिल भारतीय काग्रस कमेटी के एक नौजवान सदस्य ने चन्द्रशेखर पर आरोप लगाया कि शातिप्रसाद जैन-जसे उद्योगपति उनकी मदद कर रहे ह। चन्द्रशेखर के मित्र युवा तुर्क मोहन धारिया ने इसका तेज स्वर से विरोध किया और काग्रेस-अध्यक्ष निजलिगप्पा स आग्रह किया कि झूठे आरोप लगाने की अनुमति न दी जाय। निजलिगप्पा न इस आपत्ति पर कोई ध्यान न दिया और कहा कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्य जो चाह कह सकते हैं।

चन्द्रशेखर बहुत गुस्से म थे और इदिरा गाधी के कमरे म क्रोध से टहलत हुए उन्होने कहा कि यदि झूठे आरोपो का यह सिलसिला जारी रहा ता अधिवेशन मे ही वह निजलिगप्पा का पर्दाफाश करेंगे और बतायेंगे कि उद्योगपतियो के साथ उनका क्या रिश्ता है। चन्द्रशेखर का कहना है "इन्दिरा गाधी न ऐसा करने से मुझे रोका। कामराज भी वहा मौजूद थे और उन्होने भी मुझे रोका। मैं बहुत गुस्से म था और मैंने कहा कि अधिवेशन म मैं खुलेआम कहूँगा कि वे लोग निजलिगप्पा को बचा रहे हैं। कामराज न रामसुभगसिंह को निजलिगप्पा के पास भेजा और कहलवाया कि वह उस सदस्य से माफी मांगने को कहे जिसने आरोप लगाये थे। और फिर कामराज ने खुद भी निजलिगप्पा का फटकारा। बाद म उस सदस्य ने माफी माँग ली।"

तूफान शात हो गया लेकिन इस घटना से एक बात साबित हो गयी कि ये नेता गण, जो खुद शीशे के मकानो म रहते हैं, दूसरो पर पत्थर नही फेंक सकते। चन्द्रशेखर ने सोचा कि वह विजयी हो गये है। उन्हे यह भी पता चल गया कि पाखड और भ्रष्टाचार के बीच गुलछर्रे उडाने वाले जमघट म उग्र सुधारवादी का जामा पहनकर आदश नायक बनना कितना आसान है।

चन्द्रशेखर व्यापारियो और उन दोस्तो के बीच फक करना चाहते है, जो इत्तफाक से व्यापार कर रहे है। उनके ऐसे बहुत-से दोस्त हैं जो व्यापार करते है उनको घेरे रहते है और उनके 'उग्र सुधारवाद' का पूरा-पूरा फायदा उठाते है। ऐसे ही लोगो म से एक व्यक्ति की कहानी सुनकर पता चलता है कि रक से कसे राजा बनते हैं।

1960 के दशक के शुरू के वर्षो मे यह व्यक्ति मुजफ्फरनगर के एक बीडी निर्माता की दुकान मे मामूली नौकर था। कुछ ही वर्षों के अदर वह दुकान फेल हो गयी और यह आरोप सुनने मे आया कि उस व्यक्ति ने अपने मालिक की काफी रकम का गबन किया है। उसने खुद बीडियाँ बनाने का काम शुरू किया और वह उद्यमी तो था ही अपनी बीडियो के प्रचार के लिए अक्सर विज्ञापन करने वालो का दल लेकर स्वय घर घर घूमता। कुछ ही दिन के अदर उसने एक काग्रेसी विधायक के घर के पास मकान किराये पर लिया और धीरे धीरे विधायक से उसकी काफी पटने लगी। उसने ज्योतिष का भी थोडा ज्ञान प्राप्त कर लिया। यह ज्ञान राजनीतिज्ञो से निपटने के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होता है। इस व्यक्ति को सी० बी० गुप्ता के बडे मशहूर सिपहसालार बनारसीदास का हाथ देखने का मौका मिला। उसकी कुछ भविष्यवाणियाँ सच भी निकली। इससे सरकार स बस का एक परमिट पाने म उसे मदद मिली और किसी दूसरे की साझेदारी मे उसने यह व्यापार शुरू करने की बात की। फिर उसने लगभग 45

हज़ार रुपये मे अपना शेयर बेच दिया। अब वह और बड़े सपने देखने लगा। तब तक उसके दोस्त राजनीति की दुनिया म अपनी जगह बना चुके थे और उसकी मदद के लिए तैयार थे।

उस उद्यमी व्यक्ति ने दो बीडी एजेंटो के साथ मिलकर एक रोलिंग मिल शुरू की। अपने साझीदारो से उसने एक लाख बीस हज़ार से भी अधिक रुपये इकट्ठा किये और उद्योग विभाग से काफी ऋण लेने का इतजाम कर लिया। उसने कुछ और ऋण लिया और काला बाजार से लोहे की कतरनें इकट्ठी की। अब वह एक स्टील फैक्टरी का मालिक बन गया। उसने कलकत्ता की यात्रा की और वहा से हगरी की एक बेकार पडी भट्टी खरीद लाया।

यह व्यक्ति बीडी निर्माता मे अब इस्पात निर्माता बन चुका था। उसने प्राइवेट लिमिटेड कपनी के रूप मे अपनी फम का रजिस्ट्रेशन करा लिया। उसने प्रलोभना का इस्तेमाल करके कई ऐसे राजनीतिज्ञ भी तैयार कर लिये, जो उसका ढोल बजा सकें। कई विधायक और ससद सदस्य उसका आभार मानते थे और इनमे से एक या दो को तो वह नियमित वेतन भी देता था।

इन्ही दिनो 'युवा-तुर्क' चन्द्रशेखर ने इस व्यक्ति को बढावा देना शुरू किया। वह बलिया मे सयुक्त क्षेत्र म एक लघु इस्पात कारखाना स्थापित करना चाहता था जिसमे आठ करोड रुपये से भी अधिक की लागत लगनी थी। इस परियोजना के पक्ष मे माहौल तैयार करने के लिए तमाम विधायको को ठीक किया गया। उसके समथको मे सबसे आगे एक 'उग्र सुधारवादी' के रहने से उत्तर प्रदेश सरकार भी इस परियोजना को किसी न किसी रूप मे आग बढाने मे दिलचस्पी लेने लगी। एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना की गयी और आश्वासन दिया गया कि इस क्षेत्र के अन्य दावेदारा से कहा जायेगा कि वे उसके पक्ष मे अपने प्राथना पत्र वापस ले लें।

अब भूतपूव बीडी व्यापारी ने बडे व्यापारियो की सारी चालें सीख ली थी। उसने अकबर होटल मे कुछ कमरे अपने नाम से सुरक्षित कर रखे थे, जहा मन बहलाव के लिए हर सभव चीज उपलब्ध थी। वह व्यक्ति बाद मे रौनकसिंह और बी० आर० मोहन की कतार म शामिल कर लिया गया और मारुति प्राइवेट लिमिटेड का एक डाइरेक्टर हो गया। लेकिन यह बता देना चाहिए कि उस आदमी से चन्द्रशेखर की दोस्ती आज की नही है—यह दोस्ती तब से है जब वह मुजफ्फरनगर मे बीड़िया बनाता था।

चन्द्रशेखर एण्ड कम्पनी का एक दूसरा दोस्त' गोरखपुर का एक नौजवान सरदार है, जिसके बारे मे कहा जाता है कि भारत-नेपाल-सीमा पर चलने वाले जाने माने किस्म के व्यापार से उसका सबध है और अन्य तरह-तरह के कारोबार से जुडे होने के साथ-साथ पत्रकारिता के क्षेत्र म भी उसकी पैठ है। अखबार या पत्रिका कैसी भी हो यह हमेशा अन्य धधो पर पर्दा डालने के लिए बडे अच्छे आवरण का काम करती है। सरदार के पास अपने दोस्तो और सरक्षको के लिए एक 'खुला मकान' है जो तरह-तरह के आमोद प्रमोद के साधना से सम्पन्न है। लेकिन यह बता देना जरूरी है कि सरदार के पिता बहुत सत स्वभाव के और धमभीरु व्यक्ति थे।

इतना काफी होना चाहिए। ज्यादा गहराई तक जाने पर अधकार की इतनी परतें मिलेंगी कि देखने से भी नफरत होगी।

उग्र सुधारवाद की यह तस्वीर दिन-ब दिन तेज होती गयी। चन्द्रशेखर का लम्बा कद, पुष्ट शरीर और आकषक दाढी ने इसम मदद पहुँचायी। पार्टियो, दावतो और समारोहा मे उनकी मौजूदगी बहुत साफ झलकती है और उनके दोस्त शराब पीकर जब लड़खडाते और बडबडाते होते हैं चन्द्रशेखर फिर भी गभीर और विचार-मग्न दिखायी देते ह। वह खुद शराब नही पीत, जिसस उनकी तस्वीर म और चार चाँद लग जाते हैं।

इन्दिरा गाधी के साथ उनकी सबसे बडी मुठभेड अक्तूबर 1971 मे शिमला मे हुई थी, जब वह देवीजी के आदेशो की अवहेलना करके केन्द्रीय चुनाव समिति का चुनाव जीत गय। इस विजय को अनक लोगो न मध्यमार्गी नतृत्व के विरुद्ध वामपथियो का विद्रोह कहा था। एक तथ्य जिसे ज्यादा लोग नही जान सके, वह यह था कि चन्द्रशेखर के चुनाव का सचालन शानदार होटल के उस कमरे स हुआ था जिसमे राजा दिनेशसिंह ठहरे हुए थे, जिन्ह इन्दिरा गाधी न दूध की मक्खी की तरह निकाल दिया था। दिनशसिंह इन्दिरा गाधी का अपनी ताकत दिखाने पर तुले थे। चन्द्रशेखर की मदद करन वालो मे कुछ अन्य असतुष्ट कांग्रेसी भी थ, जिनमे कम-से-कम दो केन्द्रीय मत्री और एक मुख्यमत्री शामिल थे। य लोग देवी जी को यह बताना चाहते थे कि उनकी हाई कमान के गठन से वे सतुष्ट नही ह।

उग्रवाद का अपना अलग ही आकषण है। यह ऐसी शराब है, जिसका नशा फौरन होता है। इससे आपके अदर यह एहसास पैदा हो जाता है कि आप अन्य लोगा से विशिष्ट ह। उग्र सुधारवादी के रूप मे ख्याति प्राप्त व्यक्ति सफलता के अपने निजी मानदण्ड स्थापित करता है। यदि किसी राजनीतिज्ञ की उग्रवादिता मे ईमानदारी है तो उसके पास ऐसी शक्ति आ सकती है कि कुर्सी पर बैठे लोग बहुत छोटे दिखायी देने लगें। लेकिन यदि उग्रवादिता ऊपरी है महज एक चोला है तो उसी की शान धुधली लगने लगती है और वह बेचारगी की हालत मे पहुँच जाता है। चन्द्रशेखर की पत्रिका **यग इडियन** उग्र सुधारवादी सपादकीय टिप्पणिया से भरी रहती थी। भारतीय राजनीति और राजनीतिज्ञो की प्रवृत्ति और शैली समझने के लिए वह बहुत शिक्षाप्रद पत्रिका थी। उसके अको मे उग्रवाद और अनैतिक व्यापार का अनोखा मिश्रण दिखायी देता। इसके विशेषाको के अक्सर आधे पृष्ठ विज्ञापना स भरे रहते थे और इन विज्ञापनो म डालमिया और नेवटिया से लेकर मुजफ्फरनगर के रेनबो स्टील लिमिटेड सहित तरह-तरह के व्यावसायिक सस्थानो और पूजीपतियो के प्रतिष्ठानो के विज्ञापन शामिल होत थे। पत्रिका के महज एक अक म 274 पृष्ठ विज्ञापनो से भरे देखे गय।

इन सारी बातो स इन आरोपो को बल मिलता है कि युवातुर्क हर तरह के व्यापारियो और उद्योगपतियो के साथ दात काटी रोटी का सबध रखते थे। ससद मे युवातुर्क हमले करते थे लेकिन अक्सर उनकी नीयत पर शुबहा होता था। कहा जाता है कि भूतपूर्व इस्पात-मत्री मोहनकुमारमगलम पर ससद के अन्दर और बाहर लगातार इसलिए हमले किये जाते रह कि उन्होन बोकारो इस्पात कारखाने को अमेरिकियो के हाथ म नही जाने दिया। आज भी उस जमाने म राजा दिनेशसिंह के मकान पर होने वाली इन उग्र सुधारवादियो की गुप्त बैठको के किस्से सुने जाते हैं। वहाँ से पूरी तैयारी करके य लोग ससद म पहुँचते थे और बोकारो स दस्तूर एण्ड कम्पनी के निकाले जाने के बारे म कुमारमगलम पर ऐसे सवालो की बौछार शुरू कर देते थे, जिनका मकसद उन्ह अपमानित करने के

अलावा और कुछ नही था। दस्तूर एण्ड कम्पनी ने इस्पात-परियोजना को अमेरिकियो के हाथ मे देने की सिफारिश की थी।

ये थे उग्र सुधारवादी!

टिप्पणिया

1 वेनस हैंगन द्वारा **आफ्टर नेहरू हू** मे उद्धत।
2 राज्य सभा के नव निर्वाचित सदस्य दयानदसहाय से लेखक की बातचीत। सहाय बिहार के एक युवा व्यापारी है और जे० पी० तथा चन्द्रशेखर के अनुयायी है। उनकी पत्नी बिहार म जनता सरकार म मत्री है।
3 दयानदसहाय के साथ लेखक की बातचीत।
4 चन्द्रशेखर के साथ लेखक की बातचीत।

8

वाजपेयी—"नेहरू का एक नया रूप"

कीव (सोवियत संघ) म भारतीय छात्रो को प्रधानमत्री देसाई अपना उपदेश पिलाने मे लगे थे— शराब मत पियो अपना खाना खुद पकाओ अगर स्कॉलरशिप काफी नही है तो यहाँ आने के लिए कहा किसने था बोरिया-बिस्तर बाधो और घर जाओ ।' बराबर बैठे वाजपेयी मुसकरा रहे थे और उपदेश का मजा ले रहे थे।

देसाई के अध्यापकीय प्रवचन से आहत लडके विदेश मत्री से दो चार बात करने के लिए वाजपेयी के गिर्द जमा हुए। वाजपेयी के दोस्ताना अदाज से लडको का हौसला बढा और उनमे से एक ने धीरे से कहा "इतनी भयकर ठड मे एकाध घूट गले से नीचे उतारे बिना काम कैसे चल सकता है?" वाजपेयी ने बडी चौकस निगाहो से चारो तरफ देखा—कही देसाई इतने नजदीक तो नही हैं कि सुन ले। फिर कनखी मारकर धीरे से बोले, 'पियो, पियो!" इन दो शब्दो से ही वाजपेयी न उन नौजवान छात्रो के साथ एक दोस्ताना सबध कायम कर लिया।

प्रधानमत्री के सम्मान मे क्रेमलिन मे भोज का आयोजन था। सोवियत-नेता ब्रेझनेव मेहमानो का स्वागत कर रहे थे और घूम घूमकर लोगो से बातचीत कर रहे थे। जब वह एक वरिष्ठ भारतीय पत्रकार के पास पहुँचे तो बडी गमजोशी के साथ हाथ मिलाते हुए बोले—'मुझे खेद है कि आपके प्रधानमत्री शराब नही छूते, पर उम्मीद है आप उनकी कसर पूरी कर लेंगे।' दरअसल उन्हे यह बात अटलबिहारी वाजपेयी से कहनी चाहिए थी क्योकि वह अपने कमज़ोर पेट की परवाह किये बिना टेबुल पर इस तरह टूट पडे थे, जैसे मछली को पानी मिल गया हो।

जब तक साउथ ब्लाक (विदेश मत्रालय) मे वाजपेयी हैं तब तक विदेशो मे फैले भारतीय राजनयिको को चिंतित होने की जरूरत नहीं। नयी दिल्ली म उनसे सवाददाताओं न पूछा कि क्या भारतीय दूतावासो म भी शराबबदी लागू होगी? वाजपेयी ने एक आँख दबाकर अपने उसी खास अदाज म जवाब दिया 'कोई उम्मीद नही।" पत्रकार गद्गद मुद्रा मे बाहर निकले, 'कैसा प्यारा आदमी है!"

लगता है, कम्युनिस्टो को भी वाजपेयी बहुत प्रिय हैं। आप वामपथी बुद्धिजीवियो से बात करिये और वे राशन-पानी लेकर आर० एस० एस० और जन सघ पर टूट पड़ेंगे लेकिन वाजपेयी का नाम आते ही उनकी आवाज मे मिठास आ जाती है—"ओह, वाजपेयी की तो बात ही अलग है। वह बहुत उदार हैं उनके अन्दर हिन्दू कट्टरतावाद नही है। यही वजह है कि आर० एस० एस० के लोग भी उन पर भरोसा नही करते।" ऐसा लगता है, जैसे कम्युनिस्ट वाजपेयी को जन सघ मे अपना आदमी समझते हो—वे उनकी तारीफ के पुल बाध देते है। जैसे जैसे आर० एस० एस० के कट्टर लोगो का हमला उन पर तेज होता जाता है वाजपेयी वामपथियो के चहेते बनते जाते है।

बलराज मधोक का कहना है कि वाजपेयी ने उनसे एक बार बताया था—'अगर मैं आर० एस० एस० मे शामिल नहीं हुआ होता तो मैं निश्चय ही कम्युनिस्ट बन गया होता।" वाजपेयी 1941 मे आ० एस० एस० के सदस्य बने जब उनकी उम्र महज 15 साल थी। लेकिन वह भारतीय राष्टीय काग्रेस के भी सदस्य (1942-43 मे) रह चुके हैं और 1945 मे वह स्टूडेट फेडरेशन से भी सबद्ध थे।

एक बार वियतनाम की यात्रा से वापस लौटने पर वाजपेयी ने छापामार युद्ध के सफलतापूर्वक नेतृत्व के लिए हो ची मि ह की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए उन्हे "आधुनिक शिवाजी" कहा था।

सितम्बर 1971 मे, जब वह जन सघ के अध्यक्ष थे, मास्को की यात्रा पर गये। वहा से उन्होने अपने मित्रो को एक खुला पत्र लिखा कि विदेश आने पर मालूम होता है कि भारत आज कितना अकेला पडा है उसका कोई भी मित्र नही है। उन्होने आगे लिखा—"आज सोवियत रूस को भी भरोसेमद दोस्तों की बडी जरूरत है। अगर भारत इस तथ्य को महसूस कर सके और इसके अनुसार अपनी नीतियो को ढाल सके तो अपने राष्ट्रीय उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सोवियत रूस की मित्रता का इस्तेमाल कर सकता है। लेकिन भारत क्या यह कर पायेगा?"

वाजपयी जवाहरलाल नेहरू के घोर प्रशसक रहे हैं और उनकी विदेश नीति की बुनियादी बातो का समर्थन करते रहे हैं। 1957 मे लोक-सभा मे अपने प्रारभिक भाषण मे उन्होने कहा था कि यदि काग्रेस की जगह पर कोई दूसरी पार्टी भी सत्ता म आती और यदि नेहरू की जगह कोई दूसरा व्यक्ति प्रधानमत्री होता तो भी हमारा देश दोनो महाशक्तियो से अपने को अलग रखने तथा अत र्राष्टीय ममलो पर स्वतत्र निर्णय लेने की नीति अपनाता। वाजपेयी ने लोक-सभा म अपने पहले भाषण से ही लोगो पर काफी प्रभाव डाला था। उनके भाषण का यह अश आज भी याद किया जाता है। 'बोलने के लिए वाक्पटुता की आवश्यकता पडती है लेकिन चुप रहने के लिए वाक्पटुता और सयम दोनों जरूरी हैं।"—यह बात उन्होने अनेक अतर्राष्ट्रीय झगडे झझटो म अनावश्यक रूप से भारत के उलझ जाने की आलोचना करते हुए कही थी। उनका खयाल था कि इस तरह के झगडो म जिनमे हमारा कोई मतलब नहीं भारत को अपनी टाँग नही अडानी चाहिए। विरोधी दल के इस नये सदस्य की वाक्पटुता और शैली से काफी प्रभावित नेहरू ने सदन को बताया कि वह खुद भी नही चाहते हैं कि दुनिया के सारे ममलो म अपने-आपको फँसाये रखें, लेकिन उन्होने कहा "मैं क्या कर सकता हूँ? वे मुझे चुप रहने ही नही देते।"

1960 वाले दशक के प्रारभ मे वाशिगटन स्थित भारतीय दूतावास के एक

समारोह मे डाग हैमरशोल्ड से वाजपयी का परिचय कराते हुए नेहरू ने कहा था—"भारत के उभरते हुए नौजवान सासद।"

नेहरू की मत्यु पर वाजपेयी ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था— सूरज डूब गया है।" उन्होने नेहरू को बेहद ईमानदार और आदर्श-वादी बताते हुए कहा था, "नेहरू कभी किसी प्रकार के समझौते से नही डरे लेकिन उन्होने कभी डरकर समझौता भी नही किया।" वाजपयी उस दिन इतने भाव विह्वल हो गये कि उनका गला भर आया था और उनकी आखें डबडबा आयी थी।

आज भी नेहरू का जिक्र आने पर वह भाव विभोर-से हो जाते है। हाल ही मे प्रकाशित एक इटरव्यू म उ होने कहा 'वे महान नेता थे। उन्होने गलतिया की होगी लेकिन कौन गलतियाँ नही करता ? लेकिन उन्होने भारतीय राजनीति और सस्कृति को एक गरिमा और आभिजात्य प्रदान किया और उन्हें समद्ध किया।"

वाजपेयी कई तरह से नेहरू की कार्बन-कॉपी ही है—यह कथन जनता पार्टी के युवा सासद सुब्रह्मण्यम स्वामी का है। स्वामी वाजपयी के घोर विरोधी माने जाते हैं। कहा जाता है कि स्वामी को इस वाजपेयी विरोध म उन्ह कट्टरपथी आर० एस० एस०-कार्यकर्ताओ का पूरा सहयोग प्राप्त है। 'वाजपेयी भी नेहरू की तरह ही निरर्थक हैं। मैं नही समझता कि उनकी अपनी कोई विचारधारा है।"

अपनी ही पार्टी के अदर से वाजपयी पर इस प्रकार का हमला पहली बार नही हो रहा है। बागलादेश के युद्ध के बाद वाजपयी ने इदिरा गाधी की प्रशसा करते हुए उन्ह दुर्गा का अवतार कहा था और जन सघियो के हमले का शिकार बने थे। ससद के अपने उस भाषण के बाद वाजपयी ने इदिरा गाधी को एक पत्र भी लिखा था। उस पत्र मे वाजपयी ने लिखा कि इस युद्ध मे विजय का श्रेय सिर्फ इदिरा गाधी को ही मिलना चाहिए। इन्दिरा गाधी ने उस 'प्रमाण पत्र' का जमकर इस्तेमाल किया। जो भी उन दिनो इदिराजी के घर जाता था, उसे वे वह पत्र जरूर दिखाती थी। यह उस दल के अध्यक्ष का पत्र था, जिसे इदिरा गाधी का सबसे बडा विरोधी माना जाता था।

1972 मे जन सघ के भागलपुर-अधिवेशन मे कुछ सदस्या ने इस पत्र पर काफी शोर गुल मचाया। उन लोगो ने इस मुद्दे पर लबी बहस की माग की। जनरल कौंसिल की गुप्त बैठक आरभ हुई। बैठक आरभ होने से पहले वाजपेयी ने स्पष्ट कर दिया कि उनका इस बैठक की अध्यक्षता करना उचित नही होगा क्योकि बैठक म आलोचना के विषय वे ही होगे। उनका आग्रह था कि वे मच पर भी नही बैठेंगे बल्कि बहस के दौरान वे दर्शको के बीच रहगे। उपाध्यक्ष डाक्टर भाई महावीर को अध्यक्षता करने के लिए कहा गया। बहस की समाप्ति के बाद वाजपयी ने कहा कि मैं माननीय सदस्या की भावनाओ को समझ रहा हूँ और मैं यह भी महसूस कर रहा हूँ कि मेरे उस पत्र के कारण दल को नुकसान उठाना पडा है। उ होने कहा 'मैंने यह नही सोचा था कि इदिरा गाधी और उनकी पार्टी के लोग मेरे उस पत्र का दुरुपयोग करेंगे। मैं भ्रम मे था।"

आज नये सिरे से हो रहे आक्रमण से वाजपेयी तनिक भी विचलित नही हैं। 'हमे जनता पार्टी की विदेश-नीति को अमल मे लाना है न कि जन सघ की विदेश नीति को।" जब भी कोई उन पर आरोप लगाता है कि नयी विदेश-नीति लागू करने के स्थान पर वह नेहरू के नक्शे कदम पर चल रहे हैं तो उनका यही सीधा जवाब होता है।

वह लोगो को यह याद दिलाते है कि जन सघ के अध्यक्ष के रूप मे भी उ होने भारत-सोवियत मैत्री सधि का स्वागत किया था। वह समभते है कि उनके आज के अनेक कार्यो व वक्तव्यो का खडन करने के लिए उनके पुराने भाषण दोहराय जा सकते है। बागलादेश-युद्ध के तुरत बाद वाजपेयी ने माग की थी कि भारत सरकार को पाकिस्तान पर मुकदमा दायर करके उचित हर्जाने की माग करनी चाहिए क्योकि युद्ध पाकिस्तान ने ही किया था। वाजपेयी ने उन दिनो यह माग भी की थी कि बागलादेश मे भयानक नर-सहार के लिए जिम्मेदार लोगो पर 'न्युरेमबग ट्रायल' जैसा मुकदमा चलाया जाना चाहिए और अपराधियो को सजा भी जानी चाहिए। इस तरह के और भी सैंकडो वक्तव्य है जो आज वाजपेयी को उलझन मे डाल सकते है। लेकिन वाजपेयी पुराने वक्तव्यो से विचलित होने के बजाय विदेश जाने पर उन्हे ताक पर रख देते है।

अभी हाल म वे विदेश-मन्त्री की हैसियत से पाकिस्तान गये तो राष्ट्रपति ज़िया उल हक ने उनके पाकिस्तान सबधी अनेक पुराने वक्तव्यो का हवाला दिया। एकदम निरस्त्र कर देने वाली सहजता के साथ वाजपेयी ने उत्तर दिया 'मैं अपना अतीत भूल चुका हूँ। क्या मैं उम्मीद करूँ कि आप भी ऐसा ही करेंगे?" दोनो नेताओ के बीच की दीवार उसी क्षण रेत की तरह ढह गयी।

अपनी मस्त और घुमक्कड जैसी आदतो के लिए मशहूर वाजपेयी ने विदेश मन्त्रालय के काम को आश्चयजनक व्यवहार कुशलता व सरसता प्रदान की है। जिन दिनो वह विरोधी दल के नेता थे उन दिनो की कई कहानिया आज भी लोग याद करते हैं। अगर उनके मन म आ गया तो उन्होने रामलीला मैदान मे ही सोकर रात गुज़ार दी और अगले दिन दिल्ली के किसी फुटपाथ पर खोमचे वाले से गोलगप्पे खाते हुए भी उन्हे देखा जा सकता था।

एक दिन एक पत्रकार ने देखा कि जन सघ-अध्यक्ष वाजपेयी अपने फिरोज़शाह रोड स्थित निवास-स्थान के बाहर टैक्सी के इतजार मे खडे है। उन्हे विट्ठलभाई पटेल हाउस मे एक बैठक मे जाना था। उस पत्रकार ने अपना स्कूटर रोक दिया और बहुत हिचकिचाते हुए उसने पीछे की सीट पर बैठने का आग्रह किया। उसे पूरा पूरा यकीन था कि वह कोई न-कोई बहाना बनाकर बठेंगे नही। पर उसके आश्चय का ठिकाना ही नही रहा, जब उसने देखा कि बडी खुशी खुशी वाजपेयी उसके स्कूटर की पीछे की सीट पर बैठ गये। विदेश मन्त्री बनने के बाद भी वाजपेयी एक दिन रामलीला मैदान मे जनता के साथ ज़मीन पर बैठे देखे गये, जबकि जनता पार्टी के अन्य नेता मच से भाषण दे रहे थे।

वाजपेयी की ये हरकतें मात्र दिखावा नही ह। वे बहुत ही सीधे सादे और मस्त तबियत के आदमी हैं—उनके अदर किसी तरह का ढोग नही है। वह ओबेराय इटरकाटीनेंटल का शानदार खाना छोडकर दिल्ली की पराठे वाली गली म खडे-खडे मनपसद भोजन करना ज्यादा पसद करेंगे।

वाजपयी अक्सर कहते हैं कि राजनीति मे आकर उन्होने सबसे बडी गलती की थी। उनकी इच्छा थी कि वह अध्ययन के क्षेत्र मे जाये। उनके पिता उत्तर प्रदेश म विद्यालय निरीक्षक थे और पिता के कारण उनके अदर साहित्यिक रुझान शुरू से ही पदा हो गया था। नौकरी से रिटायर होने के बाद उनके पिता ने अपने पुत्र के साथ कानून की पढाई शुरू की। पिता और पुत्र एक ही क्लास मे पढने लगे। इतना ही नही, दोनो कानपुर मे एक ही होस्टल मे और एक ही कमरे मे

साथ-साथ रहते थे।

वाजपेयी अपने छात्र जीवन मे अच्छी कविताएँ लिख लेते थे, या कम से-कम अच्छी कविताएँ लिखने का दावा करते थे इसलिए उन्हे राष्ट्रधर्म नामक एक मासिक पत्रिका मे सपादक का काम मिल गया। यहा उन्हे सपादकीय टिप्पणियाँ लिखने के अलावा कम्पोजिंग और प्रूफ रीडिंग भी करनी पडती थी और सामग्री कम हो जाने पर अपनी गद्य और पद्य-रचनाओ से पन्ने भी भरने पडते थे। बाद म वह जन सघ के साप्ताहिक पत्र पान्चजन्य के सपादक हो गये, जो उन दिनो लखनऊ से निकलता था। लगभग एक वर्ष तक दिल्ली से निकलने वाले पार्टी दैनिक वीर अर्जुन के भी सपादक रहे।

कुछ दिनो तक वाजपेयी जन सघ के सस्थापक डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के निजी सचिव के रूप मे भी काम कर चुके हैं। डा० मुखर्जी ने 1951 मे जन सघ की स्थापना की। 1957 मे वाजपेयी पहली बार लोक-सभा का चुनाव जीतकर आये और इसके बाद से ही राजनीतिक क्षेत्रो में उन्हे लोग जानने लगे। जल्दी ही उन्होने एक सासद और वक्ता के रूप म ख्याति प्राप्त कर ली। जबान को हल्की सी जुबिश देकर और शायराना अदाज मे अपनी बातें कहकर वह अपने श्रोताओ का मन जीत लेते थे।

फरवरी 1968 मे जन सघ के अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय की हत्या हो गयी और जन सघ के सामने एक बहुत बडी समस्या आयी कि नया अध्यक्ष कौन हो। नानाजी देशमुख ने जिनको कुशल सगठनकता के रूप मे काफी ख्याति मिल चुकी थी, सुझाव दिया कि अध्यक्ष-पद के लिए कोई ऐसा व्यक्ति ढूढा जाये जिसके व्यक्तित्व मे जादू हो। उस समय सबके दिमाग में एकमात्र नाम अटलबिहारी वाजपेयी ही आया—तब उनकी उम्र महज 42 साल थी, लेकिन पार्टी म जन नेता के रूप म उनकी बराबरी का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था।

वाजपेयी को जब बताया गया कि उन्हे अध्यक्ष बनाने पर विचार किया जा रहा है तो वह रो पडे, "आप चाहते है कि मैं दीनदयालजी का स्थान लू ? मैं कतई इस पद के लायक नही हूँ।" लेकिन उनसे बार बार आग्रह किया गया तो उन्होने इस जिम्मेदारी को अपने कधा पर ले लिया।

लेकिन एक समस्या थी। वाजपेयी उन्मुक्त स्वभाव के व्यक्ति हैं और आर० एस० एस० के कठिन नियमो और अनुशासन सबधी पाबदियो मे उन्हे बाधना मुश्किल था। स्वय उनको ऐसा लगा कि उनके अदर बैठे आजाद पक्षी का दम घुट रहा हो। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ कभी ऐसा सगठन नहीं रहा, जहाँ विचार को महत्व दिया जाता हो और यही कारण है कि सगठन के लोगो की दृष्टि हमेशा कायकर्ताओ के चरित्र और अनुशासन पर रहती है। इससे भी बडी बात यह है कि जन सघ के अदर कोई कितने भी ऊँचे पद पर क्या न पहुँच जाये उसके लिए आर० एस० एस० का निर्देश हमेशा सर्वोपरि रहता है। वह अनुशासन और नियमो की सँकरी गली है, जिसम शराब और स्त्री का नाम लेना भी मना है।

वाजपेयी की जीवन शैली के बारे म सही या गलत कई तरह की बातें कही जाने लगीं। अक्सर ये खबरें आर० एस० एस० और जन सघ के स्रोतो से ही प्रसारित होती थीं। बलराज मधोक का कहना है कि वाजपेयी के व्यक्तिगत जीवन के बारे म पार्टी सदस्य तरह-तरह की शिकायतें लाते थे लेकिन उन्होने सबसे बराबर यही कहा कि पहले किसी नेता को आसमान पर चढाना और

फिर अफवाहो का सहारा लेकर उसे नीचे खीचना उचित नही है।' पहले तो मधोक का खयाल था कि वाजपेयी भी उनकी तरह आर० एस० एस० के प्रभुत्व के खिलाफ रहे हैं, लेकिन फिर उन्होने समझ लिया कि "वाजपेयी हमेशा से कमजोर व्यक्ति है और उनके अदर इतना साहस नही है कि वह किसी चीज का विरोध कर सकें।" कुछ लोगो का खयाल था कि वाजपेयी की 'कमजोरियो' से लाभ उठाकर आर० एस० एस० उनको अपने कब्जे म रख रहा है। मघ उनका पीछा छोड नही सकता, क्योकि उनके पास दूसरा ऐसा कोई नेता नही था जिसकी पार्टी के बाहर इज्जत हो व जिसकी ओर जनता आकर्षित हो सके। वाजपेयी के दुश्मनो ने उन दिनो "दल के एक भीतरी व्यक्ति" की ओर से एक पुस्तिका भी प्रकाशित की। "आर० एस० एस० के कुछ प्रचारको ने जो उनके साथ 30 डाक्टर राजेद्रप्रसाद रोड, नयी दिल्ली, म उनके निवास मे रहते थे, उनकी व्यक्तिगत जिंदगी के बारे मे तरह-तरह की अफवाह फैला रखी थी। उनम से एक ने 1968 के शुरू के दिनो मे प्रोफेसर मधोक से भी वाजपेयी के खिलाफ एक घोटाले की चर्चा की थी। पार्टी के एक पुराने और वरिष्ठ नेता के नाते प्रोफेसर मधोक ने इस तरह की बातें फैलाने के लिए उस प्रचारक को मना किया था।"[3]

आज वाजपेयी के बारे मे बातें करते समय मधोक एक किताब का ज़िक्र करत हैं और कहते हैं—'आपको **ऑनलुकर** पत्रिका मे प्रकाशित ताजा लेख देखना चाहिए। उसमे जिन तथ्यो का वणन किया गया है उससे कही ज्यादा बातें अनकही रह गयी है।"

उस लेख की कुछ पक्तिया, जिन्हें वाजपेयी का विरोध करने वाले लोग बडे उत्साह से सबको दिखाते हैं, पढने मे बडी भोली भाली लगती है। श्रीमती कौल नाम की एक अधेड रोबीली महिला है। उनके पति के बारे म कहा जाता है कि दिल्ली विश्वविद्यालय क्षेत्र म ही रहत हे। उन महिला को आजकल वाजपेयी के परिवार का एक अभिन्न अग मान लिया गया है।"[4] लेकिन बात ऐसी नही है जसी बतायी जाती है। उन महिला के पति भी वाजपयी-परिवार के अभिन्न अग है। कौल-परिवार से वाजपेयी का बहुत पुराना सबध है और वाजपेयी के उन लोगो के साथ-साथ रहने की बात को कभी छिपाया नहीं गया। पहले भी, खास तौर से अपने कठिन दिनो मे, वाजपेयी अक्सर इस परिवार के साथ रहा करत थे।

दिल्ली की एक साप्ताहिक पत्रिका से सबधित एक महिला-पत्रकार ने हाल ही म विदेश-मत्री की दिनचर्या का बहुत गौर से अध्ययन किया है। उनके मकान, 7 सफदरजग रोड पर नाश्ते के समय के दृश्य का वणन करते हुए उन्होने लिखा है—" वह खोये-खोये-से नाश्ता कर रहे थे ऐसा लगता था जैसे वह विदेशी मामलो के बारे मे कुछ सोच रहे हो। उनकी प्लेट मे एक फ्राई किया हुआ अडा और दो टोस्ट थे। विदेश मत्री ने खाना शुरू ही किया था कि एक छोटा सा कुत्ता चुपचाप आकर अपन मालिक के पैरो के पास बैठ गया। वाजपयी टोस्ट का टुकडा काट काट कर उसके आगे डालने लगे और अपना नाश्ता भूलकर उसे खात देखते रह। उन्होंने हँसते हुए कहा, 'यह इस घर का पहरेदार है। हम सबको तडके जगा देता है और जब सारा परिवार जग जाता है तो खुद सोने चला जाता है।' सुनकर हैरानी हुई कि वाजपेयी परिवार की बात कह रहे हैं जबकि वह अविवाहित हैं। लेकिन उनका सारा ध्यान कुत्ते म लगा था और मैं भी उसी को देख रही थी—वह तब तक खाने की मेज पर चढकर इत्मीनान से बैठ गया था। मैंने महसूस

किया कि कौल परिवार उनकी काफी देखभाल रखता है। श्री कौल अधेड उम्र के व्यक्ति हैं। वह चाय की चुस्कियां लेते हुए अखबार पढने मे तल्लीन थे तभी बीस बाईस वर्षीय नवयुवती खिलखिलाती हुई कमरे मे आयी और अपनी ज़िंदा दिल हँसी तथा 'गुड मार्निंग' की तेज़ आवाज़ से उसने पूरे माहौल मे एक रौनक पैदा कर दी। यह कौल दम्पत्ति की पुत्री थी, जो अपने उत्साह, अपनी स्फूर्ति व लगातार बोलने की अपनी क्षमता से यह जाहिर कर देती थी कि उसके ऊपर अपने चाचा का ही असर है। श्रीमती कौल चाय लेकर आयी उनकी मेहमान नवाजी और गमजोशी से मैं बहुत प्रभावित हुई, लेकिन मुझे लगा कि अटलजी' की अनुमति के बिना वह कुछ भी करने मे हिचकिचाहट महसूस करती है। बाद मे दिन के समय श्रीमती कौल से बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि वाजपेयी का इस परिवार के साथ कितना पुराना सबंध है। श्रीमती कौल ने ही बताया कि कॉलेज के दिनो मे वह और वाजपेयी साथ-साथ पढते थे। उन्होने अपने व्यक्तिगत एलबम मे श्री वाजपेयी की कुछ दुर्लभ तस्वीरें दिखायी, लेकिन उन्हे देने से इकार कर दिया श्रीमती कौल बता रही थी कि दोनो ने वर्षों तक कितने कष्ट उठाये है। उनकी बातें सुनकर उनसे हमदर्दी हो जाना स्वाभाविक है। बडी मुश्किल से अपने आंसुओ को रोकते हुए श्रीमती कौल ने बताया कि वाजपेयी और कौल परिवार को काफी दिनो तक कष्ट झेलने पडे है। उधर नाश्ते की मेज़ पर कुमारी कौल ने अपनी वाकपटुता से और दूसरो की नकल उतारने की क्षमता से काफी मनोरजक वातावरण पैदा कर दिया था। दरअसल वह वाजपेयी पर भी चुटकी लेने लगी कि वह अपनी खूबसूरती का कितना खयाल रखते हैं उन्हे क्रीम और सेंट मे बहुत प्यार है और जब कही जाना होता है तो तैयार होने म बहुत ज्यादा समय लगाते हैं।' वाजपेयी के इस शौक के बारे मे वह बिना किसी मुरव्वत के बोले जा रही थी और वाजपेयी इन बातो मे इकार कर रहे थे।"

कुआरे होते हुए भी वाजपेयी के चारो ओर एक सुखी परिवार का माहौल रहता है। यदि आप उनके आलोचको से पूछिये कि अपने दोस्त के परिवार के साथ रहने मे क्या नुकसान है तो वे यही कहेगे— 'मामला बहुत कश्मीरी है।"

वाजपेयी जैसे खुले दिल और निष्कपट स्वभाव वाले व्यक्ति के साथ ईर्ष्या और नीचता शब्द लगाना बहुत गलत होगा लेकिन उनके पुराने साथी सुब्रह्मण्यम स्वामी उन पर यही आरोप लगाते है। हावर्ड के इस भूतपूर्व प्रोफेसर का कहना है, "श्री वाजपेयी के अदर अनेक गुण हैं लेकिन वह दूसरे को अपने से तेज़ रफ्तार से तरक्की करते कभी देख नही सकते। उनके अदर कही काफी गहराई मे असुरक्षा की भावना बैठ गयी है। छोटी छोटी बातें उनके लिए ईर्ष्या का कारण हो जाती है और वह जलते रहते है।'[5] सुब्रह्मण्यम स्वामी खुद भी जन सघ के एक विवादास्पद ससद सदस्य हैं और कुछ लोग उन्हे 'जन सघ का राजनारायण' भी कहते हैं। स्वामी का वाजपेयी पर आरोप है कि उन्होने उनकी पीकिंग यात्रा जानबूझ कर और ईर्ष्यावश" रद्द कर दी जबकि प्रधानमत्री तक ने इसके लिए स्वीकृति दे दी थी। वह कहते हैं, 'खबर मिलते ही वाजपेयी ने भुनभुनाना शुरू कर दिया। पीकिंग स्थित भारतीय दूतावास ने उन्हे खबर दी कि सोवियत विरोधी होने के नाते मेरा वहाँ जबरदस्त स्वागत होगा। वाजपेयी को अचानक व तस्वीरें दिखायी पडने लगी होगी जिनमे मैं चीन के बडे-बडे नेताओ के साथ खडा होऊँगा वह किसी दूसरे व्यक्ति की पब्लिसिटी को बर्दाश्त ही नहीं कर सकते। यह भी एक विडम्बना है कि उनकी ही वजह से मैं राजनीति म आया। उन्होने ही

मुझे रातो रात जन सघ की कार्यसमिति का सदस्य बनाया और राज्य सभा के लिए मेरा नाम प्रस्तावित किया मैं उनका प्रशसक था उन्हे पसद करता था लेकिन उन्हे यह महसूस होने लगा कि मैं ज्यादा महत्वपूर्ण होता जा रहा हूँ। उन्हें ऐसे लोग पसन्द आते है जो चिकनी-चुपडी बाते करते है—खरी-खरी बातें कहने वालों को वह कभी पसन्द नही करते।"

स्वभाव से मुहफट सुब्रह्मण्यम स्वामी का आरोप है कि इमरजेंसी के दौरान, जब वह भूमिगत थे तो, वाजपयी ने उनसे कहा था कि वह सरकार के सामने आत्म समर्पण कर दे। उन्हे इस बात का भी काफी कष्ट है कि वाजपयी ने ही उन्हे मार्च 1977 के लोक-सभा चुनाव म उनके अपने क्षेत्र दिल्ली से निकाल बाहर किया। 'जब किसी तरह से मेरा नाम कटवाने म उन्हे कामयाबी नही मिली तो वह खुद ही दिल्ली से उम्मीदवार बन गये। उन्होने मुझे बबई से उम्मीदवार बनाया और इस बात का ध्यान रखा कि मुझे ऐसी जगह से टिकट दिया जाय जिसे मैं पसन्द न करूँ। मुझे जो निर्वाचन-क्षेत्र दिया गया उसमे आधा क्षेत्र गन्दी बस्तियो से भरा था, वहा शिव सेना के लोगो का जोर था और दक्षिण विरोधी भावना बडी प्रबल थी।"

स्वामी का कहना है कि वाजपेयी उनका विरोध करने मे इस हद तक गये कि अक्तूबर 1977 म उन्होने स्वामी को पार्टी से निकालने का प्रस्ताव रखा। 'वाजपेयी के बारे म सही-सही अदाज लगा पाना बहुत मुश्किल है। अगर उनसे आपके दोस्ताना सबध हैं तब तो वह बहुत ही अच्छे आदमी हैं लेकिन अपने प्रतिद्वद्वियो को वह एकदम बर्दाश्त नही कर पाते। वाजपेयी बेहद ढोंगी और पाखण्डी व्यक्ति है।"

सुब्रह्मण्यम स्वामी को सबसे ज्यादा धक्का तब लगा जब नानाजी देशमुख ने लोगो से कहना शुरू किया कि स्वामी जो कुछ कहते है उनसे मेरा कोई वास्ता नही, स्वामी जानें स्वामी का काम जाने। स्वामी का कहना है, 'यह सुनकर मैं तीन दिन तक स्तब्ध बना रहा। दूसरा झटका मुझे जनता ससदीय दल के चुनाव के समय लगा, जब नानाजी ने मुझे हराने की कोशिश की। सबसे बुरी बात तो यह है कि पहले मुझे कहा गया कि मैं उनका यानी जन सघ का उम्मीदवार हूँ और फिर मुझे सलाह दी गयी कि मैं अपना नाम चुपचाप वापस ले लू। लोगो को नीचा दिखाने का यह एक आजमाया हुआ तरीका है। लेकिन मैंने कहा कि कोई बात नही, मैं लडूगा। मैं लडा और जीत गया और वह भी पहली ही गिनती म ।"

लगता है कि स्वामी को सबसे बडी शिकायत इस बात से है कि नानाजी देशमुख को वह हमेशा अपना तरफदार समझते थे लेकिन वह भी वाजपयी के साथ चले गये।

नागपुर मे रह रहे आर० एस० एस० के महतो के मन की बात जो लोग जानते हैं उनका कहना है कि आर० एस० एस० के साथ वाजपयी का झगडा भले ही चलता हो, लेकिन जब मौका आता है तो वह हमेशा उनका ही साथ देते हैं।

प्रधानमत्री देसाई ने जब एक बयान मे कहा कि मत्रियो को आर० एस० एस० के किसी समारोह मे नही जाना चाहिए तो वाजपेयी ने फौरन स्पष्ट कर दिया कि वह कहीं भी जाने के लिए अपने को स्वतत्र मानते हैं। इमरजेंसी के दिनों म भी जब विरोधी दलों के नेता विनय की बातचीत मे लगे थे और वी० एन० डी०

के कुछ नेताओ ने जन सघ नेताओ की 'दोहरी सदस्यता' का सवाल उठाया था तो वाजपेयी ने अपने साथी जे० पी० माथुर को एक पत्र लिखकर यह कहा था कि वे सबको स्पष्ट कर दें कि यदि आर० एस० एस० से उनके सबधो के कारण किसी पार्टी को एतराज हो तो वह उस पार्टी मे शामिल नही होगे।

कुछ लोगो का तो यह भी कहना है कि जन सघ को अधिक स्वीकायता दिलाने के लिए ही वाजपेयी ने उदारवादी रोमानियत का मुखौटा पहना है— आखिरकार जन सघ आर० एस० एस० की राजनीतिक भुजा ही तो है।

जनता पार्टी मे शामिल जन सघ के नेताओ म सबसे अधिक सम्मान मिला है लालकृष्ण आडवाणी को। वह अब तक भारतीय राजनीति मे सबसे खरे और ईमानदार नेता साबित हुए हैं। निमल, आधुनिक, व्यावसायिक दष्टि सम्पन्न, विनम्र, लेकिन जरूरत पडने पर दढ सूचना और प्रसारण मत्री आज के राजनीतिक जगत मे एक अनूठे व्यक्ति है। हालाकि वह कभी अगली पक्ति मे नही रहे लेकिन इस अधकार मे वह आशा की ज्योति की तरह खडे है। कुछ लोगो ने वाजपेयी को 'रेगिस्तान का फूल'' कहा है, लेकिन यह विशपण आडवाणी के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

आडवाणी की उम्र वाजपेयी से एक साल कम है (वह 8 नवम्बर 1927 को पैदा हुए) और वह पहली बार 1967 म जन सघ की राष्ट्रीय कायकारिणी के सदस्य बने। फिर एक वप बाद पार्टी के महासचिव हो गये और 1973 म वाजपेयी के बाद पार्टी-अध्यक्ष।

उनका जन्म हैदराबाद (सिंध) मे हुआ था। बंटवारे के बाद वह भारत आये। उन्हाने बबई से कानून म डिग्री हासिल की। बाद मे वह आर० एस० एस० के प्रचारक हो गये और राजस्थान को उन्होने अपना काय क्षेत्र चुना। राजस्थान जन सघ की विधान-मडलीय शाखा का काम सभालते हुए उन्होने आगनाइजर के लिए भी लिखना शुरू किया और 1960 मे इस अखबार के सहायक-सपादक बन कर दिल्ली आ गये। यहाँ उनका सपक दीनदयाल उपाध्याय से हुआ, जिन्होने इस शात और निष्ठावान कायकर्ता की क्षमता को देखते ही पहचान लिया। प्रस्तावो का मसौदा तैयार करना आडवाणी की एक विशेषता है। उनके अन्दर गणितज्ञो जैसी सूक्ष्मता है और वह कभी जल्दबाजी म भी किसी ऐसे शब्द का इस्तेमाल नही करते जिसके लिए उन्हे बाद मे अफसोस करना पडे।

आडवाणी एक व्यावहारिक व्यक्ति है। अपनी बात दूसरो को आसानी से समभा लेते है। राजनीतिक पार्टी की हैसियत से जन सघ की सीमाओ को उन्हाने अच्छी तरह से समभ लिया था। बहुत से स्वप्नदर्शी यह आशा लगाय थ कि जन सघ एक दिन अपने बूते पर सरकार पर कब्जा कर लेगा। आडवाणी जानते थे कि लोगा के दिमागो मे जन सघ के बारे मे क्या पूर्वाग्रह है जन सघ के नाम से क्या कालिमा सबधित है और इन पूर्वाग्रहो व बदनामियो की वजह से ही जन सघ वहाँ से आगे नही बढ सकेगा जहाँ पहुँच गया है—वह अपनी चरमसीमा तक पहुच चुका है। उसे आगे बढना है तो अपनी रणनीति बदलनी होगी।

विरोधी दला म जन सघ ने ही सबसे बाद म यह समभा कि बिना उन सबके विलयन के काग्रेस को सत्ता से नहीं हटाया जा सकता है। वर्षों तक पार्टी दो तरह की विचारधाराओ म विभाजित रही। कुछ लोगा का कहना था कि विलयन हो जाना चाहिए और कुछ कहते थे कि चाहे जो हो पार्टी को अकेले ही अपने रास्त

पर चलते रहना चाहिए। आडवाणी ने एक एक कदम उठाकर विलयन की ओर बढन का कार्यक्रम अपने साथियो के सामने रखकर दोनो विचारधारो के सगम के लिए बडी मेहनत से जमीन हमवार की। उ होने यह स्वीकार किया कि एक साथ विलयन होगा तो पार्टी को इतना सदमा पहुँचेगा कि वह बर्दाश्त नही कर पायेगी। वह चाहत थे कि विलयन से पहले एक दूसरे को अच्छी तरह से जान लें। उसके बाद जनता उम्मीदवार खडे करने का प्रयोग किया गया और फिर गुजरात मे जनता मार्चा बनाने का। दोनो प्रयोग आडवाणी की पहल पर ही हुए।

आडवाणी ही शायद जनता सरकार के एक-मात्र ऐसे मत्री है जि होने पद-ग्रहण के बाद भी अपने उस साधारण फ्लैट को छोडना जरूरी नही समझा, जिसम वह राज्य-सभा के सदस्य की हैसियत से रहते थे। वह आज भी उसी फ्लैट म रह रहे हैं। व्यक्तिगत और सावजनिक जीवन म निहायत ईमानदार और बेदाग आडवाणी को यदि कोई गलत काम के लिए राजी करना चाहे तो उसे निराशा ही हाथ लगेगी। राजनीतिज्ञ के रूप मे उनके अन्दर सबसे बडी खामी यह है कि उनम कोई व्यक्तिगत महत्वाकाक्षा नही है। आज के जमाने म सत्ता उसी को मिलती है जो आँख मूद कर उसके पीछे दौडता रहे। ऐसा लगता है कि आडवाणी इस धक्का मुक्की के लिए नही बने है। दिन भर की कडी मेहनत के बाद वह अपन छाटे परिवार के साथ फुसत के क्षण बिताना ज्यादा अच्छा समझते है। कभी कभी अपनी बासुरी पर कोई धुन बजाना पसद करते है। अवकाश के क्षण बिताने के लिए यदि उन्हे किसी और अच्छे मनोरजन की जरूरत पडती है तो वह चुपचाप किसी सिनेमा हॉल मे चले जाते है!

टिप्पणिया

1 मदरलड, 3 अक्तूबर 1971
2 जनता पार्टी के एक नेता जे० पी० माथुर (भूतपूव जनसघी) के साथ लेखक की बातचीत।
3 जन सघ, आर० एस० एस० और बलराज मधोक, मगाराम वार्ष्णेय
4 आर्गनाइज़र, 1-14 दिसम्बर 1977
5 सुब्रह्मण्यम स्वामी से लेखक की बातचीत।

9

यह चिडियाघर !

एक से एक विख्यात लाग इकट्ठे ह इस चिडियाघर मे इस ऊटपटाँग जमावडे मे ! इसमे शामिल हैं एक शिकरे की तरह के गाधीवादी, जिन्ह कभी किसी ने 'खद्दरधारी चगेजखाँ' कहा, तो कभी औरो न 'सर्वोच्च नेता" और अब सीधे-सादे ढग से मोरारजी' कहा जाता है। बिल्लियो के बारे म कही गयी बात—कि वह नौ बार मौत के मुह से निकल आती है—सही हो या न हो मोरारजी ने जरूर जिंदगी मे पाच बार सदमे उठाकर भी 81 वष की उम्र मे अपनी मनोकामना पूरी कर ली। और अब वह सारी दुनिया से कहते है कि नशाबन्दी के सवाल पर उनकी सरकार चली भी जाये तो उनको परवाह नही—नेक काम के लिए खत्म हो जाने म कोइ बात नही। न उनको इसकी परवाह है कि सिक्किम के सबध मे उनके विचारो को लेकर तूफान खडा हो गया—वह तो प्रधान मत्री के "व्यक्तिगत विचार' थे। जब तक गाडी चले, चलाये जान से वह सतुष्ट हैं भले ही यथास्थिति बनी रहे।

जनता त्रिमूर्ति' के दो अन्य दिग्गज चरणसिंह व जगजीवनराम बडी बेसब्री से इतजार कर रह है कि कब बिल्ली के भागो छीका टूट। उनकी तलवार एक-दूसरे के खिलाफ तनी हुई है। "गाधी के माग' पर चलने के लिए तत्पर भूपतियो (कुलको) के सरदार" को हमेशा यही शिकायत रही है कि शहरी लोग उसे उसका हक नही दे रह ह। किसी जमाने म वह मेरठ का अपनी 'जागीर' समझता था, पर अब तो आधी आये या तूफान उसे सारे देश पर अपना झडा गाडना है। जगजीवनराम है कि सक्रमण के इस दौर के दद' झेल रहे ह और अपने अन्दर की आग म झुलस रहे है। उनके बारे म कहा जाता है कि वह जुबान तभी खोलत हैं जब समझ लेत हैं कि चुनौती देने का समय आ गया है। दूसरो के साथ सौदेबाजी मे उन्होने हरिजनो का नेता हाने का पूरा फायदा उठाया। और इसी की बदौलत तीस साल तक मत्रिमडल म जमे' रहे। एक अमेरिकी लेखक का कहना है कि 'जो यह जानते है कि क्या न्यूयाक सिटी के शासन प्रबध मे एक यहूदी एक आयरिश कथोलिक और एक इतालवी को रखा जाना जरूरी है, उन्ह यह समझने म देर नही लगेगी कि जगजीवनराम क्या अभी तक दिल्ली म बने

रह सके।" यह बात उसने 1963 मे लिखी थी। 15 साल और बीत गये, पर वह अब भी वही हैं और उस सिंहासन को पाने के लिए जी जान से जुटे है जो बार-बार उनके हाथ से निकल जाता है।

और फिर समाज के निचले तबके को नीद से जगाने वाल देशभक्तो, दल बदलू अवसरवादियो, असतुष्टों और मसखरो का एक पूरा हुजूम नजर आता है, "इस मेले मे हर आदमी की पस द का माल है—प्रहसन, सदाचार, विद्रूप, मूक अभिनय, आदोलन का नाटक, तरह तरह की घटनाएँ।"[1] इंदिरा गाधी के पतन के एक साल बाद रायबरेली से एक खबर मिली है—"एक सरकारी भोज म श्री राजनारायण एक गिलास पानी माँगत है। प्राथना की मुद्रा म झुके अफसरा द्वारा फौरन ही उन्ह तीन गिलास पानी और एक गिलास सतरे का रस पेश किया जाता है ।"

एक दिन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मत्री राजनारायण लखनऊ हवाई अड्डे पर उत्तर प्रदेश के मन्त्रियो और विधायको की भीड पर गरज रहे थे—"अच्छा, तो अब मन्त्रियो ने शेयरो की खरीद-फरोख्त शुरू कर दी ? मैं उन सबको ठीक कर दूगा।" कानपुर की स्वदेशी कॉटन मिल का सकट हल करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वदेशी पॉलीटैक्स के शेयरो को खरीदने का फैसला किया था। लेकिन राजनारायण को तो अपने मित्र सेठ सीताराम जयपुरिया के हितो की रक्षा की ज्यादा चिंता थी—चाहे स्वदेशी काटन मिल भाड म जाती। अल्यूमीनियम के अपने सोटे को ठोकते हुए वह चिंघाड रहे थे, कहाँ हैं तुम्हारे मुख्य मत्री ? उनसे कह दो कि अगर उनके मन्त्रियो ने कायदे से काम नही किया तो मैं सबको निकाल बाहर करूँगा।"

या तो राजनारायण अपने व्यापारी दोस्तो के हितो की रक्षा करने मे लगे रहते हैं, या फिर एक दरबारी भाण्ड की तरह अपने नये मालिक चरणसिंह की तस्वीर उभारने मे लगे रहत हैं। ससद मे उनके मालिक पर हमला हो तो बचाव के लिए राजनारायण तैयार ह और उनके प्रतिद्वद्वियो तथा निंदका पर प्रहार करना हो तो राजनारायण आगे आगे ह। गृहमत्री के खिलाफ भाई भतीजावाद का आरोप हो या हरिजन विरोधी होने का इलजाम, राजनारायण फौरन खडे हो जाते हैं और एलान कर देते है कि "कोई भी चौधरी चरणसिंह पर उँगली नही उठा सकता—हरिजनो तथा अन्य पिछडी जातियो के उत्थान के लिए उन्होने अपना जीवन समर्पित कर दिया। जब भी हरिजना पर अत्याचार की खबर उन्ह मिलती है वह रात म चैन की नीद नही सो पात हैं।"

और अगर जगजीवनराम या हेमवतीनदन बहुगुणा या चन्द्रशेखर के खिलाफ हमला करना हो तो स्वामिभक्त राजनारायण तीर-कमान सभाल मौजूद हैं। फिर भी चरणसिंह के दरबार मे बेचारे पर विश्वास नही किया जाता। शक्तिशाली गृह मत्री और भावी प्रधानमत्री के करीबी लोगो म किसको पहला स्थान मिले इसके लिए होड लगी हुई है। लोहिया के एक और बहुत बडे भक्त तथा सोशलिस्ट पार्टी के तेज तर्रार नेता हैं मधु लिमये, जिनका आधा समय चरणसिंह को पटाने म और आधा समय आर० एस० एस० की निंदा करने म बीतता है।

एक शाम अचानक मधु लिमये एक बडा सा पैकेट लेकर चरणसिंह के मकान पर पहुँचे। उस पैकेट को देखकर अपने ठेठ अदाज मे सन्देह से भरे चरणसिंह ने पूछा, 'यह क्या है ?"

'कुछ खास नही एक स्टीरियो-प्लेयर," पैकेट खोलते हुए लिमये ने कहा।

चरणसिंह को कभी इतना समय ही नहीं मिल सका कि वह टी० वी० देखने या रेडियो सुनने में दिलचस्पी लेते लिहाजा उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को यह स्टीरियो-प्लेयर देखने के लिए बुलाया।

'इस चीज की कीमत क्या होगी?" उन्होंने पूछा, पर किसी ने कुछ जवाब नहीं दिया।

'कम-से-कम तीन हजार का तो होगा ही" परिवार के एक सदस्य ने कहा।

चरणसिंह चौंक उठे। 'इतना पैसा तुम्हारे पास कहाँ से आया, जो इस पर खर्च कर सके?" चरणसिंह ने कहा। फिर मुसकराते हुए वह एक वाक्य और कह उठे, 'इसकी जाँच करनी पड़ेगी।'

चरणसिंह ने यह बात मुसकराते हुए कही थी पर लिमये थोड़ा घबरा गये। उन्होंने यह बताने की जरूरत महसूस की कि इतना पैसा कहाँ से आया, "अरसे से लेख वगैरह लिखता रहा हूँ। मैंने उसके पारिश्रमिक के कुछ पैसे बचा रखे थे और ।'

'लेकिन यह तुम मेरे लिए क्यों लाये?' चरणसिंह ने सवाल किया।

'आज की किसान रैली देखकर मैं इतना अभिभूत हो गया था कि मैंने सोचा कि आपके जन्म दिन के अवसर पर मुझे यह एक छोटी-सी भेंट आपको देनी ही चाहिए। राजनीतिक समस्याओं के कारण पैदा तनाव के क्षणों में इससे आपको शायद थोड़ी शांति मिले,' मधुलिमये ने जवाब दिया।

किसी नेता को पटाने के बेशुमार तरीके हैं। क्या पता कौन-सी चीज उसे खुश कर दे! शांत स्वभाव के मृदुभाषी श्यामनंदन मिश्र ने चौधरी को खुश करने का अपना अलग ही तरीका निकाला होगा। श्यामनंदन मिश्र जो पहले मोरारजी के खेमे में थे, पर अब चरणसिंह का आशीर्वाद पाने के लिए बेचैन हैं आजकल "जाति की चण्डाल चौकड़ी" के पीछे डण्डा लेकर पड़ जाने के कारण गृह-मंत्री के खेमे में काफी तारीफ पा रहे हैं। पर राजनीतिक क्षेत्र का बारीकी से अध्ययन करने वाले एक व्यक्ति का कहना है कि 'मिश्र को अपनी वफादारी का और पक्का सबूत देना होगा।"

कुछ भी नहीं बदला है। वही पुराने चेहरे, वही पुराने तौर-तरीके! अपना उल्लू सीधा करने वालों का वही पुराना जमघट और गुटबाजी की वही पुरानी चालें।

'जनता नाम ही गलत है। असल में यह वही पुरानी कांग्रेस है जो अब नया लिबास पहन कर आ गयी है। मोरारजी देसाई, चरणसिंह जगजीवनराम, हेमवतीनंदन बहुगुणा चन्द्रशेखर, मोहन धारिया बीजू पटनायक—ये सब उसी पुरानी कांग्रेस की थैली के चट्टे-बट्टे हैं। यदि कुछ सोशलिस्टों और जनसंघियों को अनदेखा कर दिया जाये तो ऐसा लगता है कि 1969 की फूट से पहले की कांग्रेस सामने नजर आती है। इस विशाल नये चिड़ियाघर में नेहरू की छाया ने मतभेद पैदा कर दिया है। कुछ भूतपूर्व कांग्रेसी हैं जो मानते हैं कि पिछले 30 साल देश के लिए एकदम व्यर्थ साबित हुए लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो सोते-जागते नेहरू की माला जपते हैं। खुद चरणसिंह आजादी के बाद बीस वर्ष तक कांग्रेस में रहे, लेकिन 30 साल की परम्परा की धज्जियाँ उधेड़ने में नहीं झिझकते। लेकिन ऐसे कई लोग भी हैं जो नेहरू पर प्रहार किया जाये तो अलग हट जाते हैं। जनसंघ के भूतपूर्व नेता अटलबिहारी वाजपेयी तो खुद को नेहरू के साँचे ढालने की कोशिश करते हैं और नेहरू के बड़े प्रशंसक हो गये हैं।

विचित्र घालमोल है। कुछ नेहरू की बुराई करने मे लगे हैं तो कुछ तारीफ करते नही अघाते। कुछ पब्लिक सेक्टर के पक्ष मे ज़ोर-शोर से बातें करते हैं, तो कुछ बडी बेहयाई के साथ जापान और अमेरिका के पद-चिह्नो पर चलने की हिमायत करते है। कुछ लोग हैं जो भारी उद्योगो की जरूरत पर बल दे रहे है तो कुछ 'गावो की तरफ वापस लौटने' का नारा लगा रहे है, कुछ इजारेदार उद्योगो के खिलाफ और कुछ बहुराष्ट्रीय निगमो के खिलाफ जोर शोर से बोलते रहते है, लेकिन कोई भी पिछले तीस वर्ष मे जो हुआ उससे अलग रास्ते पर चलना नहीं चाहता। वही दोमुही बातें, वही पाखड !

लेकिन मोरारजी बडे प्रेम से अपना चर्खा कातते रहते है और कहते रहते है कि "अगले दस वर्ष मे भारत दुनिया का सबसे खुशहाल देश हो जायेगा।"

वेद मेहता[3] ने उनसे पूछा "क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं ?"

"बिलकुल, यह मेरी पक्की धारणा है।"

"भारत की गरीबी मे जर्रा बराबर फर्क लाने की उम्मीद है ?"

'क्यो नही ?" देसाई ने बडी व्यग्रता से कहा। फिर कुछ सोचते हुए बोले, 'मैं प्रति-व्यक्ति आय मे दुनिया मे अव्वल होना नही चाहता। मैं भारत के लिए पश्चिमी देशो की सी समृद्धि भी नही चाहता। गाधी जी की तरह मैं बस यही चाहता हूँ कि सारे भारतीय अच्छा जीवन निर्वाह करें।"

"और क्या आप सचमुच सोचते हैं कि यह अगले दस या कुछ वर्षों म सभव है ?"

'यह निश्चित रूप से अगले दस वर्षों मे सभव है, वरना यहा मेरे बैठने की जरूरत ही क्या ? भारत मे हमारे पास साधन हैं प्रतिभा है कठिन मेहनत करने की क्षमता है और सबसे बडी बात यह है कि हमारे अदर एक आस्था है। मुमकिन है कि मैं ईश्वर को इस जन्म मे देख लू, या फिर अगले जन्म मे, या कई जन्म बाद देख पाऊँ, पर है सब ईश्वर के हाथ मे।"

जब न्यूयार्क मे जा बसे वेद मेहता ने देसाई से पूछा कि एकदम अलग-अलग ढग से सोचने वाले अपने पार्टी-सदस्यो को [वह कैसे एक साथ रख सकेंगे तो उन्होंने तुरत जवाब दिया, 'उन सबने गाधीवादी दर्शन अपना लिया है।"

उन्होने कम-से-कम जनता पार्टी के अगली कतार के नेताओ ने निश्चय ही राजघाट पर शपथ लेने के बाद अपना काम सभाला था। उन्होने शपथ ली थी कि "राष्ट्रीय एकता और शाति को बढाने के लिए निष्ठापूर्वक एक साथ काम करेंगे उनके (गाधी के) जीवन व कार्यो द्वारा इगित सुनिश्चित दिशा मे चलेंगे, और व्यक्तिगत व सार्वजनिक जीवन मे ईमानदारी व किफायतशारी से काम करेंगे।"

शपथ लेने के एक घटे के अन्दर ही जनता पार्टी के नेता काग्रेसी परपराओ के अनुसार जमकर आपस म लडने लगे। कुछ ही हफ्तो म जनता-सरकार के मत्री अपने लिए सुन्दर बँगलो की तलाश मे—जो सामने से सुन्दर दीखते हो जिनके पीछे खूबसूरत लान हो और जिनके अगल-बगल की सडकें साफ सुथरी हो—अपनी गाडियों म बैठे नयी दिल्ली का चक्कर लगाने लगे। इसके बाद केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा दिये जाने वाले फर्नीचर एयरकडीशनरों, गीज़रो तथा सुख-सुविधा की विभिन्न चीजो मे से अपना मनपसन्द सामान चुनने की होड मे मत्री-लोग अपने परिवारो के साथ जुट गये। फर्राशो को बुलाकर खास तौर पर ताकीद दी गयी कि फर्श का एक भी हिस्सा बिना कालीन न रहे और दर्जियो को

हिदायतें दी गयी कि पर्दे ऐसे लगाये जायें, जिनमें सही ढंग से 'पुरातन' पड़े हों। गोशलिस्ट और भूतपूर्व युवा-तुर्क' मंत्रियों की पत्नियाँ अपने बँगलों की सजावट की ओर विशेष रूप से ध्यान दे रही थीं। कई महीनों तक इस बात का बड़ा हंगामा था कि राष्ट्रपति महोदय किसी कम खर्चीले स्थान को अपना निवास बनायेंगे, पर साल खत्म होते होते राष्ट्रपति भवन को ही निवास बनाना तय कर लिया गया और कम खर्चीले स्थान पर जाने वाली सारी बातें भुला दी गयीं।

राज्यों में नये जनता मंत्री भी इस होड़ में पीछे रहने वाले नहीं थे। वे भी सुंदर-से-सुंदर बँगलों पर कब्जा करने के लिए पागल हो गये और 'संपूर्ण क्रांति' की भूमि बिहार में तो एक ही बँगले पर कब्जा करने के लिए विभिन्न मंत्रियों में लड़ाई भी हो गयी। छत्तीसगढ़ के भूतपूर्व राजाओं यानी गुप्ता-परिवार के हेडक्वार्टर भोपाल में एक दिलचस्प कहानी सुनने में आयी। जनता पार्टी के मंत्री पुरानी परंपराओं को कायम रखने के लिए बेताब थे। भोपाल के एक वरिष्ठ पत्रकार ने अपनी रिपोर्ट में बताया—'नये नेताओं में से कुछ तो उसी तरह की सनक और शौक के शिकार हैं जो पिछली सरकार के मंत्रियों में थी। इस प्रवृत्ति का उदाहरण है, जिसे राजधानी में दो मकानों की कहानी नाम से जाना जाता है। इस कहानी का ताल्लुक सर्किट हाउस और मुख्यमंत्री के सरकारी निवास-स्थान से है जिसे अतीत में अलग-अलग मुख्यमंत्रियों ने बारी-बारी से अपना निवास स्थान बनाया था। दोनों इमारतों को नया रूप देने के लिए भारी धनराशि खर्च की जा चुकी थी। विश्वस्त सूत्रों का अनुमान है कि इस काम में कम-से-कम 5 लाख रुपये खर्च हो चुके थे। मध्यप्रदेश के नये मुख्यमंत्री श्री सकलेचा ने सर्किट हाउस को अपना निवास-स्थान बनाना पसंद किया, जिसमें पुराने मुख्यमंत्री पी० सी० सेठी रहते थे। उन्होंने इस बँगले को फिर से सजाने का आदेश दिया।

वी० सी० शुक्ला की ही तरह सोशलिस्ट पार्टी के भूतपूर्व सदस्य और जनता सरकार के नागरिक उड्डयन तथा पर्यटन-मंत्री पुरुषोत्तम कौशिक ने (जिन्होंने शुक्ला को हराया था) अपने निर्वाचन-क्षेत्र रायपुर में इंडियन एयरलाइंस की सेवाएँ शुरू करने के काम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। अपना पद संभालने के एक ही महीने के अन्दर वरिष्ठ अधिकारियों ने दिल्ली से रायपुर तक का चक्कर लगाना शुरू कर दिया ताकि वे नयी विमान-सेवा की संभावनाओं पर अपनी रिपोर्ट दे सकें। जो काम शुक्ला नहीं कर सके, उसे कौशिक ने कर दिखाया।

कुछ ही हफ्तों के अन्दर जनता सरकार के मंत्री महान जनता संदेश के प्रचार प्रसार के लिए दुनिया के हर हिस्से का चक्कर लगाने लगे। एक ऐसा भी समय आया जब केंद्रीय मंत्रिमंडल के लगभग एक दर्जन मंत्री तो विदेश-यात्रा पर थे या विदेश यात्रा पर रवाना होने वाले थे। जैसा कि हाल में ही संसद में बताया गया चार महीनों के अंदर (नवम्बर 1977 से फरवरी 1978) 11 जनता मंत्रियों की विदेश-यात्रा पर 12 लाख रुपये खर्च किये गये और 25 देशों की यात्रा की गयी। इसमें 5 यात्राओं के खर्च को शामिल नहीं किया गया है।

एक जनता संसद-सदस्य ने बताया कि इन यात्राओं के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि अधिकतर मंत्री यूरोप गये, जबकि सरकार एशियाई तथा अफ्रीकी एशियाई देशों के साथ अपने संबंधों के बारे में ज्यादा चिंतित है। एक मंत्री चाँदराम ने जहाज निर्माण के कार्यों का जायजा खुद लेने के लिए' ब्रिटेन पोलैंड और हालैंड की यात्रा में 27,000 रुपये खर्च किये। जहाजरानी और परिवहन

मन्त्री ने इसका कारण बताया—"मैं वहां की सडक-व्यवस्था भी देखना चाहता था। उनके ट्रक हमारे टको की तुलना मे बहुत ज्यादा माल ढोते हैं। इतना वजन ढोने मे हमारी सडकें बाल जाती है। मैं देखना चाहता था कि यह कैसे सभव हो पाता है।"

राजनारायण ब्रिटिश सरकार के खच पर इग्लैड गये—अपने भाण्डपन का प्रदशन करने। साथ म चद्रास्वामी को भी लेत गय, शायद अपने खच पर। एक अय मत्री है, जो काग्रेस मे थे तो उग्र सुधारवादी कह जात थे। वह पेरिस गये तो वहा के रहने वाले भारतीयो मे उनकी यात्रा चचा का विषय बन गयी। उन्होंने दूतावास की गाडी पर आमोद प्रमोद के अड्डो का चक्कर लगाया। दूतावास के एक कमचारी ने कहा "जाना था तो जाते, पर गाधी टोपी पहने हुए जाने की क्या जरूरत थी।"

शायद ही कोई ऐसा हफ्ता बीतता हो, जब किसी न किसी राज्य से गाधी के हरिजनो पर अत्याचार की ददनाक खबरें सुनने मे न आती हो। भोपाल की एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार "माच नवम्बर 1977 मे मध्यप्रदेश म 105 हरिजन मारे गये।" लेकिन गह मत्री पर इसका कोई असर नही हुआ और यह साबित करने के लिए कि जनता सरकार के शासन सभालने के बाद से हरिजनो पर अत्याचार की घटनाओ मे "कोई वद्धि" नही हुई गह-मत्री ने दुनिया भर की रामायण गा दी। जब बिहार मे हरिजनो पर बढते हुए अत्याचार के मसलो को लोक सभा मे उठाया गया तो गृह-मत्री न बडे शात भाव से सदन को बताया कि राज्य सरकार ने खबर दी है कि य घटनाएँ दरअसल अपराधियो के दो गुटो की आपसी दुश्मनी" का परिणाम है और फिर वह बिहार के मुख्यमत्री कपूरी ठाकुर की 'ईमानदारी और क्षमता" के गुणगान मे जुट गये। यहाँ तक कि बेलछी म हुए अत्याचारो के बारे मे भी—जिसका इदिरा गाधी ने अपने हक म पूरा पूरा इस्तेमाल किया—चरणसिंह ने वही पुराना रवैया अख्तियार किया और कहा—'यह दो हथियारबद गिरोहो का आपसी झगडा है और कुछ नही।" जनता पार्टी के नेता रामधन के नेतत्व मे ससद सदस्यो के एक दल ने घटना की जाच की और उसे हरिजनो पर आक्रमण बताते हुए इसकी निंदा की। रामधन की रिपोर्ट के बारे म चरणसिंह के दरबारियो ने कहा, 'रामधन गह मत्री पर प्रहार कर रहे है, क्योकि वह जगजीवनराम के आदमी है।"

हरिजनो के महान नेता जगजीवनराम बौखलाते रहे, पर कुलक लॉबी' के खिलाफ तीखी टिप्पणियो के अलावा उन्होने कुछ नही किया। पिछले तीस वर्षों के काग्रेस शासन म भी हरिजनो पर लगातार अत्याचार और उत्पीडन होत रहे हैं और जगजीवनराम तीखे वक्तव्यो से काम चलाते रहे हैं। वह बराबर मत्रिमडल म बने रहे। उनके आलोचको का सवाल है क्या हरिजनो पर अत्याचार के मसले को लेकर उन्होंने कभी इस्तीफा दिया? दरअसल उन्हे केवल अपने सम्मान और इज्जत से मतलब है। वाराणसी की घटना पर हुए हगामे को देखिय। यदि किसी कम्माश ने उस मूर्ति को गगा-जल से धो ही दिया जिसका उन्होने उद्घाटन किया था तो क्या हो गया? हरिजनो को दिन रात जिस तरह के अत्याचार का सामना करना पडता है उसकी भला इससे तुलना की जा सकती है! लेकिन क्या उनको सचमुच इसकी चिंता है!'

जनता पार्टी म दो मुख्य गुट है—एक मोरारजी देसाई का, दूसरा चरणसिंह

का। दोनो गुटो के बीच खीच-तान रहती है। इसे कल्पना की उडान नही कहा जा सकता जैसाकि बहुधा जनता पार्टी के कुछ नेता कह देते हैं। काति देसाई के खिलाफ जो सुनियोजित हमले चल रहे है वह गृह मत्री के निवास स्थान से ही सचालित हो रहे है और भारत के इस नये लौह पुरुष की जी-हुजूरी मे एक-से-एक बडे पत्रकार देखे जा रहे है। चरणसिंह के दरबारियो ने उनको समझा रखा है कि गृह मत्रालय से उन्हे हटाने या कम से कम खुफिया एजेंसिया को उनके हाथ से छीन लेने के लिए बहुत बडी साजिश की गयी है। आपको निकाल बाहर करने के लिए जगजीवनराम और बहुगुणा भी मोरारजी देसाई से मिल गये हैं।" इस तरह की बातें अक्सर चरणसिंह को बतायी जाती और नतीजा यह हुआ कि उनकी तरफ से भी जवाबी हमला शुरू हो गया।

दक्षिण भारत मे जनता पार्टी की हार से चरणसिंह और उनके आदमियो को एक नया अवसर मिल गया। जो लोग पार्टी-अध्यक्षता के लिए बेताब थे, वे सभी काफी शोरगुल मचाने लगे। बेशक कुछ लोग इतने होशियार हैं कि सीधा-सीधा हमला नही करते थे लेकिन राजनारायण जैसे लोग तो साफ साफ 'दुश्मनो' का नाम लेते है। लेकिन राजनारायण भी इस बात का ध्यान रखते थे कि किस पर हमला करना चाहिए। वह जगजीवनराम बहुगुणा, चन्द्रशेखर को तो निशाना बनाते हैं लेकिन उन्होने कभी मोरारजी देसाई पर हमला नही किया। राजनारायण के बारे मे जो लोग जानते है उन्हे अच्छी तरह पता है कि वह मोरारजी के आदमी है। वह उत्तर प्रदेश के सरदार चरणसिंह के पद और शान का इस्तेमाल तब तक कर रहे हैं जब तक इससे उन्हे फायदा है—ठीक वैसे ही जैसे जन सघ अपने मकसद के लिए उनका इस्तेमाल कर रहा है।

1 जनवरी 1978 को काग्रेस के दूसरी बार टूटने के फौरन बाद चन्द्रभानु गुप्त ने अपने कुछ राजनीतिक साथियो से कहा कि "बी० एल० डी० के बोझ को अब और अधिक समय तक ढोने की जरूरत नही है।" वह चरणसिंह को निकाल बाहर" करने के पक्ष म थे और रेडडी काग्रेस के साथ तालमेल करना चाहते थे लेकिन समझा जाता है कि चन्द्रशेखर ने इस मसले पर गुप्ता से विचार विमर्श किया और कहा कि कोई काम जल्दबाजी म करने की जरूरत नहीं है। वे लोग खुद ही किसी नय जोड-तोड के बारे म सोच रहे थे—उन्होने गुप्ता को बताया और कहा थोडा धीरज रखिये दक्षिण म चुनाव हो जाने दीजिये फिर हम लोग देखेंगे।"

लेकिन उन लोगो न जसा सोचा था वैसा नही हुआ। रेडडी काग्रेस को करारी हार मिली और खुद रेड्डी ने इस्तीफा दे दिया। नयी शक्तियो के तालमेल को योजना धरी-की-धरी रह गयी। लेकिन दक्षिण म एक शक्ति के रूप मे इन्दिरा गाधी के फिर से उभरने से जनता पार्टी के युद्धरत नेताओ मे कम से कम अस्थायी तौर पर ही सही, एकता आ गयी।

इन्दिरा गाधी के प्रति उनका रुख एक तरह से बीमारी की हद तक पहुंच चुका है। नये शासको ने पूरे साल इन्दिरा गाधी और उनकी चौकडी के खिलाफ बोलने के सिवा और कुछ नही किया। किसी टिप्पणीकार ने ठीक ही कहा, 'दिल्ली के लालकिले के बाहर टाइम कैप्सूल (काल पात्र) को खोद कर निकाला जाना जनता पार्टी के काय काल का एक प्रतीक है अतीत को खोदना अपने-आप म एक आकर्षण बन चुका है।"

जनता के नता दवीजी के बारे म बात करत तो दो-तीन नही भाँति भाँति

की बोलियाँ सुनायी देती, असम्य आवाजें सुनायी देती—कोई कहता, फाँसी दे दो, किसी का खयाल था, जनता की अदालत मे, शायद विजय चौक मे, ला खडा करना चाहिए, कुछ लोग चाहते थे कि "यूरेमबर्ग-जैसी अदालत मे उन पर मुकदमा चलाया जाये, कुछ का खयाल था कि उन्हें घसीटते हुए तिहाड जेल तक पहुँचाया जाये और उसी कोठरी मे रखा जाये, जिसमे इमरजैंसी के दौरान चरणसिंह को रखा गया था, चन्द्रशेखर-जैसे कुछ लोगो का कहना था कि उन्हे "राजनीतिक मौत" पाने के लिए चुपचाप छोड ही दिया जाये। जनता पार्टी के अध्यक्ष, जो किसी समय इस बहादुर औरत के बडे मुखर प्रशसक थे, यह सोचते थे कि देश को आज मतभेद की नहीं बल्कि मतैक्यता की राजनीति चाहिए—उनके इस कथन का अर्थ कुछ भी हो। राजनीतिक जन्तुओं का सूक्ष्म निरीक्षण करने वालो मे से अनेक लोगो ने, जिनमे कम-से कम एक अत्यत बुद्धिमान व्यग्यकार भी शामिल है चन्द्रशेखर के खून मे रेंगते "इन्दिरा कीटाणुओं" को महसूस किया।

सोने पर सुहागा यह कि जिस अनाडीपन से इन्दिरा गाधी को गिरफ्तार किया गया और फिर रिहा किया गया, उससे उनको इतनी ताकत मिली जितनी शायद वर्षों मे भी नही मिल पाती।

पार्टी के भीतर से अपने ऊपर होने वाले नये हमलो का खयाल करके चरण-सिंह इन्दिरा गाधी के बारे म कुछ भी कहते समय विशेष सतर्कता बरतते हैं। उनके घनिष्ठ समर्थकों ने सभवत उनको यह समझा रखा है कि इन्दिरा गाधी के खिलाफ लडाई इतनी दूर तक चलाने की जरूरत नही है कि कभी समझौता करना भी मुश्किल हो जाये क्योकि हो सकता है कि एक दिन दूसरे लोगो के खिलाफ उन्हे इन्दिरा गाधी के साथ हाथ मिलाने के लिए मजबूर होना पडे। प्रधानमत्री बनने का यह भी एक तरीका हो सकता है। हालाँकि यह सभावना बहुत क्षीण है लेकिन जैसा कि डिजरायली ने कहा है राजनीति म "कभी नहीं" शब्द का भूल कर भी इस्तेमाल नही करना चाहिए।

जनता पार्टी नकारात्मक वोट के आधार पर सत्ता मे आयी, लेकिन अकस्मात जीतकर भी जनता वाले यह नही समझ पाये कि अपनी जीत से फायदा कैसे उठायें। बस इसी नकारात्मक रवैये पर वह अपना अस्तित्व कायम रखने मे लगे है। गडे मुर्दे उखाडने म कोई एतराज नही है बशर्ते इसके पीछे कुछ सार्थक काम करने की मशा हो। इसमे कोई शक नही कि जनता पार्टी के पास जॉज फर्नांडीज जसे उग्रवादी नेता हैं और उनके पास जनता को उत्तेजित करने वाले लुभावने नारो की कोई कमी नही है। सरकार म शामिल होने म उन्होने काफी हिचकिचाहट दिखायी और कई दिन तक वह दूर-दूर भागत रहे। लेकिन बाद म यह हुआ कि उन्होने अपने को "बधन" म बँध जाने दिया और मत्री-पद स्वीकार करते समय उन्होने कहा कि अब मैं एक जेल से निकल कर दूसरी जेल म जा रहा हूँ।"

स्वघोषित भूतपूर्व विध्वसक और वर्तमान मत्री जॉज फर्नांडीज ने एक धमाके के साथ अपना मत्रालय सभाला और उन सभी लोगों को हैरानी मे डाल दिया जो सोचते थे कि निचले तबके का आदोलन करने वाला यह नेता मत्रालय का काम-काज कैसे चला सकेगा। मत्री बनने के कुछ ही दिन के अन्दर वह 'पतनशील दशक' की खामियों को सामने ला रहे थे क्योंकि इस दशक को इन्दिरा गाधी के प्रचार-तत्र ने "प्रगति का महान दशक" घोषित किया था। और उद्योग मत्री का

पद सभालने के कुछ ही दिन के अन्दर जार्ज फर्नांडीज भारतीय उद्योग के बडे बडे नेताओ को नैतिकता की नसीहते देकर अपने मन को शाति पहुँचा रहे थे। बडे बडे उद्योगपतियो का वह इस वात के लिए डाट रहे थे कि इमरजेंसी के दौरान सत्ताधारी वर्ग की खुशामद म उन्होने सारे नैतिक मूल्यो को उठाकर फेंक दिया। एक भाषण मे उन्होने कहा, "क्या वजह है कि उन लोगो ने, जिन्हें उद्योगो का सिरमौर कहा जाता है और जो अपने क्षेत्र मे अग्रणी माने जाते हैं, सत्ता के सामने इस तरह घुटने टेक दिये ? वह कौन सी चीज़ है जो इसान के पास न रहे तो वह चूहो की तरह व्यवहार करने लगता है ?"

ससद के वाहर और भीतर उनके भाषणो का वडा विध्वसक प्रभाव हुआ। देश के उद्योगपतियो को उस समय पसीना छूट गया जब उन्होने कहा, 'आपकी बिरादरी के एक व्यक्ति ने एक दिन बताया कि चुनाव के लिए चालीस करोड रुपये भूतपूर्व डिक्टेटर की पार्टी को दिये गये। मैं यह जानना चाहूँगा कि इतन रुपये पाने के लिए आपने कौन-कौन से तरीके अख्तियार किये ?"

मगलौर का यह जोशीला आदमी एक रोमन कैथोलिक पादरी बनने वाला था लेकिन आग उगलने वाला राजनीतिज्ञ वन गया। उसका अब इस नये मच से प्रवचन जारी था, "मैं जानता हूँ कि वडे वडे व्यावसायिक प्रतिष्ठान और बहुराष्ट्रीय कपनियाँ वहुत शक्तिशाली है लेकिन हमे इससे कोई मतलब नही। हम दूसरी धातु के बने है। अगर वे यह सोचते है कि पहले की तरह उनके दाव-पेंच अब भी जारी रहगे तो वे एक मुगालते म हैं और उन्ह बहुत बुरा तजुर्बा होगा।" उन्होंने गरजते हुए कहा कि वडे व्यापारिक और बहुराष्ट्रीय प्रतिष्ठानो और बहुराष्ट्रीय कपनियो के लिए यहा कोइ स्थान नही है। लेकिन कुछ ही महीनो के अन्दर वह बडे व्यापारियो के भय को शात करने मे लगे थ और उनको बता रहे थे कि जनता सरकार औद्योगिक विकास की दिशा म एक 'बहुआयामीय" दृष्टिकोण अपना रही है जिसके अतर्गत वडे उद्योगो के साथ-साथ छोटे और कुटीर उद्योगा को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। जनता सरकार ने बहुराष्ट्रीय कपनियो के एक प्रतिनिधिमडल को बताया, "मल्टीनेशनल कपनियाँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।"

कोकाकोला और आई० वी० एम० को भारत से विदा करने के वाद फर्नांडीज अपने मन चाहे देशो अर्थात इग्लैंड और पश्चिम जर्मनी की वहुराष्ट्रीय कपनियो के ज़बरदस्त समर्थक वन गये। उन्हे इसमे कोई मतलब नहीं कि बहुराष्ट्रीय कपनियाँ अमेरिका की हा या अमेरिका के पिछलग्गू यूरोप की उनम कोई फर्क नहीं। इस महान ट्रेड यूनियन नेता ने ग्रेट ब्रिटेन के बडे बडे मजदूर नेताओ जैसा जीवन बिताने का वर्षों तक अभ्यास किया है और शायद खुद को वह एक दूसरा बेवन समझता है। वह बहुत मेहनती ट्रेड यूनियन नेता है और औद्योगिक क्षेत्रो के सामतो के सामने चुनौतिया देने मे उसे मज़ा आता है लेकिन उसके कुछ पुराने साथियो का कहना है कि वह दुश्मन के खेमे के सामता से तालमेल भी बैठा सकता है।

कांग्रेस क तीस वर्ष के भ्रष्ट प्रसासन का मलवा साफ करने का प्रण करके जार्ज फर्नाडीज मन्त्रिमडल मे शामिल हुए थे और इतने महीना म उन्होने और उनके मत्रालय ने जो कुछ किया उसे आर्थिक विषयो पर लिखने वाले एक लेखक ने 'मरे हुए चूहे" की सज्ञा दी।

उसने लिखा, "पुरानी सरकार की तरह जनता सरकार को भी यह नही पता

है कि बडे उद्योग-समूहो से वह दरअसल क्या चाहती है। बस फर्क केवल इतना है कि इसने बडे उद्योग-समूहो के लिए भी अब गैर-उपभोक्ता उद्योगो को खोल दिया है। अब वे सभी उद्योगों मे प्रवेश कर सकते है ।"[4]

इन्दिरा गाधी की सरकार ने उनकी ट्रेड यूनियन गतिविधियो के सिलसिले म अनेक आरोप लगाये थे, जिनमे कहा गया था कि फर्नांडीज एक भ्रष्ट व्यक्ति हैं, उनके भूमिगत आदोलन को विदेशो से सहायता मिल रही है। एक भेंट-वार्ता म जब किसी ने उनसे इन आरोपो के बारे मे पूछा तो उन्होने अपनी लाजवाब शैली म जवाब दिया, "मेरे खिलाफ फैलाया गया वह सबसे बडा दुष्प्रचार है और मैंने इस दुष्प्रचार का जवाब ससद मे दे दिया है। दरअसल जब मैं भूमिगत था उस समय भी मैंने मैडम डिक्टेटर के नाम एक खत लिखकर विदेशो से मिले पैसे के बारे म उनके सारे झूठो का पर्दाफाश किया था और यह भी कहा था कि मैडम डिक्टेटर, वह दिन दूर नही जब मैं अपनी इस बेइज्जती का बदला लेकर रहूँगा। मैडम डिक्टेटर तब तुम क्या करोगी, तुम दुनिया को क्या बताओगी ? यही कहोगी न कि झूठ बोले बिना तुम रह नहीं सकती क्योकि यह तुम्हारे स्वभाव की विशेषता है। और मैंने अपना बदला ले लिया और मैडम डिक्टेटर अब केवल यही कह सकती है कि वह जन्मजात झूठी है जिन पैसो के लेने का आरोप मुझ पर लगाया गया था उन्हे मैंने 26 या 27 मई 1975 को जोधपुर मे देश भर के अखबारो के प्रेस-फोटोग्राफरो के कैमरो के सामने लिया था। मेरे साथ जयप्रकाश नारायण थे, जो आल इडिया रेलवेमैन फैडरेशन के स्वर्ण जयन्ती समारोह का उदघाटन करने गये थे और जापान से आये रेल-कर्मचारियो का एक प्रतिनिधि मडल भी वहाँ मौजूद था। उन लोगो ने जब मुझे दो चेक भेंट किये तो सारे अखबारो के कमरो की रोशनी फैल गयी ।"[5]

जार्ज ने बबई मे 'प्रासपक्ट चेम्बर्स के बाहर फुटपाथ पर' जब अपनी जिंदगी शुरू की थी तब से आज तक काफी समय गुजर चुका है। वहाँ यह नौजवान मजदूर नेता, जो अपना पादरियो वाला सफेद चोगा फेंक कर जिंदगी के कठिन रास्तो पर चल पडा था, मगलौर के एक दूसरे व्यक्ति पीटर डिमेलो के सपर्क म आया। डिमेलो ने भी बबई मे बडी कठिनाई के बीच अपनी जिंदगी शुरू की थी और शहर के अत्यन्त शक्तिशाली ट्रेड यूनियन नेता का दर्जा पाया था। डिमेलो की असामयिक मृत्यु के बाद ही जॉर्ज फर्नांडीज रोशनी में आये और अपने-आप म एक शक्तिशाली नेता बन सके। वर्षों तक उनका उद्योग के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र अर्थात मजदूरो पर दबदबा रहा। 1967 मे लोक-सभा के चुनाव म उन्होने बबई के एक बहुत ही शक्तिशाली राजनेता एस० के० पाटिल को जब हराया तो उस समय उनकी उम्र महज 38 साल थी। फर्नांडीज ने इस लडाई को साधन-सम्पन्नों के विरुद्ध साधनहीनो की लडाई कहा था और इसमें साधनहीनो को कामयाबी मिली थी।

लेकिन आज वह जिस स्थिति म हैं उसमे रहते हुए साधनहीनो के लिए क्या कर रहे हैं—यह एक अलग बात है। यह उग्र मजदूर नेता जिसका दावा है कि उसने 'बावन ट्रेनो को पटरी से उतार दिया," जनता पार्टी के इस चिडियाघर मे मत्री तो है ही, साथ ही, वह ऐसा व्यक्ति भी है जिसके बारे म इतजार किया जाता है कि वह कब मत्री पद पर लात मार दे।

जनता पार्टी के इस रग बिरग चिडियाघर के दूसरे सिरे पर इमरजेंसी की एक दूसरी विभूति सुब्रह्मण्यम स्वामी हैं, जो दावा करते हैं कि अगले दस वर्षों मे

जनता पार्टी भी 'मेरे ही विचारधारा के ढाँचे मे सोचने लगेगी।"[6]

वह कहते है, 'मेरी विचारधारा भारतीय है। मेरी धारणा है कि भारत एक केन्द्र है अपने आप मे एक ध्रुव है। उसकी सस्कृति का व्यापक क्षेत्र हिंदूवाद से उदभूत होता हैं। मेरा मतलब हिंदू धम स्वीकारने या इस तरह की किसी बात से नही है खुद मेरी पत्नी पारसी हैं। मैं भारत, पाकिस्तान, बागलादेश और श्रीलका को एक देश के रूप मे देखता हूँ। नेहरू और जिन्ना का सारा पागलपन समाप्त कर दिया जायेगा। जहाँ तक अथव्यवस्था का सवाल है, मैं समझता हूँ कि वही प्रणाली सफल होगी जो देश की प्रतिभा के अनुकूल हो। हमारी प्रतिभा के प्रतीक ह छोटे व्यापारी और छोटे उद्यमी। मैं सरकार की भूमिका को नामजूर नहीं करता, लेकिन मेरी योजना के अतगत सरकार उपभोक्ता और उत्पादक के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका अदा करगी, न कि कोई प्रभुत्व वाली भूमिका। मैं ऐसी प्रणाली को देख रहा हूँ जिसमे बडे आसान नियमो का पालन किया जायेगा जहाँ असमानता की चुनौती का सामना कर लगाकर नही, बल्कि उत्पादन बढाकर किया जायेगा अतत मेरे इन विचारो को ही देश मे स्थान मिलेगा।"

जनता सरकार के पहले महीने के दौरान सुब्रह्मण्यम स्वामी ने एक ब्रिटिश पत्रकार को बताया कि वह अपनी पुरानी पार्टी जन सघ को फिर से उभरता हुआ देख रहे ह, लेकिन उन्होने अपना विचार बदल दिया है। "मैंने अपना विचार बदल दिया, क्योकि मुझ पहले यह नही दिखायी दिया था कि हमारे तीनो नेता—वाजपेयी, नानाजी और आडवाणी—ऐसा व्यवहार करेंगे जैसा कर रह है। जन सघ का काम नेतत्व प्रदान करना था—वह इन तीनो ने छोड दिया है।" जाहिर है कि इन नेताओ के प्रति यह उनकी व्यक्तिगत शिकायत है। उनका कहना है, "वाजपेयी की विदेश-नीति के बारे मे सडे पत्रिका मे मैंने जो कुछ भी कहा उसे अब भी सही मानता हूँ।"

वाजपेयी का गुस्सा 4 अप्रैल 1978 को पार्टी के केद्रीय ससदीय बोड की बैठक म उबल कर बाहर आ गया। वाजपेयी और चरणसिंह दोनो न अपनी पार्टी के कुछ लोगों द्वारा उन पर किये जा रह हमलो की चर्चा की और कहा कि इन्ह कुछ नेताओ से शह मिलती है। जाहिर तौर पर वाजपेयी ने स्वामी के सडे वाले लेख की चर्चा की और चरणसिंह ने बबई की एक पत्रिका को जगजीवनराम द्वारा दिये साक्षात्कार का जिक्र किया। इसमे जगजीवनराम ने 'कुलक लाबी" पर हमला किया था। दोनो नेताओ ने पार्टी-नतत्व पर यह आरोप लगाया कि उनकी तरफ से कुछ भी नही कहा जा रहा है। मोरार देसाई को भी अपने लडके पर किये जा रह प्रहारो से काफी शिकायत रही होगी, लेकिन वह निणायक" के पद पर थे इसलिए अपने को विवाद मे नहीं डाल सकते थे।

सत्ता मे एक साल तक रहने के बाद भी जनता पार्टी का न तो कोई चेहरा बन सका है और न उसकी कोई अपनी पहचान है। अपने तमाम घोषित आदश वादी नारो के बावजूद उसने हर तरह के दल बदलुओ के लिए अपना दरवाजा खोल रखा है और चिमनभाई पटेल से लेकर राजा दिनशसिंह तक कोई भी अदर आ सकता है। जितनी आसानी और प्रसन्नता के साथ वह टहलते हुए जनता पार्टी मे शामिल हो गये उससे इस पार्टी के नेताओ का असली रग दिखायी देने लगता है। कोई भी व्यक्ति पार्टी मे इन तत्वो के प्रवेश के लिए अपनी जिम्मेदारी नही लेता। यहाँ तक कि दिनेशसिंह के पुराने दोस्त चन्द्रशेखर ने कहा, "मोरारजी न

उन्हें (दिनेशसिंह को) पार्टी में शामिल होने की अनुमति दी।" लेकिन चन्द्रशेखर ने बताया कि उनके शामिल होने के साथ एक शर्त यह भी जुड़ी थी कि उन्हें पार्टी में किसी पद पर नहीं रखा जायेगा। राज्य-सभा की सदस्यता फिलहाल राजा दिनेशसिंह के लिए काफी है। उन्होंने त्यागराज मार्ग पर स्थित अपने शानदार बँगले को हाथ से निकलने से बचा लिया। जनता पार्टी में शामिल होने के बाद उन्होंने चौधरी चरणसिंह के साथ तत्काल संबंध जोड़ लिये और इस काम में मदद पहुँचायी उनके दोस्त श्यामनंदन मिश्र ने। गृह मंत्री से उनके नये समर्थक ने बताया, 'दिनेशसिंह का उत्तर प्रदेश के राजपूतों में अच्छा स्थान है और उन्हें लेकर चन्द्रशेखर का मुकाबला करना आसान होगा।" भूतपूर्व "अजगर"-अध्यक्ष को यह विचार बहुत पसंद आया।

अब यह तो सभी को पता है कि आंध्र प्रदेश में कितने दल-बदलुओं को जनता पार्टी के टिकट दिये गये ? एक अनुमान के अनुसार यह संख्या 150 से भी अधिक है। यह संख्या जितनी ही अधिक हो अच्छा है!

जनता-सरकार के एक वर्ष के शासन की 'सरकारी समीक्षा" में यह दावा किया गया है कि इस सरकार को "सरकारी तंत्र की समूची कार्य प्रणाली को निर्णायक नयी दिशा देने और केंद्र सरकार के प्रत्येक मंत्रालय की कार्य प्रणाली में प्रभावशाली सुधार करने में अभूतपूर्व सफलता मिली है।" इस समीक्षा में यह नहीं बताया गया है कि कानून और व्यवस्था के विशेषज्ञ चौधरी चरणसिंह की नाक के ठीक नीचे दिन-दहाड़े बैंक लूटे जा रहे हैं, दिल्ली शहर के बीचोंबीच बसों में छुरे की नोक पर बुड्ढे यात्रियों को लूट रहे हैं उत्तर प्रदेश और बिहार में जहाँ ईमानदारी, निष्ठा और क्षमता के मामले में उनके सबसे प्रिय लोग शासन कर रहे थे, जंगल का कानून चल रहा है।

लेकिन ईश्वर की महिमा में भरोसा रखने वाले मोरारजी देसाई को पक्का विश्वास है कि अगले "दस वर्षों में" देश में दूध-दही की नदियाँ बहने लगेंगी! जनता के सामने वह अपनी यह शपथ दोहराना नहीं भूलते कि जनता के अन्दर से वह 'भय और अभाव" दूर कर देंगे। अपनी सूखी और मरी हुई आवाज़ में उन्होंने जनता शासन के एक वर्ष समाप्त होने पर एक संदेश में कहा, 'हमारी नयी प्राथमिकताएँ बहुत स्पष्ट और यथार्थपरक हैं। हम ऊँची उड़ानों में नहीं, बल्कि ठोस तथ्यों और प्रगति में विश्वास करते हैं, जिसे अपनी क्षमता के अनुसार हम प्राप्त कर सकें और बनाये रख सकें ।"

उधर पटना में कदमकुआँ-स्थित अपने निवास-स्थान में जयप्रकाश नारायण ने बड़ी सावधानी से तैयार किया गया अपना वक्तव्य जारी किया 'लेकिन सामाजिक, आर्थिक सुधारों के क्षेत्र में जनता पार्टी को बहुत कुछ करने में सफलता नहीं मिली है। पार्टी के घोषणा पत्र में जो वायदे और खास तौर से आमूल सुधारों के बारे में जो वायदे किये गये हैं उनमें से अधिकांश पवित्र इच्छाएँ बनकर रह गये ।" यह बूढ़ा व्यक्ति जिसे कई लोग "गिद्धों के बीच एक असहाय चिड़िया" कहते हैं एक अजीब-सी दुविधा में फँसा है। यह धर्मपिता अपने ही बच्चों के प्रति कैसे कठोर रवैया अख्तियार करे! वह अपने साथियों से कहते हैं, "यह भी तो मेरा एक अंग है।"

लेकिन बहुधा वह पराजय और निराशा के भाव को छिपा नहीं पाते। यह सामने आ ही जाता है, जैसाकि हाल ही में दिल्ली की एक पत्रिका को दिये गये

इटरव्यू म देखने को मिला। यह पूछे जाने पर कि पिछले साल राजनीतिक घट नाओ को देखने के बाद उ होने क्या महसूस किया, जे० पी० ने जवाब दिया, मुझे बहुत अफसास होता है, लेकिन मेरा स्वास्थ्य ऐसा है कि मैं असहाय हूँ स्वास्थ्य ठीक होता तो मैं जरूर कुछ करता।"[7]

सबसे दुखद घटना उनके 75 वें ज मदिवस पर घटी जब उसी गाधी मैदान मे, जहा महज एक साल पहले "लोकनायक जिदाबाद" के नारो से आसमान गूज उठता था उ हे पत्थरो और चप्पलो की वर्षा के बीच 90 लाख रुपये की थली भेंट की गयी।

आखिरकार हमने चक्कर पूरा कर ही लिया!

टिप्पणियाँ

1 टाइम्स ऑफ इडिया मे शामलाल का लेख, 17 मई 1977
2 इडियन एक्सप्रेस, 23 माच 1978
3 द न्यूयाकर 17 अक्तूबर 1977
4 बिजनस स्टैंडड मे केवल वर्मा का लेख, 31 दिसम्बर 1977
5 सडे, कलकत्ता।
6 सुब्रह्मण्यम स्वामी से लेखक की बातचीत।
7 इडिया टुडे 16 31 माच 1978

10

मोरारजी के बाद कौन ?

मैदान मे कई लोग होगे। चौधरी चरणसिंह जगजीवनराम हेमवतीनदन बहुगुणा, अटलबिहारी वाजपयी चन्द्रशेखर जार्ज फर्नांडीज और न जाने कौन कौन ? हाँ, यह एक बडी अच्छी बात है कि इस होड मे राजनारायण को स्थान नही मिल सकेगा—इसका सीधा सादा कारण यह है कि उनके आदश हनुमान और लक्ष्मण हैं।

कई लोगो की आँखें राजसिंहासन पर टिकी हुई है, लेकिन किसे कामयाबी मिलेगी ? कब, कैसे ?

तान्त्रिको और ज्योतिषियो ने चरणसिंह स वायदा किया है कि कुर्सी उनको ही मिलेगी। लेकिन यही वायदा वे इन्दिरा गाधी से भी कर चुके थे। शायद दोनो तरफ वही ज्योतिषी थे। एक ज्योतिषी ने पूरे विश्वास के साथ कहा "चुपचाप देखते रहिये इन्दिरा गाधी वापस आयेंगी।" लेकिन यदि उनकी बातो पर विश्वास किया जाये तो इन्दिरा गाधी को आज भी प्रधानमत्री होना चाहिए था या अक्तूबर 1977 म चरणसिंह को प्रधानमत्री की कुर्सी मिल जानी चाहिए थी। भविष्यवाणी ग़लत होने पर उन्होंने कह दिया, "मोरारजी एक मारकेश झेल गये।"

मोरारजी देसाई का जीवन जादुई लगता है। 82 साल की उम्र म भी वह अपने तमाम नौजवान साथियो की तुलना म ज्यादा मजबूत और जिंदादिल है। अपने जीवन के अमृत के कारण या अपनी जीवन-सरिता को निरतर प्रवाहमान बनाने वाली किसी रहस्यमय शक्ति के कारण, वह अन्य सभी लोगों की तुलना म अधिक समय तक जीवित रहग। इसलिए उनके न रहन के बारे म तो ज्यादा सोचने की जरूरत ही नही है।

फिर औरो के लिए प्रधानमत्री होन का एक ही रास्ता बच रहता है—मोरारजी को निकाल बाहर करने का। लेकिन इसे कौन कर सकता है ? चरणसिंह के समथक पहल से ही इस सबध म सोच विचार कर रह हैं। महीनो स व गिनती कर रहे हैं आँकडे बना रह हैं और हर तरह से जमा-खर्च करके देख रह हैं।

बी० एल० डी० के भूतपूर्व अध्यक्ष के एक साथी ने डीग हाँकी, "यदि चरणसिंह चाहे तो जनता पार्टी को तोड सकते है। उन्होंने ही इसे बनाया है और वही इसे तोड भी सकते है।" शायद आज भी ससद-सदस्यो मे चरणसिंह के समथको की सख्या सबसे अधिक है। लेकिन क्या वह विद्रोह करने की स्थिति म है?

माच 1977 मे लोक-सभा मे जनता पार्टी के अन्दर अलग-अलग दलो के सदस्यो की सख्या इस प्रकार थी जनसघ—93, बी० एल० डी०—71, सगठन काग्रेस—51, सोशलिस्ट—28, चन्द्रशेखर गुट—6, सी० एफ० डी०—28, असबद्ध या क्षेत्रीय दल—25। उस समय भी बी० एल० डी० कोई ठास दल नही था। उसके कुल 71 ससद सदस्यो मे से 26 राजनारायण के अनुयायी थे, लगभग 14 बीजू पटनायक के और बाकी पूरी तरह चरणसिंह के प्रति वफादार थे।

तब से आज तक जन सघ को छोडकर सभी दलो के अदर परिवतन हो चुके ह। गिनती गिनने का मौका आने पर मालूम होगा कि जनसघियो की सख्या म नाम को ही तबदीली हुई है। इसमे कोई शक नही कि चौधरी चरणसिंह का सगठन काग्रेस से कुछ ससद सदस्य मिल गये है, जो श्यामनदन मिश्र और सी० बी० गुप्ता के भूतपूव सिपहसालार बनारसीदास के साथ उनके पास आ गये है। लेकिन इनकी सख्या आधा दजन से अधिक नही हो सकती। दूसरी तरफ बी० एल० डी० से निकल कर बाहर जाने वालो की सख्या भी काफी है। चरणसिंह अब बीजू पटनायक के आदमियो पर भरोसा नहीं कर सकते और न अब बी० एल० डी० के पुरान सदस्य एच० एम० पटेल उनके साथ है। यह लोग अब देसाई के साथ हो गये ह। और अगर मोरारजी देसाई को नीचे खीचने की कोशिश की गयी तो चरणसिंह देखेंगे कि उनके प्रिय हनुमान भी देसाई की चाकरी मे लगे ह।

राजनारायण ने मोरारजी देसाई के साथ अदर ही-अदर बराबर सबध बनाये रखा है। प्रधानमत्री-पद की दौड म देसाई का समथन करने की वजह तो समझ मे आती है। तब वह अपने महान सरक्षक चन्द्रभानु गुप्ता के इशारे पर काम कर थे। लेकिन बात इतनी ही नही है। कुछ लाग कहत है कि इस समथन के पीछे राजनारायण की अपनी 'जाति के प्रति वफादारी' भी है। यह आराप हर लोहिया भक्त की तरह राजनारायण कभी स्वीकार नही करेंगे। लेकिन कहा जाता है कि राजनारायण सिंह (लोहिया ने उनके नाम से 'सिंह' शब्द हटा दिया था) आज भी भूमिहार बने हुए हैं। उनके मकान पर बहुधा लोग उनका 'भूमिहार शिरोमणि' कहकर अभिवादन करते हैं—और केवल मजाक मे ही नही। उनके निवास—7 रेसकोम रोड (क्षमा करेंगे राजनारायण ने अपने तान्त्रिको की सलाह पर यह नम्बर बदलकर 8 कर दिया है) पर भूमिहारो की भीड देखने को मिल सकती है। लेकिन मोरारजी देसाई के समथन से राजनारायण के 'भूमिहार' होन का क्या सबध?

बिहार जाने पर इस सवाल का जवाब मिल सकता है क्योकि पिछले लगभग एक दशक से बिहार के भूमिहार मोरारजी दसाई को केन्द्र म 'अपना नता" समझत है। इसके पीछे बिहार के भूमिहार नेता महेशप्रसाद सिन्हा के साथ देसाई के घनिष्ठ सबधो का हाथ है, या तारकेश्वरी सिन्हा (वह भी भूमिहार ह) और देसाई के लम्बे व्यक्तिगत सबधो का—कहना कठिन है। स्वय मोरारजी देसाई गुजरात के अनाविल ब्राह्मण है, लेकिन सभव है कि भूमिहार लोगो ने जा हमेशा ब्राह्मणो का दर्जा पान के इच्छुक रहे हैं मोरारजी को सजातीय मानकर अपना नेता बनाया हो।

बात चाहे जो हो, मोरारजी के खेमे के साथ राजनारायण के संबंध बराबर बड़े मजबूत, पर गुप्त रहे हैं। और इसलिए राजनारायण के आदमी सत्ता-संघर्ष में मोरारजी का साथ देंगे। नतीजा यह होगा कि प्रधानमंत्री-पद की होड़ में सबसे आगे रहने वाले नेता चरणसिंह के पास चालीस से अधिक आदमी नहीं बच रहेंगे।

लेकिन चरणसिंह ने अपनी आशाएँ शक्तिशाली जन संघ गुट पर केन्द्रित कर रखी हैं। उन्हें आशा है कि जन संघ के साथ मिलकर वह एक ऐसा सुदृढ़ आकर्षण केन्द्र बना सकेंगे जो द्विविधा में फँसे या ढुलमुल-यकीन जनता-सांसदों को उनकी तरफ खींच लेगा। लेकिन क्या जन संघ चौधरी चरणसिंह का साथ देगा? आम तौर पर महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर जन संघ ने चरणसिंह का साथ दिया है। मिसाल के तौर पर, राज्यों में चुनाव कराने का सवाल लिया जा सकता है। बी० एल० डी० और जन संघ के सम्मिलन से ही जून 1977 में विधान-सभा चुनावों में सबसे अधिक सीटें इन दोनों दलों को मिलीं और इन्हीं दोनों दलों को सत्ता का सबसे बड़ा हिस्सा भी प्राप्त हुआ। जन संघ के नेता आपसे बड़े जोरदार शब्दों में कहेंगे, 'यह तो हमारी शक्ति के अनुपात से हुआ। आप कोई भी ऐसा राज्य दिखा दीजिये जहाँ हमें सीटें ज्यादा मिली हों या हमारे मंत्री ज्यादा हों और हमारी शक्ति कम हो। दरअसल हर जगह हमारी शक्ति की तुलना में हमें कम ही फायदा हुआ है। उत्तर प्रदेश और बिहार में बी० एल० डी० के आदमी मुख्यमंत्री बने क्योंकि इन राज्यों में हमारी ताकत ज्यादा थी। फिर इसमें क्या अनुचित है?"

जनता पार्टी के सभी चालाक रणनीतिज्ञ जन संघ के नेता हैं। शुरू से ही उनका सबसे ज्यादा फायदा मिला है। उनके उद्देश्य बड़े साफ और पहले से ही निर्धारित हैं। जब उन्होंने यह फैसला कर लिया कि विलय करना है तो अपने इस फैसले पर वे दृढ़ और स्पष्ट रहे। उन्होंने तय कर लिया है कि जल्दबाजी नहीं करनी है और कभी ऐसा संकट नहीं पैदा करना है जिससे जनता पार्टी का अस्तित्व खतरे में पड़ जाये। उन्हें पता है कि जनता पार्टी बनी रही तो सबसे ज्यादा फायदा उनको ही मिलना है। शुरू में उन्होंने प्रधानमंत्री-पद के लिए जगजीवनराम को समर्थन देने का निश्चय किया, लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि इससे सारा मामला बेसुरा हो जायेगा तो बहुत धीरे से वे देसाई के पक्ष में हो गये। जब चरणसिंह ने उत्तर भारत के चुनावों का दायित्व अपने हाथों में ले लिया तो वे चरणसिंह के साथ चले गये, ताकि लाभ में हिस्सा बाँट सकें। इसके अलावा उन्होंने यह भी देखा कि बी० एल० डी० का मतलब है चरणसिंह। चरणसिंह के मर जाने के साथ ही बी० एल० डी० भी मर जायगी। इसलिए क्या न बी०एल० डी० का ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल किया जाय और ग्रामीण इलाकों में भी अपने पैर जमा लिये जायें, जहाँ जन संघ की स्थिति अभी कमजोर है? इस रणनीति से उन्हें फायदा हुआ है और आज जन संघ और आर० एस० एस० के कार्यकर्ता उन इलाकों में भी देखे जा सकते हैं जहाँ पहले नहीं थे।

अन्य गुटों के विपरीत जन संघ वालों ने यह नहीं किया कि जिसके साथ हो गये उसी में रम गये। चरणसिंह की तरफदारी करते हुए उन्होंने मोरारजी या जगजीवनराम के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं किये। दरअसल मोरारजी के समर्थन में सबसे सशक्त वक्तव्य तो अधिकतर अटलबिहारी वाजपेयी के ही हैं जिन्होंने मोरारजी देसाई को अपना 'निर्विवाद नेता' कहा है।

जन संघ को कोई जल्दी नहीं है। वह जनता पार्टी का अधिक-से-अधिक

इस्तेमाल करेगा और अपना नेतत्व तभी जतायेगा जब उसे विश्वास हो जाय कि वह इतना शक्तिशाली हो गया है कि दूसरो से अपना नेतत्व मनवा सके। जब तक ऐसा नही होता, वह अन्य लोगो की सदभावना और शुभाकाक्षा प्राप्त करने मे लगा रहेगा। जन सघ गुट इस बात की जी-जान से कोशिश कर रहा है कि उसके और आर० एस० एस० के नाम से जो कालिमा सबद्ध है, उसे धो दे। जनता सरकार म जन सघ के ही मत्री ऐसे हैं जिन्होने अपने क्षेत्रो म उल्लेखनीय सफलताएँ पायी ह। यही ऐसा गुट है जिसने कभी कोई गैर ज़िम्मेदाराना वक्तव्य नही दिया। इसके एक नेता का कहना है कि हम जनता पार्टी के सुचारु काय सचालन मे दिलचस्पी रखते है।

और इसीलिए यदि चरणसिंह लडाई मोल लना चाहगे तो वह जन सघ को एकदम उदासीन पायेंगे। इस गुट को मोरारजी के पक्ष म जाने मे तनिक भी हिचकिचाहट नही होगी और चौधरी चरणसिंह को अकेला छोडने मे ज़रा भी सकोच नही होगा।

दरअसल यही बात है जिसके कारण चरणसिंह की सेना अभी तक कोई कारवाई नही कर सकी। चरणसिंह भारत का प्रधानमत्री होने के लिए चाहे जितनी जल्दबाज़ी करें, वह मोरारजी देसाई को सत्ता से हटाने की स्थिति मे नही ह और जब तक उन्ह यह विश्वास नही हो जाता कि वह मोरारजी को हटा सकते ह वह बना बनाया खेल खराब करना नही चाहग। कुर्सी छोड़ गुमनामी के अँधेरे मे जाने के बजाय मोरारजी चाहे तो, चरणसिंह वन विभाग का मत्री होना भी कबूल कर लेंगे।

केवल देसाइ के अचानक निधन पर ही उत्तराधिकार का सवाल पैदा हो सकता है। और उस समय भी असली सवाल यह नही होगा कि ' मोरारजी के बाद कौन ?" बल्कि यह होगा कि ' मोरारजी के उत्तराधिकारी के बाद कौन ?" क्योकि यदि चरणसिंह या जगजीवनराम म से कोई व्यक्ति प्रधानमत्री की कुर्सी पाने का जुगाड कर भी ले तो उम्र और शारीरिक हालत अधिक दिन तक साथ नही देगी। 76 वर्षीय चरणसिंह प्राय अपने दोस्तो से कहते रहे है कि काश, उनकी उम्र 10 साल कम होती। जगजीवनराम अपने इस प्रतिद्वद्वी से 6 वष छोटे है, पर एकाधिक बार वह मौत से बाल-बाल बच चुके हैं। यदि दोनो म से कोई प्रधानमत्री बन भी गया तो ज्यादा दिन नही चल पायगा।

अतत युवा टोला म स ही चुनाव करना होगा। और उम्मीद यह की जाती है कि लोक-सभा के अगले चुनावो के खतम होते होते जन सघ भी इस योग्य हो जायगा कि मैदान म आ जाय। जनसघ वाजपेयी को ही प्रधानमत्री बनाना चाहेगा। आडवाणी ज्यादा अच्छे हैं लेकिन दुर्भाग्यवश इस देश म सीधे-सादे और व्यावहारिक लोग घाटे म ही रहते ह—फायदा केवल उनको होता है जिनके अन्दर तडक भडक और दिखावा हो और साथ ही कोई 'करिश्मा' दिखाने वाला व्यक्तित्व हो। इसलिए सबसे ज्यादा सभावना यही है कि वाजपयी को ही उम्मीदवार बनाया जाय। यह माना जाता है कि उनके अदर नेहरू के कुछ गुण है और देश के विभिन्न राजनीतिक मत वाले लोग व्यापक स्तर पर उन्ह स्वीकार कर लेंगे। उनका व्यक्तित्व आकषक है तडक भडक है और वह बहुत अच्छे वक्ता हैं। यह कौन कह सकता है कि देश को दलदल स बाहर निकालने की क्षमता उनके अन्दर है या नही ?

कुछ लोगो ने यह जाहिर करने की बहुत कोशिश की है कि आर० एस०

एस० के दिग्गजो के साथ वाजपयी की तनातनी चलती है लेकिन सच्चाई यह है न तो वाजपेयी आर० एस० एस० का पगहा तुडाने को तैयार हैं और न आर० एस० एस० ही वाजपेयी को छोडने को तैयार है। वाजपेयी की उदार तस्वीर स जन सघ और आर० एस० एस० दोनो को फायदा है। आर० एस० एस० के कट्टरपथी तत्व वाजपेयी की जितनी ही निंदा करते हैं उतना ही उन्ह और उनके जरिये जन सघ को फायदा होता है। मुमकिन है कि किसी बडे फायदे के लिए आर० एस० एस० की यह एक चाल हो।

अटलविहारी वाजपेयी अपने को एक ऐसे उदार राष्ट्रवादी नेता के रूप म स्थापित करने मे लगे ह, जिसकी अपील पर जन सघ और आर० एस० एस० के दायरे से बाहर के लोग भी कान दे सकें। सयुक्त राष्ट महासभा म वह हिंदी म भाषण करत ह क्योंकि उसका प्रभाव नाटकीय होता है और तत्काल ही वह भारत की जनता, खास तौर से हिंदी भाषी जनता के दिमाग म अपनी एक राष्ट्रवादी तस्वीर स्थापित कर देते ह। लेकिन लोहिया के अदूरदर्शी चेलो की तरह वह कट्टरपथी हिंदी वाले के रूप म भी सामने नही आना चाहते। भाषा के बारे मे वाजपेयी ने अपने सारे पूर्वाग्रहो को ताक पर रख दिया है और जरूरत पडने पर उन्ह अंग्रेजी म बोलन म भी कोई हिचकिचाहट नही होती है।

वाजपेयी ने अमेरिका से भारत आने वालो की अपक्षा मास्को व कीव म सोवियत नताओ के साथ ज्यादा दोस्ताना व्यवहार किया और खुलकर बातचीत की। सोवियत सघ म उन्होने अपने वक्तव्य मे कहा कि "भारत-सोवियत मैत्री उतनी ही मजबूत है जितना बोकारो का इस्पात।" उनके इस वक्तव्य को प्रावदा और इजवेस्तिया अखबारो ने बार बार अपने लेखो म उद्धत किया। वाजपेयी न इस बात का हमेशा ध्यान रखा कि अमेरिका के साथ भारत की मैत्री के बार म वह इस तरह का कोई बयान न दें।

सबसे बडी बात यह है कि जन सघ के नेताओ ने अब अच्छी तरह महसूस कर लिया है कि जब तक समाजवाद का मुलम्मा नही होगा तब तक भारत म कोई राजनीतिक दल या गुट जिंदा नही रह सकता और इसीलिए व अब गरीबो और समाज के दलित वर्गों का उत्थान करने की आवश्यकता के बारे मे लगातार बातें कर रह हैं। राजघाट पर जिन लोगो न शपथ ली उनम जन सघ का ही गुट ऐसा था, जिसके अन्दर काफी उत्साह था और पिछले वर्ष गाधी पर लिखे गय लखो मे सबसे ज्यादा ईमानदारी अटलबिहारी वाजपेयी के लेखो म ही नजर आती है—वह अब गाधी को पहले की अपेक्षा ज्यादा अच्छे ढग से समझ रहे है।

चन्द्रशेखर के दोस्तो को इस बात का पूरा यकीन है कि चन्द्रशेखर के अन्दर प्रधानमत्री बनने के सारे गुण हैं। इसम कोई शक नही कि उन्होंने काफी तेजी से तरक्की की है। अभी कुछ वर्ष पहले तक वह महज 'कॉफी हाउस के उग्र सुधार वादी नेता" थे लेकिन आज सत्तारूढ जनता पार्टी के पाँच दिग्गजो म उनकी गिनती की जाती है। हर लिहाज से यह लबी छलाँग है। लेकिन जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप म उनके काम उनके भविष्य के लिए रोडा बन गये हैं। उनकी तस्वीर हैमलेट जैसी है, जो कभी यह तय नही कर सका कि वह 'किस्मत की ठोकरों को झेलता रहे या सकट से उबरने के लिए सघर्ष करे।' चन्द्रशेखर का एक 'प्रिय शौक' दोस्तो से गप्प करना रहा है और ऐसा लगता है कि आज भी उनकी यह आदत बनी हुई है। साल बीत गया, लेकिन पार्टी के सगठन के लिए बुनियादी काम नही हो सके। जनता पार्टी के एक भूतपूर्व महासचिव न ठीक ही

कहा है कि "सच्चाई यह है कि पार्टी को भावनात्मक रूप से एक बनाने म च द्रशेखर असफल रहे हैं।"

उनके दोस्तो का कहना है कि च द्रशेखर को इस बात का फायदा है कि लोग उ ह उग्र सुधारवादी समझते है और यह जानते है कि उनको भ्रष्ट नही किया जा सकता। लेकिन यह तो मूल्यो का प्रश्न है और मूल्य नापने के लिए हर व्यक्ति अपनी तराजू का प्रयोग करता है। यह भूल जाना ज्यादा अच्छा होगा कि आज की राजनीति मे नैतिकता का कोई स्थान है। सवाल महज एक है कि इस धक्का मुक्की मे किसके अ दर सबसे आगे निकल जाने का दम है और इस लिहाज से ऐसा लगता है कि च द्रशेखर को ज्यादा उम्मीद नही रखनी चाहिए। उनके न तो समथक बहुत हैं, न उनके पास कोई सदेश है जो वह देश को दे सक।

जॉज फर्नांडीज के अ दर ज्वालामुखी जैसी तेजी है। वह एक ऐसे आदमी है जो हमेशा वहाँ रहना पस द करते है जहा कुछ हो रहा हो और उनके सामने लबी उम्र पडी है—उनकी उम्र महज 49 साल है। उनके अ दर कठिन मेहनत करने की क्षमता है। राजनीतिक विवादो म पडने की बजाय उ होंने अपने काम मे मुस्तैद मत्री जैसी अपनी तस्वीर बनाने को प्राथमिकता दी। लेकिन वह साधनो और उद्देश्यो के बारे मे कभी कुछ कहते है और कभी कुछ जिसकी वजह से उनके वक्तव्यो मे अतर्विरोध होते है। इसका कारण वह यह बताते है कि जनता पार्टी की मिली जुली सरकार के अ दर कई तरह के दबाव काम करत ह।

फर्नांडीज के अ दर एक नेता वाली चमक और तडक भडक है। उनके भाषण मे जादू होता है। सफल होने के लिए ये सारे गुण जरूरी है। लेकिन देखना यह है कि अतत उनके कितने समथक है।

दरअसल उत्तराधिकार के सवाल के कई ऐसे पहलू हैं जिनके बारे मे अभी कुछ नही कहा जा सकता। कौन जानता है कि अगले चुनाव तक देश का राज नीतिक नक्शा क्या होगा? कई राजनीतिक प्रेक्षको का अनुमान यह भी है कि अगले चुनाव मे सभी दलो की ऐसी मिली जुली खिचडी बनेगी कि देश को अराजकता के विकल्प के रूप मे एक राष्ट्रीय सरकार का गठन करना पडेगा और उस स्थिति मे किसी अचर्चित व्यक्ति को प्रधानमत्री बनाने पर भी सब सहमत हो सकते है। कुछ लोगो का खयाल है कि हो सकता है ज्योति बसु प्रधानमत्री बनें, लेकिन इसकी सभावना बहुत ही कम है—यद्यपि राजनीति मे 'कभी नही' शब्द का प्रयाग नही करना चाहिए।

हा, एक बात की बहिचक शत लगायी जा सकती है—अगले चार वर्षों के बाद चाहे जो भी प्रधानमत्री बने उसे विपक्ष म उस देवी का सामना करना पडेगा जो रायबरेली से चुनी जाकर विरोधी पक्ष का नेतत्व करेगी।

परिशिष्ट

जीवन-परिचय

मोरारजी देसाई बी० ए०, वल्द—रणछोडजी देसाई, जन्म—भदेली, बुलसार जिला, 29 फरवरी 1896, शिक्षा—विल्सन कॉलेज बबई, विवाह—गजराबन से 1911 मे, एक पुत्र और एक पुत्री, 1918 मे बबई सरकार की प्राविन्शियल सिविल सर्विस मे प्रवेश और 1930 म इस्तीफा, सिविल नाफरमानी आदोलन मे भाग लिया 1930 34 और 1940 41 म जेल-यात्रा, 1942 45 मे गिरफ्तारी, इमरजसी के दौरान 19 महीने तक जेल म, 1975 77, 1931-37 तक गुजरात प्रदेश काग्रस कमेटी के मत्री और फिर 1939 46 मे इसी पद पर, 1950 58 तक अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के कोपाध्यक्ष, चासलर, गुजरात विद्यापीठ, सदस्य, बबई विधान सभा, 1937-39 और 1946 56, राजस्व सहकारिता कृषि और वन मत्री बबई 1937-39 गृह और राजस्व मत्री बबई 1946-52 बबई के मुख्यमत्री 1952 56, सदस्य लोक-सभा 1957 से, वाणिज्य और उद्योग मत्री, भारत सरकार 1956 58, वित्त मत्री 1958 63, कामराज योजना के अतगत सरकार से त्यागपत्र 1963, अध्यक्ष प्रशासनिक सुधार आयोग भारत सरकार 1966 67, उप प्रधानमत्री और वित्त-मत्री 1967 69, राष्ट्रमडल के वित्तमत्रियो के सम्मेलनो म इन स्थानो पर भाग लिया—मान्ट्रियल 1958 लदन, 1959, 1960 1962 और 1968, अक्रा 1961 और त्रिनिडाड, 1967, विश्व बैंक की बैठको मे भी भाग लिया—वाशिंगटन, 1958 1959, 1960, 1962 और 1968, वियना 1961 और ब्राजील, 1967।

प्रिय शौक—शास्त्रीय और भक्ति सगीत तथा भारतीय शास्त्रीय नृत्य।

विशेप रुचि—शिक्षा, कृषि बागबानी, डेरी उद्योग, पशुपालन, सहकारिता, कताई तथा सभी गाधीवादी काय।

प्रकाशन—डिसकोर्सेज ऑन द गीता, द स्टोरी आफ माइ लाइफ और प्राकृतिक चिकित्सा पर एक पुस्तक।

खेलकूद—ब्रिज, क्रिकेट, टेनिस, हाकी तथा अन्य अनेक भारतीय खेल।

स्थायी पता—'ओमना", मेरिन ड्राइव, बबई।

चरणसिंह, बी० एस-सी०, एम० ए०, एल एल० बी०, वल्द—चौधरी मीर-सिंह ज म—नूरपुर गाव ज़िला गाजियाबाद, 23 दिसम्बर 1902, शिक्षा—गवनमट हाई स्कूल मेरठ और आगरा कॉलेज, आगरा, विवाह—गायत्री देवी से 5 जून, 1925 को, एक पुत्र और पाच पुत्रियाँ, काग्रेस से सम्बद्ध 1929 67, सस्थापक—भारतीय क्राति दल 1967, भारतीय लोक दल 1974 और जनता पार्टी 1977, उपाध्यक्ष, ज़िला परिषद, मेरठ 1930-35, सदस्य उत्तर प्रदेश विधान सभा 1937 47 और 1946 77 ससदीय सचिव उत्तर प्रदेश 1946-51, उत्तर प्रदेश मे मत्री 1951-67 (बीच मे 17 महीनो का अतराल), मुख्यमत्री उत्तर प्रदेश, अप्रैल 1967 से फरवरी 1968 तक, उत्तर प्रदेश विधान-सभा म विरोधी दल के नेता 1971-77, मुख्यमत्री उत्तर प्रदेश, फरवरी 1970 से अक्तूबर 1970।

प्रिय शौक—पढना।

विशेष रुचि—आर्थिक समस्याएँ, खासतौर से कृषि से सबधित समस्याएँ।

प्रकाशन—**एबालीशन आफ ज़मींदारी, कोआपरेटिव फार्मिग एक्सरेड, ऐग्रेरियन रिवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश, टूअड स गाधी और इडियाज़ इकोनामिक पालिसी—ए गाधियन ब्लूप्रिंट।**

स्थायी पता—5 रेसकोर्स रोड, नयी दिल्ली।

जगजीवनराम बी० एस-सी०, वल्द—शोभी राम, ज म—चँदवा, भोजपुर ज़िला, 5 अप्रैल 1908, शिक्षा—बनारस हिदू विश्वविद्यालय और कलकत्ता विश्वविद्यालय, विवाह—इद्राणी देवी से 2 जून, 1935 को एक पुत्र और एक पुत्री, हैमड आयोग के सामने उपस्थित हुए, 1936, बिहार मे खेतिहर मजदूरो का आदोलन शुरू किया और बिहार प्रातीय खेत मजदूर सभा का गठन किया, 1937, सदस्य अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी 1940 से, 1940 और 1942 मे जेल-यात्रा और स्वास्थ्य के आधार पर 1943 मे रिहाई, उपाध्यक्ष—अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काग्रेस की बिहार शाखा, 1940 46, सचिव—बिहार प्रातीय काग्रेस कमेटी 1940 46, सदस्य—(1) काय समिति हिदुस्तान मजदूर सेवक सघ 1947 से (2) अखिल भारतीय काग्रेस कायसमिति 1948 से (3) काग्रेस आर्थिक नियोजन उप समिति (4) केद्रीय ससदीय बोड अखिल भारतीय काग्रेस समिति, 1950 से (5) केद्रीय चुनाव समिति 1951 56 और 1961, अध्यक्ष—अखिल भारतीय काग्रेस समिति 1969 71, काग्रेस स त्यागपत्र और काग्रस फॉर डेमोक्रेसी की सदस्यता फरवरी, 1977, सदस्य (1) बिहार विधान परिषद, 1936 (नामजद) (2) *बिहार विधान सभा 1937 46 ससदीय सचिव* बिहार सरकार 1937-39, सदस्य—(1) केद्रीय विधान सभा और सविधान सभा 1946 50 (2) अस्थायी ससद 1950-52 (3) 1952 म लगातार लोक-सभा के सदस्य, भारत सरकार के श्रम मत्री 1946 52 सचार मत्री 1952 56, परिवहन और रेल मत्री 1956 57, रल मत्री 1957 62 और परिवहन और सचार मत्री 1962 63। कामराज-योजना के तहत त्यागपत्र दिया और फिर जनवरी 1966 म श्रम रोजगार और पुनर्वास मत्री बने। खाद्य और कृषि सामुदायिक विकास और सहकारिता-मत्री 1967 70 रक्षा-मत्री 1970-74 कृषि और सिंचाई मत्री 1974 77, रक्षा-मत्री माच 1977 स।

प्रिय शौक—बागबानी, पढना, तैरना, नाच, नाटक, सगीत और कला।
विशेष रुचि—अर्थशास्त्र और गणित।
प्रकाशन—ए कलेक्शन आफ स्पीचिज आन लेबर प्राबलम्स।
खेलकूद—टेनिस।
विदेश यात्रा—यूरोप, अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया।
स्थायी पता—ग्राम और डाकखाना—चँदवा, जिला भोजपुर, बिहार।

हेमवतीनदन बहुगुणा, बी० ए०, वल्द—स्वर्गीय रेवतीनदन बहुगुणा जन्म—बुगानी गाँव, गढवाल जिला, 25 अप्रैल 1919, शिक्षा—डी० ए० वी० कालेज देहरादून, गवनमट कालेज इलाहाबाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, विवाह—कमला बहुगुणा से 1946 मे दो पुत्र और एक पुत्री, 1942 म भारत छोडो आदोलन मे भाग लेने से पढाई मे व्यवधान फरार घोषित हुए, गिरफ्तार किये गये और दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश की जेलो म नजरबद रखे गये—1943 45, छात्र-आदोलन म भाग लिया, सदस्य—उत्तर प्रदेश काग्रेस समिति 1952 मे और अखिल भारतीय काग्रेस समिति 1957 से, महासचिव—उत्तर प्रदेश राज्य काग्रेस समिति 1963-69 अखिल भारतीय काग्रेस समिति की काय-समिति के सदस्य के रूप मे नामजद किये गये और बाद मे चुने गये 1969-71, महासचिव—अखिल भारतीय काग्रेस समिति, सदस्य—(1)काय समिति इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र सघ 1940 41 (2) इटक की काय-समिति, (3) सचिव उत्तर प्रदेश स्टूडेटस फेडरेशन, सदस्य, उत्तर प्रदेश विधान सभा 1952 69 और 1974 77, ससदीय सचिव उत्तर प्रदेश 1957, उपमत्री उत्तर प्रदेश 1958 लेकिन 1960 मे इस्तीफा श्रम उप मत्री उत्तर प्रदेश 1962 लेकिन फिर 1963 म इस्तीफा दे दिया, वित्त और परिवहन मत्री उत्तर प्रदेश 1967, मुख्यमत्री उत्तर प्रदेश 1973 मुख्यमत्री पद से इस्तीफा 1975, पाचवीं लोक सभा के सदस्य 1971-74 केन्द्रीय सचार-मत्री 1971, पैट्रोलियम और रसायन तथा उवरक मत्री माच 1977 से।
सामाजिक गतिविधियाँ—इटक के अधीन इलाहाबाद मे कई मजदूर यूनियनो को सगठित किया। कई स्कूलो और कालेजो की स्थापना की।
प्रिय शौक—बागबानी और पढना।
विशेष रुचि—युवको का कल्याण और हरिजनो का उत्थान।
प्रकाशन—अनेक लेखो के रचयिता, इडियेनाइजेशन हूम नामक पैम्फलेट जिसे ए० आई० सी० सी० ने 1970 मे प्रकाशित किया।
विदेश-यात्रा—ब्रिटेन, जमनी फ्रास, इटली और रामानिया।
स्थायी पता— 2 बी, हेस्टिंग्स रोड, इलाहाबाद।

राजनारायण बी० ए० एल एल० बी०, वल्द—स्वर्गीय अनतप्रसाद सिंह, जन्म—मोतीकोट गाव वाराणसी जिला, 15 माच 1917, विवाहित, तीन पुत्र और एक पुत्री। पहले सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और भारतीय लोक दल से सम्बद्ध छात्र और समाजवादी आदोलनो के सिलसिले मे कुल 15 वर्षो के अदर 58 बार जेल गये अध्यक्ष सोशलिस्ट पार्टी, 1961, सदस्य उत्तर प्रदेश विधान सभा 1952 और 1957, सदस्य राज्य सभा 1966 72 और 1974-76, स्वास्थ्य और

परिवार कल्याण मन्त्री मार्च 1977 से ।

विशेष रुचि—राजनीतिक और सामाजिक कार्य, योग भारतीय संस्कृति और दर्शन।

खेलकूद—कुश्ती ।

विदेश-यात्रा—कुवैत, सोवियत संघ, ईरान, फ्रांस, अफगानिस्तान और ब्रिटेन।

स्थायी पता—मोतीकोट गाँव, डाकखाना गंगापुर, जिला वाराणसी ।

चन्द्रशेखर एम० ए०, वल्द—स्वर्गीय सदानन्दसिंह, जन्म—इब्राहीम पट्टी गांव, जिला बलिया 1 जुलाई, 1927, शिक्षा—डी० ए० वी० कालेज, मऊ आजमगढ, जीवनराम हाई स्कूल मऊ आजमगढ, सतीशचन्द्र कॉलेज बलिया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय विवाहित, एक पुत्र, पहले सोशलिस्ट पार्टी और कांग्रेस से सम्बद्ध थे, अध्यक्ष जिला छात्र कांग्रेस बलिया, 1947, सचिव—(1) समाजवादी युवक सभा 1950 (2) शहर सोशलिस्ट पार्टी, इलाहाबाद 1951-52 (3) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी बलिया 1952-56, (4) राज्य प्रसोपा, उत्तर प्रदेश, संयुक्त सचिव—राज्य प्रसोपा 1955-57, सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी प्रसोपा 1959 62, सदस्य, अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यसमिति 1969 75 कांग्रेस की केन्द्रीय चुनाव समिति के लिए निर्वाचित 1971, मीसा के अंतर्गत गिरफ्तारी जून 1975 जेल से रिहाई जनवरी 1977, अध्यक्ष—जनता पार्टी मई 1977 से, सदस्य राज्य सभा 1962-77।

प्रिय शौक—बागबानी, यात्रा और राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं पर दोस्तों के साथ गपबाजी।

विशेष रुचि—प्राथमिक चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा।

स्थायी पता—गाँव इब्राहीम पट्टी, बलिया जिला, उत्तर प्रदेश।

अटलबिहारी वाजपेयी, एम० ए०, वल्द—पंडित कृष्णविहारी वाजपेयी। जन्म—ग्वालियर 25 दिसम्बर 1926। शिक्षा—विक्टोरिया कालेज ग्वालियर, डी० ए० वी० कालेज कानपुर, अविवाहित, सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार, भारतीय जन संघ के संस्थापक सदस्य और संगठन-सचिव, अध्यक्ष—जन संघ 1969 और 1971, सचिव—अखिल भारतीय जन संघ 1956 66, सदस्य राष्ट्रीय समन्वय परिषद्, अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान दिल्ली, अध्यक्ष, आल इंडिया स्टेशन मास्टर्स एण्ड असिस्टेंट स्टेशन मास्टर्स ऐसोसिएशन 1965-70, सदस्य—दूसरी लोक-सभा 1957 62 चौथी लोक-सभा 1967-70 पाँचवीं लोक सभा 1971 77, राज्य-सभा 1962 67, विदेश-मंत्री मार्च 1977 से।

सामाजिक गतिविधियाँ—हिंदू संगठन छुआछूत और जातिवाद का उन्मूलन तथा महिलाओं का उद्धार।

प्रिय शौक—यात्रा और खाना बनाना।

विशेष रुचि—अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ।

प्रकाशन—लोक-सभा में अटलजी, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान और इमरजेंसी के दौरान जेल में लिखी गयी कविताओं का संकलन।

स्थायी पता—7, सफदरजंग रोड, नयी दिल्ली।

लालकृष्ण आडवाणी, कानून मे स्नातक, वल्द—किशिनचन्द डी० आडवाणी, जन्म—कराची, 8 नवम्बर, 1927, शिक्षा—सेंट पैट्रिक हाई स्कूल कराची, डी० जी० नेशनल कॉलेज, हैदराबाद सिंध और गवनमट ला कालेज बबई, विवाह—कमला पी० जगतियानी से फरवरी, 1965 मे, एक पुत्र और एक पुत्री, पत्रकार, 1942 से राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सदस्य, सचिव, आर० एस० एस० की कराची शाखा 1947, 1947 से 1951 के बीच सघ के कामो को अलवर, भरतपुर, कोटा, बूदी और भालवाड जिलो मे सगठित किया। 1951 मे जन सघ म शामिल, सयुक्त सचिव राजस्थान राज्य जन सघ, 1952 57, सचिव–दिल्ली राज्य जन सघ, 1958 63, उपाध्यक्ष—दिल्ली राज्य जन सघ 1965 67, और अध्यक्ष—जन सघ 1970-72, 1966 से जन सघ की केन्द्रीय कायकारिणी के सदस्य, फरवरी 1973 मे पार्टी के अखिल भारतीय अध्यक्ष चुने गये, अतरिम महानगर परिषद मे, दिल्ली म जन सघ दल के नेता, 1966 67, अध्यक्ष, महानगर परिषद दिल्ली 1967-70, 1970 म राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित, सूचना और प्रसारण-मत्री, माच 1977 से।

विदेश-यात्रा—चैकोस्लोवाकिया, ब्रिटेन, फ्रास, सोवियत सघ, यूगोस्लाविया, आस्ट्रिया, स्विटजरलैंड और इटली।

प्रिय शौक—पुस्तकें, थियेटर, सिनेमा, खेलकूद और सगीत।

विशेष रुचि—चुनाव-प्रणाली मे सुधार।

लोक सभा एण्ड राज्य-सभा हूज हू, 1977-78 से उद्धत।

अनुक्रमणिका

• •

श्री जनादन ठाकुर

शायद अकेले श्री जनादन ठाकुर ने ही 1977 म दावा किया था कि श्रीमती इ दिरा गाधी रायबरेली के चुनाव मे हार जाएँगी जबकि इस हानी का प्राय असभव माना जाता था ! श्री ठाकुर 1961 मे राजनीतिक क्षेत्र के बहुत नजदीक से दशक और विवेचक रह है । पटना के इडियन नेशन' के सहायक सपादक क रूप म इ होने बिहार म महामारी की तरह फैल भ्रष्टाचार को वेपद करने वाले अपन लेखो स तहलका मचा दिया था ।

बिहार मे सूखे के दिनो की उनकी रपटे सवदनशील तो थी ही जन सामान्य की दुरूह परिस्थितियो पर रोशनी डालने म विशेष रूप से सफल हुई थी ।

इसी तरह बिहार के विश्वविद्यालया म घुन की तरह लगी अनीतियो पर सब से पहले उ होन ही लिखने का साहस किया था ।

1971 म होनोलुलु (अमेरिका) मे स्थित ईस्ट वेस्ट सेंटर के वह 'जेफरसन फेलो' चुने गये । सम्प्रति वह आनन्द बाजार पत्रिका क विभि न, सामयिक प्रकाशना के विशेष सवाददाता है । अपनी पुस्तक 'सब दरबारी' से उन्होने प्रचुर ख्याति अर्जित की ।